राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक– डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
[उपनिदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

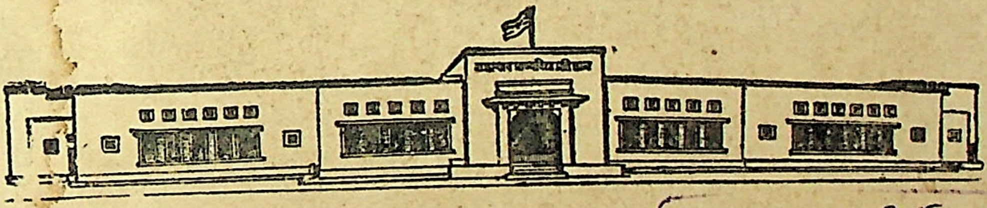
ग्रन्थाङ्क ११६

राजस्थानी - वीर - गीत - संग्रह

तृतीय भाग

सम्पादक

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत



प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

1972

राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला

प्रबन्ध सम्पादक– डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
[उपनिदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ११६

राजस्थानी - वीर - गीत - संग्रह

तृतीय भाग

सम्पादक

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत

शोध-सहायक, राजस्थानी-शोध-संस्थान, चौपासनी,
सह-सम्पादक, 'परम्परा' त्रैमासिक

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

1972

प्रथमावृत्ति १००० * मूल्य ९.२५

राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला

राजस्थान - राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानप्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मय प्रकाशिनो विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

उपनिदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ११६

राजस्थानी - वीर - गीत - संग्रह

तृतीय भाग

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९७२ ई०

मुद्रक

राज प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर

वि० सं० २०२९ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १९९४

विषय-सूची

प्रस्तावना

राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश के चारणों और अन्य संबंधित कवियों ने बड़ी संख्या में राजस्थानी वीर-गीतों की रचनाएं की हैं। इन गीतों का न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपितु ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्व है। इन गीतों से प्रभावित होते हुए विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है :—

"राजस्थानी गीतों में कितनी सरलता, सहृदयता और भावुकता है। वे लोगों के स्वाभाविक उद्‌गार हैं। मैं तो उनको संत-साहित्य से भी उत्कृष्ट समझता हूं। .... संसार की कोई भी भाषा और साहित्य इन पर गर्व कर सकता है।[1]

स्वर्गीय श्री झवेरचन्दजी मेघाणी ने इन गीतों का ऐतिहासिक महत्व इस प्रकार प्रदर्शित किया है—

"एक ओर गीत जहाँ प्राचीन घटनाओं की ऐतिहासिक जानकारी के बहुत बड़े साधन हैं, वहां दूसरी ओर तात्कालिक परिस्थितियों पर लोक-हृदय की समीक्षा का विवरण इन गीतों में मिल जाता है। इतिहास के शुष्क कंकाल को इन गीतों ने लोकोक्तियों के सजीव रुधिर-मांस से आपूरित कर दिया है।[2]

इन वीर गीतों के संबंध में कतिपय प्राचीन उक्तियां इस प्रकार हैं :—

भींतड़ा ढह जाय धरती भिले, गीतड़ा नहँ जाय कहै राव गांगो।[3]

और

गवड़ीजे जस गीतड़ा, गया भींतड़ा भाज।[4]

प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर की ओर से राजस्थान में प्राचीन साहित्य के सर्वेक्षण, संग्रह और सम्पादन-प्रकाशन का कार्य १९४० ई० में प्रारम्भ किया गया तो इन वीर-गीतों का महत्व समझते हुए इनके संग्रह के लिये मैंने विशेष

---

१. माडर्न रिव्यु, कलकत्ता, दिसम्बर १९३८

२. राजस्थान के सांस्कृतिक उपाख्यान, डा० कन्हैयालाल सहल, पिलानी, पृ० ११

३. वाग्वर, चारण जाति के प्रति राजपूत कवियों के उद्‌गार, वर्ष १, अंक ३, पृ० ४३

४. बांकीदास-ग्रंथावली, पं० रामकर्ण आसोपा, भाग १, पृ० ५८

प्रयत्न किमा। श्री सांवलदान आसिया और श्री रूपसिंह बारहठ जैसे व्यक्तियों के सहयोग से लगभग पच्चीस हजार वीर-गीतों का संग्रह उक्त संस्थान में करवाया। साहित्य और इतिहास जगत् के लिये यह संग्रह बहुत उपयोगी है।

प्रतिष्ठान की ओर से राजस्थानी-साहित्य के सम्पादन - प्रकाशन की योजना बनी तो राजस्थानी-वीर-गीत-संग्रह संबंधी सम्पादन - प्रकाशन कार्य को भी महत्व दिया गया। परिणाम-स्वरूप इन गीतों के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं और यह तीसरा भाग पाठकों के हाथों में पहुंच रहा है। वीर-गीत-संग्रह संबंधी इस योजना पर आगे भी कार्य चालू है और आगामी भाग भी पाठकों के सम्मुख शीघ्र ही प्रकाशित होकर पहुंचेंगे।

राजस्थानी-वीर-गीत-संग्रह भाग ३ के प्रारंभ में ३ गीत राम और कृष्ण संबंधी हैं। तदुपरान्त कछवाहा, शेखावत, राठौड़, सीसोदिया, झाला, चौहान और जाट वीरों से संबंधित गीत शब्दार्थ सहित दिये गये हैं। परिशिष्ट में ऐतिहासिक टिप्पणियां तथा गीतानुक्रमणिका है।

इन गीतों के साथ इनके कर्त्ता अनेक राजस्थानी कवियों के नाम भी प्रकाश में आये हैं जिनमें जोरावरसिंह (गीत सं० १), मुरारीदास बारहठ (सं० २), गोपाल मीसण (सं० ४), ईसरदास सांदू (सं० २१), वनजी खिड़िया (सं० २५), कुंभा दसोंधी (सं. २६), नवलराम कविया (सं० ३१), जीवण मोतीसर (सं० ३८), कवि हणूंदान (सं० ४०), गंगाराम देभल, नेतड़वास (सं० ४२), देवा महियारिया (सं० ५६), माला, सांदू, भदौरा (६५, ६६), अनोप सांदू (६७), पदमा सादूवण (सं० ७०, १४०), द्वारकादास दधिवाड़िया (७६), कीरतदान बारहठ (७८), गंगाराम (८०), कल्ला जीवण (८४) आसा सिंढ़ायच (८५), जाला सांदू (९६), बना खिड़िया (१०२), नांदण बारहठ (१०४), बद्रीदास खिड़िया (११९), तेजराम आसिया (१२०), आदि नाम हैं। कविवर हुक्मीचंदजी खिड़िया, कविराजा बांकीदासजी, वृन्द और महाराजा बहादुरसिंहजी जैसे प्रसिद्ध कवियों के भी अनेक गीत इस संकलन में हैं।

राजस्थानी डिंगल-काव्य में 'गीत' छन्द दोहे के समान लोकप्रिय रहा है। गीत छन्द के भेद एक सौ से भी अधिक हैं और इस छन्द से संबंधित शास्त्रीय ग्रंथों की संख्या सत्रह हैं। प्रत्येक प्रमुख चारण अथवा अन्य संबंधित कवि ने कम-अधिक संख्या में गीतों की रचनाएं की हैं। गीत-रचना कवि की कसौटी रहा है और आज भी राजस्थान, गुजरात तथा मध्य-प्रदेश में अनेक गीत-कर्त्ता कवि वर्तमान हैं।

अद्यावधि ज्ञात-अज्ञात हजारों ही भारतीय वीरों के चरित्र इन गीतों में हैं और भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के अनेक अंधकार पूर्ण पक्ष इन गीतों के प्रकाश में आलोकित हो सकते हैं। इस प्रकार न केवल साहित्यिक दृष्टि से वरन् ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी इन गीतों का महत्व है।

राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के अनेक अन्धकारमय उपेक्षित, धूलधूसरित कोनों में दबी विनाश की ओर अग्रसरित ग्रंथ निधियों में अथवा वृद्ध जानकार व्यक्तियों की स्मृति में विराजमान इन अगणित गीतों का विधिवत् संग्रह, अध्ययन, सम्पादन और प्रकाशन-संबंधी कार्य अखिल भारतीय महत्व का एक वृहद् सांस्कृतिक आयोजन है। तदर्थ संबंधित समस्त संस्थाओं और व्यक्तियों को सक्रिय होना है।

विद्वान् सम्पादक ने अपनी भूमिका सहित इस संस्करण को पाठकों के लिये उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत वीर-गीत-संग्रह के सम्पादक राजस्थानी भाषा-साहित्य की डिंगल-शैली के विशेष ज्ञाता हैं। इन्होंने प्रत्येक गीत का हिन्दी सारांश देते हुए शब्दार्थ और टिप्पणियाँ दी हैं जिनसे, गीतों का अर्थ समझने में सहयोग मिलता है।

श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत इस कार्य को पूरी रुचि और योग्यता से सम्पादित कर रहे हैं। तदर्थ इनका प्रयास सराहनीय है। विश्वास है कि आगे और भी अधिक समय देकर इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने में यथाशक्य योग देंगे। इस पुस्तक को सुचारु रूप में प्रकाशित करने में प्रतिष्ठान के प्रकाशन विभाग के सहयोगी श्री गिरधरवल्लभ दाधीच का परिश्रम उल्लेखनीय है।

डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
उप निदेशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

भूमिका

राजस्थान भारत का वीर प्रान्त है। इस भूमि का इतिहास वीरता तथा उदारता की अनुपम गौरव गाथाओं का इतिहास है। यहाँ के महामानवों ने युगों तक असामाजिक तत्वों के विरुद्ध संघर्षरत रह कर भारतीय संस्कृति, भारतीय मर्यादाएँ और मानवीय जीवनादर्शों के लिए सतत अपने प्राणों का बलिदान किया है। स्वतंत्रता, कर्त्तव्य-पालन और परम्परित कुल गौरव-रक्षा के निमित्त अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने की परम्पराओं से राजस्थान का इतिहास ओतप्रोत है। राजस्थान का गौरव यहाँ की कला, संस्कृति, साहित्य और इतिहास में प्रतिबिम्बित हुआ है। जैसा शौर्य और त्याग राजस्थान के वीरों ने दिखाया है वैसी ही ओजस्वी सशक्त वाणी में राजस्थानी कवियों-साहित्यकारों ने उसे अभिव्यक्त किया है। बलिदान और उत्सर्ग का वह स्वर राजस्थानी (डिंगल) भाषा में सहज मुखरित हुआ है। पद्य में प्रबंधकाव्यों, दोहों, सोरठों, छप्पयों, झमालों और विविध गीत छंदों में तथा गद्य में वचनिका, वारता, दवावैत, ख्यात और वात में अंकित मिलता है। पद्य साहित्य में गीतों में तो वीर-वर्णन जिस कौशल और वैविद्य के साथ वर्णित पाया जाता है वह सर्वथा अनूठा और विस्तृत है। गीतों के अध्ययन से आभासित होता है कि मानो गीत छंद प्रकृतितः वीराख्यानों के लिए ही निर्मित हुए हो। वस्तुत राजस्थानी का यह छंद अपना निजी घर का छंद है। प्रान्तीय भाषाओं में गुजराती के अतिरिक्त पंजाबी, मराठी, बंगला, आसामी और उड़िया आदि किसी भी भाषा में गीत छंद का प्रयोग नहीं मिलता है।

वीर चरित्र वर्णन में युद्ध और योद्धा का सर्वाङ्गीण चित्रण गीतों में उपलब्ध होता है। युद्धस्थली, सैन्य-संयोजन, युद्ध-सज्जा, शस्त्र, वाहन, दुर्ग-किलों के वर्णन के साथ साथ योद्धाओं की मनोदशा, उनकी युद्ध के प्रति कामना, समाज में उनके प्रति आदर की भावना, जय-विजय और पराजय तथा जीवन-मृत्यु के प्रति उनका दृष्टिकोण बखूबी गीतों में अभिव्यक्त हुआ है। राजस्थानी गीत साहित्य में विजय को आनन्द, मृत्यु को स्वर्ग सौख्यदाता और कायरता पूर्वक जीवन-रक्षा को कलंक के रूप में अंकित किया गया है। स्वकर्त्तव्य–पालन करते हुए जूझने वालों की प्रशंसा और कायरता पूर्वक रणस्थली से पलायन करने वालों की कटु भर्त्सना की गई है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया है कि गीतों में वीरता और उदारता का विविध रूप में आलेखन हुआ है। काव्य, कल्पना और इतिहास की त्रिधारा गीतों में गुंजित है।

काव्य रसिकों और इतिहास-वेत्ताओं के लिए गीतों में समान रूप से अभिलषित सामग्री प्राप्त होती है। भारतीय संस्कृति के अनेक तत्व गीतों में सुरक्षित मिलते हैं। धरती प्रेम, शरणागत रक्षा, कुल-गौरव का अनुसरण, वचन-निर्वाह, स्वामिधर्म और प्रतिशोध भावना प्रभृत्ति का गीतों में बहुविध वर्णन प्राप्त है। शरणागत रक्षा के लिए अकारण अपने जीवन को संकटार्पित करने की गौरवमयी घटनावलियाँ गीतों में अनेकशः वर्णित है। राजस्थान में शरणागत रक्षा को महान् धर्म माना गया है। रणथंभौर के शासक राव हम्मीर चौहान का बलिदान तो शरणागत रक्षा का अद्वितीय उदाहरण है। राजस्थान में अनेक योद्धा परिवारों की शरणागत रक्षा के लिए परम्परित प्रसिद्धि रही है। अकेले मेवाड़ राज्य में ही सादड़ी, गोगूंदा, देलवाड़ा. कोठारिया, वेदला, पारसोली, सलूम्बर, देवगढ़, वेगू, आमेट, भींडर, बांनसी, घांणेराव, बदनौर, कानौड़ और बीजोलिया आदि ऐसे ठिकाने रहे हैं, जिनके यहाँ बड़ा से बड़ा राजकीय अपराधी भी जा पहुँचने पर शाकीय कोप से सुरक्षित बच पाता था। यदि राजा उनके शरणागत रक्षा के अधिकार को चुनौती देने का दुस्साहस कर बैठता था तो वे राजाज्ञा का उल्लंघत कर राजकीय सेना से जूझ मरते थे, पर शरण में आए को न राज्य के सुपुर्द करते और न कहीं अन्यत्र भाग जाने देते थे। मेवाड़ में 'शरण' के स्वत्व प्राप्त ठिकानों का निम्न प्रकार उल्लेख मिलता है—

सरणां ईधक सादड़ी, गोघूंदो घर घल्ल ।
देलवाड़ो वंको दुरग, झाला खत्रवट झल्ल ।।
कोठारचो अर वेदलो, पारसोली भुजपांण ।
मांझी धर मेवाड़ में, चित वंका चौहाण ।।
दीपै सलूम्बर देवगढ़, वेघू नाथ विचार ।
अधपतिया आमेट का, चूंडां सरणा चार ।।
भींडर दूजी वांनसी, महपत सकतां मौड़ ।
घांणेराव वदनौर गढ़, राण धरा राठौड़ ।।
कांनौड़ ओपै करां, सरणां सांरगदेव ।
झेल पंवार वीजौलिया, भणिया मालम भेव ।।

इसी प्रकार जोधपुर में भी अनेक संस्थानाधिकारियों को 'शरणा' का अधिकार प्राप्त था और वे इस अधिकार का उपयोग खुले रूप में करते थे। जागीरदारों के अतिरिक्त चौपासनी, महामन्दिर और उदयमंदिर आदि मंदिर-मंठों के महन्तों तक को यह अधिकार मिला हुआ था। जोधपुर के महाराजा मानसिंह के कोप से बचने के लिए संवत् १८७७ वि. में खीची बिहारीदास खेजड़ला ठाकुर शार्दूलसिंह भाटी की शरण में चला गया। ठाकुर शार्दूलसिंह भाटी अपने योद्धाओं सहित महाराजा मानसिंह की सेना से लड़कर मारा गया किन्तु बिहारीदास को महाराजा के सुपुर्द नहीं किया। शार्दूलसिंह की शरणागत रक्षा की महिमा गीत में इस प्रकार उदीर्ण है—

काज सरणायां भूप सिर रा वळी, दुजड़ धन रावळी कठै दांई ।
बाप रिव ठांभियौ घड़ी दोय बाजतां, ताहि सुत ठांभियो पौहर तांई ।।
झड़ंती आग वज्राग तप झेलणां, ढाल सूं प्रबळ गिरमेर ढकणां ।
भाटियां जेम प्रथमाद रा भूपता, राव सरणाविया अेम रखणां ।।

सन् १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम के राजस्थानी योद्धा ठाकुर कुशालसिंह चांपावत आऊवा का अंग्रेजों एवं जोधपुर की सेनाओं ने पीछा किया तब वह मारवाड़ का त्याग कर मेवाड़ के कोठारिया के रावत जोधसिंह के पास गया। जोधसिंह ने मेवाड़ तथा अंग्रेज सत्ता के कोप की बिना पर्वाह किए ठाकुर कुशालसिंह को अपने यहाँ ससम्मान अभयदान दिया। रावत जोधसिंह के उस साहस का गीत में सगौरव वर्णन हुआ है—

डांखिया धसल रवतेस डग डौलड़ा: पीथहर चौलड़ा अमल पीधा ।
ढाबतां सरण बागा जगत ढौलड़ा, कौड जुग बौलड़ा अमर कीधा ।।

राजस्थानी समाज में वैर-शोधन को बड़ा महत्त्व दिया गया है, जो संतति अपने पिता, भ्राता अथवा मित्र-कुटुम्बी का प्रतिशोध लिए बिना मर जाती है, वह अपयश की भागीदार समझी जाती हैं। शेखावाटी के महरौली के ठाकुर जोगीदास ने अपने भ्राता दलपतसिंह का बदला लेने के लिए जयपुर राज्य की सेना से युद्ध लड़ा था और शत्रुओं को अपार क्षति पहुँचा कर वीरगति प्राप्त की थी। एक गीत में प्रतिशोध का स्वर स्पष्ट व्यक्त हुआ है।

मारे बैरिया अखूटी आव भूपाळां खांडियौ मांण,
तेग धारे नकौ पांण छाडियौ तमाम ।
वीर राव छ्ळां जाग ताडियौ 'दलाळा' रै वैर,
राड़िगारे उखेळो माडियौ जोगीराम ।।
खेडै फौजां चहुंव्ळां फतै आसमान खाटै,
काहुळां नीघसै जांगी ऊपटे क्रोधार ।
केवै लाग भ्रात रै नाथ रै आगे बळाकारी,
जोध रौ धूंखळा करै हमेसां जोधार ।।

जो स्वामी अपनी भूमि, प्रजा-धन और दुर्गादि रक्षा स्थानों को बिना मरे शत्रुओं को सौंप देता है, वह स्वामी कहलाने का अधिकारी नहीं माना जाता है। उसे समाज में सदा सर्वदा लज्जाहीन सम्बोधित कर तिरस्कृत किया जाता है और जो दुर्ग रक्षा करते हुए मारा जाता है वह प्रातः स्मरणीय गिना जाता है। मानपुर दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त करने वाले दलपतसिंह शेखावत पर कथित गीत में तो योद्धा

नाम उसी का सार्थक चित्रित किया गया है जो दुर्ग रक्षा के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करता है—

मरद बोलियौ अेम खग तोल आपह मलौ,
मन अडर यसो पलौ पकड़े मीच ।
कमळ धड़ ऊपरां थकां सूंपै किलौ,
भड़ जिकां दलौ लानत कहै भीच ।।
अभंग छळ राव आंबेर दळ आवतां,
उजाली सरव सेखावतां ओध ।
जमी न पड़ै अगुट कर दुरंग जावतां,
जोध सुत रावतां न मानैं जोध ।।
प्रवाड़ा जीत साकौ कर मानपुर,
सधर गिरमेर दीठौ सवांहीं ।
निलज भुरजाळ भिळतां जकौ सिर न दै,
नरां हदमाल हर बदै नांहीं ।।

ऐसे वीर योद्धा वैरियों द्वारा घिर जाने पर कायरों की भाँति क्रन्दन नहीं करते हैं और न साहस त्याग कर जीवन-रक्षा के लिए किसी प्रकार का संधि-समझौता ही करते हैं, वरन् शत्रुओं को ललकार ने के साथ साथ किले को भी अविजित रखने के लिए आश्वस्त करते हैं। ठाकुर मोहवतसिंह शेखावत दूजोद के गीत में किले का मानवीकरण करते हुए कवि ने रक्षक मोहवतसिंह द्वारा कहलवाया है—

सबळ लूंविया आणि दळ साहिपुर सांवठा,
वळौवळ वीररस भड़ां वसियौ ।
चळ विचळ हुवै मत दुर्ग मोवत चवै,
कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ ।।

और तब ऐसे वीर रणस्थली में जूझ कर स्वामी को विजय, तलवार को मांस पिण्ड, शिव को माला के लिए मस्तक, रण चण्डी को रुधिर और वराकांक्षिणी अप्सरा को पति प्रदान कर संसार में अपनी कीर्ति को अमरता प्रदान करते हैं। कुमार कर्णसिंह शेखावत के गीत में दो द्वालों में पढ़िए—

पति असमर संकर सकति अपछर, विजय पिंड सिर रुधिर वर।
कारण पंच पूगौ भड़ करणौ, कळह रिमांगां हठ कंवर ।।
स्याम सार सिव सिवा सुरंगना, रिण जै अंग घू रत भतार।
आरण सजि अरि भंजि उमाहत, विलगौ पंच कारण उणतार ।।

स्वधर्म का पालन करते हुए मृत्यु का आलिंगन करने वाले वीरों की मृत्यु पर शोक अथवा रुदन करने की राजस्थान में परम्परा नहीं रही है। ऐसी वीर मृत्यु मांगलिक कही गई है। राठौड़ वीर पृथ्वीराज जैतावत के रण-निधन पर उसकी पत्नि के विलाप करने पर कवि ने उसके पति के कुल-धर्म का स्पष्ट स्मरण करवाते हुए कहा है—

राणी म रोइ पीथौ रण रीघल, रिण गा छाडि जिके भड़ रोइ।
घण जूझै रिणमाल तणै घरि, हुवै मरण तिम मंगळ होइ॥
पीथल तणौ म करि पछि अछि, दिग गा तजि करि तांह दुख।
आदि तै अेह अखा घरि आगै, सार मरण घण घणौ सुख॥

वीरगीतों में उपर्यंकित सांस्कृति विशिष्टताओं के अतिरिक्त योद्धा के आतंक भय, प्रताप और प्रभाव अनेक गीतों में सबल भाषा में अभिव्यक्त हुआ है। आमेर के कछवाहा नरेश मिर्जा राजा जयसिंह से बादशाह औरंगजेब बड़ा भयभीत रहता था। वह उसे न दिल्ली से दूर रखने में अपनी खैर समझता था और न पास रखने पर चैन से रह सकता था। गीतकार ने औरंगजेब की द्विधाग्रस्त मन स्थिति का निम्नलिखित रूप में तथ्यपरक वर्णन किया है—

अत अळगो ठाढ़ विलागै आतम, अत नैड़े प्राजळे अथाह।
औरंगसाह अडर आंवेरो, सीत तणौ पावक जैसाह॥
दूरं ठरै ढूकड़े दाझै, रूकां मुख होमवां रिम।
रत हेमन्त वसन्त गत राजा, जवन जाळवै जळण जिम॥

मिर्जा राजा जयसिंह जैसा वीर था उसी के अनुरूप प्रवीण राजनीतिज्ञ शासक भी था। दिल्ली के बादशाहों को वह अपनी कुशल नीति एवं विचक्षण बुद्धि से चौसर के खेल की गुट्टिकाओं की भाँति क्रीड़ा करवाता था—

करग खाग पासौ भरत खंड चौपड़ करै,
दुगम खेला मिले भड़ दुबाहां।
देयतौ धाउ घण घाउ जैसिंघदे,
सारि जिम रमाड़ै पातसाहां॥
परठीजै जोड़ थाणां हिय पारके,
डांण आराण कीजै इसा डाउ।
पाधरै थापि उथापिजै असपति,
रमै रामति तिकां कूरमां राउ॥
ऐवहा खेल खेलै भुजां आपरा,
मीर रद हुआ मेल्हे मछर मांण।

महाजुधि मारि वीछोड़िजै मेलीजै,
सांफळे सौ गढ़ां जेम सुरतांण ।।
तिसौ अगजीत खेलार माहव तणौ,
हाथ बळि खळां सिरि चहोड़े हारि ।
ऊठवैं राह बे मेछ वाजी अखिल,
जगत जेठी न्रपत जैन जुवारि ।।
प्रथी सिणगार अवतार आंबेर पति,
प्रगट रण चाचरां खाग पूजौ ।
दाउ ऊपर हुवौ रहै राहां दहूं,
दिगविजै थकौ जगतेस दूजौ ।।

शस्त्र, योद्धा का अभिन्न साथी और युद्ध का अनिवार्य उपकरण होता है। इसलिए राजस्थान में धन की देवी दीपमालिका की भाँति युद्ध की देवी चण्डिका तथा शक्ति के प्रतीक शस्त्रों की पूजा की जाती है। शस्त्रों में तलवार, भाला, सांग, सांत्रल, तोप, तीर, गदा, गुर्ज, त्रिशूल, कटार और तुक्का आदि का गीतों में वर्णन हुआ है। यहाँ तलवार पर रचित गीत के दो द्वाले देखिए—

अडर ओप आराण कुरखेत वडवा अगनि,
सक तड़िल कांवड़ा जोड़ साथा ।
हाथि जिकां भाराथ नाराज पिसणां बिहंड,
हद घड़ी काळ उसताज हाथां ।।
कळ धमणि सेस फूकां जहर कोयलां,
अरड़ अहरणि कमठ पिठि अवियाट ।
धरणि कर दळावत जका असिमर धजर,
घण घड़ी जजर नोखै घाट ।।

शस्त्रों की भाँति ही योद्धा के लिए वाहनों का भी असंदिग्ध महत्त्व है। वाहनों में घोड़ा, हाथी, ऊँट और रथादि का गीतों में आलेखन हुआ है। रतलाम के राजा पद्मसिह राठौड़ द्वारा गीतकार को प्रदत्त एक घोड़े का गीत के प्रथम द्वाले में वर्णन है—

न्रतां लागियां संगीत ताळां परीसै सुभावां नचै,
खुरीसै चुभावां नाळां सुमां घुखै राव ।
सकौ मोल तरीसै हजार आठ दूण साजां,
राजा इसौ नीलो तूंही बरीसै हयराव ।।

युद्धप्रिय राजस्थानवासियों में सिंह, सूअर, व्याघ्र और हाथियों की लड़ाई तथा उनके आखेट के प्रति बड़ा अनुराग रहा है। आखेट में वन्य-जीवों की स्वच्छंद

प्रकृति, क्रिया-कलाप और घात-प्रतिघात का कौतूहल वर्द्धक वर्णन गीतों में उपलब्ध होता है। यहाँ महाराणा स्वरूपसिंह द्वारा किए गए आखेट के वर्णन के कुछ द्वालों में सिंह का स्वरूप, गति, आकृति आदि दर्शनीय है—

बावरैल डालामथो रसा पालां वेड़ वाळी,
कवल्लां अखाड़ वाळो रेड़वाळो काथ ।
हैजम्मा विरोळी केती जञ्जदूतां हेड़वाळो,
भद्रजात्यां कपोळां भड़ेच वाळो भ्राथ ।।
भाळकी संपासी चक्खां भाळवां भंजातो आयौ,
हाथळां मंजातो आयौ हवद्दां हङ्कूर ।
ऊमै ओळां हूंतां रोस भाळका वभातो आयौ,
गिरंदां गंजातो आयौ नौहत्थौ गङ्कूर ।।

गजों की आखेट और परस्पर लड़ाइयों का गीतों में ओजस्वी वर्णन हुआ है। लड़ाये जाने वाले हाथियों को पहिले प्रोत्साहित कर क्रुद्धार्थ तैयार किए जाते थे। कभी कभी मदिरा पिला कर उन्मत्त भी बनाए जाते थे। फिर खुले मैदान में उन्हें छोड़े जाते थे। यह राजकीय प्रमुख मनोरंजन होता था। हजारों नर-नारियों के देखते यह घातक क्रीड़ा प्रारम्भ की जाती थी, जिसमें कभी कभी महावतों और दर्शकों तक को अपने प्राण गँवाने पड़ते थे। और उनमें से जब कोई एक हार जाता था तब जलती हुई अग्नि की चर्खी पैरों में चला, भालों से घायल कर अथवा दूसरे मस्त हाथी को छोड़ कर कठिनता से वश में किया जाता था। यह राजकीय मनोरंजन बड़े उत्सव के साथ सम्पन्न होता था। उदयपुर के महाराणा भीमसिंह और जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह के हाथियों की लड़ाई के अनेक गीत बड़े प्रभावोत्पादक भाषा में उपलब्ध होते हैं। महाराणा भीमसिह के हाथियों की लड़ाई एक गीत का विषय बनी है—

खूटा परांथी अनंता देहां उरांथी उखेड़े खंभ,
कपोळां भारांथी मद्दां जूटा काळकीट ।
जञ्ज दूत तणा साथी तूटा गैण वज्ज जेम,
राण वाळा हाथी छूटा जूटा आंकारीट ।।
रसम्मी उगन्ती वेळां सोभन्ती सिंदूरा रेख,
स्वेतदन्ती धूति चंद गिरंद्दां समान ।
कुदरत्ती हुवा चक्खां रत्ती भाळ पूळा क्रोध,
चीतौड़ पत्ती रा वागा हसत्ती चौगान ।।
हैदल्लां हमल्लां जूभ मल्लां बाज हाक,
पोगरां नवल्लां भल्लां मल्लां पांण ।

आदसल्लां दातां झींक आडीया बगल्लां ऊठै,
अडील्लां जेण वल्लां गजां मचायौ आराण ।।
अछक्कां रदन्नां तन्ना वदन्ना भचक्का उठै,
मचक्कां लचक्कां जंमी थरक्के समांम ।
हको हक्कां खांडेराव चक्रवा पसाव हाथी,
सारीसा धधक्का धक्का जूटा वे संग्राम ।।

लागा डांण अद्रिगात अथागा लंगरां लोह,
खेध पै बिलागा बौम आगा जेम खांत ।
गाजता पुळिंद्र जेम सामंद्र सा पुत्र गोती,
भद्रजाती नागा जोगी वागा ईसी भांत ।।

चठ्ठां वैभीत रट्टां दुकट्टां लोयणां चोळ,
उभै छटा घटा सक्र गात में अनूप ।
लंगरां रठ्ठां पै अनूठा कट्ठा आडी लौह,
राण वाळा रूठा फील जूटा ईसै रूप ।।

धत्तां धत्तां धत्तां धत्तां मावतां पूंतारै धीठ
तत्था वेखि मत्ता मत्ता भिड़े निराताळ ।
भेखतां घुमंता वे वरूथां यूं अखाड़े वागा,
छत्रधारी भीम वाळा उमंता छंछाळ ।।

सिंदूरां कपोळां वीच हवोळां खळक्के श्रोण,
गिरंदां गैतूळां मच्चै वगूळां चौगान ;
दौवळां हीलोळा टौळां श्रौळां दौळां प्रथी देखै,
मचोळा गयंदां वाळा धूजै आसमांन ।।

धूवांधोर चरक्खी सपंखी छूटा धरा धूम,
भयाणंखी देख चक्खी ओछारे सुभाळ ।
कौमंखी गाजिया फील चोळ चक्खी पब्बै काळा.
आंवळां घङूस मुखी वेपखी उजाळ ।।

आदीतां वे घड़ी हूंतां बीतां निसां जांम उभै,
मैंभीता न छंडै पांव मीता यूं भयांन ।
पीलवानां करै दूर लगाड़े पलीतां पूळा,
जीता खांडेराव दहूं बदीता जहांन ।।

लाखां द्रव अंवारै उतारै लूंण जड़े लोह,
अनंतां सोव्रन्ना तन्ना सिंगारे सरूप ।
बापूकारै पूतारै आंण ठांण बांधा बेहूं,
राण वाळा हाथी बीज झाळ रूप ।।

इस प्रकार वीर गीतों में वर्णन-वैविध उपलब्ध होता है। यहाँ गीतों के वर्ण्य विषय की थोड़ी-सी बानगी मात्र प्रस्तुत की गई है।

इस संकलन में कुल १४१ गीतों को सम्मिलित किया गया है जो राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी और मेरे निजी संग्रह से चुने गए हैं। कुछ गीत कुंवर सवाईसिंह धमोरा आकाशवाणी जयपुर और कुंवर प्रतापसिंह राठौड़ तिलाणेस द्वारा भी प्राप्त हुए हैं। अतः मैं इन संस्थाओं तथा कृपालु सज्जनों का आभारी हूँ।

इस संग्रह के प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करने तथा सम्पादन में महत्त्व-पूर्ण दिशा-निर्देशन करने के लिए राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के अवकाश प्राप्त निदेशक श्रद्धेय डा. फतहसिंह तथा वर्त्तमान उपनिदेशक डा. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। छंदानुक्रमणिका तैयार करने में कुं. रघुवीरसिंह शेखावत का सहयोग मिला है।

—सौभाग्यसिंह शेखावत

चौपासनी
१५ जून, १९७२

राजस्थानी-वीरगीत-संग्रह

भाग-३

१. गीत राम-रावण जुद्ध रौ सुपंखरौ

सेना ऊतरे समंदे पार पदम्मे अठारह संहस,
वहस्से निसांण किनां गाजियौ बारांण ।
बेद बाण दूण लाख डंडाळां लंकाळ बजे,
असुरां सुरांह मांह मांचियौ आराण ।।१।।
चढ़ै दीठि मूंठि चाप कैमराणां गुणां चढ़े,
झड़ै आगि अरावां गैणाग चढ़े झाळ ।
चाव चढ़े बारंगां विमाणां गिरव्वांण चढ़े,
क्रोध चढ़े राम राण कंध चढ़े काळ ।।२।।
व्याळ नूं जगायौ सोर विडूजा चलायौ वज्र,
सींघळी अधायौ कै सुणायौ वीर साद ।

---

१. गीतसार—उपर्युक्त गीत मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र और लंकपति राक्षस राज रावण के युद्ध पर रचित है। गीतकार ने कथित युद्ध में रामायण के कथानक के आधार पर यह वर्णन किया है। गीत में लिखा है कि समुद्र की गर्जना सदृश युद्ध वाद्यों का घोष कर अठारह पद्म संख्यक राम सेना ने लंका पर आक्रमण किया। देव तथा दानव योद्धाओं में युद्धारम्भ हुआ।

---

१. वहस्से—जोशीले वजते हैं। निसांण—नगाड़े, निशान। किनां—किंवां, अथवा। बारांण—समुद्र। दूण—द्विगुने। डंडाळां—दण्डक, डंडे। सुरांह—देवताओं। मांचियौ—छिड़ा, प्रारम्भ हुआ। आराण—युद्ध।

२. दीठि—दृष्टि। मूंठि—मुष्टि। कैमराणां गुणां—धनुषों पर प्रत्यंचाएं। झड़ै—गिरे, बरसती है। आराबां—तोपों की। गैणाग—गगन, आकाश। झाळ—ज्वाला। चाव—उत्साह, चाह। बारंगां—अप्सराएं। विमांणां—विमानों पर। गिरव्वांण—देवता। चढ़े—आरूढ़ हुए। राण—रावण। कंध चढ़े काळ—कंधों (सिर) पर मृत्यु चढ़ आई, मृत्यु घूमने लगी।

३. व्याळ नूं—सर्प को। सोर—बारूद। विडूजा—इन्द्र। सींघळी—सिंह। अधायौ—अतृप्त, भूखा। कै—अथवा। साद—ध्वनि, नाद।

धुरजटी जटां हूं अधायौ वीरभद्र आयौ,
देव दळां ऊपरां यूं आयौ मेघनाद ।।३।।

कोपाणां लखण वाणां वोव रांणां प्रळै काळ,
बंदरांणां अंगदाणां रीछांणां बेबाह ।
काळ रूप राकसांणां भूखाणां बछाणां केळ,
गौतराणां तराणां मूकाणां गजगाह ।।४।।

मेदनी मचक्के सेस लचक्के उचक्के मेर,
ताम रूप हणूं कूंभ रचक्के रवतेस ।
वोक नूं पिछक्के काळी उभक्के बिभक्के वैल,
तठै मारतंड रुक्के भैचक्के भूतेस ।।५।।

लड़ंदां जुड़ंदां रुण्ड टूटि धू गड़ंदां लैत,
पोगरा उड़ंदां खागां अलंगां पड़न्त ।
छड़ाळां घड़ाळां पार पन्नाळां रताळा छूटे,
लंकपत्ती वाळा जोध स्याम रा लड़न्त ।।६।।

धुरजटी जटां हूं—शिव की जटा से । अधायौ—अतृप्त, भूखा । देव दळां—देवताओं के समूह पर । यूं—यों, इस प्रकार ।

४. कोपाणां—कोप किया, क्रोधान्वित । लखण—लक्ष्मण । वोव रांणां—वायुराणा, रावण को डुबाना । बंदरांणां—वानर समूह, कपिदल । रीछांणां—ऋक्षदल । बेबाह—दोनों हाथों से प्रहार करने वाले । भूखाणां—भूखे । केळ—केलि, युद्ध । गोतरांणां—रावण गोत्रीय । तराणां—तरुओं । मूकाणां—मुक्त करने लगे, छोड़ने या प्रहार करने लगे । गजगाह—गजग्राह, युद्ध ।

५. मेदनी—पृथ्वी । मचक्के—धसकने लगी । सेस—शेषनाग । लचक्के—ऊपर-नीचे धसकने का भाव, लचकना । उचक्के—ऊपर उठे, स्थान च्युत हुवे । मेर—सुमेरु गिरी । हणूं कूंभ—हनुमान और कुम्भकर्ण । रचक्के—जूझने लगे । रवतेस—रावत पदवी वाले, योद्धा । वोक—दोनों हाथों की अञ्जली । काळी—कालिका देवी । उभक्के—उछले, कूदे । विभक्के—चौंकता है । वैल—शिव का वाहन नंदि । तठै—वहां । मारतंड—सूर्य । रुक्के—रुके, ठहरे । भैचक्के—भयचकित, विस्मित । भूतेस—शिव ।

६. लड़ंदां—लड़ते हैं । जुड़ंदां—जुटते हैं, भिड़ते हैं । धू—मस्तक । गड़ंदां लैत—लुढ़कते हैं । पोगरा—शुण्डदण्ड । उड़ंदां—उड़ते हैं । खागां—तलवारों । अलंगां पड़न्त—दूर जाकर गिरते हैं । छड़ाळां—भाले । घड़ाळां—शरीरों के, घड़ों के । पार—उस ओर, इधर से उधर निकल कर । पनांळां—प्रनाले, नाले । रताळा—रक्त के । जोध—योद्धा । स्याम रा—श्री रामचन्द्र के, स्वामी के ।

बीस भुजा गदां छूटां त्रिसूळां करन्त वाह,
रूढ़ड़ौ छंछाळां छेड़ि ऊधरो हंकारि।
नेत्राळां कराळां झाळां मुखाळां बक्कतो नांमी,
रीसके कोमंड करां खेंचियौ मुरारि ॥७॥

पावक्का ज्वाळ में अभ्र अनंळां सोखंत पोख,
गहै मंछ जाळ नागां आछंटे खगेस ।
अंधकार चंत निद्रा सोखना बिखाळ अंवी,
जारां-अंत बाण रांण मारियो जगेस ॥८॥

हुवौ जै जै कार त्रहुं लोक में उछाह हुवौ,
लभे देवां नरां नागा गंदफां मिळाव।
मिळे पाट बभीखण दसाकंध मोख मिळे,
आंणदे हो सिया राघौ अजोधिया आव ॥६॥

—जोरावरसिंघ रौ कह्यौ

---

७. बीस भुजा–रावण की बीस भुजाएँ। गदा–गदा नामक शस्त्र। त्रिसूळां–त्रिशूल शस्त्र। वाह–प्रहार, चोट। छंछाळां–हाथियों को। छेड़ि–आगे बढ़ाकर। ऊधरो–ऊपर, ऊँचा। हंकारि–हांककर। नेत्राळां–नेत्रों से। झाळां–ज्वाला, क्रोधाग्नि। मुखाळां–मुखों से। वक्कतो–कहता, बकता। रीस–क्रोध, कोप। कोमंड–धनुष, कमान। करां–हाथों से। मुरारि–श्री रामचन्द्र ने।

८. पावक्कां ज्वाल–अग्नि-ज्वाला। अभ्र–बादल, आकाश। अनंळां–वायु, अग्नि। गहै–पकड़े। नागां–सर्पों। आछंटे–दूर फेंके, पछांट देकर भूमि पर पटके। खगेस–गरुड़। जारांअंत–जरान्तक, नाश, मृत्यु।

६. उछाह हुवौ–उत्सव हुआ। गंद्रफां–गन्धर्वों। मिळाव–मिलन। पाट–सिंहासन। दसाकंध–रावण को। मोख–छुटकारा, मोक्ष। सिया राघौ–सीताराम, सीता और रामचन्द्र। अजोधिया–अयोद्धा।

२. गीत काळी नाग नै क्रिस्ण रा जुद्ध रौ

सोहै बांधियां जङ्लो सीस कङ्लो करग्गां किया,
ऊघङ्लो नाग रो जङ्लो भाग ग्राज ।
ग्रङ्लो ग्रांगणे ऊभो लङ्लो सो रोस लियां,
कांनूङो कङ्लो बोलै दङ्ला के काज ॥१॥

घणी मिळै नागणी सुभागणी सुहागणी सी,
मूंणी यूं पूछणी ग्रायो जायो कुंणी मात ।
ग्रैसो फुंणी सुंणी बाला कुंणी सु जगाणी ग्रावै,
तंत्र मंत्र हणी जको ग्रंते तणी घात ॥२॥

वोलियो ग्राणंद कंद नंद रो (हूं) कहाऊं बेटो,
चराऊं मुकंद धेन जसोदा रो चंद ।
मोरी देवौ गेंद काये जगावौ नागेन्द्र मांटी,
छोडो फंद रंदगारी नारियां रा फंद ॥३॥

---

२. **गीतसार**— इस गीत में भक्तकवि ने श्रीकृष्णचन्द्र की नाग दमण लीला का वर्णन किया है। वालक कृष्ण कालीदह में ग्रपनी कन्दुक के लिए प्रवेश करता है ग्रौर नाग को गेंद का चोर मान कर उससे युद्ध कर नाथ डाल लेता है। लिखा है कि वह शीश पर जटाग्रों को वाँधे एवं हाथों में कर-भूपण धारण किए शोभित हो रहा था ग्रौर नाग के वहां ग्रांगन में रोप धारण कर गेंद के लिए कटु वाणी बोलने लगा।

---

१. सोहै—शोभित होता है। वांधिया—वाँधे हुए। जङ्लो—केशों को, बालकों के सिर के केशों को बांधकर रखते हैं उसे जङ्ला कहते हैं। कङ्लो—कड़े, हाथों में पहनने के कड़े जो स्वर्ण ग्रथवा चांदी के होते हैं। करग्गां—हाथों में। ऊघङ्लो—उघड़ना, खुलना, प्रकट होना। ग्रङ्लो—हठीला। ऊभो—खड़ा। लङ्लो सो—लड़ने वाला-सा। कांनूड़ो—कन्हैया, श्री कृष्ण। कङ्लो—कठोर, कटु। दङ्ला—वड़ी गेंद।

२. घणी—वहुत। नागणी—नागिनें। सुहागणी—सधवाएँ, सौभाग्यवती। मूंणी—कही, कहने का भाव। जायो—उत्पन्न किया। कुंणी—किस। ग्रैसो—ऐसा। फुंणी—फनधारी, सर्प। जको—वह, जो। ग्रंतेतणी—मृत्यु की।

३. कहाऊं—कहलाता हूँ। चराऊं—चराता हूँ। धेन—गायें। मोरी—मेरी। काये—किसलिए। मांटी—वलवान, पुरुप को। फंद—फंदे, छल-चतुराई की बातें। रंदगारी—छल-बहाने, लड़ाई-वखेड़े का।

हंसै सारी नाग नारी उचारी विहारी हूंत,
सवारी पधारी बळे लेतो आजे सूंक ।
कठै थांरी वेस असी जुद्धकारी वातां करै,
फूणांधारी दीठौ न छै आगकारी फूंक ।।४।।

मांटी रीस कांटी असी आंटी आंटी वातां मेळो,
भड़ां सूं उझाटी तेग वांटी न छै भीड़ ।
पेस करां घांटी जद्या फाटसी फुणां री फांटी,
पीड़-सी खांटी चांटी पाटी तणी पीड ।।५।।

नागणी रहायौ नाद बांदियौ अघाये वाद,
ताश्रे वातां भूलायौ लखायौ ताग ।
पायौ अमी आप रा बजायौ असो राग प्रभु,
कांनूड़े जगायौ असो नौळी आया नाग ।।६।।

राळतौ कराळ झाळ फूंणां वाळा फूंकारडां,
चाळां लागो ठाळां करै बावै असी चोट ।
ळळवळां जीहां घणी गलाफां गुंजाफां लाळां,
परनाळां पड़ै जठी हळाहळां पोट ।।७।।

---

४. सारी–समस्त, समग्र । उचारी–बोली, कहने लगी । विहारी हूंत–श्री कृष्ण से । बळे–पुनः, फिर । सूंक–रिश्वत । कठै–कहाँ । थांरी–तेरी, तुम्हारी । वेस–आयु, वयस्य । असी– ऐसी । दीठौ न छै–देखा नहीं है । आगकारी–ज्वालामयी । फूंक–फूत्कार ।

५. मांटी–जोरावरी की । रीस–रोष, क्रोध । आंटी आंटी–वैर विरोध की, बांकी टेढ़ी चुभने वाली । वातां मेळो–मनमानी वातें मिलाना, मिथ्या वातें कहना । भड़ां सूं–योद्धाओं से । ऊझाटी–चोट, प्रहार । भीड़–सहायता । घांटी–कंठ, गले का जोड़ । जद्या–जब । फांटी–फटने, अलग अलग होने का स्थान । पीड़-सी–पीड़ा देगी ।

६. अघाये–धापकर, तृप्त होकर । वाद–विवाद । ताश्रे–तब, तप्त, तेजी की । लखायौ–जान पड़ा, समझ में आया । ताग–असो–ऐसा । कांनूड़े–श्री कृष्ण ने । जगायौ–जगाया, जाग्रत किया । नौळी आयौ–कंचुकी आया हुआ ।

७. राळतौ–गिराता हुआ । कराळ झाळ–कराल ज्वाला । फूंकारडां–फूत्कारें । चाळां लागो–कौतूहल लगकर । ठाळां–ठिठोली । बावै–प्रहार करे, चलाता है । असी–ऐसी । ळळवळां जीहां–जिह्वा को बार-बार भीतर बाहर निकालने की क्रिया । गलाफां–मुंह का जबड़ों का भाग । लाळां–मुख से गिरने वाला रस, लार । जठी–जहाँ । हळांहळां–हलाहल, विष । पोट–पोटली ।

करै यूं रपट्टां रट्टां झपट्टां कपटां कीधा,
छूटां पट्टां चहुँवट्टां फिरंतो छंछाल ।
दाव ले उलटां दळंतो दपट्टां दढ़्ढ़ां,
कट्टां कट्टां कूंटा करै काळी बिकराळ ।।८।।

करांदी मूकियां झींक फेरियो कवादी कूंडै,
नादी नांमजादी गायो वांसळी रो नाद ।
मादी नागजादी जीयो महाजोगी मंत्रवादी,
अनादी जुगादी आदी बादी खेले बाद ।।९।।

लागै नहीं फूंक झाळ लपेड़ा थपेड़ा लागै,
नेड़ा नेड़ा फूंणां घणां ऊपड़े नत्रीठ ।
राजवी अहेड़ा जांण वडां डढ़ां रीस रत्तो,
रमन्तो उरेड़ां दियै केड़ां आयौ रीठ ।।१०।।

लडन्तो कळाप करै लाप-लोप हुवौ लोहां,
आप नाग थाको फुणां वाहतौ अमाप ।

---

८. रपट्टा—रपट्टें । रट्टां—टक्करें, भिड़न्तें । झपट्टां—झपटने की क्रिया । छूटां पट्टां—खुले रूप में, मद बहते खुले केश जो क्रोध में खड़े हो जाते हैं । चहुंवट्टां—चारो ओर । फिरंतो—घूमता, चक्कर काटता । छंछाळ—हाथी, उन्मत्त । दाव ले—दाव पेंच से, अवसर लेता है । दपट्टां—दपट कर, दौड़ कर । दढ़्ढ़ा—दाढ़ें । कट्टां-कट्टां—दांतों की आवाज । कूंटा—दाँत विशेष, दाढ़ें तथा आगे के दाँतो के मध्य के चार दाँतों को कूंटा कहते हैं ।

९. करांदी—हाथों की । मूकियां—मूठियों की । झींक—चोटें । कूंडे—कुण्डल, घेरे में । नादी—नाद करने वाला, श्रीकृष्ण । वांसळी—वाँसुरी, मुरली । नागजादी—नागकन्या । जोयो—देखा । अनादी—अनादि । जुगादी—आदि, युगादि । आदी—आदिकालीन ।

१०. फूक—फूंत्कार । लपेड़ा थपेड़ा—थप्पड़े, दोनों गालों पर थप्पड़े । नेड़ा नेड़ा—पास पास, समीप । ऊपड़े—थप्पड़ के चिह्न प्रकट होने को उपड़ना कहते हैं । नत्रीठ—चोट के निशान, प्रहार, वेग पूर्वक । डढ़ां—दंष्ट्राएँ । रोस रत्तो—रोषान्वित, क्रोध में लाल हुआ । उरेड़ां—लपेटा, बलपूर्वक टक्कर । केड़ां आयौ—पीछे पड़ा हुआ । रीठ—प्रहार, चोट ।

११. कळाप—क्रन्दन । लाप—लोप । हुवौ लोहां—लोहू लुहान हुआ, रक्त रञ्जित । थाको—थकित । फुणां वाहतौ—फनों की चोटें मारता हुआ । अमाप—अपार, अनाप-शनाप ।

स्याम थाप वाहै जका ऊघड़े जो छाप जैसी,
सांप री ऊतरे त्रिहूँ ताप रो संताप ।।११।।

नाथियो पोग्रेणनाळी वंनमाळी चढ़ै नांचै,
ताळी ताळी न्रत वाळी होवतो त्रवंक ।
उघाड़ी बडाळी छाप कदम्मा चहन्नावाळी,
ग्रैसा काळी कपाळी कोराळी मंडे ग्रंक ।।१२।।

वरख्खै ग्रनंत फूल हरख्खै नारद ब्रह्म,
निरख्खै झरोखां झांके व्रजवाळी नार ।
ग्राणंद जसोदा नंद धनौ धनौ जीत ग्रख्खै,
न लख्खै ग्रलख माया महिम्मा निहार ।।१३।।

रीझिया नागणी हूँतां नागेंदा दियंदा रीझै,
नमौ नंद नंदा नमै नागंदा री नार ।
छवीला दुडंदा चंदा तोझंदा न जाणूं छंदा,
मत्ता सारू दीनवंधा मुणंदा मुरार ।।१४।।

मुरारीदास बारहठ रौ कह्यो

स्याम—श्री कृष्ण । थाप—थप्पड़, खुले हाथ की चोट । वाहै—देकर, प्रहार कर । जका—जो । ऊघड़े—उद्घाटित, चिह्न प्रकट होना । ऊतरे—उतरे, प्रभावहीन हुए । त्रिहूँ ताप रो—तीनों ताप का, त्रिताप ।

१२. नाथियो—नाक में छेद कर रस्सी डालने को नाथना कहा जाता है । पोग्रेणनाळी—कमलनाल, सर्प । न्रत—नृत्य । त्रवंक—तिरछा, टेढ़ा । ऊघाड़ी—उद्घाटित की । कदम्मा—कदमों, पैरों के । चहन्नावाळी—चिह्नों की । कपाळी—मस्तक । कोराळी—रेखाग्रों वाली । मंडे—मंडित । ग्रंक—ग्रक्षर ।

१३. वरख्खै—वरसे, वर्षा हुई । ग्रनंत—ग्रपार, ग्राकाश । हरख्खै—हर्षित हुए । निरख्खै—देखने लगी, देखती है । झरोखां—गवाक्षों से । झांके—झांक कर, देख कर । ब्रज वाळी—ब्रज-निवासिनी । धनौ धनौ—धन्य धन्य । जीत—विजय । ग्रख्खै—कहती, कहती है । न लख्खै—नहीं जान पाती है । ग्रलख माया—ग्रलक्ष की लीला ।

१४. रीझिया—प्रसन्न हुग्रा । हूँता—से । नंद नंदा—नन्द के मेहर पुत्र श्री कृष्णचन्द्र । नागंदा री—नाग की । दुड़ंदा—सूर्य, रवि । तोझंदा—तेरे, तुम्हारे । छंदा—कौतुक, क्रीड़ा । मत्ता सारू—बुद्धि के ग्रनुसार । भणंदा—कहता है, वर्णन करता है । मुरार—गीत रचयिता कवि मुरारिदास ।

३ गीत क्रिस्ण नै सिसपाल रा जुद्ध रौ

वर किसन रुकमणी ले वळे, सिसपाल सुरनर संभळे ।
सजि सिलह ग्रावध कोप करि, नीसांण गाज निहंग ।।
धर रोस ग्रसि पाइ धड़हड़े, ग्रसिमान रज चढ़ि ऊपड़े
डंवर गैमर फररि धज डंमरि, पसरि हैमर पसरि पाखरि
दररि पोगरि मछरि दुछरि ग्रंबरि धारि तरि थररि कायरि
ग्रणरि हरि वरि सुरां ग्रौसरि, ग्राग झरिहरि सोर ऊभरि
सार भरि मरि मारि समहरि, खरग वगतरि झररि खंजरि
फाट फरि उर पारि फींफरि वजरि ग्रसमरि विहर वाखरि
कुंवरि नरि कटि कचर कोपरि चार चरि धरि ढचरि पळचरि
जोध जुट थट जंग ।

---

२. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत राजा शिशुपाल ग्रौर यदुपति श्री कृष्ण के रुक्मिणी-हरण के ग्रवसर पर लड़े गए युद्ध पर रचित है । गीत में लिखा है कि रुक्मिणी के साथ वल-पूर्वक विवाह करने के लिए श्रीकृष्ण ग्रौर शिशुपाल शस्त्र सज्जित होकर ससैन्य ग्राए । उनकी सेनाग्रों के प्रयाण से धूलिराशि ऊपर चढ़कर ग्राकाश धूमिल हो गया ।

---

१. वळे—वलपूर्वक, फिर । संभळे—सुना, सम्भलना । सिलह—सन्नाह, जिहरवख्तर । ग्रावध—ग्रायुध, शस्त्र । नीसांण—वाद्य यंत्रादि । निहंग—ग्राकाश । रोस—रोष, क्रोध । ग्रसि पाइ—ग्रश्वों की पदचापों से । रज—धूलि समूह । ऊपड़े—उमड़कर, उड़कर । डंवर—सेना, घटा । गैमर—हाथी, गज । धज—ध्वजाएँ, पताकाएँ । हैमर—घोड़े । पाखरि—घोड़ों के कवचादि । मछरि—मत्सरता । दुछरि—वीर, तलवार । थररि-काँपकर । ग्रौसरि—ग्रवसर । सोर—वारूद । ऊभरि—उभर कर, धधक कर । समहरि—समर, युद्ध । खरग—टकराकर । बगतरि—वख्तर, कवच । खंजरि—खंजर, तलवार । फाट—विदीर्ण । फरि—फरें । उर—हृदय, कलेजे । फींफरि—फेंफड़े । वजरि—वज्र । ग्रसमरि—तलवार । विहर—चीरकर । वाखरि—समूह, काँख का भाग । कोपरि—कोहनी । ढचरि—प्रेतनी, डायन । पळचरी—गृद्‌लादि, ग्रामिषभक्षी पक्षी । जुट—भिड़कर । थट—समूह, सेना । जंग—युद्ध ।

जुरासंध सिसपाल जोरै, किसन बळिभद लोह कोरै
जोध जुध जमरांण जूटा, सुर सकति संसार
गैणाग गोळा बाण गाजै, वीर हकां डाक बाजै
हसति हळवळ चंचळ हूँकळ भळळ सावळ
सिलह भळहळ कळळ हुबि दळ बीर कळियळ
चाळ चळदळ मंडे चळचळ लळक मैंगळ
भाळ लळवळ सकळ कायर तळक सळवळ
बळक बीजळ धार वळवळ हुरळ हाथळ
प्रवळ वैहळ तंडळ कंमळ जुवळ टळटळ
छोळ जळकळ छींछ ऊछळ खळकि चळुग्रळ
खाळ खळहळ प्रघळ पळचर समर गळ पळ
पड़ै खळ अपार ।।२।।

---

२. जुरासंध–जरासंध। बळिभद–बलभद्र, बलराम। जोध–योद्धा। जमरांण–यमराज। जूटा–भिड़े, युद्ध करने लगे। गैंणाग–आकाश। बाण–तोपें, तीर। हकां–हाक, ऊँची आवाज। डाक–ढाक नामक वाद्य। बाजै–बज कर। हसति–हस्ति, हाथी। हळवळ–हलचल। चंचळ–घोड़े। हूँकळ–हिनहिनाहट। भळळ–चमचमाहट। सावळ–बर्छे, भाले। सिलह–सन्नाह, कवचादि। भळहळ–चमक कर। कळळ–कौलाहल। हुबि–प्रहार। कळियळ–कलरव ध्वनिनाद। लळक–झुक कर। मैंगळ–हाथी। लळवळ–झुकना और ऊपर उठना। तळक–शीघ्रता से भगना। सळवळ–रेंगते हुए चलना। बळक–कौंधती, चमकती, बल खाती। बीजळ–तलवार। वळवळ–बारम्बार, पुनः पुनः। हुरळ–फुरतीला प्रहार। हाथळ–पञ्जा, खुला हाथ। तंडळ–टुकड़े, संहार। कंमळ–मस्तक। जुवळ–पैर। छोळ–तरंग, लहर। जळकळ–फव्वारे। छींछ–छींछड़े, मांस अथवा जमे हुए रक्त के टुकड़े। ऊछळ–उछल कर। खळकि चळुग्रळ–बहकर रुधिर, लोहू प्रवाह। खाळ–नाले, पहाड़ी, घाटियों की दरारें। खळहळ–खलखल ध्वनि। प्रघळ–अधिक मात्रा में। पळचर–गृद्धादि आमिषचारी। समर–युद्ध। गळपळ–मांस के पिण्ड, मांस और मज्जा। खळ–शत्रु।

ब्रजनाथ लिखमी संग बणै, आरांण बांणां ऊफणैं
डिगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि कूरम पीठ
जादम डाहळ जोरवर वाजिया खागे वीरवर
गड़ड़ गज घड़ि त्रम्बक गड़गड़ घड़ आतस अनड़ धड़ धड़
तिजड़ ओझड़ तीर तड़ड़ खाग झड़ झड़ ढाल खड़ खड़
विरड़ ऊरड़ मुरड़ बड़ वड़ हूर हड़ हड़ रंभ हड़ हड़
बीजड़ ओझड़ कंध बड़ वड़ दड़ड़ रतपड़ मुंड दड़ दड़
फड़ड़ घाव भड़ तंडळ तड़फड़ थाट वड़ि चढ़ि सोहड़ लड़थड़ि
करड़ि वरंगड़ि मुरड़ि कुटकड़ि ऊकरड़ि भड़ि ढिगड़ि अंतड़ि
रूक झड़ पड़ि रीठ ।।३।।

---

३. लिखमी–लक्ष्मी, रुक्मिणी । आरांण–युद्ध । बांणां–तीर, तोपें । डिगपाल–दिग्पाल । अहिफण–शेषनाग का फन । कूरम–कच्छप की । जादम–यादव वंशीय श्री कृष्ण । डाहळ–डाहल वंशीय शिशुपाल । वाजिया–लड़े । खागे–खड्गों से । गजघड़ि–गजघंट, गजसेना । त्रम्बक–ताम्बा के पेंदे के नक्कारे । गड़ गड़–नक्कारों के वजने की ध्वनि । आतस–तोपें, अग्नि । अनड़–पहाड़, स्वतंत्रता प्रिय योद्धा । धड़धड़–धड़धड़ाने की आवाज । तिजड़–तलवार । ओझड़–प्रवल प्रहार । कंध–कंधे । बड़वड़–कटते अथवा टूटते समय होने वाली ध्वनि । दड़ड़–अत्यधिक परिमाण में तरल पदार्थ के गिरने पर उत्पन्न ध्वनि । रत–रक्त, लोहू । मुंड–कटे हुए मस्तक । दड़दड़–भारी वस्तु के अनवरत गिरने की ध्वनि । तंडळ–मस्तक, टुकड़े । तड़फड़–तड़फड़ाहट । थाट–समूह । सोहड़–सुभट, योद्धा । लड़थड़–लड़खड़ा कर । करड़ि–कड़ कड़ की ध्वनि । वरंगड़ि–टुकड़े । कुटकड़ि–छोटे छोटे टुकड़े । ऊकरड़ि–वलपूर्वक घँस कर । भड़ि–योद्धा, भिड़ कर । ढिगड़ी–ढेर, राशि । अंतड़ि–आंतें, आत्र । रूक–तलवार । झड़पड़ि–झपट, प्रहार । रीठ–युद्ध, प्रचंड प्रहार ।

भिड़ रुकम डाहळ बिन्है भंजे, गाढ़ गह सिंध जुरा गंजै ।
पार विण जूझार पाड़ै, लड़े कमळा लीध ।।
हरि ब्रह्म सुर नर हरखिया, देवाधि छळ वळ दक्खिया
दबटि हैथटि प्रघटि दुंदटि ऊकटे कटि कूट आवटि
सुजड़ सटि सटि बहै सामटि धुवटि घावटि सुभटि घटि घटि
चपटि झापटि लपटि गहचटि लुटति लोटति जुटति लटि लुटि
निपट ऊलटि पलटि जिम नटि त्रिगुटि माछटि जुवटि जळ तटि
गरट अवियट अघट गाहट, ग्रीधटि मांसटि गिळै गटि गटि
कवि जगै जस कीध ।।४।।

—जगा खिड़िया रौ कह्यो

---

४. रुकम—रुक्मि । डाहळ—डाहल वंशोत्पन्न शिशुपाल । बिन्है—दोनों । गाढ़ गह—दृढ़ता धारण कर । सिंधजुरा—जरासिंध । गंजै—मार डाला । पार विण—अपरिमित । जूझार—योद्धा । पाड़ै—गिराये । कमळा—लक्ष्मी, रुक्मिणी । हरखिया—हर्षित हुए । छळवळ—दाँव पेंच, युद्ध और बल । दक्खिया—देखा, प्रशंसा की, कहा । दबटि—आक्रमण कर । हैथटि—अश्व सेना । प्रघटि—प्रगट । दुंदटि—द्वन्द्व युद्ध । ऊकटे—आगे बढ़ कर । कूट आवटि—संहार, नाश । सुजड़—कटार, तलवार । सटि सटि—बिलकुल निकट से, अंग से अंग भिड़ा कर । बहै—चले । धुवटि—प्रहार, क्रोध में आकर । घावटि—चोट, प्रहार देकर । चपटि—चपत, तमाचा । झापटि—थप्पड़ । गहचटि—केश पकड़ कर पछाड़ना । जुटति—जुटकर, भिड़कर । नटि—नट । त्रिगुटि—तीन ओर से समूह में । माछटि—मछली । जळतटि—जल के किनारे, समुद्र तट । गरट—समूह, सेना । अवियट—युद्ध, योद्धा । गाहट—संहार कर । ग्रीधटि—गृद्धिनी । मांसटि—मांस । गिळै—निगलती है । जस कीध—यश वर्णन किया ।

४ गीत राजा मानसिंघ कछवाहा आमेर रौ

पिड़ि साझि पठांण परसि पुरिसोतम, पौरिसि भगति वधारी अपार।
मान निचंत कियौ अकबर मन, कियौ ऋतारथ हिंदूकार ॥१॥
सत्र साझै पतसाह संतोखै, सुपह भेटि असरण सरण।
वंस खटतीस तणा कछवाहे, मेटिया दुख जांमण मरण ॥२॥
अरि साझै हरि पंखां आवे, जोध विधा अकबर छळ जांण।
बिहूं चौतीस कुळां क्रम वंधण, भांगा भाण-हरै कुळ भाण ॥३॥
भगवंत सुतण हुऔ त्रहूँ भुवणे, घण दीहां लग नाम धणौ।
व्रहमा विसन महेस वदीतौ, तप तुंगिम जस तूझ तणौ ॥४॥

—गोपाल मीसण रौ कह्यौ

---

४. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत आमेर के कछवाहा शासक मानसिंह प्रथम पर रचित है। गीत में मानसिंह द्वारा युद्ध में शाही विद्रोही पठानों को विजित करने तथा शरण में आए हुओं को अभय प्रदान करने का वर्णन किया गया है। लिखा है कि शत्रुओं का दमन कर मानसिंह ने बादशाह अकबर को चिंताविहीन तथा हिन्दू समाज को कृतार्थ किया।

---

१. पिड़ि साझि—युद्ध में मार कर। पठांण—पठानों को। परसि—स्पर्श कर। पौरिसि—पौरुष। भगति—भक्ति, भोजन। वधारी—बढ़ा कर। मान—राजा मानसिंह ने। निचंत—निश्चिन्त। ऋतारथ—कृतार्थ। हिंदूकार—हिन्दूत्व को।

२. सत्र—वैरी। साझै—नाश किया। संतोखै—सन्तोष दिलाया, संतुष्ट किया। सुपह—राजा, योद्धा। खटतीस—छत्तीस। तणा—का। जांमण मरण—जन्म मृत्यु के।

३. अरि—शत्रु। जोध विधा—योद्धाओं की विद्या, युद्ध विद्या। छळ—युद्ध, लिए। बिहूं चौतीस—छत्तीस। कुळां—राजवंशों के। क्रम वंधण—कर्मों के बंधन। भांगा—विनष्ट किए। भांण (भार) हरै—भारमल्ल का पौत्र। कुळ भांण—कुल रवि।

४. भगवंत सुतण—भगवंतदास का पुत्र राजा मानसिंह। त्रहूँ भुवणे—तीनों लोकों में। घण दीहां लग—अनन्त काल तक। घणौ—अधिक। वदीतौ—कहा गया, चर्चा का विषय बना। तुंगिम—पृथ्वी, संसार। जस—यश। तूझ तणौ—तुम का, तुम्हारा।

५ गीत राजा मानसिंघ कछवाहा आमेर रौ

मान रै डरे असमान पग मेल्हिया, अवर सूझै नह तेथ बाकी ।
विकट धर ऊपरै विहसि बीड़ो लियौ, वळे समदर नखै लियै वाकी ।।१।।

रोहितास दखिणाद कांपे असुर, दुसर का चाढ़ीया कापिया देस ।
महोदध झळमल्या तकां मांहे रतन, पहल नग ऊबरचा तके करूं पेस ।।२।।

वळ करै भोमियां तकां नूं बांधिल्यूं, पहल री हद परै मारि पैल्यूं ।
समंद री अरदास राजा सुणो, तौ में खरच ह्वै तितौ मेल्हूं ।।३।।

सिला तारे समंद कसूं वळ सायरां, नाग नेतो करे नगन काळे ।
चोल रतन काढ़िया चत्रभुज, पहल रा गुसा मानसिंघ पाळे ।।४।।

---

५. गीतसार–उपर्युक्त गीत राजा मानसिंह कछवाहा आमेर की युद्ध विजयों से सम्बन्धित है । कवि कहता है कि मानसिंह ने जल और स्थल पर सर्वत्र शत्रुओं का उन्मूलन कर दिया । शत्रुओं के छिपने के लिए केवल आकाश ही ऐसा स्थान बाकी रहा है जहाँ वे शरण लेकर जीवित रह सकते हैं ।

---

१. मान रै डरे–राजा मानसिंह के भय से । पग–पैर । मेल्हिया–धरे । अवर–अन्य, अपर । सूझै नह–दिखते नहीं । तेथ–तहाँ, वहाँ । विहसि– जोश में उबल कर । बीड़ो–पान का बीड़ा । वळे–फिर । नखै–पास, निकट ।

२. रोहितास–रोहिताश्व दुर्ग । कांपे असुर–मुसलमान कांपते हैं । दुसर का–दूसरे । कापिया–खण्ड खण्ड किए । महोदध–महासागर । झळमल्या–मथा, चमकदमक । तकां मांहे–तिन में, जिन में । नग–रत्न । ऊबरचा–बचे । तके–वे । पेश–भेंट, हाजिर ।

३. वळ करै–ताकत का गर्व करें । भोमियां–भूस्वामी । तका नू–उन को । बांधि ल्यूं–बन्दी बना लूं । पहल री–पहिले की । हद–सीमा से । परै–उस ओर दूर । पैल्यू–प्रभाव में न आऊं,धकेल दूं । अरदास–निवेदन । तितौ–उतना । मेल्हूँ–सेवा में भेज दूं ।

ए. सिला–शिला, पत्थर खण्ड । तारे–तैराए । वळ–ताकत । सायरां–समुद्रों । नाग नेतो–सर्प की मंथन रज्जु । नगन–नग्न । काळे–वीर, श्यामल । चोळ–लाल । काढ़िया–निकाले । चत्रभुज–भगवान् चतुर्भुज, रामचन्द्र । गुसा–गुस्सा । पाळे–पालन करता है, निभाता है ।

६ गीत राजा माधोसिंघ कछवाहा अजबगढ़ भानगढ़ रौ

मुंहैं अणियां वुपरै नांकतो मधकर, भव चै मन आंतरौ भयौ ।
सहली दिली हुई अणसकती, गहली रौ बेव्हड़ौ गयौ ।।१।।

जिण रै बळे उतराद जीपतौ, हवकै नाह पुजवी हमस ।
बाल्ही वुसत खूंम चौ वड पोहौ, काली रौ डिगियौ कळस ।।२।।

देतौ वाह दुबाह दळा वुत, रिमां राह अणथाह रण ।
चगथां वड़ आसंगणि चहुँ दसि, बड़ अझली रा कुम्भ वण ।।३।।

बावळी तणा घड़ा ज्यूं वरतै, काया जतन न कीतौ काज ।
दिली भींच वोरसो दूजौ, राखण-हार न घड़ियौ राज ।।४।।

---

३. गीतसार—ऊपरिलिखित गीत राजा माधवसिंह कछवाहा की युद्ध वीरता से सम्वद्ध है । गीत में लिखा है कि माधवसिंह विपक्षी सेना की अग्रिम पंक्ति पर आक्रमण करता था । किन्तु वह पगली के सिर पर धारण किए घट की तरह अपने शरीर को क्षणभंगुर समझने वाला मारा गया । अतः दिल्ली बलहीन हो गई ।

---

१. मुंहैं—मुंह के आगे । अणियां—सेना, हरावल पंक्ति । वुपरैं—ऊपर । नांकतो—डालता, धकेलता, हमला करता । मधकर—माधवसिंह । आंतरौ—अन्तर, दूरी, फर्क । भयौ—हुआ । अणसकती—अशक्त, निर्बल । गहली—पगली । बेव्हड़ों—द्विघट । गयौ—गया, मर गया ।

२. जिणरै—जिसके । बळे—बल पर, ताकत से । उतराद—उत्तर दिशा के देश । जीपतौ—विजित करता था । हवकै—अबकी बार । हमस—भीड़-भाड़ । बाल्ही—प्रिय । बुसत—वस्तु । खूंम चौ—बादशाह को । पोहौ—राजा, योद्धा । काली—पगली का । कळस—घट ।

३. देतौ वाह—प्रहार करता । दुबाह—दोनों हाथों से । दळावुत—दलपत अथवा दला का पुत्र, किन्तु माधवसिंह दला का पुत्र नहीं था, उसके पिता का नाम राजा भगवन्तदास था । रिमांराह—शत्रुओं । अणथाह—अथाह, अपार । चगथां—मुसलमानों । आसंगणि—साहसी । अझळी—पगली । कुंभ—घट, घड़ा ।

४. बावळी—पगली, चित्तभ्रम । तणा—का । वरतै—बरतने वाला, व्यवहार अथवा काम में लेने वाला । काया—शरीर का । भींच—योद्धा । वोर सो दूजो—ऐसा अन्य, इस जैसा दूसरा । घड़ियौ—बनाया, निर्माण किया ।

७ गीत राजा जगनाथ कछवाहा रौ

समंद उलटो देख जगनाथ साहण समंद,
लोह पामै नको पार लड़ियो।
ढीलो करि रांण तिण दीह ढीलांणपुर,
चालि असमांण गिरि सिखरि चडियो ।।१।।
आवटीजे फौज जळाबौळ आंबेरवो,
नर महण ऊलटे ताघ नांही।
पतौ चडियो अनड़ तेण विढ़वा पेखो,
मांड पग विढ़े तो वूढ़ै मांही ।।२।।
भाण रै वड मण्डळि सरिस विसमे भिड़ण,
घट सुभट आवटै तरंग घाये।
ओहटै तेण मेवाड़ वै आप रौ,
जीव उवारीयौ अळग जाये ।।३।।
ऊधरण - हरे वेळा हरण आठ में,
कियौ छिळीये सुतो जग कहियौ।
लोह में लहरि पैठा सु बोढे लिया,
राण गिरवर चढे नीठ रहियौ ।।४।।

—देवीदास गाडण रौ कह्यो

७. गीतसार—उपर्युक्त गीत राजा जगन्नाथ कछवाहा पर रचित है। राजा जगन्नाथ ने विशाल मुगल सेना सहित महाराणा प्रतापसिंह मेवाड़ पर आक्रमण किया था। महाराणा प्रतापसिंह उस आक्रमण के सामने रणस्थल में नहीं ठहर सका। वह अपना स्थल भागीय निवास त्याग कर पार्वत्य भाग में ऊपर जा चढ़ा। गीत में गीतनायक का आतंक प्रकट किया गया हैं।

१. समंद—समुद्र। साहण समंद—अश्व सेना रूपी समुद्र। लोह—शस्त्र-अस्त्र। पामै—प्राप्त करे। नको—कोई नहीं। ढीलो—निर्बल,शिथिल। तिण दीह—उस दिन। चालि—चलकर, भाग कर। असमांण—आकाश, ऊपर, असम्मानित होकर। चडियो—चढ़ गया, जा चढ़ा।

२. आवटीजे—उबलने का भाव। जळाबौळ—विकट, क्रोधपूर्ण। आंबेरवो—आमेर वाला, राजा जगन्नाथ कछवाहा। नर महण—नर-समुद्र। ऊलटे—उमड़ आने पर। ताघ—थाह। पतौ—महाराणा प्रतापसिंह। अनड़—पहाड़ पर। विढ़वा—युद्ध करने। पेखो—देखो। मांड पग—पग रोप कर, सामने डट कर। विढे—युद्ध करे। वूढै—डूब जाय।

३. भाण रै—भारमल्ल का। वड मण्डळि—बड़ा राजा। भिड़ण—लड़ने के लिए। घट—सेना, शरीर। सुभट—योद्धा। आवटै—उबाल आना, जोश चढ़ना। ओहटै—हटकर, छिपकर। उवारियौ—बचाया।

४. ऊधरण हरे—राजा उद्धरण का वंशज। वेळाहरण—समुद्र। छिलिये—युद्ध। बोढे लिया—काट दिए, मारे गए। नीठ—कठिनता से। रहियौ—जीवित बच रहा।

८ गीत गोयंददास माधाणी कछवाहा रौ

गजगाहां खड़ग ताहरौ गौयंद, खळ दखणाद कहर करि खीज।
बळती लाय कै व्यळती वांमळ, वहती नदी कै ढहती वीज ।।१।।

सत्र आदेस कह रण संग्रम, सुजड़ ताहरौ खेम सुजाव।
भूमि धाड़ि कै मंगळ भाळां, सीळता सोंक कै तड़ित सळाव ।।२।।

रूक स तुझ नमौ आखै रिमि, चढि मुहें भोंहे तके जुवै।
असण पड़ै काय आगि ऊछळै, व्है गरकाब बेटूक हुवै ।।३।।

---

८. **गीतसार**–उपरांकित गीत राजा माधवसिंह कछवाहा के वंशज गोयंददास कछवाहा पर कथित है। गीत में गीतनायक के दक्षिण प्रान्त में युद्ध लड़ कर धराशायी होने का वर्णन है। लिखा है कि हे गोयंददास! युद्ध में तेरी खड्ग प्रज्ज्वलित अग्नि, वेग से बहती नदी, आकाश से टूट कर पड़ती बिजली अथवा गोले बरसाती तोप के तुल्य शत्रुओं पर गिरती है।

---

१. गजगाहां–युद्धों में। खड़ग–तलवार। ताहरौ–तेरा, तुम्हारा। खळ–वैरी। दखणाद–दक्षिण प्रदेश वाले। कहर–विपत्ति। करि खीज–रोष कर, नाराज होकर। बळती लाय–अग्नि ज्वाळमाळा। व्यळती–धधकती। वांमळ–भूवळ, अग्नि। वहती–प्रवाहित। ढहती–गिरती। वीज–विद्युत।

२. सत्र–शत्रु। कहरण–क्षय करती, विपत्ति। संग्रम–ग्रामों को, युद्ध। सुजड़–तलवार। खेम सुजाव–खेमकर्ण तनय,गोयंददास। भूमी–आक्रमण करते समय की आकृति। धाड़ि–लूट मार करती सेना, डाकू दल। मंगळ भाळा–अग्नि की लपटें। सलिता–सरिता, नदी। सोंक–वहते समय नाद करती। तड़ितसळाव–बिजली की चमक, कौंधती विद्युत।

३. रूक–तलवार। आखै–कहते है, सराहना करते हैं। रिम–वैरी। मुंहें–मुख के आगे, सामने। जुवै–पृथक, अलग। असण–गोले, वज्र। काय–अथवा। आगि–अग्नि। ऊछळै–उछलती है। गरकाब–तराबोर। बेटूक–दो टुकड़े, द्विखण्ड।

९ गीत कमा माधाणी कछवाहा रा आतंक रौ

करां जोड़ि बैरीहरां तणी नारी कहै, लाख वातां वचन मांनि लीजे ।
चमकि भालां भड़ां मेळियां चकारौ, कमा रा धका रौ जतन कीजे ।।१।।

त्रंबाटां घोख करनाळियां त्रहाका, तिकण रा रूक री झाळ ताती ।
जरद कसियां भड़ां फिरै ग्रस जाकिये, छाकिये तणी मत चढ़ौ छाती ।।२।।

सावळां खिवणि आंगा खळकि सांवतां, चहूं तरफ साकुरां धसळ चावौ ।
जोध रौ निडर हुळसेट पाड़े जिकां, खबर राखै रखे फेंट खावो ।।३।।

सार रौ भंवर मोहकम निडर तिण सूं, खसणि करि काय रे जीव खोवै ।
ग्रेम मति जांणिजै पीया चढ़ि उरांणे, सिराणे बांह दे वळे सोवै ।।४।।

---

९. गीतसार–उपर्युक्त गीत माधवसिंहोत राजावत कछवाहा कर्मसिंह पर कथित है। गीत में कवि ने शत्रुओं की पत्नियों के मुख से गीतनायक के आतंक को प्रकट करवाते हुए कहलाया कि कर्मसिंह के सामने कभी आगए तो वह जीवित न लौटने देगा। अतः उससे सदैव दूर ही निकला करो।

---

१. करां जोड़ि–हाथ जोड़ कर। बैरीहरां तणी–शत्रुओं की। भड़ां–योद्धाओं। मेळियां–मिलाए हुए। चकारौ–निशाना। कमा रौ–कर्मसिंह को।

२. त्रम्बाटां–नगाड़ों की। घोख–घोष, ध्वनि। करनाळियां–करनाल नामक बाजा। त्रहाका–त्रह त्रह की ध्वनि। तिकण रा–उनका। रूक री–तलवार की। झाळ ताती–धार तीक्ष्ण है, तप्त ज्वाला। जरद–कवच। कसियां–कसे हुए, बांधे हुए। ग्रस–अश्व। जाकिये–मस्ती में आया हुआ ऊंट। छाकिये तणी–छके हुए की। मत चढ़ौ छाती–सामने मत आओ, धके मत आओ।

३. सावळां–भाले, वर्छे। खिवणि–चमकने की क्रिया का भाव। आंगां–अंगरक्षक, कवच, अंगरखे। खळकि–सरक कर, फिसल कर। सांवतां–सामन्तों। साकुरां–घोड़ों की। धसल़–हमला, डाँट। हुलसेट–आडे टेढ़े प्रहार। पाड़े–धराशायी करें, पछाड़े। जिकां–जिनको। फेंट–दांव।

४. सार रौ भंवर–युद्धवीर। मोहकम–निडर। खसणि करि–लड़ाई कर, भिड़कर। काय रे–अरे किसलिए। जीव खोवै–जीवन समाप्त करते हो। ग्रेम–यों। पीया–पति। उरांणे–वक्षस्थल पर। सिरांणे–सिरहानें, सिर के नीचे। बांह दे–प्रिया की भुजा रख कर। वळे–फिर। सोवै–शयन करोगे ऐसी आशा मत रखो।

१० गीत अनोपसिंघ कछवाहा री निंदा रौ

दाखै इम सूर घणां जुध दीठा, अचरजि बिसन सांभळो आप ।
बेटा रौ बेटो बाहुड़ियौ, बाप तणौ बड़गड़ियौ बाप ।।१।।

पत द्रोहीं कहियौ सीता पति, बण अध्रम आपड़ियौ ।
सुत रौ सुत रहियौ खग साहे, पित रौ पित आपड़ियौ ।।२।।

कुळ बहुवां बहुवां नै कहियौ, पड़ बहुवां पूछायौ ।
पौतो कठै वरसि पन्दरह रौ, अस्सी वरसि रौ आयौ ।।३।।

भारमली मीसण धोवौ भरि, रेत पाघ में राळी ।
काके तणी मन सांक न मांनी, वाग अनोपे बाळी ।।४।।

सासड़ री सासूजी सुणज्यो- सती होतां थ्यूं कसूं सराप ।
बापजी तणौ मरावे बेटो, बापजी तणौ आवियो बाप ।।५।।

---

१०. गीतसार—इस गीत में अनोपसिंह कछवाहा की भर्त्सना की गई है। वह युद्ध में अपने पौत्र के वीरगति प्राप्त करने पर लौट कर पौत्र विना अपने घर लौटा, तब पौत्र वधू ने सती होते समय उसे दुत्कारा और भारमली ने उसकी पगड़ी पर अञ्जलि भर मिट्टी फेंक कर कायर घोषित करते हुए निंदा की।

---

१. दाखै—कहते हैं। सूर—सूर्य, देवता। घणा—बहुत, घने। दीठा—देखे। बिसन—विष्णु। सांभळो—सुनो। बेटा रौ बेटो—पौत्र। बाहुड़ियौ—लड़मरा, लौट आया। बाप तणौ—पिता का। बड़गड़ियौ—दौड़ आया। पिता—पितामह, पिता।

२. अध्रम—अधर्म। आपड़ियौ—पकड़ा, ग्रहण किया। सुत रौ सुत—पौत्र। रहियौ—रण में काम आया। खग साहे—तलवार सम्भाल कर, खड्ग पकड़ कर। पित रौ पित—पितामह, दादा। आपड़ियौ—दौड़ आया।

३. कुळ बहुवां—कुल वधुएँ। बहुवां नै—वधुओं को। पड़ बहुवां—पौत्र बहुएँ। पूछायौ—पुछवाया। पौतो कठै—पौत्र कहाँ गया अथवा रहा। वरसि—वर्ष। आयौ—भागकर आ गया।

४. धोवो भरि—अञ्जलि भर कर। रेत—धूलि। पाघ में राळी—पगड़ी पर उछाली। सांक—शंका। वाग—वगीचा, पगड़ी। अनोपे—अनोपसिंह ने। बाळी—जला दी।

५. सासड़ री—सास की। कसूं—क्या, कैसा। सराप—शाप। बापजी तणौ—ससुरजी सा को। मरावै—मरवा कर।

११ गीत राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर रौ

अत अळगो ठाढ़ विलागै आतम, अत नैड़े प्राजळे अथाह ।
औरंगसाह अउर आंबेरौ, सीत तणौ पावक जैसाह ।।१।।
दूरै ठरै ढूकड़े दाझै, रूकां मुख होमवां रिम ।
रत हैमन्त वसन्त गत राजा, जवन जाळवै जळण जिम ।।२।।
दूर थकै धूजै दूजै डर, उर थकै प्राजळे उर ।
मानहरौ मकर चौ मैंगळ, सकै न ग्रह तप दिलेसर ।।३।।
माहव तणौ ठाढ़ तप मेटण, नरख सीत रत न धन नर ।
बेवै डर झालीयां बराबर, आग जहीं सेवै उसर ।।४।।

---

११. गीतसार—ऊपर लिखित गीत में गीतकार ने कछवाहा नरेश मिर्जा राजा जयसिंह द्वितीय का रूपकात्मक वर्णन करते हुए कहा है कि जयसिंह बादशाह औरंगजेव के लिए शीतकालीन पावक है; जिसके दूर रहने पर वह ठिठुर उठता है और अति समीप रहने पर जलने लगता है। इस प्रकार वह बादशाह के हृदय को दग्ध करता रहता है।

---

१. अत अळगो—अति दूरी पर । ठाढ़—ठण्डक । विलागै—लगती है । अत नैड़े—अति समीपता से । प्राजळे—जलता है, संतप्त करता है । अथाह—अपार । अउर—उर, हृदय । आंबेरो—आमेर नरेश जयसिंह प्रथम । सीत तणौ—शीत काल को । पावक—अग्नि । जैसाह—राजा जयसिंह ।

२. दूरै—दूर रहने पर । ठरै—ठिठुरता है । ढूकड़े—निकट रहने पर । दाझै—दग्ध होता है । रूकाँ मुख—तलवार की धार से । होमवां—दग्ध करने, नाश करने । रिम—वैरी । रत्त हेमन्त—हेमन्त ऋतु । वसन्त—बसन्त ऋतु । गत—गति, भांति । जवन—बादशाह औरंगजेव, मुसलमान । जाळवे—जलता है । जळण—अग्नि । जिम—ज्यों, तरह ।

३. दूर थकै—दूर रहते हुए । धूजै—विधूत होता है, काँपता है । दूजै—द्वितीय । उर थकै—हृदय के पास रहने, निकटता से । प्राजळे—दहन होता रहता है । मानहरौ—मिर्जा राजा मानसिंह का वंशज मिर्जा राजा जयसिंह । मकरचौ—मकर सक्रांति को, शीतकाल को । मैंगल—कामदेव, हाथी । सकैन ग्रह तप—सूर्य का तप सहन नहीं कर सकता, जयसिंह का आतप सहन नहीं कर सकता । दिलेसर—बादशाह ।

४. माहव तणौ—महासिंह का पुत्र जयसिंह । ठाढ़—शीत । रत—ऋतु । धन—धन, शीतकाल मकर और धन राशि पर सूर्य आने पर होता है । कहा है—धन का तेरह मकर पचीस, सरदी का दिन दो कम चालीस । बेवै—दो दो । झालीया—लिए हुए । आग—अग्नि । जहीं—ज्यों ही । सेवै—सेवा करता है, पालन करता है । उसर—असुर, बादशाह ।

१२ गीत मिरजा राजा जैसिंघ रौ हाजीपुर रा जुद्ध रौ

धरा धूज धौंसा धमक साहिजादा धकै, सदा तण वार कूरम सवाया।
सैद गजसिंघ कसि भीम री तांप सूं, उलटि जैसिंघ री ओट आया ।।१।।

बंब अवाज वा'''हरौ बिरचियां, बधै महासिंघ-वत लोह बाहै।
वारहों मंडोवर चित्रगढ़ बिरचतां, मचकि पग मंडे आंबेर माहे ।।२।।

टकर चगथां अटळ टळै नहिं तूंझ तट, झपट जगता-हरौ दळां झकोळे।
असुर राठौड़ सीसोदिये ऊठतां, आविया अभनवा मांन ओलै ।।३।।

हाळियो खुरम पर रीझ बांसै हुवौ, लड़ै अमरेस-उत जास लाजा।
किलम कमधज उभै राखिया न्रिभै करि, राड़ि रौ धणी जैसिंघ राजा ।।४।।

---

१२. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत आमेर के राजा जयसिंह प्रथम और विद्रोही शाहजादे खुर्रम (शाहजहां) के हाजीपुर के निकट लड़े गए युद्ध पर रचित है। उस युद्ध में शाही पक्ष में जयसिंह आमेर, गजसिंह जोधपुर और शूरसिंह बीकानेर प्रभृति थे और विपक्ष में राजा भीमसिंह सीसोदिया, शाहजादा खुर्रम तथा शाहजादे के सहायक अन्य योद्धा थे। युद्ध के जबरदस्त दबाव से राजा गजसिंह, बहलोलखां सैयद वगैरह राजा भीमसिंह के भय से जयसिंह की ओट में आ बच रहे थे।

---

१. धरा धूज—पृथ्वी कम्पित हो। धौंसा धमक—धूंसा वाद्य की ध्वनि, बड़ा नगाड़ा जो एक डंके से बजाया जाता है की आवाज। धकै—सामने। कूरम—कूर्म, कछवाहा जयसिंह। सैयद—बहलोलखां प्रभृति सैयद। गजसिंघ—जोधपुर का राजा गजसिंह। कसी (खसि)—खिसक कर, हट कर। भीम री—राजा भीमसिंह सिसोदिया की। उलटि—उलटे फिर कर, उलटे लौट कर। ओट—आड़, रक्षा में।

२. बंब—नगाड़ा की। बिरचिया—रचे, किए। बधै—बढ़ कर। महासिंघवत—महासिंह पुत्र जयसिंह। लोह बाहे—शस्त्र प्रहार कर। मंडोवर—मंडोर नरेश गजसिंह। चित्रगढ़—चित्तौड़ वाले, भीमसिंह के। मचकि—आगे पीछे हिला कर। पग मंडे—पैर रोके। आंबेर मांहे—आमेर नरेश जयसिंह के पास।

३. टकर—टक्कर। चगथां—मुसलमानों। टळै नहीं—चूके नहीं, दूर नहीं हटे। जगता हरौ—जगतसिंह का पौत्र जयसिंह। दळां—सेनाओं को। झकोळै—हिलोरित किए। असुर—मुसलमान। अभनवां मान—अभिनव मानसिंह के। ओलै—ओट में।

४. हालियो—चला, डगमगाया। वांसै—पीछे। अमरेसउत—राणा अमरसिंह का वत्स, राजा भीमसिंह। किलम—मुसलमान, सैयद। कमधज—राठौड़। उभै—दोनों। न्रिभै करि—निर्भय कर। राड़ि रौ धणी—उस युद्ध का स्वामि, उस युद्ध का सेनानायक।

१३ गीत राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर रौ

करग खाग पासौ भरत खंड चौपड़ करै, दुगम खेला मिले भड़ दुवाहां।
देयतौ दाउ घण घाउ जेसिंघदे, सारि जिम रमाड़ै पातसाहां ।।१।।
परठिजै जोड़ थाणां हिये पार के, डांण आराण कीजै इसा डाउ।
पाधरै थापि उथापिजै असपति, रमै रामति तिकां कूरमां राउ ।।२।।
ऐवहा खेल खेलै भुजां आपरा, मीर रद हुवा मेल्है मछर मांण।
महा जुधि मारि बीछोड़िजै मलीजे, सांफळे सौ गढ़ां जेम सुरतांण ।।३।।
तिसौ अगजीत खेलार माहव तणौ, हाथ बळि खळां सिरि चहोड़े हारि।
ऊठवै राह वे मेछ बाजी अखिल, जगत जेठी न्रपत जैत जुवारि ।।४।।
प्रथी सिणगार अवतार आंबेर पति, प्रगट रण चाचरां खाग पूजौ।
दाउ ऊपर हुवौ रहै राहां दठूं, दिगविजै थकौ जगतेस दूजौ ।।५।।

—नरहरिदास बारहठ री कह्यो

---

१३. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने आमेर नरेश महाराजा जयसिंह की युद्ध क्रीड़ा का चौसर क्रीड़ा के साथ समता दिखाते हुए युद्ध का वर्णन किया है। इसमें चौसर भारत भूमि, पासा तलवार और दाव युद्ध में शस्त्राघात को कहा है और चौसर की गोटियाँ बादशाहों को बताया गया है।

---

१. करग—हाथ। खाग—तलवार। पासौ—पासे। भरतखण्ड—भारतवर्ष को। चौपड़ करै—चौसर बना कर। दुगम—कठिन। खेला—क्रीड़क, खिलाड़ी। भड़ दुवाहां—दोनों हाथों से शस्त्रों के वार करने वाले वीर। देयतौ दाउ—दाव लगाता हुआ। घण घाउ—बहुत अधिक आक्रमण, अधिक धावे। सारि जिम—गोटियों की तरह। रमाड़ै—खिलाता है, रमण करवाता है।

२. परठिजै—स्थापित करता, बनाता, भेजता (?)। जोड़—बराबर के। थाणां—स्थानों, सैनिक चौकियों। हिये—हृदय। पार के—दुश्मनों के, परायों के। डांण—दांव, चौसर का दाँव। आराण—युद्ध। इसा—ऐसा। डाउ—दाँव। पाधरै—सीधे, सरल। थापि—स्थापित कर। उथापि—उखाड़ कर, अधिकार विहीन कर। असपति—बादशाह। रमै—खेलता है। रामति—क्रीड़ा। राउ—राजा।

३. ऐवहा—ऐसे। खेलै—खेलता है। मीर—अमीर, मुसलमान उमराव। रद—प्रभावहीन, रद्दी। मेल्है—त्याग कर। मछर मांण—गर्व और सम्मान। बीछेड़ि—विछोह कर। मलीजे—मिला कर।

४. तिसौ—ऐसा। अगजीत—अजेय। खेलार—खिलाड़ी। माहव तणौ—महासिंह का पुत्र जयसिंह। बळि—बल, शक्ति। चहोड़े—चढ़ाता है। ऊठवै—उठ जाती है, समाप्त होती है। राह वे—दोनों धर्म वालों की। बाजी—खेल। जगत जेठी—जगत में श्रेष्ठ, सूर्य। जैत—विजय।

५. चाचरां—खेल, युद्ध। पूजौ—पुज्य, पहुंचने वाला। ऊपर हुवौ—सबसे बढ़ कर हुआ। थकौ—सहित। जगतेस दूजौ—द्वितीय जगतसिंह, राजा जयसिंह।

१४ गीत महाराजा जैंसिघ कछवाहा ग्रामेर रौ

महाराज जैंसाह भारथ सबळ मांडते, जुड़ किया गज कमळ उलट जोया ।
निमख री ठौड़ सहर विचाळे निरंतर, हमरकै जंवाहर ढेर होया ।।१।।
पछट खगट भट पतसाह रा पाड़िया, भूळ ले गज उटोउट ग्रकट जड़िया ।
तेण कारण विकट लूंण दरियाव तट, प्रगट नग ग्रबींधा गरट पड़िया ।।२।।
त्रिजड़ ग्रावाह किसनेस हर विसन तण, रिखी हड़हड़ हंसे समर रीधा ।
ग्रमोखळ प्रमांणै ग्रांमळा-सांमळां, दुरद मोताहळां गंज दीधा ।।३।।
सैद संघार ग्राभूखण सहेतां, कीरत जाहर करी चहूं कूंटां ।
लूंण री ठौड़ सांभर..।।४।।

—दळपत सांदू रौ कह्यो

---

१४. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत जयपुर के शासक महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा द्वारा सांभर स्थान पर लड़े गए युद्ध पर रचित है। महाराजा सवाई जयसिंह ने जोधपुर के महाराजा ग्रजितसिंघ राठौड़ की सैनिक सहायता प्राप्त कर सांभर के शाही थाने पर ग्राक्रमण किया था ग्रौर वहाँ के हाकिम सैयद ग्रलीग्रहमद को पराजित कर सांभर पर ग्रधिकार कर लिया था। गीत में सांभर झील में नमक के स्थान पर गज-मुक्ताग्रों को बिखेरने का कवि ने उल्लेख किया है।

---

१. जैंसाह—सवाई जयसिंह जयपुर। भारथ—युद्ध। मांडते—प्रारम्भ करते, लड़ते। गज कमळ—गज मस्तक। निमख री—नमक की। ठौड़—स्थान पर। विचाळे—मध्य, में। हमरकै—इस वार, ग्रबकी बार। जंवाहर—जवाहिरात। ढ़ेर होया—ढीगला हुग्रा, ढ़ेर लग गया।

२. पछट—पछांट देकर, ग्राघात कर। खगट—खड्ग। पाड़िया—पछाड़ दिए, मार गिराये। भूळ—समूह। उटोउट—उठा कर। ग्रकट—मस्तक। लूंण दरियाव तट—नमक की झील के किनारे। नग—जवाहिरात, मोती ग्रादि। ग्रबींध—ग्रविध्य, ग्रच्छेद। गरट—समूह, घना, सेना।

३. त्रिजड़—तलवार। ग्रावाह—युद्ध, प्रहार। किसनेस हर—किशनसिंह का पौत्र, सवाई जयसिंह। विसनतण—बिशनसिंह तनय सवाई जयसिंह। रिखि—ऋषि, नारदादि। हड़हड़ हंसे—जोर की ग्रावाज में हंसने लगे। रीधा—प्रसन्न होकर। ग्रमोखळ—ग्रपार, ग्रमूल्य ?। ग्रांमला सांमळा— एक दूसरे के सम्मुख। दुरद—द्विरद. हाथी। मोताहळां—मोतियों का। गंज—ढेर। दीधा—दिया, लगा दिया।

४. सैद—सैयद, शाही सेनानायक। संघार—संहार कर। सहैतां—सहित। कीरत—कीर्त्ति। चहूं कूंटां—चारों दिशाग्रों में।

१५ गीत महाराजा सवाई रामसिंघ कछवाहा जैपुर रौ

मने धारि के सुरता पंचमाथ रै चढ़ावे माथ,
गुड़चो हाथ जोड़ी भैरूं झांप रै गिरंद।
करौत धारी कै गात पूरी सात सिधां कासी,
नाथ पुन्न पूरे पात पायौ जैसा नन्द ।।१।।
आखरां सचिदानन्द भजे सरां तरां ओटै,
साधे हरा हरी सिंभ रटचौ अवस्सांण।
उरां धार आठौं जाम अंक रा जीह आंणै,
मन्ने प्रतापीक हुवौ तरां कूरमांण ।।२।।
तापे सूक पत्रां भखै त्यागे नाना भोग ताजा,
आधार समाजां विनां रह्यौ एक आप।
दराजां साहंसधार गाळे हेम अद्रां देह,
तूठा प्रभु प्रामे राजा बिजाई प्रताप ।।३।।

---

१५. **गीतसार**—उपरांकित गीत जयपुर के महाराजा रामसिंह द्वितीय पर रचित है। कवि गीतनायक के समय में अपना जन्म होना किन्हीं महान् पुण्यों का फल मानता हुआ कहता है कि मैंने शिव के समक्ष शीश न्योछावर किया अथवा गिरि शृंग से भैरव झांप ले कूद कर प्राण त्यागा या सिद्धपुरी काशी में करोत से अपना शरीर विदीर्ण किया; जिसके पुण्य से ऐसा उदार स्वामी प्राप्त हुआ।

---

१. मने—मन में। सुरता—ध्यान, सुरति। पंचमाथ रै—महादेव के। माथ—शीश। गुड़चो—लुढ़का, छलाँग लगाई। भैरूं झांप—मोक्ष की कामना से कूदना। गिरंद—पर्वत। करौत—आरा, करवत। गात—गात्र। पूरी सात सिधा कासी—सप्तपुरियों सिद्ध काशीपुरी। नाथ—गौरक्षनाथ। पूरे—पूर्ण। पात—कवि ने। पायौ—प्राप्त किया। जैसा नन्द—जयसिंह के पुत्र रामसिंह को।

२. आखरां—अक्षरों, वाणी द्वारा। सरां तरां—सरोवरों और वृक्षों की। ओटै—आड़ में, ओट में। साधे—सिद्ध किए, साधना की। हरा हरी सिंभ—ब्रह्मा, विष्णु और शंभु तीनों देवों को। रटचौ—रटा, स्मरण किया। उरां धार—हृदय में दृढ़ निश्चय कर। अंक रा—राम नाम का अक्षर। जीह—जीभ, जिह्वा। आंणै—लाकर। मन्ने—मुझे। कूरमांण—कछवाहा।

३. तापें—तप किया। सूक पत्रां—सूखे पत्ते। भखै—खाये, आहार बनाये। दराजां—बहुत, महान्। साहंस धार—साहस धारण कर। गाळे—पिघलाया। हेम अद्रां—हिमगिरि, हिमालय। तूठा—तुष्टिमान हुए। प्रामे—प्राप्त हुए। विजाई प्रताप—द्वितीय प्रतापसिंह, रामसिंह को।

ओडंकार सीत काळ रटचौ रेळे नीर ऊंडै,
धारे पंच आग जळचो उन्हाळे रै धूप ।
व्रखां छांय टल्यौ कविंद्र गिरन्द्र बेठौ,
भोम इन्द्र तरां धणी मिल्यौ राम भूप ।।४।।

१६ गीत महाराव नाथूसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

अमल जमावै परधरा पाथ रूपी अडर, भांज घड़ त्रघक फतै भाराथ ।
पमंगां तौरां हसत वधारां मनसुपां, नाथ रौ खाग पूजै दिलीनाथ ।।१।।

पाट ऊधोर व्रन खट भुजां ऊपटै, प्रबळ घोड़ां भड़ां थाट परघै ।
पटाझरां सिरोपावां नवां पिड़गना, असपती जसाउत रूक अरघै ।।२।।

---

१६. **गीतसार**—उपरांकित गीत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक नाथूसिंह शेखावत की शाही दरबार में प्रतिष्ठा एवं महत्त्व का प्रदर्शक है । कवि का कथन है कि वह शत्रुओं की भूमि पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में वीर अर्जुन पाण्डव की भाँति निर्भीक है । युद्धों में शत्रुओं का संहार कर विजय प्राप्त कर लौटता है । बादशाह उसको अश्व, हाथी और उच्च मनसब प्रदान कर सम्मानित करता है ।

---

४. सीतकाळ—शीतकाल में । रटचौ—जपा । रेळे—प्रवाह, नदी के फैलने का स्थान । ऊंडै—गहरे । पंच आग—पंचाग्नि में । जळचो—दग्ध हुआ । ऊन्हाळे—ग्रीष्म । धूप—ताप, सूर्य । व्रखां—वृक्षों की । टल्यौ—एकाकी बैठा रहा । भोम इन्द्र—भूपेन्द्र, राजा । तरां—तब । धणी—मालिक । मिल्यौ—मिला, प्राप्त हुआ ।

१. अमल जमावै—अधिकार स्थापित करे । परधरा—पराये भूभागों पर । पाथ—पार्थ, अर्जुन । भांज घड़—सेना का नाश कर । त्रघक—नगाड़े बजा कर । भाराथ—युद्ध । पमंगां—घोड़ों । हसत—हस्ति, हाथी । बधारां—वृद्धि । मनसुपां—मनसब । नाथ रौ—महाराव नाथूसिंह का । खाग पूजै—खड्ग की आराधना या प्रतिष्ठा करते हैं । दिलीनाथ—बादशाह ।

२. पाट ऊधौर—राजसिंहासन का उद्धारक । व्रन खट—षट् वर्ण, यती, जोगी, सन्यासी, ब्राह्मण, चारण वगैरह । ऊपटै—दान के । भड़ां—योद्धाओं का । थाट—समूह, ठाठ । परघै—परिवार, सभा, दरबार । पटाझरां—हाथियों । नवांपिड़गनां—नवीन प्रान्त । असपती—बादशाह । जसाउत—जसवन्तसिंह तनय नाथूसिंह । रूक—तलवार । अरघै—पूजा करता है, अर्चना करता है ।

सक अफिर पीठ थाहर विकट अमरसर, प्रथी रस जाहर समर जीत परचा ।
किताबां मुरातव सहत हजरत करै, अभनवा जगा री खड़ग अरचा ।।३।।
ईसुरी सहायक फतै पावे अवसि, दळ खळां भांज घुरतां दमामां ।
पांण खग ऊपरां ऊपरी पठावै, साह मनसूप कुरप राव सामां ।।४।।

१७ गीत महाराव हणूतसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

सधर पांव लग सेस भुजडंड वधिया सुरग,
निवारण न कर वाळी तरह नेम ।
सुतन बिसनेस थारा परग सेवियां,
जग बधै छड़ी वामन करग जेम ।।१।।
हेळ रा सिंध अघ दुरत नासा हणूं,
पियासा जस दरस जिकां निज भूप ।
वेहळ व्रन कदम रा सागरां वधायौ,
राव मुर भुवण आसा तणै रूप ।।२।।

---

१७. गीतसार–इस गीत में कवि ने गीतनायक हनुमन्तसिंह को दानी, बलि और याचकों को वामन वर्णित कर रूपक का विधान किया है। वह कहता है कि हे बिशनसिंह के पुत्र हनुमन्तसिंह, तुम्हारे कदम शेषनाग के शीश एवं हाथ स्वर्ग के जा लगे हैं। तुमने याचकों को त्याग देने में राजा बलि का व्रत ग्रहण कर रक्खा है। जिसने भी तुम्हारी चरणाराधन की वह धनी हो गया। संसार में वे भगवान् वामन के गात्र की भांति विशाल बनते गए।

---

३. सक–शक्ति, वीर। अफिर–पीछे नहीं मुड़ने वाला। पीठ–पृष्ठस्थान, पीठस्थान। थाहर–दुर्ग। अमरसर–राजधानी का नाम। जीत–विजय के। परचा–परिचय, चमत्कार। किताबां–खिताब, पदवी। मुरातव–माहि मुरातब का सम्मान। हजरत–बादशाह। अभनवा जगारी–अभिनव जगतसिंह की, नाथूसिंह की। अरचा–अर्चन, पूजा।

४. ईसुरी–ईश्वरी, भगवती, देवी। फतै–फतह। अवसि–अवश्य। भांज–संहार कर। धुरतां दमामां–नगाड़ों की ध्वनि करवाता हुआ। पांण–बल, भुजा। खग–तलवार। ऊपरां ऊपरी–एक के ऊपर एक, लगातार। पठावै–भेजता है। मनसूप–मनसब। कुरब–प्रतिष्ठा, सत्कार। सामां–सम्मुख, सामने।

१. पांव लग सेस–शेषनाग तक पैर। बधिया–बढ़े। सुरग–स्वर्ग। निवारण–त्यागने। न कर–इन्कार न करने वाले, राजा बलि। नेम–व्रत, नियम। थारा–तेरा। परग सेविया–चरणों की आराधना की। जग बधै–संसार में बढ़े। वामन–वामनावतार।

२. हेळ रा सिंध–उदारता का सागर। अघ दुरत–भयंकर पापों का। नासा–नष्ट करने वाला। हणूं–हनुमन्तसिंह। पियासा जस–यश के प्यासे। जिकां–जिनका। वेहळ–लहरी, विकल। राव मुर भवण–त्रिलोकी नाथ, विष्णु। असा–ऐसे। तणै–के।

कूरमां नाथ कर जोड़ सेवन करी,
पात जिण चरण अरविन्द कर प्रीत ।
ईजत जस आथ इक साथ व्रहमंड अड़ि,
रसा त्रय विक्रम लकड़ी तणी रीत ।।३।।

दंड व्रहमंड वधियौ जिको न दीठौ,
रही धर विचाळै कदम रेखा ।
मह सुजस मेर छाया उलंघन माया,
सुकव तै वधाया जिता सेखा ।।४।।

—जोधा सांदू रौ कह्यौ

१८ गीत महाराव हणूतसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

मसत लगायो डांण दध तटां खट रुत महि,
खसत दिग गजां उर सत्रां खटकै ।
हाहुळी समंद जस हसत थारौ हणूं,
लंगरां घसत अदतार लटकै ।।१।।

---

१८. गीतसार—ऊपर कथित गीत राव हनुमन्तसिंह शेखावत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक के पराक्रम पर रचित है । गीतकार ने इसमें लिखा है कि हे राव हनुमन्तसिंह तुम्हारा मद मस्त गजराज समुद्र तटीय प्रदेशों में निर्भीक घूमता है । उसके भय से शत्रु रूपी दिशाओं के गज भयभीत रहते हैं । वह कृपण रूपी गज जंजीरों को अपने पीछे घसीटता चलता है ।

---

३. कूरमांनाथ—कछवाहों के स्वामी हनुमन्तसिंह की । सेवन करी—आराधना की । पात—पात्र, कवि, याचक । अरविन्द—कमल । करप्रीत—प्रीति कर । ईजत—प्रतिष्ठा । जस आथ—यश और धन । अड़ि—अड़े, स्पर्श करने लगे । रसा—पृथ्वी । त्रय विक्रम—त्रिविक्रम—विष्णु ।

४. दंड—भुज दण्ड, वामन की छड़ी । जिकौ—जो । न दीठौ—नहीं दिखता । धर विचाळै—पृथ्वी पर । कदम रेखा—चरण चिह्न । मेर—सुमेरु गिरि । वधाया—दान सम्मान दे बड़े बनाए । जिता—जितने । सेखा—महाराव शेखा के वँशज हनुमन्तसिंह ।

१. मसत—मस्त, उन्मत्त । डांण—राहदारी नामक कर, मद । दध तटां—समुद्र तटीय देशों तक । खट रुत—षट् ऋतु । खसत—टक्कर, खसकना । दिगगजां—दिग्पाल । उर सत्रां—शत्रुओं के हृदय । हाहुळी समंद—तरंगित सागर । जस हसत—यश रूपी गजराज । लंगरां—जंजीरें, सैन्य समूह । घसत—घसीटते । लटकै—पीछे लटकते चलते हैं ।

नन्द विसनेस नव खण्ड ऊपर निसंक,
रूप नभ उमंड सित जळद रेखा।
फरक जिम केत यळ छंद करतो फिरै,
सूंब पैबंद गयंद सुजस सेखा ।।२।।
दट गया अरियंद अदतार दिस हूं दिसा,
रसा अहनिसा वजै त्रंबंक रोड़े।
जोड़गर सांकळां जड़ै दूजा जसा,
दिस दिसा चाव गजराज दोड़ै ।।३।।
हका दोय राह बावन मिणी जती हद,
चीत वाधै उदध वीत चाळो।
ईढ़दारां तणौ देख मद ऊतरै,
ऊजळ सुसवद दुरद तूझ वाळो ।।४।।
—जोधा सांदू रौ कह्यौ

१६ गीत महाराव हणूतसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

स्रवै रीझ गज गांम चित मठां फाटै वका,
असमरां धका करिवा खळां अंत।
छहु रित रहै छाक खत्रवट छका,
हका जस ताहरा प्रथी हणमन्त ।।१।।

---

१६. गीतसार—ऊपर लिखा हुआ गीत मनोहरपुर शाहपुरा के स्वामी राव हनुमन्तसिंह शेखावत की उदारता तथा वीरता के वर्णन का है। कवि कहता है कि राव हनुमन्तसिंह के दान देने और शत्रुओं के दमन करने की यशकथा का श्रवण कर कृपण तथा कायर हतप्रभ हो जाते हैं।

---

२. सित—श्वेत। जळद—मेघ, समुद्र। फरक—चक्री। केत—केतु, ध्वज पताकाएँ। यळ—भूलोक, पृथ्वो। छंद करतो फिरै—मस्ती में क्रीड़ा करता फिरता है। सूंब—कृपण। गजंद—हाथी। सुजस—सुयश। सेखा—शेखावत।

३. दट गया—रुक गए, दब गए। अरियंद—वैरी। अदतार—कंजूस। रसा—पृथ्वी। अहनिसा—दिनरात। त्रंबंक—दुंदुभि, नगाड़े। जोड़गर—बराबरी वाले। सांकळा—लोह शृंखलाएँ। जसा—जसवन्तसिंह।

४. हका—हाक, हल्ला। दोय राह—हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्म पथों पर चलने वाले। जती—जितनी। हद—सीमा। चीत—चित्त, मन। वाधै—बढ़ता है। उदध—समुद्र। वीत—वित्त, धन। चाळो—क्रीड़ा, छेड़छाड़। ईढगारां—बराबरी वालों, समता वालों। मद—घमण्ड। उजळ—उज्ज्वल। सुसवद—सुशब्द, कीर्त्ति। दुरद—द्विरद, हाथी। तूझ वाळो—तेरे वाला, आपश्री का।

१. स्रवै—देता है, दान करता है। रीझ—दान। गज गांम—हाथी और ग्राम। चितमठां—कृपणों। फाटै वका—मुंह फाटे रह जाते है। असमरां—तलवारों के। धका—टक्कर, आघात। करिवा—करने के लिए। खळां अन्त—दुश्मनों का नाश। छाक—छकित, उन्मत्त। खत्रवट—क्षत्रियत्व। हका जस—यश प्रसिद्धि, शोहरत। ताहरा—तेरा, तुम्हारा। हणमत—राव हनुमन्तसिंह।

बिसन रा सींह नखतैत ताळा बिलंद,
ताहरा खत्रीवट गुणां तोल ॥
परवरे किरण रवि जिती समंदां परा,
बराछक धरा सारी सुजस बोल ।।२।।

नाथहर सुवप खत्रवट धणी नरांनर,
वदां कुंण तो तणी जोड़ यण वार ।
मानपुर धणी सेखावतां मिण मुगट,
इळा सुसवद तणी इण अपार ।।३।।

सार आचार थारा अगर समजती,
दुड़े सारा गया हार यण दाय ।
बखत छत ताहरा अगर जसवन्त बिया,
जिमि दुड़िंद ऊगिया नखत दबि जाय ।।४।।

---

२. बिसन रा–राव बिशनसिंह का । सींह–सिंह तुल्यवीर पुत्र । नखतैत–नक्षत्रधारी । ताळा बिलंद–भाग्यशाली । खत्रीवट–क्षत्रियपथ, क्षत्रियत्व । परवरे–फैले, प्रसरित, विकीर्ण । जिती–जितनी । समंदां पार–समुद्रों के उस पार तक । बराछक–वीरता से छकी हुई । धरा–पृथ्वीलोक । सारी–समस्त । सुजस बोल–यशवाणी, कीर्त्ति के वचन ।

३. नाथहर–श्रीनाथसिंह के पौत्र हनुमन्तसिंह । सुवप–सुन्दर शरीर । खत्रवट–क्षत्रियत्व । धणी–नरां नर–राजाओं का भी राजा । वदां–कहे, वर्णित करें । कुंण–कौन, किसको । तो तणी–तुम्हारी । जोड़–बराबरी । यण वार–इस समय । मानपुर–मनोहरपुर शाहपुरा का एक ग्राम । धणी–स्वामी । मिण मुगट–मुकुट मणि । इळा–पृथ्वी, भूलोक । सु सवद–सुशब्द, कीर्त्ति के बोल ।

४. सार–अस्त्र-शस्त्र, तलवार । आचार–व्यवहार । थारा–तेरा । समजती–जितने भी समता करने वाले थे । दूड़े सारा गया–समस्त छिप गये, प्रभुत्वहीन लगने लगे । ताहरा–तेरे, तुम्हारे । अगर–आगे, सामने । जसवन्तबिया–द्वितीय जसवन्तसिंह, हनुमन्तसिंह । जिमि–जिस प्रकार । दुड़िंद ऊगिया–सूर्य के उदित होने पर । नखत–नक्षत्र, तारे । दबिए जाय–द्युतिहीन हो जाते हैं, फीके दीखने लगते हैं ।

२० गीत महाराव हणूंतसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

तुरां भीड़जै तंग अंग उमग सरताज रा,
पतंग थंभियौ निहंग मूके दध पाज रा।
सिंघ हणवन्त कैरा प्रवल साज रा,
असा आरम्भ हुवै किणी सिर आज रा ।।१।।

खुले नीसांण खैंगां चढ़े ताखड़ा,
चोळ रंग रारियां भीच हुक भुक चडा।
खाग करधारियां खूंद आगळ खड़ा,
गाढ़मल सालुळे कसी रुख गै घड़ा ।।२।।

त्रसल पड़ भ्रगुट चढ़ कोप अहंतेस रौ,
बराछक प्रबळ धक चढ़न्ती बेस रौ।
देखजै कै मत्थे आभरण देस रौ,
बणावै इसा आरम्भ वीर विसनेस रो ।।३।।

---

२०. **गीतसार**–यह गीत मनोहरपुर शाहपुरा के राव हनुमन्तसिह शेखावत के सैनिक अभियान के वर्णन पर कथित है। कवि कहता है कि वीर श्रेष्ठ हनुमन्तसिह उत्साह पूर्वक अपने अश्वों पर जीन कस कर यवन सेना सहित उस पर आक्रमण करने के लिए तत्पर हुआ जिससे आकाश में रवि स्थिर हो गया और समुद्र अपनी मर्यादा त्याग कर हिलोरें मारने लगा।

---

१. भीड़जै तंग–घोड़े के जीन कसने का तशमा खीच कर, जीन करके। पतंग–सूर्य। थंभियौ–रुक गया। निहंग–आकाश में। मूके–छोड़े, अतिक्रमण करे। दध–उदधि, सागर। पाजरा–मर्यादा का, सीमा का, तट का। कैरा–के। साज रा–सज्जा का। असा–ऐसा। आरम्भ–कार्यारम्भ। किणी सिर–किस पर।

२. नीसांण–निशान, ध्वज पताकाएँ। खैंगा–धोड़ों पर। ताखड़ा–ताकतवर, तगड़ा। चोळ रंग–लाल वर्ण, रक्तिम। भीच–योद्धा। हुक भुक–चूर चूर कर। खाग कर धारियां–तलवारें हाथों में लिए हुए। खूंद–मुसलमान, बादशाह के। आगळ–आगे। गाढ़मल–दृढ़वीर। सालुळै–चले, प्रयाण करे। कसी रुख–किस तरफ, किस दिशा की ओर। गै घड़ा–गज सेना।

३. त्रसळ–तीन सलवटे, ललाट। भ्रगुट–भ्रकुटि। कोप–क्रोध। अहंतेस रौ–गर्वीले का, अभिमानी को। बराछक–परिपूर्ण, वीर। धक–क्रोध, साहस। चढंती बेस रौ–चढ़ती युवावस्था का, जवानी आती उम्र का। कै मत्थे–किस पर। आभरण–आभूषण।

मयंद डाचाळ अंतकाय सु प्रमाथ रा,
प्रसण भंजवे सुभट हथ पाथ रा।
सांमरख हुवै दळ कसी बळ साथ रा,
नीधसे त्रम्बागळ बिजाई नाथ रा ॥४॥

धराधर थरहरैं धकौ अवधेस रौ,
सकौ लटके मचक धुकै सिर सेस रौ।
भचक पड़ अरिहरां भयाणंक भेस रौ,
जठै छक जोवजै दुवा जगतेस रौ ॥५॥

कोपियौ जटाधर टकर देसी कहीं,
नेतबंध क्रोध भर आज टळसी नहीं।
जोवजौ उरड़ भीमेण पारथ जहीं,
मुरड़ अंग न मावै अजड़ खांपां महीं ॥६॥

ऊससैं अंगोठें भाण रूपी अडर,
बाण कर तोक के माधवाणी वजर।
जोमरद अरिहरां दीठ आयौ जजर,
खेध लागौ कंठीरव ऊभौ खजर ॥७॥

---

४. मयंद–सिंह। डाचाळ–मुख। अंतकाय–यमराज, शिव। प्रसण–पिशुन, शत्रु। पाथरा–अर्जुन का। सांमरख–सामर्थ। कसी बळ–किस तरफ। नीधसे–ध्वनि करते हैं। त्रम्बा गळ–तांबे के पेंदे वाले नगाड़े। बिजाई–दूसरे। नाथ रा–नाथूसिंह के।

५. धराधर–पहाड़, शेषनाग। थरहरैं–कंपायमान हुए, भय कंपित हुवा हुआ। धकौ–टक्कर। सकौ–सब कोई। धुकै–कुढ़ना, झुकना, जलना। सेस रौ–शेषनाग को। मचक–लचक कर। अरिहरां–शत्रुता रखने वालों। जठै–जहाँ पर। छक–मस्ती। जोवजै–देखिए, निहारिए। दुवा–द्वितीय।

६. कोपियौ–कुपित हुआ। जटाधर–शिव। टकर–टक्कर। नेतबन्ध–वीरता सूचक चिह्न विशेष धारी। टळसी नहीं–टलेगा नहीं, चूकेगा नहीं। उरड़–जोश, उमंग। भीमेण पारथ–भीमार्जुन। जहीं–जैसी। मुरड़–मरोड़, ऐंठ। न मावै–समाहित नहीं होती। अजड़–तलवार। खांपां नहीं–म्यान में, कोश में।

७. ऊससैं–जोश में उफनना। अंगोठे–शरीर, अग्नि। भाण–सूर्य। कर–हाथ में। तोक कर–उठा कर। माधवाणी–इन्द्र। जोमरद–जवांमर्द। अरिहरां–वैरियों को। दीठ–दृष्टि में। जजर–यमराज। खेध–विरोध, क्रोध। कंठीरव–सिंह। ऊभौ–खड़ा हुआ। खजर–क्रोध से पूर्ण।

आज रौ घाट दीठौ सकौ अेहड़ौ,
जकौ जांणो मती जुहारण जेहड़ौ।
बाघ सारूप काळी तणौ बेहड़ौ,
कह्वौजी बरोबरि जुड़ै नप केहड़ौ ॥८॥

थट भड़ां मुगट उप्रवट बिड़द थावसी,
खग झटां पछट सत्रहां दळां खावसी।
पांण भालां लियां प्रसध जस पावसी,
असी विध बौलबाला कीयां आवसी ॥९॥

२१ गीत राजा दुवारकादास सेखावत खण्डेला रौ

वग ठांमे परण रायहर बैठा, हेली पठांण चाली हींच।
आर..........................वांणी, बैनांणी पांणी घड़ बीच ॥१॥

---

२१. गीतसार—प्रोक्त गीत खण्डेला के राजा द्वारिकादास शेखावत पर सर्जित है। द्वारिकादास ने बादशाह की ओर से अपने मित्र नवाब खांनजहाँ के विद्रोह करने पर उसे पराजित किया था। गीत में लिखा है कि जिस समय शाही पक्ष के अन्य राजाओं से युद्ध परिणय कर खानजहां की सेना रूपी दुल्हिन अपने घर की ओर विदा हुई उस समय उस पर किलकिला पक्षी की भाँति द्वारिकादास ने आक्रमण किया और बलपूर्वक अपहरण कर स्वर्ग ले गया।

---

८. घाट—ढंग, विचार, हाल। सकौ—सब कोई। अेहड़ौ—ऐसा। जकौ—जो, वह। जांणो मती—समझो मत। जेहड़ौ—जैसा। बाघ सारूप—व्याघ्राकृति। काळी तणौ बेहड़ौ—पगली के सिर पर के द्विघट जो क्षण भंगुर होते हैं। केहड़ौ—कैसा।

९. थट भड़ां—योद्धा समूह। उप्रवट—अधिक, बहुत। विड़द—विरुद्ध। थावसी—होगा। खग झटां—खड्गाघात। पछट—मार कर, पछांट देकर। सत्रहां दळां—शत्रु सेना। खावसी—मारेगा, नाश करेगा। पांण—हाथ। पावसी—प्राप्त करेगा। असी विध—ऐसी विधि से, इस रीति से। आवसी—आएगा, लोटेगा।

१. ठांमे—स्थान, ठहर कर। रायहर—राजकुमार। हेली—सहेली (?)। हींच—युद्ध लड़ कर। बैनांणी—किलकिला पक्षी। पांणी—जल। घड़—सेना।

गिरधर रौ आयौ गजगाहे, बीजां जेमि न करी बुधि।
छिवतो निहंग विहंग गति छूटौ, जळा वौळि दळ बीच जुधि ।।२।।

अनि रायहर घणै ओछंड़िया, खांनजिहां सिर लोह सुख ।
पांडव घड़ा ऊपरां पड़ियौ, राव कूरम किलकिला रुख ।।३।।

मारे खांनजिहां रण मांहे, कौ राजा उग्राहे कर ।
रूके थके जळचरे रहियौ, चखे न रहियौ मीन-चर ।।४।।

—ईसरदास सांदू भदौरा रौ कह्यौ

२२ गीत उमेदसिंघ सेखावत सूजावास रौ

पैलां भांजिया हजारां चोड़ै केई वारां फतै पाई,
भाणवां लुटाई आथ लाधो गुणां भेद ।
रजाई खंडेले व्रद सकौ भाई ईढ़ राखै,
आचां खाग त्याग पाई बड़ाई उमेद ।।१।।

---

२२. **गीतसार**—उपरांकित गीत सूजावास के स्वामी उम्मेदसिंह शेखावत के युद्ध और दान की सराहना का है। कवि कहता है कि उम्मेदसिंह ने अनेक बार शत्रुओं को रणभूमि से खदेड़ कर विजय प्राप्त की और कवियों को द्रव्य दान कर प्रशंसा प्राप्त की। इस प्रकार अपने बांधव नरेश खण्डेलाधीशों से वीरता और उदारता में बराबरी कर यश प्राप्त किया।

---

२. गिरधर रौ—राजा गिरधरदास का पुत्र राजा द्वारिकादास। गजगाहे—गजग्राह में, युद्ध में। बीजां—अन्यों। जेमि—ज्यों। बुधि—बुद्धि, चालाकी, उपाय। छिवतो—स्पर्श करता। निहंग—आसमान। विहंग गति—किलकिला पक्षी की गति से। छूटौ—टूट कर पड़ा, झपटा। जळावौळि—प्रालेय, भयंकर। दळ—सेना। जुधि—युद्ध।

३. अनि रायहर—अन्य राजा लोग। घणै—घने। ओछंड़िया—छोड़ चुके, त्यागे। लोह—अस्त्र-शस्त्र। पांडव घड़ां—पंडुकी रूपी सेना पर। पड़ियौ—टूट पड़ा, धावा किया। कूरम—कछवाहा। किलकिला रुख—तालावों में मछलियों पर झपट्टा मार कर पकड़ने वाले पक्षी की तरह झपट कर।

४. कौ—कौन। उग्राहे—रक्षा करे। रूक थके—तलवार होते। मीनचर—किलकिला, मछलियों को खाने वाला।

१. पैला—विपक्ष वालों, वैरियों को। भांजिया—नष्ट किये। केई वार—अनेक बार। भाणवां—कवियों को। आथ—अर्थ, धन। लाधो—लब्ध, मिला। रजाई—राजापने, राजत्व। खंडेले—रायसलोत शेखावतों का प्रधान पट्ट स्थान का नाम। सकौ—सब कोई। ईढ़—बराबरी, ईर्ष्या। आचां—हाथों से। त्याग—दान। बडाई—बड़प्पन।

रूप सेखा घराणे ऊधरी तांणै गाढ़ेराव,
चाव मांणे संपदा बखांणै सूर चन्द ।
यळाधीस सारां वन्ध कहावै मरोड़ आणै,
न जांणे आचार सार तो ज्यूं गजा-नन्द ।।२।।
दहूं पाखां नीर चाढ़े वरापूर साजे दीह,
सुपातां निवाजे हेळा हमीर समांन ।
भूप कोरा और वीर निकम्मीं मरोड़ भाजे,
दूजा धीर तूझ भुजां छाजे खाग दांन ।।३।।
कई गांम थोक राजा कहावौ चाकरां कनां,
सहावौ सौभाग विना निकाजां सम्बन्ध ।
खाग दान आजा वरसिंध ज्यूं ताहरां खवां,
सांचो राजा उमेद जाहरां पाज सिंध ।।४।।

२३ गीत ठाकुर दलपतसिंघ सेखावत रौ मानपुर रा जंग रौ

मरद बोलियौ श्रेम खग तोल आपहमलौ,
मन अडर यसो पलौ पकड़े मीच ।
कमळ धड़ ऊपरां थकां सूंपै किलौ,
भड़ जिकां दलौ लानत कहै भीच ।।१।।

---

२३. गीतसार–ऊपरलिखित गीत ठाकुर दलपतसिंह शेखावत पर रचित है । मानपुर पर अधिकार करने के लिए जयपुर की सेना ने आक्रमण किया था । उसका सामना करते हुए गीतनायक के प्राणोत्सर्ग करने का गीत में वर्णन है । गीतकार ने लिखा है कि दलपतसिंह ने किले पर विपक्षियों का अपने निधन के वाद ही आधिपत्य होने दिया ।

---

२. ऊधरी तांणै–वीरता एवं दानादि श्रेष्ठ कार्य करने में सर्वाग्र रहने की आकांक्षा करे । गाढ़ेराव–समर्थ वीर । चाव मांणे–चाह कर भोगता है । यळाधीस–राजाओं का । आचार सार–दान एवं वीरता का व्यवहार । गजानन्द–गजसिंह का पुत्र उम्मेदसिंह ।

३. दहूं पाखां–मातृ एवं पितृ दोनों पक्ष । नीर चाढ़े–गौरवान्वित करें, कान्ति चढ़ावे । निवाजे–कृपा करे । हेळा हमीर–दानी विशेष । कोरा–खाली, दिखावटी । निकम्मी–व्यर्थ की । मरोड़–ऐंठ । दूजा धीर–द्वितीय धीरसिंह, उम्मेदसिंह । छाजे–शोभित हुवे ।

४. थोक–समूह । कनां–पास से, अथवा । सहावौ–अपने में थोथा गर्व करने का भाव । ताहरां–तेरे । पाज–पाल, मर्यादा ।

१. खग तोल–तलवार को प्रहार हेतु ऊपर उठाते हुए । आपहमलौ–स्वेच्छाचारा योद्धा । यसो–ऐसा । पलौ–वस्त्राञ्चल । मीच–मृत्यु का । कमळ–सिर । ऊपरां थकां–ऊपर रहते हुए । सूंपै–दूसरों के सुपुर्द करे । जिकां–जिनको । भीच–वीर, योद्धा ।

अभंग छळ राव आंबेर दळ आवतां,
उजाळी सरव सेखावतां ओध ।
जमी न पड़ै अगुट कट दुरंग जावतां,
जोध सुत रावतां न मानै जोध ।।२।।

प्रवाड़ा जीत साकौ कर मानपुर,
सधर गिरमेर दीठौ सवांही ।
निळज भुरजाळ भिळतां जकौ सिर न दै,
नरां हठमाल हर बदै नांही ।।३।।

सार री भींत जिम हुवौ उड़ियै सुरंग,
रूक झट तमासे मीत रीधौ ।
पिसण सैंलोट कर घणां रिण पौढ़ियो,
दियै रजपूत जिम कोट दीधौ ।।४।।

---

२. अभंग–वीर, अडिग । छळ–युद्ध, लिए । राव–मनोहरपुर शाहपुरा के महाराव पद वाले शासक । आंबेर दळ–जयपुर की सेना । ओध–औलाद, वंश । अगुट–भ्रकुटि, शीश । दुरंग–दुर्ग । जोध सुत–जोधसिंह का पुत्र । जोध–योद्धा, बहादुर ।

३. प्रवाड़ा–यश के कार्य । साकौ–केशरिया वस्त्र धारण कर रण में प्राणोत्सर्ग करने को साका करना कहा जाता है, युद्ध । सवांही–सबने, सभी ने । निळज–निर्लज्ज । भुरजाळ–किला । भिळतां–पराधिकृत होते समय । जिकौ–जो । नरां–पुरुष, वीर । हठमालहर–हठी सिंह का वंशज, गीतनायक दलपतसिंह ।

४. सार री भींत–लोहे की भीत्ति । रूक झट–तलवार के प्रहारों के । मीत–मित्र, सूर्य । रीधौ–प्रसन्न हुआ, मुग्ध हुआ । पिसण–पिशुन, वैरी । सैंलोट कर–रणभूमि में मारकर छितरा दिए । घणां–बहुत । कोट दीधौ–किला दिया ।

२४ गीत ठाकुर जोगीदास सेखावत महरौली रौ

पड़ै गोळां सरां अलंगां उड उड पड़ै, गयण रथ अड़वड़ै परी गैलां ।
किला मत डिगमगै सूर जोगो कहै, परम मौ जीवतां न द्यूं पैलां ।।१।।

भलाई लाज सेखा धणी मौ भुजां, गरट थट हैमरां करूं गज गैर ।
ओभकै मती छिबतौ रहे आभ सूं, असन रा तमासा देख आसेर ।।२।।

भड़ां भुरजाळ हूं जोध रौ महा भड़, घड़ा लख वैरियां हूंत धावै ।
सावतो जितै धड़ ऊपरां मूझ सिर, अतै अरि तूझ नांह आवै ।।३।।

पाड़ खळ हजारां पछै रण पौढ़ियो, भर पतर ईसुरी रुधर भोगे ।
कमळ पड़ियां पछै अमल दुसहां कियौ, जीवतां दियौ गढ़ नांह जोगे ।।४।।

---

२४. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत अमरसरवाटी के महरौली ग्राम के ठाकुर जोगीदास शेखावत पर रचित है। जोगीदास ने शाहपुरा (मनोहरपुर शाहपुरा) के दुर्ग की शत्रुओं से रक्षा करते हुए प्राण विसर्जन किया था। गीत में गोले एवं बाणों की वर्षा से विचलित दुर्ग को विश्वास प्रदान करते हुए कहा है कि जब तक जोगीदास के धड़ पर शीश हैं, तब तक हे किला, तुमको शत्रुओं का भय करने की आवश्यकता नहीं है।

---

१. सरा–बाण। अलंगां–ऊंचाई से, दूर से। गयण–आकाश। अड़वड़ै–भीड़ के कारण शीघ्रता में आपस में भिड़ कर लड़खड़ाते हैं। परी–अप्सराओं के। गैलां–मार्ग में। सूर–वीर। जोगो कहै–जोगीदास कहता है। मौ–मेरे। न द्यूं–नहीं दूंगा। पैलां–दूसरों को, उधर वालों को।

२. भळाई–सुपुर्द की है। सेखा धणी–शेखावतों के स्वामी ने, शाहपुरा के शासक ने। मौ भुजां–मेरी भुजाओं। गरट थट–सैन्य समूह। हैमरां–घोड़ों। ओभकै–चौंके, भयचकित। छिबतौ रहे–सुशोभित होता रह। आभ सूं–आकाश से। असन रा–गोलों के। आसेर–दुर्ग. किला।

३. भड़ां–योद्धाओं। भुरजाळ हूं–बुर्जों वाले से, किले से। जोध री–जोधसिंह का पुत्र। घड़ा–सेना। हूंत–से। सावतो–अक्षत, अखंडित। जितै–जितने, जब तक। अतै–इतने। अरि–वैरी। नांह–नहीं।

४. पाड़–गिरा कर। खळ–शत्रुओं को। रण पौढ़ियो–रण क्षेत्र रहा। पतर–पात्र। ईसुरी–रण दुर्गा का। कमळ–मस्तक। पड़िया पछै–कट कर गिर जाने के पश्चात्। अमल–अधिकार। दुसहां–वैरियों का। जोगे–जोगीदास ने।

२५ गीत ठाकुर जोगीदास सेखावत रौ जुद्ध रौ

मारे बैरियां अखूटी आव भूपाळां खांडियौ मांण,
　　तेग धारे नकौ पांण छांडियौ तमाम ।
वीर राव छळाँ जाग तांडियौ दला रै वैर,
　　राड़िगारे उखेलो मांडियौ जोगीराम ।।१।।
खेड़ै फौजां चहुवळां फतै आसमान खाटै,
　　काहुळा नीधसै जांगी ऊपटे क्रोधार ।
केवै लाग भ्रात रै नाथ रै आगे बळाकारी,
　　जोध रौ धूखळा करै हमेसां जोधार ।।२।।
तोड़ै बंका मेवासां वरत्ती आंण जठी तठी,
　　आग तत्ती लोह लठी आराण अबीह ।
जूथ घोड़ां भड़ां लीधां पाट-पत्ती छठी जागे,
　　दूजौ हठी धरत्ती धूपटै ऊगे दीह ।।३।।

---

२५. **गीतसार**–ऊपरांकित गीत ठाकुर जोगीदास उग्रसेनोत शेखावत कछवाहा पर कथित है। जोगीदास ने मनोहरपुर शाहपुरा का पक्ष तथा दलपतसिंह के प्रतिशोध को लेकर जयपुर की सेना से लड़ाई लड़ी थी। गीत में उसको राठौड़ वीर दुर्गादास के समान वीर अंकित किया गया है। जोगीदास ने जयपुर के इलाकों में धावे मार कर आतंकित कर दिया था।

---

१. अखूटी–जो समाप्त न हुई थी। आव–आयु। भूपाळां–राजाओं का। खांडियौ–खंडित किया, खंवित किया। मांण–मान, प्रतिष्ठा। तेग धारे–तलवार ग्रहण करे। नकौ–कोई नहीं। पांण–बल, शक्ति। छांडियौ–त्याग दिया। छळां–युद्धों। तांडियौ–दहाड़ा। दला रै–दलपतसिंह के। राड़िगारे–युद्ध प्रेमी। उखेलो–युद्ध। मांडियौ–रचा, किया।

२. खेड़ै–प्रस्थान करे। चहुवळां–चौतरफ। फतै आसमान खाटै–आकाशी फतह प्राप्त करता है, जहां आक्रमण करता है वहीं सहजता से विजय लाभ करता है। काहुळा–विपम, भयानक, वाद्य विशेप। नीधसै–वजते हैं। जांगी–नगाड़े। ऊपटे–उमड़ कर, बढ़ कर। क्रोधार–क्रोधान्वित हो। केवै–बदले, प्रतिशोध। नाथ रै–स्वामी के अथवा महाराव नाथूसिंह शाहपुरा मनोहरपुर के। बळाकारी–महाबली। जोध रौ–जोधसिंह का पुत्र। धूखळा करै–युद्ध करता है। जोधार–योद्धा।

३. तोड़ै बंका मेवासां–दुर्गादि विकट आश्रय स्थलों का नाश करता है। वरत्ती–हुई। जठी तठी–जहाँ तहाँ। तत्ती–तप्त। आराण–युद्ध। अबीह–निडर। जूथ–समूह। भड़ां–योद्धाओं। पाटपत्ती–पट्टाधिकारी। छठी जागे–सहायतार्थ उद्यत हो कर। दूजौ हठी–अभिनव हठीसिंह। धूपटै–अधिकार में लेता है, लूटता है। ऊगे दीह–प्रतिदिन, सूर्योदय होते ही।

राठौड़ां दुरगा जेम कूरमां आज जोगीराम,
जोड़ै नकौ राज बंसी तीजौ भीच जेण।
राव लूणक्रण रा थांन री भुजां लाज राखी,
सारां सेखां समाजां गरब्बे उग्रसेण ।।४।।
—बनजी खिड़िया रौ कह्यौ

२६ गीत राव जगतसिंघ सेखावत कासली रौ

करग झालि किरमाळ लंकाळ जगता कंवर,
खळां खैकाळ रिणताळ खांनै।
तौ जहीं काळ सूं चाळ बाँधै तिके,
त्यां सूं खड़ै टाळि कांनै ।।१।।
तेज बळवन्त सांवन्त स्यामे तणा,
खड़ग झळकंत खळकंत खांपे।
अन्त सूं होइ चौदन्त तौ जिम अड़ै,
अन्त त्यां हूँत टळि खड़ै आपे ।।२।।

---

२६. गीतसार—उपर्युक्त गीत सीकर के रावराजा के पूर्वज राव जगतसिंह शेखावत कासली के स्वामी पर सर्जित है। कवि कहता है कि हे कुमार जगतसिंह, तूं खड्ग धारण कर शत्रुओं का रणस्थल में संहार करता है। तेरी तरह जो यमराज का अन्चल पकड़े उनसे वह भी भय खाते हुए एक ओर बच कर निकलता है।

---

४. राठौडां दुरगा जेम—राठौड़ क्षत्रियों में दुर्गादास राठौड़ की ज्यों। कूरमां—कछवाहों में। जोड़ै—बराबर, समतुल्य। नकौ—कोई अन्य नहीं। राजबंसी—अन्य हाडा सीसोदियादि राजकुलों में। तीजौ—तीसरा। भीच—योद्धा। थांन री—स्थान की। राखी—रक्खी। सेखाँ—शेखावतों में। गरब्बे—गर्व करता है। उग्रसेण—उग्रसेन जिसकी संतति परम्परा में गीतनायक था।

१. करग—कराग्र, हाथ। झालि किरमाळ—तलवार ग्रहण कर। लंकाळ—सिंह, बहादुर। खळां—दुश्मनों का। खैकाळ—नाश, संहार। रिणताळ—रणभूमि, रण समय। तौ जहीं—तेरी ज्यों। काळ सूं—मौत से। चाळ बांधे—पल्ला पकड़े, कमर कसे। खड़ै—चलता है। टाळि कांनै—एक ओर बहाना बना कर, एक तरफ बच कर।

२. बळवन्त—बलवान। सांवंत—सामन्त, महान् वीर। स्यामे तणा—राव श्यामराम के पुत्र जगतसिंह। खड़ग—तलवार। झळकंत—चमकती। खळकंत—खनकती, खड़कती। खांपे—म्यान से बाहर। अन्त सूं—यमराज से। चौदन्त—आमने-सामने, चौनजरें। अड़ै—सामना करे, मुकाबिला करे। त्यां हूंत—उनसे। खड़ै—चले। आपे—अपने आप ही, स्वयं।

अतुळवळ धरण खग गंगहर आभरण,
जग अजरां जरण करण जोड़े।
मरण सूं अड़े तौ जेम मांडे मरण,
मरण त्यां आगळी चरण मोड़े ।।३।।

कूंत हथ जगा जम हूंत वादे कळह,
टळै जमदूत त्यां हूंत त्रहिये।
तिके अवधूत विपरूत तौ सारिसा,
कारणाभूत रजपूत कहिये ।।४।।

—कुम्भा दसोंधी रौ कह्यौ

२७ गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रौ

सत सूरित सहत सेवा प्रथमी सिरि, वित देणां अठारह वरग।
जगत सधार राजि राजां रा, रिग कटकां आडा करग ।।१।।

---

२७. **गीतसार**-ऊपर लिखित गीत शेखावाटी के सीकर राज्य के शासक राव शिवसिंह शेखावत की युद्ध वीरता एवं दान वीरता की श्लाघा में रचित है। कवि कहता है कि राव शिवसिंह अपनी भुजाओं से दरिद्रता और शत्रुता का नाश कर डालता है। उसके हाथ अशरण के शरणदाता है। वह गिरते हुए आसमान को भुजाओं से रोक देने जैसा समर्थ है।

---

३. अतुळ वळ—अतुल्य शक्तिशाली। खग—तलवार। गंगहर आभरण—राव गंगाराम के कुल भूषण। अजरां जरण—जबरदस्तों को मातहत बनाने वाला, स्वाधीनों को अधीन बनाने वाला, शिव। जोड़े—बराबरी करने वाला। तौ जेम—तुम्हारी तरह। मरण—मौत। आगळी—आगे, समक्ष। चरण मोड़े—पीछे की ओर हट चले।

४. कूंत—तलवार, भाला। हथ—हाथ। जगा—कुंवर जगतसिंह। जम हूंत—यमराज से। वादे—विवाद करे। कळह—युद्ध, विपत्ति। टळै—बच कर निकले। त्रहिये—डरपता, भय मानता। तिके—वे। सारिसा—सदृश। कारणां भूत—कारण स्वरूप, कार्य सिद्धि का कारण। रजपूत—राजपूत, क्षत्रिय।

१. सत—शक्ति, सत्व। सेवा—गीतनायक राव शिवसिंह। प्रथमी सिरि—पृथ्वी पर, भूलोक पर। वित दैणां—दातार। अठारह वरग—अठारह वर्णों को। जगत सधार—संसार में निराश्रितों को आश्रय देने वाला। राजि—आपका, तेरे। कटकां—सेनाओं। आडा—ओट, रक्षक। करग—हाथ।

दळ मेळ थंभ हाथ दौलावत, दुजड़े खळ बाहणां बळ धीठ ।
बोळै कुरिन्द समंद बिरोळै, गिरद उतोलै तसा गरीठ ।।२।।

करणा दुरंड वयंड घड़ कूरम, महियड़ बळि बंड समर मंड ।
घूण नव खंड प्रचण्ड अधारे, डिगता ब्रह्मंड भुजा-डंड ।।३।।

पौरिस वरा काम रा पिंड़ि भव, स्रवण लखां लाख रा वीत ।
धरा सिणगार ऊधरा धजबंध, जसवन्त हरा करां जग जीत ।।४।।

आरण धींग संसार ऊपरां, धारण धजवड़ अनड़ धुज ।
थांभे गयण तिसा भुज थांरा, भांजे वारण तिसा भुज ।।५।।

---

२. दळ मेळ–सेनाओं के शस्त्रसंघात करते समय । थंभ–स्तम्भ । दौळावत–दोलतसिंह पुत्र राव शिवसिंह । दुजड़े–तलवार । बाहणां–चलाने, प्रहार करने वाला । बळ धीठ–महाबली, दुधर्ष वीर । बोळै–डुबोवे, नाश करे । कुरिन्द–दारिद्य । बिरोळै–विलोड़े । गिरंद–पर्वत । उतोळै–ऊपर उठा लेवे । तसा–तैंसे, वैसे । गरीठ–बलवान्, महाबली ।

३. दुरंड–काट कर टुकड़े करना । वयंड–हाथी, घोड़े । घड़–सेना । कूरम–कूर्म, कछवाहा शिवसिंह । महियड़–पृथ्वी तल पर, नरलोक में । बळि बंड–महान् बली । समर मंड–युद्ध लड़ कर । घूण–झकझोर कर, मंथन कर । अधारे–आधार, सहारा । भुजा-डंड–भुजदण्ड, बाहुदण्ड ।

४. पौरिसवरा–श्रेष्ठ पौरुषवान् । काम रा–सुकार्यों का । पिंड़ि भव–पृथ्वीलोक, भूतल पर । स्रवण–देने वाला । ऊधरा–ऊर्ध्व, उदारता । धजबंध–राजा,वीर । जसवन्तहरा–जसवन्तसिंह का पौत्र । करां–हाथों के ।

५. आरण–रणभूमि का । धींग–जबरदस्त योद्धा । धजवड़–तलवार । अनड़–स्वतंत्र, किसी की अधीनता स्वीकार न करने वाला, अनम्र । धुज–श्रेष्ठ, योद्धा । गयण–गगन, आकाश । थांरा–तेरे, तुम्हारे । भांजे–नाश करे । वारण–हाथी । तिसा–वैसे समान । भुज–हाथ ।

२८ गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रौ

रैंणा ऊजाळ अठेल रूकां भाराथ आमरखां,
सोहै गढ़ां सीस हकां पाथ ज्यूं समाथ ।
आगाहटां हाथियां बरीस हाथ तूझ वाळा,
हीलोळे छखंडां खुरासाणां तूझ हाथ ।।१।।

केवियां ऊधाम सेलां उडंडां भेळणां किलां,
ओपै हेट हेट खंडा खंड जैतवार ।
समाप गयंदां गांवां भूडंडाँ तुहाळा सिवा,
धकावै दिलेस थंडा भूडंडां जोधार ।।२।।

२८– **गीतसार**–प्रोक्त गीत शेखावाटी के सीकर राज्य के शासक राव शिवसिंह शेखावत की वीरता एवं उदारता का परिचायक है । कवि कहता है कि हे शिवसिंह, तुम्हारे हाथ कवियों को गज एवं ग्राम देने तथा मुसलमानों की सेनाओं को युद्ध में विचलित करने में सशक्त हैं । अतः इस कलिकाल में दान और वीरता की तुम्हारी कीर्त्ति गाथा समुद्र पर्यन्त फैल गई है ।

---

१. रैंणा–पृथ्वी । ऊजाळ–उज्ज्वल । अठेल–अविचल । रूकां–खड्गों । भाराथ–युद्ध । आमरखा–अमर्षता रखनेवालों, वैरियों । सोहै–सुन्दर लगता है, शोभा पाता है । गढ़ां सीस–दुर्गों पर । हकां–हमल्ला, हाक । पाथ–पार्थ, अर्जुन । समाथ–समर्थ, बलवान् । आगाहटां–चारण, राव आदि याचकों, कवियों को । बरीस–दान करने । तूझ वाळा–तेरे वाले, तुम्हारे । हीलोळे–आन्दोलित करे । खुरासांणां–खुरासान देश वालों, मुसलमानों ।

२. केवियां–शत्रुता रखनेवालों । ऊधाम–उत्पात, युद्ध । सेलां–भालों । उडंडां–घोड़ों । भेळणां–आक्रमण कर अधिकार में लेना । ओपै–शोभित होते हैं । खंडा खंड–खण्ड प्रति खण्ड, भूखण्ड । जैतवार–विजय करने वाला । समाप–समर्पित कर, दान देकर । गयंदां–हाथियों । गांवा–ग्रामादि भूमिदान । भूडंडां–भुजदण्ड । सिवा–हे राव शिवसिंह । धकावै–पीछे हटावे । दिलेस–दिल्लीश्वर, बादशाह । थंडा–सेना, समूह । जोधार–योद्धा ।

सोहै जांगीरोड़ धूंसां दला रा बेछाड़ सेखा,
वकै सांच ग्रौनाड़ पांडवां मुदी वाच ।
ऊपड़े गैजूह ग्रागाहटां धाड़ धाड़ ग्राचां,
ऊथाळे जवन्ना धाड़ धाड़ ग्राच ॥३॥
पूगी क्रीत चहुंकूंटां ग्रपार समंदा पार,
लगाया पागड़े घणा दावादार लार ।
सोहै मठ्ठी वार तूं उदार ग्रनै वार सिवा,
सार धार ग्राचार संसार सिरै सार ॥४॥

२६ गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रौ

कळू मांझ पाराथियां भोज वीकम करण,
ग्रनत नी ग्राथियां मेळणां ग्राथ ।
साथियां देख दै वलिवा सिवपति,
हाथियां दांण ऊपाड़ियां हाथ ॥१॥

---

२६. गीतसार—उपरांकित गीत सीकर के ग्रधिपति राव शिवसिंह शेखावत की वदान्यता से सम्बन्धित है। कवि कहता है कि याचना करने पर वह प्रसिद्ध दानी राजा भोज विक्रमादित्य ग्रौर कर्ण की भांति धन वितरित करने वाला है ग्रौर विरोध करने वालों का उन्मूलन करने में समर्थ है। उसने कवियों पर प्रसन्न होकर उन्हें 'हाथी बंध' जीविका के स्वामी वना दिए।

---

३. जांगीरोड़—नगाड़ों की निनाद ध्वनि, नगारचियों द्वारा नगाड़ों को वजाए जाने। धूंसां—वादित्र विशेष, वड़ा दमामा। दलारा—राव दौलतसिंह तनय राव शिवसिंह। बेछाड़—विकटवीर। सेखा—शेखावत। वकै—कहता है। ग्रौनाड़—किसी के समक्ष न झुकने वाला, ग्रनम्र। पांडवां मुदी—पाण्डवों में मुख्य, युधिष्ठिर। वाच—वाणी। ऊपड़े—उमड़े, मर्यादा से वाहर निकल कर। गैजूह—गजसमूह। ग्रागाहटां—दान, याचकों को ग्रामादि देना। ऊथाळे—उन्मूलन करे। धाड़ धाड़—धन्य धन्य, ग्राक्रमण। ग्राचां—भुजाग्रों, हाथों।

४. पूगी क्रीत—कीर्त्ति पहुंची, यश फैला। चहुंकूंटां—चारों दिशाग्रों में। समंदा पार—समुद्रों के उस पार तक, समुद्रों के ग्रागे उस ग्रोर तक, विदेशों में। लगाया पागड़े—ग्रधीन बनाए। घणा—घने। दावादार—ग्रपना हक जताने वाले, भागीदार। लार—पीछे, ग्राज्ञानुवर्त्ती। मठ्ठीवार—बुरे समय में, दुर्दिनों में। ग्रनै वार—ग्रनेक वार, ग्रन्य समय। सारधार—खड्ग धारा। ग्राचार—ग्राचरण, दानादि व्यवहार। सिरै—श्रेष्ठ, पांक्तेय।

१. कळू मांझ—कलियुग में। पाराथियां—प्रार्थियों को, याचकों को। ग्रनत नी—ग्रन्य लोगों की। ग्राथियां—धनवानों की। मेळणां—मिलाने वाला, लूटने वाला। ग्राथ—ग्रर्थ, धन। सिवपति—राव शिवसिंह। दांण—दान, मद। ऊपाड़ियां—उठाया, दानादि दिए हुए।

झलां ब्रद झूल अविरच पलां झालियां,
सुपह आपहमलां परखणां सांच ।
अड़सगर जला पाड़ण गजां ऊपाड़ण,
उठाया दला संभ्रम चला आच ।।२।।

असी चव बंध रूपक गुणां आदरै,
विभौ छत्रबंध कूरम वणी वार ।
प्रथी ऊपर थिया आच धजबंध पणौ,
कविन्द गजबंध किया भणै कै वार ।।३।।

३० गीत राव समर्थसिंघ सेखावत सीकर रौ

बांका रावतां दरगह थाट सेखावतां रूप वणै,
ऊफणै अमामे जोम पौरिस में अथाह ।
सेवा रौ अजानवाह सामरथो महासूर,
नीपणां निवाजे छाजै राजै नरां नाह ।।१।।

---

३०. **गीतसार**–यह गीत राव शिवसिंह के पुत्र राव समर्थसिंह शेखावत सीकर की उदारता रप सर्जित है। कवि कहता है कि समर्थसिंह की सभा में बहादुर सरदारों का ठाठ लगा रहता है। वह प्रतिष्ठा और पौरुष में सदैव गौरवान्वित रहता है। कवियों को ग्राम, हाथी और अश्व वख्शता रहता है।

---

२. ब्रद–विरुद। झूल–समूह। पलां झालियां–वस्त्र का छोर पकड़े हुए। सुपह–योद्धा, राजा। परखणां–परीक्षा करने, पहिचानने। अड़सगर–विरोध रखने वालों, शत्रुओं। ऊपाड़न–उन्मूलन। दला संभ्रम–राव दलेलसिंह का भ्रम देने वाला, दलेलसिंह तनय शिवसिंह। आच–हाथ।

३. असी चव–चौरासी। रूपक–गीत छंदों। आदरै–आदर करने, स्वीकार करने। विभौ–वैभव। छत्रबंध–राजा। वणी वार–शुभ वेला, समय आने पर। थिया–हुए। गजबंध–जिनके यहां हाथी बँधे रहते हैं, बड़े कवि। भणै–कहे। कै वार–कई वार।

१. दरगह–दरवार, सभा। थाट–सेना, समूह। ऊफणै–उवले, उमड़े। अमामे–अप्रमाण, बहुत। जोम–गर्व। अथाह–अपार। सेवा रौ–राव शिवसिंह का पुत्र राव समर्थसिंह। सामरथो–समर्थसिंह। नीपणां–याचकों, चारणों। निवाजे–प्रसन्न होकर दान देता है। छाजै–शोभित होता है। राजै–शोभित होता है, रंजन करता है। नरां नाह–नरेश, राजा।

बांकड़ा विड़ंगां वाली गिडंगा अनेक गाज,
सारसी करंतां द्वारि सोहियौ सुंडाळ।
घणां आडो जाडे लोहे गाहड़ी रौ गाडो गिणां,
लाज पुंज कीत लाडो ओपियौ लंकाळ ।।२।।

फूल मदां प्याला फिरै भूंजाई अनेक भांति,
ऊपर कपूर पान अरोड़ी अमल्ल।
केसर गुलाब आब किसतूरी सौंधा केई,
मांणै माया महिपती राज में महल्ल ।।३।।

साख साख ओळखै अनेक भूप सेवा काज,
लाख लाख गावै कै रीझावै तान लाय।
लाख लाख मौजां हुवै लोहे भांजे फौज लाख,
प्रथी सारी लाख लाख लागै आय पांय ।।३।।

---

२. बांकड़ा–बाँकुरे, विकट। विड़ंगां–घोड़ों। वाली–प्यारी, सुहावनी, वाली, की। गिडंगां–ऊँटों की। गाज–गर्जना। सारसी–मस्ती। द्वारि–दरवाजे पर, द्वार पर। सोहियौ–सुहावना लगा। सुंडाळ–शुण्ड वाला, हाथी। घणां–बहुतों के। आडो–ओट। जाडे लोह–सघन शस्त्र प्रहार होते। गाहड़ी रौ गाडो–अत्यंत गर्वीला, महा अभिमानी। लाज पुंज–लज्जा-पुंज। कीत लाडो–कीर्त्ति का वरण करने वाला, कीर्त्ति का दुलहा। ओपियौ–शोभित हुआ। लंकाळ–सिंह, तेजस्वी वीर।

३. फूल मदां–शराब विशेष के। भूंजाई–लोहे अथवा बांस की खपचियों पर अंगारों के ताप से पकाया हुआ मांस। अरोड़ी अमल्ल–केशर-कस्तूरी के पुट से तैयार किया जाने वाला एक प्रकार का बढ़िया अफीम। आब–जल। सौंधा–सुगंधित पदार्थ। मांणै–उपभोग करता है, खर्चता है। माया–धन।

४. साख साख–क्षत्रियों की प्रत्येक शाखा वाले। ओळखै–पहिचानते हैं, जानते हैं। सेवा काज–राव शिवसिंह के कारण, शिवसिंह की अति परिचिति एवं प्रसिद्धि की वजह से। रीझावै–प्रसन्न करते हैं। मौजां–दान, प्रसन्न होकर द्रव्य, भूमि, वाहन आदि देना। लोहे भांजे–युद्ध में शस्त्रों से मारे। प्रथी सारी–समस्त संसार, समग्र पृथ्वी लोक के निवासी। लागै आय पांय–सेवा में उपस्थित होकर चरण स्पर्श करते हैं, अधीनता स्वीकार करते हैं।

भुजां लाख सिरां ताज भेटियां कुंरिद भांजे,
सकाजां सकाज आज सोहियौ सधीर ।
झरोखां अनोखां गोखां कूरमां रौ राव झिलै,
किले वागां जैतखंभ अग्राजे कंठीर ।।५।।
करावां सरावां पीजै गोठियां दपट्टां कीजै,
लोभियां सुधन दीजै लीजै जस लाह ।
ईढ़गारां नरां हूंत आचार सार रै आज,
दला हरो भारी ब्रद धारियां दुवाह ।।६।।
नाहरां रावतां लीधां नगारां अकासां नाद,
सारधारां जीपणो अखाड़े महासूर ।
दीहाड़े सवाड़े आज प्रवाड़ा गवाडे दूठ,
चोड़ै धाड़ै चापड़े पछाड़े सत्रां चूर ।।७।।
जसा स्याम गंग राव राइसाल सूजै जिसा,
लीधां भुजां संघणां मलैसी वाला लाज ।
कदेसरां भाग भूरौ घणां दीह राज करौ,
सामरथो अेतां पाटि सोहियौ सकाज ।।८।।

---

५. सिरां ताज—सरताज, शिरोमणि । भेटियां—मुलाकात करने पर, मिलने पर । कुंरिद—दरिद्रता, निर्धनता । भांजे—नाश करे । सकाजां—कार्यार्थियों के । सोहियौ—सुन्दर लगा । झरोखां—गवाक्षों । गोखां—वातायनों । कूरमां रौ—कछवाहों का राजा । झिलै—वैभव में पूर्ण, शोभित हुए । वागां—उद्यानों । जैत खंभ—विजय स्तम्भ, महावीर । अग्राजे—गर्जना करता है । कंठीर—सिंह, प्रचण्ड वीर ।

६. करावां—पेय पदार्थ, मद्य । सरावां—मदिरा । गोठियां—दावतें । दपट्टां कीजै—खूब खाना-पीना । जस लाह—यश लाभ । ईढ़गारां—बराबरी करने वालों, ईर्ष्यालुओं । हूंत—से । दला हरौ—दलेलसिंह का पौत्र । भारी—बड़ा । ब्रद—विरुद । दुवाह—दोनों हाथों से शस्त्र प्रहार करने वाला ।

७. सारा धारां—खड्ग धाराओं । जीपणो—विजय करने वाला । अखाड़े—युद्ध मैदान में । दीहाड़े सहाड़े—प्रतिदिन प्रभातकाल में । प्रवाड़ा—विरुदावली काव्य । गवाड़े—गान करवाता है । दूठ—वीर । चापड़े—युद्ध में । पछाड़े—पराजित करे । चूर—नाश, चूर्ण ।

८. जसा स्याम········सूजैंजिसा—जसवंतसिंह, श्यामराम, गंगाराम, राव तिरमल्ल, राजा रायसल, राजा सूरजमल्ल जैसे । मलैसी—राजा मलयसिंह । वाला—राव वालाजी । लाज—लज्जा । भूरौ—सिंह, वीर । घणां दीह—बहुत दिनों तक । अेतां—इतने को । पाटि—सिंहासन । सोहियौ—शोभित हुआ ।

३१ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

ग्रंथां पैराकां अेराकां खेत वैराकां सुथंड ग्राहा,
जुद्ध रूकां सैराकां तेज छाकां जुधार ।
बांका ज्यूं बळांका भीम भुजांका साचा भूप,
देवौ दूथियां बैंडाका भडां अरघै उदार ।।१।।
गीतां भेद चीतां झंप लीतां गीतां सात्रां गढां,
भारथी समाथ रथी पारथियां भेस ।
बाणां कथां डाणां तत्तां पाणां सत्रां घाणां बंदै,
नीपणां केकाणां नरां चंद रौ नरेस ।।२।।
आरोधीस येड़ा मंड ऊंचश्रवा पंड अंसी,
वाचा जे प्रलंब त्राचा आचाग विभाड़ ।
उरंगां अभासी रंगां प्रभा जंगां जीप अंगां,
बीदगां तुरंगां जोधा रखै बांमराड़ ।।३।।

---

३१. गीतसार—यह गीत सीकर नरेश देवीसिंह शेखावत के पराक्रम तथा वदान्यता पर कथित है। इसमें कवि ने लिखा है कि युद्ध और दान की कीर्त्ति कथा श्रवण कर राव देवीसिंह कवियों, योद्धाओं और घोड़ों की छान-बीन कर उन्हें खरीद लेता है अर्थात् अति सम्मानित कर अपने बना लेता है।

---

१. ग्रंथां पैराकां—काव्य ग्रंथों की रचना में प्रवीण। अरोकां खेत—रणक्षेत्र में काम आने वाले हयराज, ईराक क्षेत्र के घोड़े। बैंराकां सुथंड़ ग्राहा—वैरी समूह को पकड़ने में समर्थ योद्धाओं। रूकां—तलवारों। सैराकां—बराबरी वालों में। छाकां—छके हुए, आपूर्ण। जुधार—योद्धा। बांका—विकट। बळां का—बलवान। भीम भुजां का—भीम जैसा भुजबली। दूथियां—कवियों को। बैडाकां—घोड़ों। अरघै—पूजा करता है, सम्मानित करता है।

२. गीतां भेद—गीत छंदों के भेद। चींता—चित्त में। झंप लीतां—कूदान लेते। सत्रां गढ़ां—शत्रु दुर्गों को। भारथी—भारत, युद्ध में। समाथ—समर्थ। पारथियां—अर्जुन के, प्रार्थना करने पर। बाणां—वाणी। डांणा—चाल। तत्तां—तेज। पाणां—बल। घाणां—घमासान, मथने, मारने। बंदै—वन्दना करता है। नीपणां—कवियों। केकाणां—घोड़ों। नरां—योद्धाओं। चंद रौ—राव चाँदसिंह का पुत्र राव देवीसिंह।

३. आरोधीस—शस्त्र, रोकने वाले। येड़ा—ऐसे। ऊंचश्रवा—उच्चैःश्रवा। पंड—शरीर। वाचा—वचन के। प्रलंब—लम्बी। त्राचा—कूदान। आचाग—भुजाएँ। विभाड़—विनाश करने वाले। उरंगां—वक्षस्थल। जीप—जीतने वाले। बीदगां—विदग्धों। बांमराड़—जबरदस्त।

सेस वांणी संथा घाट काठयांणी दंती सूंडा,
　　जीहां ग्रम्मी जम्मी धावा धावा सत्रां जंद ।
बायकां कहावा नगां तावां ग्रंगां वाहां वंका,
　　रेणवां विड़ंगां बीरां परक्खै राजंद ।।४।।

कविंदां सजोड़ां राखि चहूंग्रोड़ां क्रीत कथै,
　　साकुरां तातोड़ां रीधै प्रसंसे सादेस ।
लड़ाळां ग्ररोड़ां भड़ां पांण सत्रां भौम लीधी,
　　दीधी भोक राजा संके मीढ़ रा ग्रादेस ।।५।।

सेवा दला जसा स्याम गंग राव रासा जिसा,
　　येता भूपां वूजळा व्रणां पाळ ग्राप ।
पंडां रावतां छतीस वंस तणौ पती,
　　प्रथीनाथ तपौ देवौ चौगणौ प्रताप ।।६।।

—नवलराम कविया रौ कह्यौ

---

४. संथा—संहिता । घाट काठयांणी—काठियावाड़ स्थान के । दंती—हाथी । सूंडा—शुण्डधारी । जीहां ग्रम्मी—जिह्वा से ग्रमृत वाणी बोलने वाले । जम्मी धावा—पृथ्वी पर दौड़ने वालों में । धावा सत्रां—शत्रुग्रों पर धावा मारने वालों । वायका कहावा—यश कथा काव्य कहलवाने वाले । नगां तावां—हाथियों से तेज गति वाले । ग्रंगां वाहां वंका—शरीर बल तथा विकट भुजा वाले । रेणवां—कवियों । विड़ंगां—घोड़ों । परक्खै—परीक्षा करता है ।

५. चहुं ग्रोड़ां—चारों तरफ । साकुरां—घोड़े । तातोडां—तेज गति वाले । रीधै—प्रसन्न हो । लड़ाळा—जूझने वाले । ग्ररोड़ां—जबरदस्तों । पांण—भुजाएँ, बल । भोक—धन्य, वाह । संके—शंकित, डरते हैं । मीढ़ रा—बराबरी वाले । ग्रादेस—नमस्कार, ग्राज्ञा ।

६. सेवा दला·······रासा—राव शिवसिंह, दौलतसिंह, जसवन्तसिंह । श्यामराम, गंगाराम राव तिरमल्ल ग्रौर राजा रायसल जैसे । येता—इतने । वूजळां—उज्ज्वल । व्रणां पाळ—पट् दर्णों का पालक । पंडां—ग्राप, शरीर का । तपौ—राज्य करो । देवौ—देवीसिंह ।

३२ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

आया असुराण खड़ै धर ऊपर, प्रगट करै खत्रवट पणौ।
डुजड़ां पांण राखियौ देवा, तैं पांणी ढूंढाड़ तणौ ।।१।।
अनमी कंध चंद रा अवतारी, साहां दळ आयां सबळ।
चवदा चाळ तणौ बंध-चाळां, जुध कर तूं राखे सुजळ ।।२।।
जग सारे आछत छत जांणी, खागां जुध जुध जैतखंभ।
अमरसरा राखियौ अणभंग, आंबानयरि धरा चौ अंभ ।।३।।
सामंत रूप दूसिरा सेवा, पाथ करण जुध धीर पुंडीर।
रवदां भांज पाधरा रूकां, नरंद गिरां चाढ़ियौ नीर ।।४।।

---

३२. **गीतसार**–यह गीत राव देवीसिंह शेखावत सीकर के स्वामी पर सर्जित है। इसमें राव देवीसिंह द्वारा जयपुर राज्य की ओर से युद्ध में शाही सेना के विरुद्ध लड़ कर विजय प्राप्त करने का संकेत है। देवीसिंह ने नजबकुली और मुरतजाअली शाही सेनानायकों को तंवरावाटी के सिरोही और रामगढ़वाटी के खाटू स्थानों पर युद्ध कर पराजित किया था।

---

१. असुराण–मुसलमान। खड़ै–प्रस्थान कर। खत्रवट–क्षत्रियत्व। डुजड़ां पांण–खड्ग बल से। देवा–देवीसिंह। तैं–तुमने। पांणी–कांति। ढूंढाड़–जयपुर राज्य का प्राचीन नाम। तणौ–का।

२. अनमी कंध–जो अपना कंधा न झुकने दे, महान् बली। चंद रा अवतारी–राव चाँदसिंह का अवतार, देवीसिंह। साहां दळ–शाही सेना। सबळ–बलवान। चवदा चाळ–चौदह परगने। बंध-चाळां–वस्त्रों के पल्ले बाँध कर, राजा। सुजळ–कीर्ति।

३. सारे–समग्र। आछत–अभाव, छिपे रहने का भाव, टोटा। छत–पृथ्वी, छत्र, राजा। खागां–तलवारों। जैतखंभ–विजयस्तम्भ, दुर्घष वीर। अमरासर–शेखावतों की प्राचीन राजधानी का नाम, अमरसर पर राज करने वाला। अणभंग–अखंड, अटल बहादुर। अंबानयरि–आमेर। धरा चौ–राज्य को। अंभ–आब, कांति, जल।

४. दूसिरा सेवा–द्वितीय राव शिवसिंह, राव देवीसिंह। पाथ–पार्थ, अर्जुन पाण्डव। करण–राजा कर्ण, करने वाला। जुध–युद्ध। धीर पुंडीर–सम्राट पृथ्वीराज चौहान का प्रसिद्ध सामन्त धीरपुंडीर। रवदां–मुसलमानों का। भांज–संहार। पाधरा रूकां–सीधी तलवारों से। नरंद–राजा। गिरा चाढियो नीर–पर्वतों को कीर्तिमान् किया।

पौढ़ा जिम चढ़ियौ परमांणे, जांणे न्रप उपगार जूवौ ।
तनसा सौच हुवौ तुरकांणे, हिंदवांणे उदमाद हूवौ ।।५।।

३३ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

दिये ऐरापती रूप रा गयंदा आगाहटां दान,
आकारीठां धूप रा बिरद्दां लीधां आद ।
जांबूदीप ऊपरां मंगळी डंका आठ जाम,
सेखावतां भूप रा रणंकै जैत साद ।।१।।

इलोळां सांसणां मौजाक दातारा इंद,
मगंजी सार रा कोट धारियां मरोड़ ।
रैण धू अडोल अेण वार रा वीजाई रासा,
आचार रा घूरै तासा ताहरा अरोड़ ।।२।।

---

३३. गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के सीकर संस्थान के राव देवीसिंह शेखावत के दान और वीरता पर सर्जित है। कवि ने गीत में लिखा है कि देवीसिंह याचकों को ऐरावत हाथी जैसे हाथी दान में देता है। उसकी उदारता और वीरता के यश का घोष आठोयाम जम्बूद्वीप में गूंजता रहता है। इस समय वह अपने यशस्वी पूर्वज राजा रायसल की समता करता है।

---

५. पौढ़ा—प्रौढ़, चतुर। जिम—ज्यों। जांणे—जानता है, मानो। उपगार—उपकार। जूवौ—अलग, पृथक। तुरकांणे—मुसलमान राज्यों में। हिंदवाणे—हिन्दू प्रान्तों में, हिन्दू समाज में। उदमाद—हर्ष, आनंद।

१. अेरापती—इन्द्र का हाथी ऐरावत। रूप रा—आकृति का। गयंदां—हाथियों। आगाहटां—चारणों आदि को दिए गए दान के ग्राम। आकारीठां—महाघोर संग्राम। धूप रा—तलवार के। विरद्दां लीधां—विरुद ग्रहण किए। आद—आदिकालीन, पूर्व परम्परागत। जांबूदीप—जम्बू द्वीप। मंगळी डंका—मांगलिक ध्वनि। आठ जाम—आठोयाम। रणंकै—वजते हैं। जैत साद—विजयनाद, जय घोष।

२. इलोळां—हिलोर, लहर। सांसणां—चारण कवियों को दान में प्रदत्त ग्राम और भूमि को 'सांसण' कहा जाता है। ऐसे ग्रामों पर किसी प्रकार का लगान आदि नहीं लिया जाता है। इंद—इन्द्र। मगंजी—मग्ज, गर्व भरे। सार रा कोट—लोह दुर्ग, जबरदस्त वीर। धारियां—धारण किए हुए। मरोड़—ऐंठ। रैण धू—पृथ्वीलोक में ध्रुव की भाँति। अडोल—अटल, अडिग। अेण वार रा—इस समय का। वीजाई रासा—द्वितीय राजा रायसल सदृश राव देवीसिंह। घूरै—घोष करते हैं। तासा—वाद्य विशेष। ताहरा—तेरा, तुम्हारा। अरोड़—नहीं रुकने वाला, बलवान्।

पती सुरां चीत रा देवाळ करी ताकवां पत्रां,
झोक जंगां जीत रा धननजै क्रोध झाळ ।
चीत रा अथाग जोस ध्राहुड़े विजाई चंद,
तांबाळां भूलोक माथै क्रीत रा त्रंबाळ ।।३।।

इंद रवि साज रा सिंधुरां गांवां दैण आथ,
दोयणां समाज रा दैवाळ जंगां दाह ।
बडा भप देवसा आज रा झोका दान बातां,
राज रा नीधसे डंका सिरै दहूं राह ।।४।।

---

३. पति सुरां चीत रा—देवराज इन्द्र के समान उदार चित्तवाला, महादानी । देवाळ—दानदाता, देनेवाला । करी—हाथी । ताकवां—कवियों, चारणों को । पत्रां—ताम्रपत्र देकर ग्रामादि । झोक—धन्य धन्य । जंगां—युद्धों । जीत रा—विजय का । धननजै—अर्जुन । क्रोध झाळ—क्रोधाग्नि, कोपानल । चीत रा—चित्त के । अथाग—अथाह, उदार । ध्राहुड़े—गर्जन करे, भस्म करे । बिजाई—द्वितीय । चंद—गीतनायक का पिता राव चाँदसिंह शेखावत । यहाँ देवीसिंह को अपने पिता के समान पराक्रमी कहा गया है । तांवाळां—ताम्रपत्रों, नगाड़ों । माथै—पर । क्रीत रा—कीर्ति का । त्रंबाळ—नागड़े, जिन नगाड़ों का पेंदा (कुण्डी) ताम्रधातु से निर्मित होता है उन्हें ताम्बागळ, त्रम्वाळ आदि कहा जाता है ।

४. इंद रवि—इन्द्र और सूर्य के । साज रा—सजावट वाले, ऐरावत और उच्चैश्रवा जैसी साजत वाले । सिंधुरा—हाथियों । आथ—अर्थ, धन । दोयणां समाज—वैरियों का समूह, दुश्मनी रखनेवाला समूह । दैवाळ—देने वाला । जंगां—युद्धों में । दाह—दग्ध, जलन उत्पन्न करने, नाश करने । देवसा—राव देवीसिंह । झोका—शाबाश । राज रा—आपश्री के । नीधसे—ध्वनित होते हैं, आवाज करते हैं । डंका—दण्डक, नगाड़े बजाने के दण्डक । सिरै—ऊपर, श्रेष्ठ । दहूं राह—हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के माननेवाले ।

३४ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

अडर झोका देवा उरड़ खटै ब्रद अछूता,
भुजां रज ऊपटै सिखर कुळ भाण ।
धर थटै तूझ खग लार हीन्दू धरम,
समर भर कटै खग धार खुरसाण ।।१।।

पाथ जिम चंद सुत जुध विजै मंत्र पढ़ै,
गाथ मरदां जरद मंढ़ै अवगाढ़ ।
पूठ थारै खड़ग चढ़ै न्रप कुळ प्रभत,
वढ़ै कुळ असुर थारै खड़ग वाढ़ ।।२।।

---

३४. **गीतसार**–ऊपरांकित गीत सीकर के राव देवीसिंह शेखावत पर लिखित है । गीतकार ने इस गीत में लिखा है कि वह वीर देवीसिंह नवीन विरुद प्राप्त करने तथा अपनी खड्ग शक्ति से नए नए राज्यों पर अधिकार स्थापित करने वाला है । और युद्धों में मुसलमानों का संहार करने में समर्थ है ।

---

१. अडर–निडर । झोका–धन्य धन्य । देवा–राव देवीसिंह । उरड़–जोश में उमड़ कर, उत्कट इच्छा, युद्ध, पराक्रम । खटै–प्राप्त करे, अर्जित करता है । ब्रद–विरुद । अछूता–ऐसे जो किसी अन्य ने प्राप्त न किए हों । अछूते–नवीन । रज–रजपूती, क्षत्रियत्व । ऊपटै–उमड़ता है । सिखर कुळ–शेखावत वंश के । भाण–भानु, रवि । धर थटै–शोभा धारण किए, शोभायमान, एकत्रित हुए । खग–खड्ग । लार–पीछे । समर–युद्ध । खगधार–खड्ग धारा में, योद्धा । खुरसाण–मुसलमान ।

२. पाथ–अर्जुन । चंद सुत–राव चाँदसिंह तनय गीतनायक देवीसिंह । विजै–विजय के । गाथ–गात्र, शरीर । मरदां–मर्दों के, वीरों के । जरद–कवच । मंढ़ै–मण्डित । अवगाढ़–गाढ़ा, युद्ध, वलवान् । पूठै–पृष्ठ पर, अनुगामी । थारै–तेरे, तुम्हारे । प्रभत–अनेक, प्रभुत्व वाले । वढ़ै–कटते हैं, नाश होते हैं । कुळ–वंश । असुर–राक्षस, मुसलमान । वाढ़–धारा में, कृपाण की तीक्ष्ण धारा में ।

भुजवळां तपै सिवसिंघ हर भवानी,
अपै पळचर गळां धर कळा ऊक ।
थिर मगर रूक तौ राजवंसी थपै,
रिण कवै मेछवंसी अगर रूक ।।३।।
तिजड़ व्रत धू-धारियाँ सगत तायणी,
नित फतै पायणी बांधियां नेत ।
धूधड़े अभै वरदायणी छत्र धरा,
खायणी आसुरां डायणी खेत ।।४।।
—उम्मेद सांदू सीहू रौ कह्यौ

३५ गीत राव देवीसिंघ सेखावत रौ खाटू रा जुद्ध रौ

उरड़ मुरतजाखांन घण बाणां उठी,
अठी देवौ खगां ऊबाणां आड़ि ।
पागरे खेत सेखावतां पठाणां,
रावतां दीवाणां मंडे राड़ि ।।१।।

---

३५. गीतसार—यह गीत सीकर के राव देवीसिंह ने शेखावाटी के खाटू स्थान पर शाही सेनानायक मुर्तजाअली भड़ेच को पराजित कर प्रसिद्धि प्राप्त की, उसका परिचायक है । गीत में लिखा है कि उधर से तो नवाब मुर्तजाअली ने तोपों की आग बरसाते हुए आक्रमण किया और इधर से राव देवीसिंह ने नग्न तलवारों से खुले मैदान में युद्धारम्भ किया ।

३. सिवसिंघ हर—राव शिवसिंह का पौत्र राव देवीसिंह । भवानी—दुर्गा । अपैं—अर्पित करे । पळचर—मांसाहारी । गळां—मांस पिण्ड, ग्रास । ऊक—अग्नि । थिर—स्थिर । रूक—तलवार । थपै—स्थापित करे । कवै—ग्रास । मेछवंसी—मुसलमान । अगर—आगे, सामने ।

४. तिजड़—तलवार का । धू धारियां—अटल, अडिग । सगत—शक्ति, रण चढ़ी । तायणी—ताप देने वाली । पायणी—प्राप्त करने वाली । बांधियां नेत—वीरता सूचक चिह्न धारण किए । धू धड़े—खुले आम, निशंक, अटल । अभै—अभय, दोनों । वरदायणी—वरदात्री । छत्रधरा—छत्रधारिणी, देवी । खायणी—विनाशकारिणी । डायणी—डाकिनी, रण चण्डी । खेत—समरस्थल में ।

१. उरड़—आगे बढ़ कर, उमड़ कर, बल पूर्वक बढ़ कर । घण बांण—घन बाण, तोपें । उठी—उधर से । अठी—इधर से । देवौ—राव देवीसिंह । खगां ऊवाणां—नंगी तलवारें । आड़ि—जोड़ी, बराबर की, भिड़ाई । पाधरे खेत—सीधे मैदान में, खुली युद्ध भूमि में । मंडे—लड़े । राड़ि—लड़ाई, युद्ध ।

नूरिमा रौद्र रसि वीर बावन नचै,
निछट खग धूरिमां खचै ग्रह नाथ ।
सचै खत्रवट बिरद सरीखां सूरिमां,
भड़ेचां कूरिमां रचै भाराथ ।।२।।

कुहरि मच जिण समै धूम ग्रातस कौहोर,
चौहोर भिड़ भूंह मूंछां सुतन चंद ।
बिजड़ झड़ चत्र पौहोर नरां लूथ वत्थै,
सुरां ग्रसुरां मत्थै बौहोर समंद ।।३।।

वहसि छळ हिंदवांकार सिवपत बियौ,
लोभवत धार खग दियौ लोभो ।
जखम हुय मुरतजा ग्रर हार तजियौ,
सरब गारत कियौ मार सोभो ।।४।।

पाट उधोर खत्रवाट धिन पराकम,
भिड़ज ग्रवियाट खग झाट भेळै ।
ग्रनम कंध प्रवाड़ो खाट थह ग्रावियौ,
मुगल्लां थाट दहवाट मेळै ।।५।।

२. नूरिमा–कांति वाले ।रौद्ररसि–रौद्ररस, भयानक । नचै–नाचे । निछट–पछांट देकर । धूरिमां–शत्रु मस्तकों । खचै–खेंची । ग्रहनाथ–सूर्य ने । सचै–सच्चे । खत्रवट–क्षत्रियत्व । सरीखां–समान । भड़ेचां–भड़ेच जातीय यवन, मुर्तजाग्रली के सैनिक । कूरिमां–कछवाहों । रचै–लड़ा । भाराथ–युद्ध ।

३. कुहरिमच–कोलाहल होकर । समै–वक्त । धूम–धूम्र । ग्रातस–ग्रातिश, ग्रग्नि । कौहोर–कुहरा । चौहोर–चिहुर, केश । भिड़–मिल कर । भूंह–भ्रूहें । सुतन चंद–राव चाँदसिह का पुत्र, राव देवीसिंह । बिजड़–तलवार की । झड़–झड़ी, बौछार । चत्र पौहोंर–चार प्रहर । लूथ वत्थै–गुत्थमगुत्थ । मत्थै–मंथन कर । समंद–समुद्र ।

४. वहसि–जोश में भरकर । छळ–युद्ध । सिवपत बियौ–दूसरा राव शिवसिंह, राव देवीसिंह । लोभवित–लोभवृत्ति, लुब्ध धन । धार–ग्रहण कर । लोभो–लुब्धता । जखम–घायल । ग्रर–ग्ररि, वैरी । गारत–गर्त्त, नष्ट भ्रष्ट । सोभो–सूवा, प्रान्त ।

५. पाट उधोर–सिंहासन का उद्धारक । धिन–धन्य । पराकम–पराक्रम । भिड़ज–घोड़े । ग्रवियाट–युद्ध । खगझाट–खड्गाघात । भेळै–मिला कर । ग्रनम कंध–ग्रनम्र स्कन्ध, ग्रविनत कंध । प्रवाड़ो–कीर्त्ति । खाट–प्राप्त कर । थह–दुर्ग । मुगल्लां थाट–मुगल सेना । दहवाट–नष्ट । मेळै–मिला कर ।

भड़ां सिध तणै भय खाग ग्रळगा भमै,
कदै नह ग्रांगसे लाग केवै ।
दूसरै रायसल पातिसाही दळां,
दमंगळां दिरवा झाट देवै ।।६।।

३६ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

दाता संताप मेटियौ भलो सुपात ग्रासीस दखै,
रोपे खंभ तलाकां सांभळो उभै राह ।
कूजळो चाढ़ियौ रंग नाणो ले सासणां केई,
सोभा ग्रंग ऊजळो काढ़ियौ देवसाह ।।१।।
मेखां ग्राव दीधी चारणां रा कुरिन्द रै माथै,
पलावंध इन्द रै धारणां कीधी पाळ ।
लोभ रा फंद रै संगी लगायौ रसतौ लोप,
भांजियौ दसतौ पंगी चंद रै भुजाळ ।।२।।

---

३६. इस गीत में कवि ने सीकर राज्य के शासक राव देवीसिंह शेखावत द्वारा सुरह स्थापित कर चारण ब्राह्मणादि के भूम्याधिकार को सुरक्षित करने की प्रशंसा की गई है । कवि कहता हैं कि कतिपय शासकों ने चारणादि षट् वर्णों की दान में प्राप्त भूमि को वापस लेकर कलंक-ग्रपयश-का टीका लगवाया । किन्तु देवीसिंह ने उनकी दान की भूमि बहाल कर कलंक का धब्बा मिटा कर दिया ।

---

६. भड़ां—योद्धाग्रों । ग्रळगा—ग्रलग, दूर । भमै—फिरते हैं । कदै—कभी भी, कब । ग्रांगमे—ग्रंगीकार करे । लाग केवै—पीछे पड़कर, प्रतिशोध लगकर । दमंगळां—युद्धों में । झाट—ग्राघात, झटका । देवै—देकर, राव देवीसिंह ।

१. दाता—दानदाता, स्वामी । भलो—ग्रच्छा । सुपात—सत्पात्र, सुकवि गण । दखै—बोलते हैं । रोपे खंभ तलाकां—तलाक के स्तम्भ स्थापित कर । सांभळो—सुनो । उभै राह—दोनों मार्ग वाले, हिन्दू ग्रौर मुसलमान । कूजळो—कुजल, कलंक । चाढ़ियौ—चढ़ाया, लगाया । नाणो ले—रुपये लेकर । सासणां—चारणों को दान में की हुई भूमि । ऊजळो—उज्ज्वल । देवसाह—राव देवीसिंह ने ।

२. मेखां ग्राव—गौमुखाकृति पत्थर का स्तम्भ जिस पर राज्याज्ञादि उत्कीर्ण की हुई होती है । कुरिंद रै माथै—दरिद्रता के सिर पर । पलावंध—वस्त्रों का छोर बाँध कर चलने वाले, बड़े राजा । पाळ—पालन, पैंज । रसतौ—रास्ता, पथ । लोप—उल्लंघन । भांजियौ—मिटाया, नष्ट किया । दसतौ—दहसत का, दस्तूर । पंगी—कीर्ति । चंद रै—राव चाँदसिंह के पुत्र देवीसिंह । भुजाळ—भुजबली ।

तसां मठां दबे पायौ तमांम दीत रौ तेज,
सारी धरा थायौ तांम चीत रौ सोभाग ।
अनीत रौ दांम ले लगायौ रोग आगाहटां,
दूजै सिवै कीत रौ मिटायौ स्याम दाग ।।३।।

चाव गजां गांमां दैण हमेसां चोगुणौ चाळो,
तेण भाळो नरेसां तोगणौ मीढ़ तास ।
कीत कासली रा तणी ओगणौं मेटतां काळो,
आप कीत वाळो बधै सोगणौ ऊजास ।।४।।

घड़ाय देवळा त्रहूं ठिकाणां तलाक घतै,
अखै पात चहूंवळां सोभाग असोत ।
सेखा यन्दु प्रसधि प्रकास कळा अग्र सारां,
दीसै आसपास तारा धूंधळा देसोत ।।५।।

---

३. तसां–तैसे, उसी ओर । मठां–कृपणों । दीत रौ–आदित्य का । थायौ–हुआ । तांम–तुम्हारी, तव । चीत रौ–चित्त का, मन का । अनीत रौ–अनीति का । दांम–रुपये, प्राचीन कालीन एक सिक्का । आगाहटां–चारणों को पुरस्कार अथवा दान में प्राप्त ग्राम । सिवै–शिवसिंह । कीत रौ–कीर्ति का । मिटायौ–नष्ट किया । स्याम दाग–काला धब्बा ।

४. गजां–हाथियों । चौगुणो चाळो–चौगुनी क्रीड़ा, चाल । तेण भाळो–उससे । मीढ़–बराबरी । तास–उस, वह । कीत–कीर्ति । कासली रा तणी–कासली ठिकाने के स्वामी की, राव देवीसिंह के राज्य में कासली का परगना था । ओगणौ–अवगुण का । मेटतां–नाश करते । काळो–कलंक, दाग । वधै–बढ़ा, वर्द्धित । ऊजास–प्रकाश, रोशनी ।

५, घड़ाय–घड़वा जर, निर्मित कराकर । देवळां–पाषाण मूर्त्तियाँ । त्रहूं ठिकाणां–सीकर, कासली फतहपुर आदि तीनों ठिकाने । घतै–दिलवा कर, घोषणा कर मुनादी करना । अखै पात–अक्षयपत्र, कवि वर्णन करते हैं । चहूंवळां–चौतरफ । असोत–ऐसा । सेखा यन्दु–शेखावतों का चन्द्र, कुलचन्द्र । कळा–कान्ति । सारां–समस्त । धंधळा–धूमिल, धुंधले । देसोत–राजा, देशपति ।

३७ गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

जरद पोस दळ सालुळे सेस सिर दरद जद,
असह गळ करद कीजै उखेळे।
दुरद घड़ सरद घण लछौ मारुत दिखण,
मरद पर गढ़ां नूं गरद मेळे ।।१।।

कुरंग छेका तुरंग पीठ पाखर कसे,
रोस अंग खळां रा राह रूधा।
देवसुत धकै नह रहै सावत दुरंग,
सुरंग लागे ढहै नीम सूधा ।।२।।

भड़ वडां पांण अवसांण वाथां भरै,
मंडे जुध करै मन छकु मेळां।
चड सज जिला कछवाह जावै चढ़ै,
पड़ै पाधर हुवै किला पैलां ।।३।।

---

३७. **गीतसार**–कवि का कथन है कि सीकर नरेश रावराजा लक्ष्मणसिंह अपने सैनिकों को युद्ध सज्जा से सजाकर शत्रुओं पर चढ़ता है तो शेषनाग का मस्तक पीड़ित हो उठता है। वह हस्ति सेना रूपी शरदकालीन मेघघटा को छिन्नभिन्न करने वाले दक्षिण दिशा का प्रभंजन तुल्य लगता है। शत्रुओं के सुदृढ़ दुर्गों को वह बात की बात में भूमिसात् कर देता है।

---

१. जरद पोस–जिरह बख्तर। सालुळे–उमड़कर चले। सेस सिर–शेषनाग का शीश। दरद–दर्द, पीड़ित। जद–जब। असह–शत्रु। गळ–मांस, कंठ। करद–तलवार। उखेळे–युद्ध क्रीड़ा। दुरद घड़–गज सेना। सरद घण–शरद ऋतु के मेघ। लछौ–रावराजा लक्ष्मणसिंह। मारुत दिखण–दक्षिण दिशा का प्रभंजन। मरद–वीर। पर गढ़ां नूं–शत्रुओं के दुर्गों को, पराये किलों को। गरद मेळे–धूलि में मिलाता है।

२. कुरंग छेक–मृगों को भी गति में पीछे छोड़ देने वाले। तुरंग–घोड़े। पाखर–घोड़ों के कवच। कसे–कसकर, बाँधकर। रोस–रोष। राह–मार्ग। रूधा–रोके, रुद्ध किए। देव सुत–देवीसिंह के पुत्र लक्ष्मणसिंह के। धकै–सम्मुख। सावत–सुरक्षित, सही सलामत। दुरंग–किले। ढहै–गिर पड़ते हैं। नीम सूधा–नींव (बुनियाद) सहित।

३. पांण–बल, भुजाएँ। अवसांण–दाव, मौका आने पर। बाथां भरै–भुजपाश में लेवे। मंडे जुध–युद्ध होने पर। छकु–छके, मस्त हुए। चड–सवारी कर, सहायता पर। पाधर–सीधे, सपाट। पैलां–विपक्षियों के, वैरियों के, उधर वालों के।

निज मते वहै घण ज्यूं घूरै नौबतां,
सिलक तोपां फतै दीह साजा।
पर गढ़ां भीलण डाकी धणै सूर पण,
राव रा सिरोमण राव राजा ।।४।।

३८ गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

भड़ां मेळियां थाट भिड़जां कड़ा भेड़ियाँ, खेड़िया सिंघ उठै खिजायौ।
औद्रका पड़ै अरियां धरा ऊपरां, ओ लछौ फतैपुर नाथ आयौ ।।१।।

बाजे धूंसा डंका चका बंध बाजंदां, चढ़े भड़ कजाकां मेळ चाळौ।
प्रगट प्रसणां धरा दीह धाका पड़ै, आवियौ सिंघ नर देव वाळौ ।।२।।

---

३८. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह शेखावत के शत्रुओं पर आतंक का बोधक है। गीतकार का कथन है कि लक्ष्मणसिंह जब अपनी सेना को सज्जित कर शत्रुओं पर चढ़ाई करता है तो वह हाका द्वारा छेड़छाड़ किए हुए सिंह की भाँति सत्वरता से प्रस्थान करती है। अतः शत्रुओं के दिलों पर रात दिन यह आतंक छाया रहता है कि—वह फतहपुर का स्वामी लक्ष्मणसिंह चढ़ आया।

---

४. निज मते—अपने मत से, स्वेच्छा पूर्वक। वहै—चलते हैं। घण ज्यूं—मेघों की तरह। घूरै—घोप करे। सिलक—तोपों की गर्जन ध्वनि। दीह—दिन। भीलण—गिराने, लेने। डाको—दुर्धर्प योद्धा। घणै—अधिक, घने। सूर पण—शूरवीरता। राव रा—राव देवीसिह का।

१. भड़ां—सुभटों। मेळिय। थाट—सेना एकत्रित किए। भिड़जां—घोड़ों। कडां भीड़ियाँ—जीनपोश एवं कवचादि के कड़े कस कर मिलाए हुए। खेड़िया—हाके में उठाए हुए। सिंघ—सिंह। खिजायौ—क्रोधित। औद्रका—आतंक, भय। अरियां—वैरियों की। लछौ—रावराजा लक्ष्मणसिंह।

२. धूंसा—वादित्र विशेप। डंका—दण्डक। चकावंध—सेना, निशाना लगाकर। बाजंदां—घोड़ों के। भड़—वीर। कजाकां—योद्धा, वलवान, लुटेरा। मेळ चाळौ—युद्धार्थ सम्मिलित हो। प्रसणां—वैरियों। दीह—दिन। धाका पड़ै—धाक पड़ती है, आतंक फैला रहता है। सिंघनर—नरशार्दूल, नृसिंह। देववाळौ—राव देवीसिंह का पुत्र लक्ष्मणसिंह।

अगट भालां भड़ां दमंग झड़तां चखां, प्रवाड़ा खाग बळ फतै पावै ।
अचीतौ राव सेखौ खळां ऊपरे, यसे अध्रियामणै रूप आवै ।।३।।

—जीवण मोतीसर रौ कह्यौ

३९ गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

अघट दान झड़ रूप आचां लछा अहोनिस,
इळ क्रन भोज वड रखण अखियात ।
सरस दुत मिली नभ गंग तव मही सिर,
छिली जस तरंग सेखावतां छात ।।१।।

सुद्रव जळ रीझां सघण साझ री,
व्रवण गज वाज री सहल बरता ।
अर तर ठम तोड़ हाले सजव आज री,
राज री देव सुत सुजस सरिता ।।२।।

---

३९. **गीतसार**—इस गीत में कवि ने सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह शेखावत की दान वीरता का वर्णन किया है। वह कहता है कि शेखावत नरेश लक्ष्मणसिंह पृथ्वी पर दानी कर्ण और राजा भोज की भाँति अपनी प्रसिद्धि अक्षुण्ण रखने के लिए रात दिन अपार दान देता रहता है। उसके दान की सरिता शत्रु रूपी तरुओं की बाधाओं का उन्मूलन करती प्रवाहित होती रहती है।

---

३. दमंग—अग्निकण। चखां—चक्षुओं से। प्रवाड़ा—यशकाव्य। खाग बल—खड्ग की शक्ति से। अचीतौ—अचिंत, यकायक। सेखौ—शेखावत लक्ष्मणसिंह। यसे—ऐसे। अध्रियामणै—भयानक, आतंककारी। आवै—आता है।

१. अघट—अपार। दान झड़—दान की झड़ी। आचां—हाथों से। लछा—रावराजा लक्ष्मणसिंह। इळ—पृथ्वीतल पर। अखियात—अक्षय कीर्ति, प्रसिद्धि। दुत—द्युति, शोभा। नभ गंग—आकाश गंगा। तव—तेरी। मही सिर—पृथ्वी पर। छिली—छलकी। जस तरंग—यश की तरंग। छात—छत्र, राजा।

२. सुद्रव जळ—सुधन रूपी जल। रीझां—दान की बौछारें। सघण—सघन। व्रवण—देने। वाज—घोड़े। बरता—व्यवहृत, वर्त्तमान में। अर तर—शत्रु रूपी वृक्षों की। ठम—बाधा, रोक। हाले—चले। राज री—आपकी। देव सुत—देवीसिंह तनय। सुजस सरिता—कीर्ति रूपी नदी।

दान बरसाळ अणथाग देवण सुद्रब,
भाग धिन जिकां सुभ निजर भाळी ।
बहै अणथाग अति आघ खट व्रन तणौ,
आपगा अघट सोभाग वाळी ।।३।।

बहै अेकण दिसा रीत सरिता सरब,
निज मिळे अेक सामंद करै नाह ।
रवि रसम जेम चहुँ तरफ फैली रसा,
क्रीत नद ताहरी राव कछवाह ।।४।।

४० गीत कुँवर करणसिंघ सेखावत डूंगरियास रौ

पति असमर संकर सकति अपछर,
विजय पिण्ड सिर रुधिर वर ।
कारण पंच पूगौ भड़ करणौ,
कळह रिमागां हठ कंवर ।।१।।

---

४०. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत कंवर करणसिंह शेखावत डूंगरियास पर कहा हुआ है। गीतनायक ने दस्युदल का साहस पूर्वक सामना कर समरस्थली में मृत्यु प्राप्त की थी। गीत में वर्णन है कि गीतनायक ने स्वामी को विजय, तलवार को शरीर, शिव को मस्तक, दुर्गा रुधिर और अप्सरा को वर प्रदान कर यश-अर्जन किया।

---

३. बरसाळ—वर्षा की झड़ी। अणथाग— अथाह, अपार। जिकां—जिनका। भाळी—देखना। बहै—वहती है। आघ—आदर। खट व्रन—षट् वर्ण, ब्राह्मण, चारण, जोगी आदि जाति के। आपगा—नदी। अघट—अद्भुत, विना घटे।

४. अेकण दिसा—एक ही दिशा की ओर। सरब—सर्व। मिळे—मिलकर। नाह—पति, स्वामी। रवि रसम जेम—रवि रश्मियों की तरह। रसा—पृथ्वी पर। क्रीत नद—कीर्ति रूपी नदी। ताहरी—तेरी।

१. पति—स्वामी। असमर—असिवर, तलवार। सकति—रणदेवी। अपछर—अप्सरा। पिण्ड—शरीर। रुधिर—लोहू। वर—पति, दुलहा। पूगौ—पहुंचा, गया। भड़ करणौ—वीर करणसिंह। कळह—युद्ध में। रिमागां—शत्रुओं से। हठ—हठ ठान कर, जिद्द कर।

स्याम सार सिव सिवा सुरंगना,
रिण जै अंग धू रत भरतार।
आरण सजि अरि भंजि उमाहृत,
विलगौ पंच कारण उण वार ।।२।।

राजिंद खड़ग सिभू जोगरण रंभ,
जै वप मस्तक रगत जुवांण।
सत्र संधारि नूरहर समहर,
पड़ियौ पंच अरथ घण जांण ।।३।।

धणी रूक हर उमा अमर-धण,
फतह अंग कमळ श्रोण फाव।
परस दूसरौ सुरग पूगियौ,
सजि हेक पिंड पंच हिसाव ।।४।।

—कवि हणूंदान रौ कह्यौ

---

२. स्याम–स्वामी। सार–तलवार। सिवा–पार्वती, दुर्गा। सुरंगना–अप्सरा। रिण जै–युद्ध में विजय। धू–मस्तक। रत–लोहू। भरतार–भर्त्तार, पति। आरण–युद्ध। भंजि–संहार कर। उमाहत–उत्साह पूर्वक। विलगौ–लगा, जुटा।

३. राजिंद–राजा को, स्वामी को। खड़ग–तलवार। सिभू–शंभू, शिव। जोगण–योगिनी, देवी। रंभ–अप्सरा। वप–वपु, शरीर। रगत–रक्त। जुवांण–युवक, दुलहा। संधारि–संहार कर। नूरहर–नूरसिंह का पौत्र। समहर–युद्ध में। घण जांण–बहु ज्ञाता।

४. धणी–मालिक। रूक–तलवार। हर–शिव। अमर-धण–अप्सरा। कमळ–सिर। श्रोण–रक्त। फाव–फबना, शोभित। परस दूसरौ–अभिनव परशुराम। हेक–एक। पिण्ड–शरीर से। पंच हिसाब–पांचों बातें पूर्ण कर।

४१ गीत कंवर करणसिंघ सेखावत डूँगरियास रौ

तरण रथ थांभि अरण देखण भिड़ण तमासो,
थाट भड़ मरण रीं वेळ थाई।
करण कर वरण अति वींद चै कारणै,
इंद री तरण सह चालि आई ।।१।।

आरकत नयण क्रोधा-अगनि ऊभळे,
सार धारां अणी घट समावै।
करी धुज तणी कै सुहागणी कामणी,
आठ पट रागणी वाट जोवै ।।२।।

सावळां हूल वीजूजळां साहतो,
खळ दळां गाहतो करत खूबी।
सुतन ऊमेद रै हूर सुख साजवा,
उरवसी सची वेहूँ तरफ ऊवी ।।३।।

---

४१. गीतसार—प्रोक्त गीत सीकर के सामन्त कुंवर कर्णसिंह परसरामोत शाखा के शेखावत ग्राम डंगरास के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने की घटना से सम्बद्ध है। गीत में लिखा है कि कर्णसिंह के युद्ध कौशल को देखने के लिए अरुण ने सूर्य का रथ आसमान में ठहरा लिया और अप्सराएँ स्वर्ग से पति प्राप्ति की कामना से रणभूमि में उतर आई।

---

१. तरण—सूर्य। रथ थांभि—रथ को ठहरा कर। अरण—सारथी अरुण। भिड़ण—लड़ने का। थाट भड़—योद्धा समूह की। वेळ—समय। थाई—हुई। करण—कुमार कर्णसिंह की। वींद चै—दूलह के। तरण—तरुणी, अप्सरा। सह—समस्त।

२. आरकत नयण—आरक्त नेत्र, लाल नेत्र। क्रोधा-अगनि—क्रोधाग्नि। ऊभळे—छलके। सार धरां—शस्त्रधाराओं में। अणी—नोक, सेना। घट—शरीर। करी धुज तणी—इन्द्र की (?) पट रागणी—पट्ट गायिकाएँ, अप्सराएँ। वाट जोवै—प्रतीक्षा करती है।

३. सावळां—भालों के, बर्छियों के। हूळ—प्रहार, शस्त्र घुसेड़ने को हूलना कहते हैं। वीजूजळां-तलवारें। खळ दळां—वैरी समूह को। गाहतो—कुचलता, नाश करता। हूर सुख साजवा—अप्सराओं के साथ भोग विलास करने के लिए। वेहूं—दोनों। ऊवी—खड़ी।

तरणपुर छेदि सुरलोक माल्हण तणी,
रात दिन घणी मन हूंस रहती ।
ले गई परी मिळी सुरलोक में,
कंवर अलवेलियो खमा कहती ।।४।।

४२ गीत कंवर करणसिंघ सेखावत डूंगरास रौ

परव वांछतो जिसौ ही लह्यो धारा परव, जई छत्र ध्रम मेद सुजाव ।
पैंड पैंड असमेद पहूंतौ, वेध ग्रहां श्रोतां वरदाव ।।१।।

अेको लखां आंगमे अेहा, हैवर भोके नूरहर ।
वागौ कंवर बीर नद वाजां, राखण राजां सुत धजर ।।२।।

---

४२. **गीतसार**–ऊपर कथित गीत कुंवर कर्णसिंह शेखावत के युद्धस्थल में वीरगति प्राप्त करने का परिचायक है। इसमें कवि ने लिखा है कि मेदसिंह तनय कर्णसिंह जिस तरह के पर्व की प्रतीक्षा में रहता था उसी तरह का धारा पर्व उसे प्राप्त हुआ। अभिलषित पर्व प्राप्त कर वह संसार में अपना उज्ज्वल यश छोड़ कर स्वर्ग गया।

---

४. तरणपुर–सूर्यपुरी, सूर्यलोक । छेदि–पार कर । माल्हण तणां–जाने की । घणी–बहुत अधिक । हूंस–उमंग । परी–अप्सराएँ । अलवेलियो–शौकीन, रसिक । खमा कहती–अभिवादन करता, जो क्षमा शब्द का उच्चारण करती हुई, राजा महाराजाओं के किसी प्रश्न के उत्तर में हाँ अथवा ना कहने के साथ पर 'खमा' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

१. परव–पर्व । वांछतो–चाह करता था, वांछनीय । लह्यो–लिया, प्राप्त किया । धारा परव–तलवार की धारा का पर्व । मेद सुजाव–मेदसिंह के पुत्र ने । पैंड पैंड–कदम कदम । असमेद–अश्वमेध यज्ञ । पहूंतौ–पहुंचा । वेध ग्रहां–धराने के लिए युद्ध, ग्रहों को पार कर । वरदाव–विरुद गान, यश ।

२. आंगमे–दबाने वाला, पराक्रमी, स्वीकार कर । अेहा–ऐसा । हैवर–घोड़ा । भोके–धकेले । नूरहर–नूरसिंह का वंशज कर्णसिंह । बागौ–जुट पड़ा, लड़ा । बीर नद बाजां–वीरनाद होने पर । धजर–शान, कीर्ति, मान ।

बीजा परस किया बहरम, बारिद छोळ लोहड़ां बोह।
पख उजवाळ प्रथी जस पढ़िया, सबद ग्रहां चढ़िया ब्रद सोह ।।३।।

खागां वहै खंड खंड सेखावत, आहुटियौ लिछमण अरथ।
अकथ कथा जिण नांम न आई, कानां आई सुकथ कथ ।।४।।

समहर भगौ सुणियौ नह श्रवणां, गहमह सुणियौ अपछर गंठ।
ओ भुवलोक ऊजळ जस ऊगो, करणसिंध पूगो वैकूंठ ।।५।।

—गंगाराम देभल नेतड़वास रौ कह्यौ

४३ गीत कंवर करणसिंघ सेखावत डूंगरास रौ

अई दूसरा परस खत्रवाट बट वाहरे,
लखां गंजि नाहरे सुजस लीधा।
यों गयौ धाड़व्या सीस छिबतौ उरस,
कूंत ऊलोळ रंग चोळ कीधा ।।१।।

---

४३. **गीतसार**—उपरांकित गीत कुंवर कर्णसिंह शेखावत डूंगरास द्वारा डकैतों का दमन कर वीरगति प्राप्त करने विषयक है। गीत में लिखा है कि वह वीर क्षात्रधर्म का पालन करने के लिए शत्रु दल पर सिंह की भांति झपटा और उनके लोहू से अपने भाले को तरवतर कर जन्म-मरण के आवागमन से मुक्ति प्राप्त कर ब्रह्म ज्योति में अन्तर्लीन हो गया।

---

३. बीजा परस—द्वितीय परशुराम, कर्णसिंह। बहरम—बह्ल, समुद्र ? । बारिद छोळ—मेघ धारा। लोहड़ां बोह—शस्त्रों के वार। पख—पक्ष को, मातृ तथा पितृपक्ष। जस—यश। ब्रद—विरुद।

४. खागां—तलवारों। वहै—चलकर। आहुटियौ—लड़ कर मरा, वीरगति प्राप्त की। लिछमण अरथ—लक्ष्मणसिंह के निमित्त। अकथ—अकथनीय, अयशकारी। कानां—सुनने में, कर्णों में। सुकथ—सुन्दर कथा सुकहानी।

५. समहर—युद्ध। गहमह—धूमधाम, भीड़, उत्सव। अपछर—अप्सरा। गंठ—गंठजोड़ा, गंथि बंधन। ऊगो—उदय हुआ। पूगो—पहुंचा।

१. दूसरा परस—द्वितीय परशुराम, कर्णसिंह। खत्रवाट—क्षत्रिय पथ। बट—मरोड़, बल। गंजि—नाश कर। नाहरे—सिंह। धाडव्या—लुटेरों। छिबतौ—स्पर्श करता, शोभा पाता। उरस—आकाश। कूंत—बर्छा, भाला। ऊलोळ—प्रहार हेतु झुका हुआ। रंग चोळ—लोहू, लाल रंग।

वाजि बीराण उक बीर हक वळोबळ,
हळोवळ कायरां जीव हलियौ ।
तांणि मूंछां तठै वीर ऊमेद तण,
घेंचि अरियांण सिर घाव घलियौ ।।२।।

वहे किरमाळ रण आंत रत वीखरे,
झड़े अंग दुवंग जंग भूम झटकां ।
भेदगर अणी रौ हुवौ अलियो भंवर,
काळ रूपी कंवर हुवौ कटकां ।।३।।

निमख उजवाळि श्री फतैपुर नाथ रौ,
चाहि भारी करे वंस चेळो ।
मारि थट द्रोयणां मेटि जांमण मरण,
मिळी गयौ करणसिंघ जौति भेळो ।।४।।

---

२. डक–डाक वादित्र । बीर हक–वीर नाद । बळोबळ–पुनः पुनः । हळोवळ–हलचल । हलियो–आन्दोलित हुआ, कंपित हुआ । तांणि मूंछां–मूंछों पर ताव देकर । तठै–वहाँ । घेंचि–घसीट कर, हांक कर । अरियांण–वैरियों के । घाव घलियो–घाव किया, जख्मी कर दिए ।

३. बहे–चले, वार हुए । किरमाळ–तलवार । आंत रत–आन्त्र और रक्त । बीखरे–बिखेरने का भाव, यत्र तत्र छितराना । झड़े–कटकर गिरे । दुवंग–अग्निकण, चिनगारी, दूसरे का अंग । झटकां–प्रबल आघात । अणी रौ–सेना को । अलियो भंवर–अलबेला, रसिक, रण दूलहा । कटकां–सेना के लिए ।

४. निमख–नमक । फतैपुर नाथ–फतहपुर के स्वामी रावराजा लक्ष्मणसिंह । चेळो–पलड़ा, शिष्य । थट–सेना, समूह । द्रोयणां–दुश्मनों का । मेटि–नष्ट कर । मिळी गयौ–जा मिला, विलीन हो गया । जौति भेळो–ज्योति में ।

४४ गीत ठाकुर मोहबर्तासिघ सेखावत दूजोद रौ

सबळ लूंबिया आंणि दळ साहिपुर सांवठा,
वळोवळ वीररस भड़ां वसियौ।
चळविचळ हुवै मत दुरग मोबत चवै,
कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ ॥१॥
हुवै हमला हला न द्यूं जीवत हथां,
थट खळां वळोवळ आंणि थहियौ।
किळा मत हलचले कंप म कुरम कहै,
नग भमंग जेम मौ सीस नड़ियौ ॥२॥
भवानीसिंघ रौ जुड्यौ जुध काळ भत,
अड़ै विकराळ घट अरचां आधौ।
कहै भुरजाळ नूं न द्यूं धड जितै कंध,
व्याळ भूखए भती भाळ बाधौ ॥३॥

---

४४. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत ठाकुर मोहवर्तसिंह शेखावत दूजोद पर रचित है। मोहबर्तसिंह ने शाहपुरा दुर्ग पर जोधपुर की सेना के साथ एक माह तक युद्ध कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत में कवि ने गीतनायक के मुख से किले को आश्वस्त करते हुए कहलाया हैं कि जिस प्रकार सर्प के मस्तक से मणि जीवित रहते अलग नहीं हो सकती उसी प्रकार मोहवर्तसिंह की जीवितावस्था में किले पर शत्रुओं का अधिकार नहीं हो सकता।

---

१. लूंबिया–चारों ओर से घेरकर लड़नेलगे। आंणि–आकर। साहिपुर–शाहपुरा नामक ग्राम, यह सीकर राज्य में था। सांवठा–वहुत से, अत्यधिक। बलोवळ–पुनः पुनः, अनवरत। भड़ां–वीरों। चळ-विचळ–चलायमान। दुरग–दुर्ग। मोबत चवै–मोहवर्तसिंह कहता है। कमळ मणि नाग–सर्प के मस्तक की मणि। कमळ–मस्तक से। कसियौ–कसा हुआ है, बँधा हुआ है।

२. न द्यूं–नहीं दूँगा। जीवत हथां–जीवन रहते अपने हाथ से शत्रु को नही दूंगा। थट–समूह। खळां–वैरियों। थहियौ–रुका, ठहरा। हलचले– भय से चलायमान। कंप म–कम्पित मत हो। कुरम–कछवाहा, दुर्गपाल मोहबर्तसिंह। नग भमंग–सर्प। मौ–मेरे। नड़ियौ–बँधा हुआ है।

३. जुड्यौ जुध–युद्ध में भिड़ गया। काळ भत–यमराज की तरह, यम के भृत्य-सा। अरचां–शत्रुओं। आधौ–अर्द्ध, आधा। भुरजाळ नूं–किले को। धड़–शरीर। कंध–कंधों पर। व्याल भूखए–सर्प की मणि। भती–भाँति। भाळ–ललाट से, मस्तक से, बाधौ–बँधा है।

वहै अणपार सर बांण गोळा विकट,
रवि गयण पेखि जंग भार रीधौ।
मोट मन धारि अव कोट धड़के मति,
कोट धू पनंग अलंकार कीधौ ॥४॥

लड़े इक मास अखमाल हर लोहड़े,
चढ़े खग धार तन परब चढ़ियौ।
अड़े मोबत तितै रखे मिण भत अचळ,
पड़े मोबत किले ताव पड़ियौ ॥५॥

वधायौ अपछरां पेखि व्रन बाहरां,
मिळे अण थाहरां सुरां मेळो।
धाय घांसाहरां नाहरां जेम घड़,
भिळे हर थाहरां जौति भेळो ॥६॥

---

४. वहै–वहते हैं, चलते हैं, प्रहार होते हैं। अणपार–अपार। सर–तीर। बांण–तोपें। रवि गयण–सूर्य ने आकाश में से। पेखि–देख कर। जंग भार रीधौ–युद्ध के भार पर प्रसन्न हुआ, युद्ध की विकरालता के दायित्व को वहन करते देख कर प्रसन्न हो उठा। मोट मन–विशाल चित्त। कोट–दुर्ग। धड़के मति–कम्पित न हो। धू–मस्तक। पनंग–साँप। अलंकार–मणि, आभूषण।

५. इक मास–एक मास तक। अखमाल हर–अक्षयसिंह का पौत्र, मोहवतसिंह। लोहड़े–शस्त्रों से। खग धार–तलवार की धारा पर। परब–पर्व। मिण भत–सर्प की मणि की तरह। अचळ–अविचल, अडिग। ताव–ताप, जोर। पड़ियौ–पड़ा।

६. वधायौ–स्वागत किया। अपछरां–अप्सराओं ने। पेखि–देख कर। मिळे–मिले, भेंट की। अण थाहरां–अपार, असंख्य, अथाह। सुरां–देवताओं। घांसाहरां–सेना, युद्ध। घड़–घट, सेना। भिळे–मिल गया। हर थाहरां–शिव के स्थान कैलाश पर। जौति–ज्योति। भेळो–शामिल।

४५. गीत राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

सरण रायजण चरण बाखांण करै सिध,
दान बाखांण कवि रसण देवी ।
कळाधर बदन बाखांण तरुणी करै,
करै रण करग बाखांण केवी ।।१।।
किलम उतराध दिखणाध दळ क्रोधतां,
छत्रधरण रोधतां मांण छीजा ।
कहर खूनी सबळ साल राखे कवण,
वीर तो विना रायसाल बीजा ।।२।।
ग्रोघ ग्रघवन दघन ध्यान ग्रातम ग्रगन,
ग्रधौखज लगन उडगन ग्रसोगी ।
ग्यांन उमंगन छिळै छरित छविता गगन,
जोग तज जग नमत मगन जोगी ।।३।।

---

४५. गीतसार—इस गीत में कवि ने खेतड़ी के राजा भूपालसिंह शेखावत के पराक्रम, विवेक, सुन्दरता ग्रौर दानादि गुणों का वर्णन किया है । वह कहता है कि भूपाल-सिंह के चरणों का सिद्ध, दान का कवि, सुन्दरता का तरुणियों ग्रौर रण में हस्त लाघवता का शत्रुगण वर्णन करते रहते हैं । किन्तु उत्तर दिशा का ग्रन्त ग्रौर गीतनायक के गुणों की थाह प्राप्त करना ग्रसम्भव है ।

---

१. रायजण—राजागण । चरण—कदम, पैर । सिध—सिद्ध पुरुष । कवि रसण देवी—कवियों की रसना रूपी सरस्वती । कळाधर बदन—चन्द्र मुख का । तरुणी—तरुण नारियाँ । करग—हाथ । केवी—शत्रु ।

२. किलम—मुसलमान । उतराध दिखणाध—उत्तर ग्रौर दक्षिण के, उत्तर तथा दक्षिण के प्रान्तों के शाही सूवेदारों, शाहजादों । दळ—सेना । छत्रधरण—छत्रपति, बादशाहों । रोधतां—बन्धन में डालते समय, रौंदते । मांण—मान, प्रतिष्ठा । छीजा—जल कर समाप्त होते समय । कहर—विपत्ति । खूनी—दोषी । साल—शल्य । राखे कवण—ग्रपनी शरण में कौन रखे । रायसाल बीजा—दूसरे रायसल, राव देवीसिंह ।

३. ग्रोघ—समूह । ग्रघवन—पापों का वन, पाप समूह । दघन—दग्ध करने । ग्रगन—ग्रग्नि । ग्रधोखज—विष्णु, जिसका स्वरूप इन्द्रियों द्वारा जाना न जा सके, परब्रह्म । उडगन—नक्षत्र । ग्रसोगी—ग्रशोकी । उमंगन—उमंगों में । छिलै—छलके, पूर्ण । छरित—सरिता, षट् ऋतु । छबिता—छविता । गगन—व्योम । नमत—झुकते है, नमन करते हैं । मगन जोगी—योगस्थित ।

मतंग हलका तुरंग तबेला मुगत मण,
पदम निध महासिध सम्रध ग्रणपार ।
चांण कोड़िक कवि ग्रोक कीरत वरण,
दान कोड़ां करण जोग दातार ।।४।।

ग्रेक चव पंच खट नव दसो ग्रठारे,
सोध सरसत ग्रगम बोध सरसे ।
ग्रभंग ग्रणडोल ग्रणमोघ सासत्र ग्रयण,
वयण ग्रसत ग्रम्रत ग्रोघ वरसे ।।५।।

वदन चंद कळाकर कंज कोयल वयण,
नता बिण जिकै म्रग नयण ग्रानूप ।
छटाधर रूप लख काम ग्रभिराम छिव,
भाम भरतार चाहै करण भूप ।।६।।

कळह दळ संगाथां रड़ै चढ़ियां कड़ै,
विखम खळ ग्रड़ै बळ भीम बाथां ।
पड़ै वज्र कोप खग करग काथा पड़ै,
मेर श्रृंग ग्रोप उड पड़ै माथा ।।७।।

---

४. मतंग हलका–हाथियों का हलका, एक सौ हाथियों का समूह एक हलका कहलाता है। तुरंग–घोड़े। तबेला–पायगाह, अश्वशाला। सम्रध–समृद्धि, धन-सम्पदा। ग्रणपार–ग्रपार। कोड़िक–करोड़ों। ग्रोक–घर, जगह-जगह। कोड़ां–करोड़ों का।

५. ग्रेक–ईश्वर। चव–चारों वेद। पंच–पंचेन्द्रिय (?)। खट–षट् शास्त्र। ग्रठारे–ग्रठारह पुरान। सोध–छानबीन कर, खोज कर। ग्रगम बोध–ग्रगम्य ज्ञान। ग्रभंग–वीर। ग्रणडोल–ग्रडिग, ग्रविचल। ग्रणमोघ–ग्रमोघ। सासत्र–शास्त्र। ग्रयण–चाल, चरण। वयण–वचन, वाणी। ग्रोघ–राशि, समूह।

६. कंज–कमल। कोयल वयणी–मधुर भाषिणी। नता बिण–बिना नम्रता, बिना लज्जा से झुके हुए। म्रग नयण–मृग जैसे नेत्र। ग्रानूप–ग्रनुपम। छटा धर–योद्धा, सुन्दर रूप। ग्रभिराम छिव–सुन्दर छवि। भाम–कामिनी। भरतार–भर्त्तार, पति। चाहै–चाह करे, इच्छा करे।

७. कळह–युद्ध। संगाथां–साथियों। कड़ै–निकट, नजदीक। विखम–विषम। खळ–शत्रु। ग्रड़ै–सामना करने पर। बाथां–भुजालिंगन, भुजपाश। खग–तलवार। करग–हाथ। काथा–उतावले। मेर श्रृंग–गिरि शिखर। उड पड़ै–कट कर धरती पर गिरते हैं। माथा–शीश।

इरा किसन नंद छटूं विध सूं अधिक,
चौजवानां अवर विरद चढ़तां।
कहण ससमथ कवि पार लांघत कुण,
पंथ उतराध गुण ग्रंथ पढ़तां ।।८।।

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

४६. गीत राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

सिधां अपारां नागेसहारा पारावारा खीरसंध,
धीर तेज धारां धाम उधारां धूपाळ।
तारकी आकास-चारां मौड़ ज्यूं राकेस तारां,
भूगोल दातारां सारां सेखाणी भूपाळ ।।१।।

---

४६. **गीतसार**—ऊपर प्रस्तुत गीत में कवि ने शेखावाटी के खेतड़ी राज्य के राजा भोपालसिंह शेखावत की दानवीरता आदि गुणों का वर्णन किया है। वह कहता है कि भोपालसिंह सिद्ध पुरुषों में शिव, समुद्रों में क्षीर सागर, तेजस्वियों में सूर्य और उद्धारकों में विष्णु प्रसिद्ध हैं ज्यों ही पृथ्वी लोक के दान दातावों में शेखावत भूपालसिंह शिरोमणि हैं।

---

८. इरा—पृथ्वी। किसन नंद—राजा किशनसिंह का पुत्र राजा भूपालसिंह। चौजवानां—चोजकरने वालों, आनन्द लूटने वालों। विरद—विरुद प्रसिद्धि। कहण—कहने, वर्णन करने। ससमथ—समर्थ। पार लांघत कुण—कौन पार पासकता है। गुण ग्रंथ—गुणों के वर्णन का ग्रंथ, कीर्ति काव्य।

१. सिधां अपारां—अपार सिद्ध ऋषि मुनियों में। नागेसहारा—नाग का हार पहिनने वाला, शिव। पारावारां—समुद्रों में। खीर संध—क्षीरसागर। तेजधारां—प्रचण्डों में, तेजधारियों में। धूपाल—ध्रुव को पालनेवाला, विष्णु। तारकी—गरुड़। आकास चारां—आकाशगामियों में। मौड़—सिरताज। राकेस—चन्द्रमा। सारां—सब में। सेखाणी भूपाल—शेखावत भूपालसिंह।

जटी जोग पारावारां धावा सुभ्रतटी जांणै,
गैणवटी तावां ऊंच सुभावां गोविन्द ।
चिलार पुलिंद्र धावां चन्द्र ज्यूं नखत्रां चावां,
नरां लोक दावां रूप किसन्नेस नंद ।।२।।

ईस धू रती रा धाम नीरां तात रंभा ओप,
सूर तेजगीरां संत भीरां दैत साल ।
धखी पंख खगां सुधा सीरां ज्यूं मुनिन्द्र धीरां,
मही आसतीक वीरां दूजौ रायमाल ।।३।।

चन्द्रभाळ पैउताळ बरस्साळ तेज चण्ड,
गोपाळ नागेन्द्र झाळ सुधा गंज गेर ।
प्रथी पाळ पंचमेक दातार ज्यूं उजाळ प्रथी,
सोहियौ भूपाळ माळ दातारां सुमेर ।।४।।

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

---

२. जटी जोग–योगियों में महादेव । धावा–प्रवाह, लहरों की टक्कर मारने वाला । सुभ्रतटी श्वेततटवाला, क्षीरसागर । गैणवटी–आकाशमार्गी, सूर्य । तावां–प्रचण्ड आतपी । सुभावां–स्वभाव वालों में । चिलार–गरुड़ । पुलिन्द्र–गमन करने वाला । नरवत्रां–नक्षत्रों । किसन्नेस नंद–किशनसिंह का नन्दन, राजा भूपालसिंह ।

३. ईस–महादेव । धू–मस्तक । धाम नीरां–क्षीरोदधि । तात रंभ–लक्ष्मी का पिता । सूर–सूर्य । संत भीरां–सन्तों का सहायक । दैतसाल–दैत्यों का वैरी, विष्णु । धखी पंख–गरुड़ । खगां–पक्षियों में । सुधा सीरां–अमृत स्रोतों में, अमृत श्रावकों में । मही–पृथ्वीलोक में । आसतीक–आस्तिक । दूजौ रायमाल–द्वितीय रायमल्ल, राजा भूपालसिंह ।

४. चन्द्रभाळ–चन्द्रमौलि, शिव । पै उलाळ–जल तरंगी । बरस्साळ–वर्षाकाल में । तेज चंड–तेजस्वी, सूर्य । गोपाळ–श्री कृष्ण, विष्णु । नागेन्द्र झाळ–सर्पों को पकड़ने वाला, गरुड़ । सुधा गंज–अमृत भण्डार । प्रथीपाळ–राजा । पंच मेक–पाँच और एक, छह । सोहियौ–शोभित हुआ । माळा दातारां सुमेर–दानियों की माला में सुमेरु मणि ।

४७ गीत राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

हरी अंबाड़ी अनोप रंगां झूळ सिरि जरी हेम,
रूप अंगां संचै भरी नचै परी रंभ।
आहंसी ऊधरी क्रीत वरी किसनेस वाळा,
करी मेघमाळा मौजां करी तैं कुरंभ ।।१।।
गोड़ मद्दां छाजे हद्दां घटा भाद्रवा-सी गाजे,
महाबीर सद्दां बाजे घंटा झिल्ली माळ।
लाल रंगी मत्था सुभां सुभ्र पंगी लेवै,
भांमी तूंझ हत्थां देवै मातंगी भूपाळ ।।२।।
पेसे बेग पंथां पोत पाथोद पैराक पांणी,
दळां अग्रवांणी होते जांणी जांबूदीप।
बोलै नरां लोक क्रीत ओरवो मुनिन्द्र बाणी,
मौज मत्ते सिंधु री झोका सेखांणी महीप ।।३।।

---

४७. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत में कवि द्वारा राजा भोपालसिंह शेखावत के दान की प्रशंसा की गई है। गीत नायक ने अंबाड़ी, झूल, श्री और स्वर्ण सज्जा से सज्जित हथिनी गीत कवि को दान में बख्शी थी। कवि ने मेघघटा तुल्य गर्जना करती श्यामल हथिनी कवि को प्रदान कर उज्वल कीर्ति प्राप्त करने का गीत में वर्णन किया है।

---

१. हरी अंबाड़ी–हरे रंग का हाथी का हौदा जो स्वर्ण और चाँदी धातु का बना होता है। झूल-गज की झूल जो युद्ध में लोहे की जंजीरों की तथा जलूसों में बहुरंगे वस्त्रों की बनी होती है। सिरी–श्री नामक हाथी का आभूषण। जरी हेम–स्वर्ण तथा जरी के तारों की। संचै भरी–साँचे में ढली हुई। नचै–नृत्य करती है। परी–अप्सरा। आहंसी–शक्तिशाली, साहसी। ऊधरी क्रीत–श्रेष्ठ कीर्ति, अत्यधिक यश। वरी–वरण की। किसनेस वाळा–राजा किशनसिंह का पुत्र भोपालसिंह। करी–हथिनी। मेघमाळा–मेघघटा। कुरंभ–कछवाहा।

२. गोड़ मद्दाँ–मद में उन्मत्त हुई समुद्र की गर्जना सी गर्जन करती है। छाजे–फबती है। हद्दां–वेहद। घटा भाद्रवा-सी–भाद्रपदमास की घन घटा-सी। गाजे–गर्जना करे। सद्दां–शब्दों। बाजे-शब्दित, ध्वनि करे। घंटा–गजघंट। झिल्ली–झिंगुर समूह तुल्य। मत्थाँ–मस्तक। सुभ्र पंगी–श्वेत कीर्ति। भांमी–पिता। हत्थां–हाथों। मातंगी–हथिनी। भूपाल–हे राजा भूपालसिंह।

३. पेसे–प्रवेश करे। पंथां–मार्गो। पोत–जहाज। पाथोद–सागर। पैराक पांणी–जल में तरने वाली। दळां–सेना की। अग्रवांणी–आगे, अग्रिम पंक्ति में। ओरवो–झोकना, उच्चारण करना। मौज मत्ते–आनन्द में। सिंधु री–समुद्र की, हथिनी। झोका–धन्य धन्य। सेखांणी– शेखावत।

तोड़ते कुरिन्दा ताळा लोभ खगां वाळा तेज,
प्रथंमी ऊजाळा पखां सखां छटा पाळ ।
दंतवाळी मौज तैं सांमळी मेघ-माळा दीधी,
लीधी वीर काळा क्रीत ऊजळी लंकाळ ।।४।।

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

४८ गीत राजा बाघसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

चमू साज कर चहुंवळां सीम में नह चढ़ै,
समर बह गयंद सह अरिंद सांकै ।
गाड़ रौ वींटियौ अग्राजै भरे गह,
बाघ थह खेतड़ी गिरंद वांकै ।।१।।

---

४८. गीतसार—ऊपरलिखित गीत शेखावाटी के खेतड़ी राज्य के नरेश बाघसिंह शेखावत पर रचित है । कवि का कथन है कि सिंह रूपी बाघसिंह अपनी सेना को सजा कर गज रूपी शत्रुओं को आतंकित करता चलता है । उसके भय के कारण अन्य नरेश अपनी सेना को सजा कर खेतड़ी राज्य की सीमा में से नहीं गुजरते हैं । वह खेतड़ी दुर्ग रूपी सिंह-कंदरा में निःशंक भाव से गजंता रहता है ।

---

४. कुरिन्द ताळा—दरिद्रता के ताले । खगां वाळा—कृपाणों वाला, युद्ध लड़ने के लिए । ऊजाळा पखां—उज्ज्वल पक्ष, निर्दोष पक्ष । दंतवाळी—हथिनी । सांमळी—श्यामल । दीधी—दी, प्रदान की । लीधी—प्राप्त की । बीर काळा—महान्‌वीर । ऊजळी—श्वेत, उज्ज्वल । लंकाळ—सिंह, वीर ।

१. चमू साज कर—सेना सजा कर । चहुंवळां—चारों तरफ । सीम—सीमा, हद । नह चढ़ै—नहीं उलांघते, प्रवेश नहीं करते । अरिंद—शत्रु राजा । सांकै—डरते हैं, शंका करते । गाढ़ रौ बींटियौ—बल से भरा हुआ, शक्ति से आवेष्टित । अग्राजै—गर्जना करता है । भरे गह—गर्व पूरित । बाघ—राजा बाघसिंह । थह—सिंह की कंदरा, गढ़ । गिरंद—पर्वत । बांकै—विकट ।

प्रवाड़ा जीत जोधार जाहर प्रथी,
ठाहर आहर गजां करण ठाळै।
गाज नाहर करै किसन सुत धर गुमर,
अगंज थाहर दुरंग भूप वाळै ॥२॥

विभौ सुरपत थियौ विसंभर दियौ वर,
प्रभाकर सरोतर तेज़ पूंजौ।
कंठीरां मौड़ कर जोम होफर करै,
दुगम गिर ठौड़ सादूळ दूजौ ॥३॥

अभंग मरदां मरद रायसल अभिनिमौ,
दुजड़ जिण रै थई वरद देवी।
सींघळी गाज सद जिती हद सांभळे,
कदै मद न आवै दुरद केवी ॥४॥

---

२. प्रवाड़ा–कीर्ति अथवा प्रख्याति। जीत–जीतने वाला। जोधार–योद्धा। जाहर–प्रकट। ठाहर–स्थान, ठहराना। आहर–आहार, शिकार। ठाळै–खोजने का भाव। गाज–गर्जना। धर गुमर–गर्व धारण कर। अगंज–अजेय, जो जीता न जा सके। थाहर–सिंह की गुफा। दुरंग–दुर्ग। भूप वाळौ–राजा वाघसिंह का।

३. विभौ–वैभव। सुरपत थियौ–इन्द्र के समान हुआ। विसंभर–विश्वंभर ने। वर–वरदान। प्रभाकर–सूर्य के। सरोतर–समान। तेज पूंजौ–तेज पुंज। कंठीरां–सिंहों का। मौड़–सिरताज। जोम–गर्व। होफर करै–सिंह की भाँति गर्जना करता है, दहाड़ता है। दुगम–दुर्गम। गिर ठौड़–गिरि स्थान पर। सादूळ दूजौ–दूसरा शार्दूलसिंह, गीतनायक राजा बाघसिंह शेखावत।

४. अभंग–बहादुर, निशंक। रायसल अभिनिमौ–अभिनव राजा रायसल, गीतनायक राजा रायसल के पुत्र भोजराज का वंशज होने से उसे अभिनव रायसल कहा गया है। दुजड़–तलवार। थई–हुई। वरद–वरदायिनी। सींघळी–सिंह की, श्रेष्ठ। गाज–गर्जना। सद–शब्द। सांभळे–सुने। कदै–कभी भी। दुरद केवी–हाथी रूपी शत्रु।

४६ गीत राजा अभैसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

सिखर वंस कुळ तिलक दादा किसन सारसो,
लियण ज्यादा सुजस उरस लागै।
समजती कवादां डंवर दब जाय सह,
अभा सादा गुमर तणै आगै ।।१।।

हजारां तुरां दरगह भड़ां हळोवळ,
डंडाळां घुरा नित कीत डंका।
गुमेज तज देख झंखा हुवै होड़गर,
बाघ नंद सूं धमै कुण मगज बंका ।।२।।

जंग अभंग फिरंग चतुरंग प्रथी जीपिया,
ज्यां दुरंग दिया कर कुरम जादा।
कितां समबादियां तणां छक र…………मा,
सुपह सादी तरह बिया सादा ।।३।।

---

४६. गीतसार–इस गीत में खेतड़ी के राजा अभयसिंह शेखावत के वैभव का वर्णन किया गया है। गीत में वर्णन है कि वह अपने पितामह राजा किशनसिंह के सदृश उदार एवं वीर तथा शेखावतों में अग्रणी है। उसकी बराबरी की आय वाले उसके राज्य वैभव एवं सादगी के समक्ष हतप्रभ हो जाते हैं।

---

१. सिखरवंस–शेखावत्त राजकुल का। कुळ तिलक–शिरोमणी। सारसो–सदृश। लियण–लेने वाला। उरस–आकाश। समजती–समानता वाले। डंवर–आडंबर, वैभव। दब जाय–छिप जाते हैं। सह–सब। अभा सादा–शार्दूलसिंह के वंशज अभयसिंह से। गुमर–अभिमान। आगै–सामने।

२. तुरां–घोड़े। दरगह–दरगाह, सभा। हळोवळ–हलचल। डंडाळां–नगाड़े। घुरा–घोष करवाकर, बजवाकर। डंका–दण्डक। गुमेज–घमण्ड। झंखा–धुंधले, प्रभाहीन। होडगर–प्रतिस्पर्धा करने वाले, बराबरी वाले। बाघनंद–बाघसिंह का पुत्र अभयसिंह। धमै–करने की इच्छा, मोल लेना चाहे। मगज–गर्व, मस्तिष्क।

३. अभंग–निडर, अखण्ड। फिरंग–फिरंगी, अंग्रेज। चतुरंग–सेना। जीपिया–विजय किए। दुरंग–किला। कुरम जादा–कछवाहाकुमार को, अंग्रेजों ने अभयसिंह को कोट पूतली का प्रान्त दिया था। सुपह–राजा। सादी–सादी–सादगी, सरलता। बिया सादा–दूसरा शार्दूलसिंह।

मुदी सेखावतां कूरमां धर मुगट,
छत्रीवट प्रगट कुळवट अछेही।
जोड़ रा छभा री दबै सारी जिलह,
अभा री सादगी फबै अेही ।।४।।

५०. गीत सुजाणसिंघ सेखावत राजसिंघ राठौड़ रौ भेळो

आया दळ असुर देवरां ऊपर, कूरम कमधज अेम कहै।
ढहियां सीस देवळ ढहसी, ढहियां देवळ सीस ढहै ।।१।।

मालहरौ गोपालहरौ मंढ़, अडिया दहुं खागां अणभंग।
उतमंग साथ उतरसी अंडो, अंडा साथ पड़ै उतमंग ।।२।।

---

५०. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत कछवाहों की शेखावत शाखा के वीर सुजानसिंह छापोली और राठौड़ों की मेड़तिया खाँप के योद्धा राजसिंह आलनियावास पर कहा हुआ हैं। कथित उभय वीरों के क्रमशः खण्डेला और मेड़ता के मंदिरों की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त कर यश-अर्जन करने का वर्णन है।

---

४. मुदी–मुखिया, प्रमुख। मुगट–मुकुट। छत्रीवट–क्षत्रिय पथ। कुळवट–कुल गौरव का मार्ग। अछेही–अपार, अनन्त। जोड़ रा–बराबरी वाले। छभारी–छवि की, सभा की। जिलह–प्रभा, कान्ति। अभा री–अभयसिंह की। फबै–फबती, शोभित होती। अेही–ऐसी।

१. असुर–मुसलमान। देवरां–मंदिरों। कूरम–कछवाहा वंशीय। कमधज–राठौड़ कुल वाला। अेम–यों, इस प्रकार। ढहिया–कटकर भूमि पर पड़ने पर। देवळ–देवालय। ढहसी–गिरेगा, ध्वस्त होगा। ढहै–भूमिसात् होगा।

२. मालहरौ–टोडरमल का पौत्र। गोपाल हरौ–गोपालदास मेड़तिया का वंशज। मंढ–मंदिर, मंडप। अडिया–अड़गए, रक्षक बने। दहुं–दोनों। अणभंग–अडिग, वीर। उतमंग–उत्मांग, शीश। उतरसी–उतरेगा, गिरेगें। अंडा–मंदिर के शिखर का कलश।

सांम सुतन पातल सुत सझिया, निज भगतां वाधौ हर नेह ।
देही साथ समाया देवळ, देवळ साथ समाया देह ।।३।।

कूरम खंडेले कमध मेड़ते, मरण तणौ बांधे सिर मौड़ ।
सूजा जिसौ नहीं कोई सेखो, राजड़ जिसौ नहीं राठौड़ ।।४।।

५१ गीत ठाकर नवलसिंघ सेखावत नवलगढ़ रौ

सत्थां जुथ चलत्थां भिड़ज खोल कीजै सिलह,
खहण कसि भारथां जोस खाथै ।
ऊवरे सरण गढ़ पेस लीजै अथां,
नवल ऊनत्थ नथां भड़ां नाथै ।।१।।

---

५१. गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के नवलगढ़ संस्थान के अधिपति ठाकुर नवलसिंह शेखावत की युद्ध वीरता पर कहा गया है । गीत में लिखा है कि योद्धाओं तथा घोड़ों को सन्नाह सनद्ध कर नवलसिंह जो उसका अधिकार नहीं मानते उनको अधिकार में लेता है और शरणागतों से भेंट लेकर अभय कर देता है। उसके पराक्रम के भय से दिल्ली तक आतंकित रहते हैं ।

---

३. सांम सुतन—श्यामसिंह का पुत्र सुजानसिंह । पातल सुत—प्रतापसिंह तनय राजसिंह । निज भगतां—अपने भक्तों । वाधौ—वढ़ा । हर—हरि, विष्णु, श्री कृष्ण । देही—शरीर । समाया—नष्ट हुए, समाहित ।

४. खण्डेले—खण्डेला नाकक स्थान । मेड़ते—मेड़ता स्थान । बांधे—बाँधकर । सिरमौड़—मुकुट । सूजा—सुजानसिंह । सेखो—शेखावत । राजड़—राजसिंह । जिसौ—जैसा, समान ।

१. सत्थांजूथ—साथी समूह । चलत्थां—प्रस्थान करते, चिलत:, कवच । भिड़ज—घोड़े । खोल—अश्वशाला से खोलकर । सिलह—कवचयुक्त । खहण—नाश करने, युद्ध । कसि—कस कर । भारथां—युद्धों । जोस—जोश । खाथै—सत्वरता से, जल्दी से । ऊवरे—वचें । सरण गढ़—शरणागत रहने वाले दुर्ग । पेस—भेंट, एक कर विशेष । अथां—धन दौलत । ऊनत्थ नथां—बंधन न मानने वालों को । भडां नाथै—योद्धाओं को बंधन में लेता है ।

धम घोड़ां भड़ां बाजि पौड़ां धमस,
चढ़ै चौड़ां रचण वीर चाळो।
करै अरजां जगत भरै डंड करोड़ां,
अरोडां रोड़ सादूळ वाळो ।।२।।

सुभट नाहर त्रबंक ठौर भांहर सदा,
फजर जाहर अतर धाह फेरै।
उरै थाहर भरै जवाहर हसत मंड,
जगाहर अजेरां भड़ां जेरै ।।३।।

तोल हिंदवांण हद वधै सेखां तिलक,
पांण केवाण कोटां पजावै।
दवे खुरसाण दळ सहर धूजै दिली,
आंण वरतै धरा भोग आवै ।।४।।

---

२. बाजि—होकर, ध्वनि कर। पौडां धमस—कदमों की ध्वनि। चौड़ा—खुलेआम। वीर चाळो—वीर क्रीड़ा के लिए। अरजां—अर्ज। भरै डंड—दण्ड रूप में धन देते हैं। अरोड़ां रोड़—न दवने वालों को दवा कर। सादूळ वाळो— शार्दूलसिंह का पुत्र नवलसिंह।

३. त्रंवक—नगाड़े। ठौर—चोट, ध्वनि। भांहर—भाँति। फजर—प्रातःकाल। अतर—समुद्र पर्यंन्त, अति। धाह—पुकार, चीख। थाहर—किले,कंदरा। भरै जवाहर—जवाहिरात नजर करते हैं। हसत मंड—गजपति, बड़े बड़े राजा। जगाहर—जगरामसिंह का पौत्र। अजेरां—जो स्वच्छन्द रहते हैं। जेरै—उन्हें वश में करता है, अधीन बनाता है।

४. तोल—वजन, वल, मान। हद—असीम, वेहद। वधै—वढ़ कर। सेखां तिलक—शेखावतों में श्रेष्ठ। पांण—शक्ति, भुजा। केवाण—तलवार। कोटां—दुर्गों को। पजावै—कावू में करता है, पराजित करता है। खुरसाण—मुसलमान। धूजै—भय से कांपते हैं। आंण—दुहाई, मर्यादा। वरतै—वरतते हैं, व्यवहार में मानते हैं। भोग—लगान, कर।

५२ गीत ठाकर नरसिंघदास सेखावत मंडावा रौ

अकल संग लियां दळ धार चित उमंग अत,
कळह जय निहंग भड़ ससत्र कड़छै।
विकट नरसिंघ नरसिंघ जिम जोरवर,
धूपट हिरणांख जिम सार घड़छै।।१।।
तेज सुभटां गरट धुखै चख अगन तिम,
दुकट जुध प्रतख लख बाज दपटै।
पुरख हरि नख्ख जिम नवल रौ पाटवी,
प्रगट कुरंगाख्ख अरि खाग पछटै।।२।।
बंस उजवाळ भुज भार सारी बसू,
भिड़े ज्यां अतुळ अन चमू भिरड़ै।
तेज धर सबळ पहळाद रा तात सम,
अगासुर खळां चा कंध मुरड़ै।।३।।

---

५२. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मंडावा के ठाकुर नृसिंहदास शेखावत की युद्ध-वीरता पर सर्जित है। गीतकार ने गीतनायक को भगवान् नृसिंह और शत्रु को हरिण्याक्ष दानव व्यक्त कर गीत की रचना की है। गीत में लिखा है कि नृसिंहदास अपने साथ अपरिमित साथियों की सेना लेकर शत्रुओं पर अभियान करता है। और भगवान् नृसिंह ने हरिण्य कश्यप को जिस सहजता से मार पछाड़ा उसी सहजता से नृसिंहदास भी अपने वैरियों का संहार करता है।

---

१. अकळ—वीरों को, अगणित, समझदार। अत—अति। कळह—युद्ध में। निहंग—घोड़ा, अकेला। भड़—सुभट्ट। ससत्र—हथियारों। कड़छै—सुसज्जित, तैयार। नरसिंघ—ठाकुर नृसिंहदास। नरसिंह—नृसिंह भगवान्। जिम—ज्यों। धूपट—मौज में, सहजता से। हिरणांख—हरिण्याक्ष। सार—तलवार, शस्त्र। घड़छै—संहार करे, टुकड़े टुकड़े करे।

२. गरट—सेना, दल। धुखै—क्रोध में जलते हुए। चख—चक्षु, नेत्र। अगन—अग्नि। तिम—त्यों। दुकट—भयंकर, विकट। जुध—युद्ध। प्रतख—प्रत्यक्ष। बाज—घोडे। दपटै—धावा मारे, छलांगे भरें। पुरख हरि—नृसिंह। नख्ख—नाखून। नवल रौ पाटवी—नवलसिंह का पट्टाधिकारी। कुरंगाख्ख—हरिण्याक्ष। अरि—वैरी। खाग—तलवार। पछटै—पछांट देकर, चोट देकर।

३. बंस उजवाळ—कुल को कीर्तिमान कर। भार—दायित्व। सारी बसू—समस्त पृथ्वी। भिड़े—टक्कर ले, मुकाबिला करे। अतुळ—अतुलित। अन—अन्य। चमू—फौज। भिरड़ै—संहार करे, कुचल डाले। पहळाद रा—प्रह्लाद का। अगासुर—हरिण्याक्ष दैत्य। खळा चा—वैरियों का। कंध—कंधे, स्कन्ध। मुरड़ै—मरोड़े, तोड़े।

सादहर गुमर धर लियां थट गहर सथ,
　　　　रोस कर अडर उर समर धांखै।
बिहर पथ अतर जन बाघ जिम बीर वर,
　　　　नहर किरमर सत्रां चीर नांखै ।।४।।

५३. गीत ठाकर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी रौ

उहीज नाम तन पांण धन बांण प्राकम उहीज,
　　　　अकस क्रन खांत मन रही आचार।
किसन फुरमांण हूंता सिखर ऊंच कुळ,
　　　　अजौ अरजन पंड तणौ अवतार ।।१।।
सुपह बडगात ससमाथ खाटण सुजस,
　　　　समापण आथ अरक स सुतन सूर।
क्रपा जदुनाथ बखतेस रै क्रांमती,
　　　　प्रगटियौ पाथ कूरम बरै पूर ।।२।।

---

५३. **गीतसार**—उपरांकित गीत शेखावाटी के चौकड़ी ठिकाने के स्वामी अर्जुनसिंह की वदान्यता तथा वीरता का बोधक है। गीत में उसे पाण्डव वीर अर्जुन तुल्य वीर और महादानी कर्ण सदृश उदार चित्रित किया गया है। कथित दोनों गुणों में वह अद्वितीय कहा गया है। स्वर्ण नगों को वह कौड़ी के समान तुच्छ गिनता है।

---

४. सादहर—शार्दूलसिंह का पौत्र, झुंझुनूं के शासक प्रसिद्ध वीर शार्दूलसिंह का वंशज नृसिंहदास। गुमर धर—गर्व धारण कर। थट—सेना। गहर—भयंकर, अपार। सथ—साथ में। रोस कर—रोष कर, क्रुद्ध होकर। अडर—निर्भीक। समर—युद्ध। धांखै—इच्छा रखता हैं, दृढ़ निश्चय। बिहर—विदीर्ण। नहर— नाखून रूपी। किरमर—तलवार। सत्रां—शत्रुओं को। चीर नांखै—विदीर्ण कर डालता है, नाश कर देता है।

१. उहीज—वही। तन पांण—शारीरिक बल। धन बांण—धनुषबाण। अकस—द्वेष, ईर्ष्या। क्रन—परमदानी राजा कर्ण। खांत—विचार, अभिलाषा। किसन—श्रीकृष्ण। हूंता—से। सिखर ऊँचकुळ—शेखावतों के उच्चकुल। अजौ—गीतनायक अर्जुनसिंह। अरजन पंड—पाण्डव अर्जुन। तणौ—को।

२. सुपह—योद्धा, राजा। बडगात—विशालकाय। ससमाथ—ससमर्थ। खाटण—प्राप्त करने। समापण—समर्पित करने, दान देने। आथ—अर्थ, धन। अरक—सूर्य। क्रपा—कृपा। जदुनाथ बखतेस रै—यदुपति तुल्य बख्तसिंह के। क्रांमती—कान्तिमान, करामातवाला। प्रगटियौ—प्रकट हुआ, उत्पन्न हुआ। पाथ—पार्थ, गीतनायक ठाकुर अर्जुनसिंह। कूरम—कछवाहा। बरैपूर—अनेक वरदानों से भरपूर, योद्धा।

ऊधरी तांण कैवार खाटण यळां,
भाण सुत हूँत अहंकार भरियौ।
घणै तप अनम सादूळ रै घरांणै,
धनंजय दूसरौ जनम धरियौ ।।३।।

पांण देतौ सुव्रण क्रन समै दवा पूर,
तरण चढ़तौ सवा पौहर ततरै।
पनां हीरा व्रवै गांम गज चत्र पौहर,
अभनमौ जोर वर बाघ जतरै ।।४।।

व्रवंतौ देख अप्रमांण वित खट बरण,
सुपह घण जांण अरजण सिंघाळौ।
कथन वाखांण सुत अगै सूरज करै,
ऊतरै मांण तैं करण-वाळौ ।।५।।

---

३. ऊधरी तांण–महत्वाकांक्षी, श्रेष्ठ कार्य करने वाला। कैवार–कितनी ही वार, यश। खापण–अर्जित करने। यळा–पृथ्वी, इला। भाण सुत–राजा कर्ण, रविनंदन। भरियौ–भराहुआ, आपूर्ण। घणै–घने, अधिक। अनम–किसी के आगे न नमने वाला, अनम्र। सादूळ रै–शार्दू लसिंह के, शार्दू लसिंह ने अपने सजातीय राव शिवसिंह सीकर गुमानसिंह रामगढ़ प्रभृति का सहयोग प्राप्तकर नरहड़, सुल्ताना और झुंझुंनूं आदि कायमखानियों के राज्यों को समाप्त कर अपना अधिकार स्थापित किया था। घरांणै–घर में, कुल में। धनंजय–अर्जुन पाण्डव ने। धरियौ–लिया, धारणकिया।

४. पांण–हाथ से। सुव्रण–स्वर्ण। क्रन समै–राजा कर्ण की तरह, राजा कर्ण के समय, प्रातःकाल सवा प्रहर दिन चढ़ने तक कर्ण का समय कहलाता है। दवापूर–द्वापर युग। तरण–सूर्य। सवा पौहर–सवा प्रहर। ततरै–तब तक, जितने। व्रवै–दान करे। चत्र पौहर–चार प्रहर, दिन भर। अभनमौ–अभिनव। जोरवर–जोरावरसिंह, गीत-नायक के पितामह का नाम, जोरावर। बाघ–व्याघ्र, सिंह। जितरै–जबतक, जितने, उतने।

५. व्रवंतौ–देते हुए। वित–द्रव्य। खट बरण–षट्वर्ण, यती, योगी, सन्यासी, चारण, ब्राह्मण आदि जातियों की षट्वर्णों में परिगणना की गई है। सुपह–राजा। घण जांण–बहुज्ञानी। अगै–अग्र, आगे, सम्मुख। मांण–मान, गर्व। करण वाळो–कर्ण का।

५४ गीत ठाकर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी रौ

व्रवण हजारी भिड़ज गज गांम चेतन वड़े,
हुवा धारी छतर देख हावै ।
कहो ढूंढ़ाड़ सारी मही यसौ कुंण,
अड़सगर अजा री मीढ़ आवै ।।१।।

करण जिम चढ़ंती बेस रीझां करै,
मयंद आवेस जुध घड़ा मोड़ै ।
वादगर कूरिमां देस मझि बतावौ,
जिकौ वखतेस सुत तणै जोड़ै ।।२।।

---

५४. **गीतसार**—उपरोक्त गीत शेखावाटी के चौकड़ी ठिकाने के ठाकुर अर्जुनसिंह शेखावत पर कथित है। कवि ने गीतनायक की वीरता और उदारता को व्यक्त करते हुए कहा है कि घोड़े, हाथी, ग्राम और हजारों रुपयों का दान देने तथा शत्रुओं का दमन करने में ढूंढ़ाड़ देश में अन्य कौन ऐसा व्यक्ति है जो अर्जुनसिंह की समता करे।

---

१. व्रवण—देनेवाला। हजारी भिड़ज—हजार-हजार रुपये मूल्य के घोड़े। गांम—ग्राम। धारी छतर—छत्रधारण करने वाले, राजा। हावै—विस्मित। कहो—कहिए। ढूंढ़ाड़—जयपुर राज्य का प्राचीन नाम। सारी—समस्त। यसौ कुंण—ऐसा कौन है। अड़सगर—प्रतिस्पर्द्धा में, होड में, आट में। अजारी—ठाकुर अर्जुनसिंह की। मीढ़—बरावरी में।

२. करण जिम—दानवीर कर्ण की भाँति। चढंती वेस—वयस्क होते समय। रीझां करै—मौज आनन्द में दान करता है। मयंद—मृगेन्द्र, सिंह, हाथी। आवेस—आवेश। घड़ा—सेना। मोड़ै—पीछे की ओर भगाता है। वादगर—विवाद करने वाला, स्पर्द्धा करने वाला। कूरिमां देस—कछवाहों के ढूंढ़ाड़ देश में। बतावौ—कहिए। जिकौ—जो, जो कोई। वखतेस सुत—ठाकुर बख्तसिंह के पुत्र ठाकुर अर्जुनसिंह के। जोड़ै—समता में, बराबरी में।

छोळ धन सुपातां निवाजै बराछक,
धू गजां समर खग छरां धड़छै।
दाखवो वळे जैपुर धरा दूसिरौ,
पलावंध जोरवर हरा पड़छै ।।३।।

अखै कव सांच खग चाप बातां उभै,
निरखतां तोय कुळ चौज नवरां।
जोड़ रा भड़ां बह जाय सारो जनम,
अजा री घड़ी रै मांहि अवरां ।।४।।

५५. गीत ठाकुर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी रौ

महण सभावां कुळ मुगट गुमर दावां मिळै,
काढ़वा सुजस जग सिर कहावै।
अजौ अवगाढ़ मन धन लहर आवियां,
आठ सम कनक गिर निजर आवै ।।१।।

---

५५. गीतसार—ऊपरांकित गीत चौकड़ी ठिकाने के भोजराजोत शेखावत शाखा के ठाकुर अर्जुनसिंह की बहादुरी और उदारता से सम्बद्ध है। कवि का कथन है कि अर्जुनसिंह आनन्द की तरंग में राशि राशि स्वर्ण याचकों को कवड़ियों की भाँति तुच्छ मानकर दान में दे देता है। अन्य कोई ऐसा उदार नहीं है जो उसकी समता कर सके।

---

३. छोळ—तरंग, लहर। सुपातां—सुपात्रों, कवियों। निवाजै—कृपा पूर्वक देता है। बराछक—भरपूर, वीर। धू गजां—गज मस्तकों। छरां—भालों, बाणों। धड़छै—टुकड़े टुकड़े करे, विदीर्ण करे। दाखवो—कहिए। वळे—फिर। पलावंध—वस्त्रांचल बाँधने वाले, कमर बाँधकर। जोरवर हरा—जोरावरसिंह के पौत्र अर्जुनसिंह। पड़छै—पकड़ते हैं, अपुगमन करते हैं।

४. अखै—कहता है। कव—कवि। खग चाप—तलवार से दमन करने वाले, तलवार और दान की। उभै—दोनों, उभय। निरखतां—देखते हुए। तोय—तुझे, आपके। कुळ—वंश। चौज—मौज, उमंग। नवरां—व्यर्थ। जोड रा—बराबरी के। भडां—योद्धाओं का। बह जाय—व्यतीत हो जावे। सारो जनम—समस्त जीवन, समग्र जन्म। घड़ी रै—एक घड़ी के। मांहि—में। अवरां—अन्य के।

१. महण सभावां—समुद्र की सी प्रकृति। कुळ मुगट—वंश का शिरमौर। गुमर—गर्व। दावां—होड़, स्पर्द्धा, हक। जग—संसार। अजौ—अर्जुनसिंह। अवगाढ़—युद्ध, बहादुरी में। लहर—तरंग। आवियां—आने पर। आठ सम—आठ पर्वतों के समान। कनकगिर—स्वर्णगिरि। निजर—दृष्टि में।

अखाड़ा जीत खत्रवट भुजां ऊफणै,
कहो अनि भड़ां समवड़ त्रणै केम ।
बखत सुत रीझणै यसौ चेतन वधै,
हेक कवुडी जिसौ गिणै नग हेम ।।२।।

भरण नित चढ़ै लोयण सरस भरियां,
तसा छत्रधारियां दिखावण तीख ।
दूसरौ जोरवर करण आचार दिल,
सुव्रण गिर लेखवै व्राट सारीख ।।३।।

रेण कण गिणै हाटक अनड़ जग रटै,
ऊपटै रीझ जद चीत उदार ।
मौज लेवाळ री सरब त्रसनां मिटै,
दान दीयण हटै नह अजौ दातार ।।४।।

---

२. अखाड़ाजीत–युद्धविजयी । खत्रवट–क्षात्रपथ, क्षत्रित्व । ऊफणैं–उफनती है, उमड़ती है । अनि–अन्य । भडां–योद्धाओं । समवड़–बराबरी में । केम–कैसे । बखत सुत–ठाकुर बख्तसिंह तनय अर्जुनसिंह । रीझणै–दानदेने । यसौ–ऐसा । चेतन वधै–मन उमंगित हुए, मन बढ़ता है । हेक–एक । कवुडी–कौड़ी । जिसौ–जैसा । नग हेम–सुमेरुगिरी ।

३. भरण–बराबरी, पूर्त्ति में । नित–नित्य प्रति । लोयण–नेत्र । तसा–तैसे, ऐसे । दिखावण–दिखाने के लिए । तीख–श्रेष्ठता, उच्चता । जोरवर–जोरावरसिंह । करण–राजा कर्ण, करनेवाला । आचार–आचरण । सुव्रणगिर–सुमेरु पर्वत । लेखवै–विचारता है, देखता है । व्राट–कौड़ी । सारीख–सदृश ।

४. रेण कण–धूलिकण । हाटक–स्वर्ण । अनड़–पर्वत । ऊपटै–उमड़ता है । रीझ–दान । जद–जब । चीत उदार–उदारचित्त । मौज–आनन्द । लेवाळ–लेनेवाला । सरब-सर्व । दीयण–देने में । हटै नह–पीछे नहीं हटता है । अजौ–ठाकुर अर्जुनसिंह ।

५६. गीत ठाकर स्यामसिंघ सेखावत बिसाऊ रौ

इळा राज धन जतन धीरज कनळ अखावै,
धखावै अनळ खळ उतन धामां।
जैनगर लिखाबै सदर कागद जिता,
सिखावै तूंहिज अवसाण स्यामां ।।१।।

नीति विधि वेद अतमांम थंड जोर निध,
साम दंड भेद रज रीत सारां।
तौल गिर भुकत वळ फिरंग अबंद तठै,
थटै खावंद पुखत बोल थारां ।।२।।

नजि सचळ सल्हा मजकूर नर नाहरां,
धर अचळ थाहरां नूर धरतै।
राज रजपूत आंबेर दोइ राह रा,
वचन मुख ताहरा सूत बरतै ।।३।।

---

५६. गीतसार—यह गीत शेखावाटी के विसाऊ संस्थान के ठाकुर श्यामसिंह पर रचित है। इसमें क्षत्रियों और अंग्रेजों उभय पक्ष वालों द्वारा गीत नायक की मंत्रणाओं पर राज्य संचालन करने का वर्णन किया है। इस प्रकार उसके कार्यों की पर्वतों पर छाया करना कहकर प्रशंसा की गई।

---

१. इळा—पृथ्वी। कनळ—निकट वालों को। अखावै—अमरता प्रदान करता हैं, कहलवाता है। धखावै—जलाना, ढकेलना, हराता है। अनळ—अग्नि अन्य। खळ—शत्रु। उतन धामां—निवास स्थानों, वतन के ग्रामों में स्थित निवास स्थानों। जैनगर—जयपुर। जिता—जितने। तूंहीज—तुम ही। अवसाण—दाव, अवसर।

२. अतमांम—अपार, अति प्रतिष्ठित। थंड—सेना, समूह। निध—निधि। रज रीत—राज रीति, राज्य संचालन की प्रणाली। सारां—समस्तों। गिर—वचन पर। फिरंग—अंग्रेज। अबंद—मुक्त, बंधन हीन। तठै—वहाँ। थटै—डटे, पक्का रहे, शोभित हुवे। खावँद—पति, स्वामी। पुखत—पुख्ता, दृढ़। थारां—तेरे, आपके।

३. सल्हा—सलाह. मंत्रणा। थाहरां—गढ़ों। नूर—कान्ति। राज—राज्य। आंबेर—आमेर रियासत। दोइ राहरा—दोनों धर्मों के मानने वाले। ताहरा—तेरे, तुम्हारे। सूत—विचार, परामर्श। बरतै—व्यवहार करते हैं।

रीत रजवाट अवनाड़ कायब रता,
कूरम थाट नायब कजाकी।
तूं करै बांहबळ आजि सूरज तणा,
डूंगरां तणै सिर छांह डाकी ।।४।।

५७ गीत ठाकर दूलहसिंघ सेखावत खाचरियावास रौ

दाखै झोक झोक प्रथी सारी तोखारां ओरणां देणां,
धूखळां आच रा छळां दहुवां रा धींग।
बधै सारा हूंत घड़ां कंवारी कीरति वरै,
सिरै सूरां दातारां दूलहौ दूलैसींग ।।१।।

---

५७. गीतसार–उपर्युक्त गीत ठाकुर दूलहसिंह शेखावत खाचरियावास पर रचित है। कवि ने इसमें गीतनायक की दान एवं युद्धवीरता का उल्लेख करते हुए कहा है कि युद्ध में घोड़े झोंकने और दान देने इन दोनों वातों में दूलहसिंह की समस्त संसार सराहना करता है। वह अपने समसामयिकों में सवसे अधिक अविजित सेना को पराजित कर कीर्ति कामिनी के साथ विवाह करता रहता है।

---

४. रजवाट–राजकार्य-प्रणाली, क्षत्रियत्व। अवनाड़–अनम्र, स्वतंत्र। कायब रता–काव्य अनुरक्त, कायदे अनुसार। कूरम–कछवाहों का। थाट–वैभव, सेना। कजाकी–योद्धा, लूटनेवाला। बांहबल–बाहुवल, युद्ध। आजि–आज के समय में, युद्ध। सूरज तणा–सूरजमल्ल के पुत्र। डूंगरा तणै–पर्वतों के। डाकी–महान् वीर।

१. दाखै–कहते हैं। झोक झोक–धन्य धन्य। सारी–समस्त। तोखारां–घोड़े। ओरणां देणां–युद्ध में झोकने और दान देने। धूखळां–युद्ध, उपद्रव। आच रा–हाथ का। छळां–लिए, युद्ध। धींग–जबरदस्त, प्रहार करने में सबल। बधै सारां हूंत–सबसे आगे बढ़ कर। घड़ा कंवारी–विना लड़ी हुई सेना रूपी। कीरती वरै–कीर्ति का वरण करता है। सिरै–शिरमौर, श्रेष्ठ।

निघातां गडीरै तुरां रीझां करै गुणां नातां,
उभै वातां छातां सिरै गरब्बे उतन।
चाहै चमू अमांमी समांमी पंगी चढ़ा वानै,
सोहे मौड़ बंध नांमी गुमांन सुतन ॥२॥

पांडीसां भाराथां वाजै गंजी धार ओतपोतां,
सुपातां निवाजे कड़ा मोती कियौ नांम।
बरूथां अछूती झीत दौती राजै पलाबंध,
सदा वींद छाजै बिंद गोती बियौ स्यांम ॥३॥

जोतां सार आचार जोड़ रां हूंत बणी ज्यादा,
राजेस सवादा वनां तणी ओढ़ी रीत।
मांण नौढ़ा अणी जंगां पिलंगां पीहरां मेळै,
पंगी प्रौढ़ा हूंत रंगां खेलै घणी प्रीत ॥४॥

---

२. निघातां–प्रहारों। गडी रै–, गड़गड़ ध्वनि करते हैं। तुरां–घोड़ों का। रीझां–दान। नातां–सम्बन्ध से। उभै–दोनों। छातां सिरै–छत्रपतियों में श्रेष्ठ। गरब्बे–गर्वित होता है। चमू–सेना। अमांमी–अप्रमाण। समांमी–सप्रमाण, श्रेष्ठ। पंगी–कीर्ति। मौड़ बंध नामी–मुकुट बांधने वाले नाम वाला, दूलहसिंह।

३. पांडीसां–तलवारें। भाराथ–भारत, युद्ध। गंजी–विनाशक। धार–धारा, तलवार का तीक्ष्ण भाग। ओत पोतां–ओतप्रोत। सुपातां–सुपात्रों, सुकवियों। निवाजे–पारितोषक दे, दान दे, तुष्ठ हुए। कड़ा मोती–हाथ में पहनने के कड़े और कानों के मोती। बरूथां–सेनाएं। अछूती–अस्पर्शित, बिना भोगी, बिना लड़ी हुई। दौति–द्युति। पलाबंध–अंगरखे का छोर बांधे चलने वाला। वींद–दूलहा। छाजै–शोभा पाता है। बिंद गौति–वर के गोत्र वाला, दूलहसिंह। बियौ स्याम–दूसरा श्यामसिंह।

४. सार–तलवार। आचार–आचरण, दान। जोड रां हूंत–बराबरी वालों से। वनां तणी–दूलहा की। ओढ़ी रीत–टेढ़ी रीत, विकट रीति, अनोखी रीति। मांण–भोग कर। नौढ़ा–नवोढ़ा। अणी–सेना। पीहरां–पितृगृह। पंगी–कीर्ति।

५८. गीत ठाकर सिवदानसिंघ सेखावत खाचरियावास रौ

डंडां रोड़ त्रम्बागळां तुरी भरतां डकर,
धूपटण अरी आडा खंडां धार।
ओपियौ अबरके सांच चित आंणियां,
सिवौ लाडाणियां तणौ सिरदार ।।१।।
बंधवा चाड धिखतै उर महाबळ,
सत्रहरां विरोळै होय साजा।
सोहियौ बीर अवगाढ़ दूला सुतन,
रचेवा राड़ माधव मंडळ तणौ राजा ।।२।।
सावळां अणीधारां सांकळे,
भमाया अरि थटां बाघ भूरै।
गोत रखवाळ ब्रद आद सूं गिणंता,
सुरिंद कीधौ प्रगट बियै सूरै।३।।

---

५८. **गीतसार**—प्रस्तुत गीत शेखावाटी के रामगढ़ परगने के खाचरियावास ठिकाने के ठाकुर शिवदानसिंह शेखावत पर सर्जित है। गीत में लिखा है कि स्वजातीय वीरों की सहायता करने तथा उनके शत्रुओं का उन्मूलन करने हित माधव मण्डल का शासक शिवदानसिंह सज्जित रहता है।

---

१. डंडां रोड़ त्रम्बागळां—दण्डकों की चोटों से नगाड़े बजवा कर। तुरी भरता डकर—घोड़ों की छलांगे भरवाता। धूपटण—लूटना, अधिकार करना। आडा खंडां धार—शमशेरों की तिरछी धाराओं से। ओपियौ—शोभित हुआ। अबरके—अब की वार। सिवौ—शिवदानसिंह। लाडाणियां—शेखावतों की लाडखानोत शाखा वालों का। यह शाखा लाडखांन (लालसिंह) के नाम से प्रचलित हुई थी।

२. चाड—सहायता। धिकतै—क्रोधित। सत्रहरां—शत्रुओं। विरोळै—कुचले, दमन किए। सोहियौ—शोभित हुआ, सुहावना लगा। अवगाढ़—वहादुर, युद्ध। दूला सुतन—दूलहसिंह का पुत्र शिवदानसिंह। रचेवा—करने, रचने। राड़—लड़ाई। माधव मण्डळ—गीतनायक के पूर्वज माधोसिंह के नाम पर लाडखानोतों द्वारा शासित ग्राम समूह माधो मण्डल कहलाते हैं।

३. सावळां—भाले। अणी धारां—नोंके, धाराएं। सांकळे—युद्ध। भमाया—भ्रमित किए। अरि थटां—वैरी समूह। बाघ भूरै—बब्बर सिंह, जबरदस्त वीर। गोत रखवाळ—गोत्र-रक्षक। आद सूं—आदिकाल से। बियै सूरै—दूसरे शूरसिंह ने, शिवदानसिंह ने।

इळा रजवट वट तणी राखी अचड़,
छता व्रद भुजां दै जैत छाजै।
इण तरै जकै बदला लियौ असारा,
बंस रा मुदायत भला वाजै ।।४।।

५६ गीत ठाकर खंगारसिंह सेखावत खोरा रौ

बाका फाट बादगरां हुआ सह हकबका,
रतन तण जस-हका अमर रहिया।
भ्रग लता कुवर सहिया जिका विसंभर,
सकव चा चाबका तिकै सहिया ।।१।।

---

५६. गीतसार–उपर्युक्त गीत दांतारामगढ़वाटी के खोरा स्थान के ठाकुर खंगारसिंह शेखावत की प्रशंसा में कहा गया हैं। गीत में गीतनायक के कवि द्वारा अबोधता से किए गए चाबुक प्रहारों की प्रसिद्धि घटना की तुलना भगवान् विष्णु के हृदयस्थल पर भ्रगु ऋषि के पाद प्रहार से साम्यता दिखाते हुए वर्णन किया गया है।

---

४. इळा–पृथ्वी। रजवट वट–क्षात्र धर्म के मार्ग की, क्षत्रियत्व के बल की। अचड़–उत्तम कार्य, महानता। छता–पृथ्वी, वर्त्तमान। व्रद–विरुद। जैत–विजय। छाजै–शोभा होती हैं। इण तरै–इस तरह। जकै–वे, जो। मुदायत–मुखिया। भला बाजै–अच्छे कहलाते हैं।

१. बाका फाट–भय अथवा विस्मय से मुख खुला रह जाना। बादगरां–विवाद करने वालों, हठ करने वालों, दावा करने वालों के। हक बका–विस्मित, स्तब्ध। रतन तण–रतनसिंह तनय। जस हका–कीर्ति की शोहरत। भ्रगलता–भ्रगु ऋषि के पाद प्रहार। कुवर–उर, वक्षस्थल। सहिया–सहन किया। जिका–जो, जिन्होंने। सकव चा–सुकवि का। चाबका–चाबुक, कोरड़े। तिकै–वे, उन।

कूरमां छात अखियात कीधी अकळ,
निभै कीधी बात जुग सात लग नाम।
धरी दिज तणी पद घात उवर गिरधरण,
ताजिणा पात चा गात धरि तांम ॥२॥

भोज विकम करण सिवर जगदेव भणि,
दान खत्रियां बडा बडा दीधा।
अनंत ध्रम काज रिख लात कीधी अमर,
कोरड़ा फताहर अमर कीधा ॥३॥

ब्रह्म सुत जेम पारख करी बीदगां,
देव पण अधक पण अधक दातार।
विसन देवां सिरै दुवौ त्रहूं लोक विच,
खत्र्यां खटतीस वंस सिरै खंगार ॥४॥

—देवा महियारिया रौ कह्यौ

---

२. कूरमां छात–कछवाहों के स्वामी। अखियात–प्रसिद्ध। अकळ–अखिल। दिज तणी–द्विजराज की, ऋषि भ्रगु फी। गिर धरण–विष्णु ने। ताजिणाँ–चाबुक। पात चा–कवि का। गात–गात्र, शरीर। तांम–तब।

३. वीकम–राजा विक्रमादित्य। सिवर–राजा शिवि। जगदेव–प्रसिद्ध दानी जगदेव पंवार। खत्रियां–क्षत्रियों ने। रिख लात–भ्रगु ऋषि की चरण चोट। कोरड़ां–चाबुक। फताहर–फतहसिंह के पौत्र ने।

४. ब्रह्म सुत–विष्णु भगवान्। जेम–ज्यों। पारख–पहिचान, परीक्षा। बीदगां–विदग्धों, कवियों की। विसन देवां–देवताओं में विष्णु की भांति। सिरै–श्रेष्ठ, शिरोमणी। खत्र्यां–क्षत्रियों के। खटतीस–छत्तीस राजकुलों में। खंगार–ठाकुर खंगारसिंह।

९० गीत ठाकर खंगारसिंघ सेखावत खोरा रौ

चडा वांटणां वीत वड चीत ताळा बिलंद,
अखाड़ां जीत व्रिड़दां उजाळा ।
क्रीत रा विसाऊ वाद वगां कळह,
उरस छिवंतां वहै खांन वाळा ।।१।।
पमंग चढ़े खड़ै पंथ प्रथी भैचक पड़ै,
झड़ै सावळ दमंग आभ झेलै ।
कूरमां राण ब्रदधारियां करारा,
खेल तरवारियां पांण खेलै ।।२।।
लोह बळ वित्त पैलां तणा लियावै,
मौड़ अरि फतै ले आसमांनी ।
तलां जोड़ा लगां वहै तरवारियां,
खरंड घोड़ां कियां लाडखांनी ।।३।।

---

९०. **गीतसार**—ऊपर लिखित गीत खोरा ग्राम के ठाकुर खंगारसिंह शेखावत की उदारता तथा वीरता से सम्बद्ध है। कवि ने गीतनायक को दानी, उदार चित्त, भाग्यवान् और युद्ध विजेता विरुदधारी के रूप में चित्रित किया है। वह कहता है कि युद्ध समय में लाडखांन के वंशवाला खंगारसिंह आकाश को स्पर्श करता चलता है और इस प्रकार दान और युद्ध दोनों में यश प्राप्त करता रहता है।

---

१. वाटणां—वितरित करने वाला। वीत—वित्त, द्रव्य, घोड़े, ऊँट आदि को भी राजस्थानी में वित्त कहा जाता है। वड चीत—उदार चित्त। ताळा बिलंद—भाग्यशाली। अखाड़ां जीत—युद्ध विजयी। विड़दां—विरुदों का। क्रीत रा—कीर्ति का। बिसाऊ—क्रयता, खरीददार। कळह—युद्ध। उरस आकाश। छिवंतां—शोभित होते। बहै—चलता है। खांन वाळा—लाडखांन का वंशधर।

२. पमंग—घोड़े पर। खड़ै—चलता है। भैचक पड़ै—आतंक फैल जाता है, भय चक्रित हो उठती है। झड़ै—झड़ते हैं, गिरते हैं। सावळ—भाले (?)। दमंग—अग्निकण। आभ—आकाश। कूरमां राण—कछवाहों का राजा, कछवाहों का प्रमुख। ब्रद धारियां—विरुद धारण किए। करारा—शक्तिशाली, कठोर। पांण—बल। खेलै—खेलता है।

३. लोह बळ—शस्त्र शक्ति से। वित्त—द्रव्य। पैलां तणा—दूसरों का। लियावै—ले आताहै। मौड़ अरि-शत्रुओं को पीछे भगा कर। फतै-विजय। तलां जोड़ां-अपने रिश्तेदारों सहित। खरंड—सेना, योद्धा। लाडखांनी—शेखावतों की लाडखांनी शाखा वाला खंगारसिंह।

सूर अवसांण सिध अनड़ ऊंचा सिरा,
यळा ऊधम धमे वीत आंणे ।
ताईयां गमे जड़ सदा बाहे तिजड़,
तिके भड़ भलांई मूंछ तांणे ।।४।।

६१ गीत भोजराज खंगारोत नराणा रौ

कळि चालण अकळ महा भड़ कूरम, मन महिरांण निरेहण मौज ।
द्रोमभ्र जितै रचे दिलेसुर, भेड़्क तितै मुहियड़ भौज ।।१।।

ढलि दळ आगळ ढूंढ़ाड़ौ, सुतन मनोहर मेर समांण ।
पाधरि चढ़ै कळोधर पीथळ, पिड़ि जेतला तेतला प्रमांण ।।२।।

---

६१. **गीतसार**–यह गीत जयपुर राज्य के नरायना संस्थान के स्वामी भोजराज खंगारोत शाखा के कछवाहा योद्धा पर कथित है । गीत में उसे चित्त का उदार और कुलोद्धारक बताते हुए शाही पक्ष के युद्धों में वीरता दिखा कर आमेर को गौरवान्वित करते रहने वाला घोषित किया है ।

---

४. सूर–शूर । अवसांण सिध–युद्ध में विजयी योद्धा, समय पर कार्य सिद्ध करने वाला । अनड़–किसी का बंधन न स्वीकारने वाला । ऊचां सिरा–गर्वोन्नत मस्तक । यळा–पृथ्वी । ऊधम धमे–विजय कर भोगता है । आंणे–ले आता है । ताईयां–आततायियों । गमे जड़–जड़ से नाश कर देता है । बाहे तिजड़–तलवार चलाकर । तिके–वे । भलांई–भले ही । मूंछ तांणे–मूंछों पर बल देवें ।

१. कळि चालण–कलियुग में मर्यादाओं का पालन करने वाला, युद्ध, बहादुर । अकळ–अव्यग्र, व्याकुलता रहित, निर्भीक । कूरम–कछवाहा । मन महिरांण–चित्त का उदार । निरेहण–निष्कपट, निष्पाप । मौज–दान । द्रोमभ्र–युद्ध । जितै–जितने । रचे–किए । भेड़्क–भिड़ने वाला, सहायक । तितै–तितने, उतने । मुहियड़–मुंह आगे, अग्रिम पंक्ति में आगे । भौज–भोजराज ।

२. आगळ–अग्रिम । ढूंढ़ाड़ो–ढूंढ़ाड़ प्रदेश वाला, भोजराज । सुतन मनोहर–मनोहरदास का पुत्र । मेर समांण–गिरि शृंग तुल्य, अचल । पाधरि–सीधे । कळोधर पीथळ–राजा पृथ्वीराज की कला को धारण करने वाला, भोजराज । पिड़ि–युद्ध । जेतला–जितने । तेतला–उतने ।

ओखड़माल अभंग अतुळीबळ, भिड़ि भांजे भाले गज भार।
खाटे बिरद ऊजळे खत्रवटि, खगि प्रबि प्रबि दूसरौ खंगार ।।३।।

पाट ऊधोर हेकळ पाखरियौ, लख पाखर समरि समरि जीवत संभ।
ओपै न्रप दरगाहि आंवेरौ, थाट विडार वडाळौ थंभ ।।४।।

६२ गीत कुसळसिंघ नाथावत चौमू रौ

कवि सरिस नमै अनमी वसि कीजै, विसम समै असहां बळ।
ऊंचा वंस तणौ आंबेरा, कुसला तत लाधौ अकल ।।१।।

चौरंगी गज डसणां अत चाढ़े, भेड़ुक अरोड़ै गज भार।
थाणां प्रबळ लाख दळ थोभै, अे कूरमां तणा अधिकार ।।२।।

---

६२. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत चौमू के स्वामी कुशलसिंह नाथावत की वीरता का बोधक है। कवि कहता है कि चतुरंगिनी सेना, हाथियों तथा प्रबल सहायकों द्वारा रक्षित शत्रुओं से लड़ कर कुशलसिंह क्षत्रियत्व को प्रकट करता है और याचकों को दान-सम्मान से प्रसन्न कर कछवाहा कुल को यशस्वी बनाता है।

---

३. ओखड़माल—बहादुर। अभंग—पूर्ण. निश्चयी। अतुळी बळ—अतुल्य बल वाला। भिड़ि—भिड़ कर। भांजे—संहार किए। भाले बलम। खत्रवटि—क्षत्रियत्व। खगि—खड्ग। प्रबि प्रबि—प्रति पर्व। दूसरौ खंगार—द्वितीय खंगार, भोजराज खंगार का पौत्र था।

४. पाट ऊधोर—सिंहासन का उद्धारक। हेकळ—ऐकाकी, अकेला रहने वाला, महान् वीर। पाखरियौ—कवचधारी, योद्धा। पाखर—अश्व सैनिक। समरि—युद्ध। जीवत संभ—युद्ध में घायल होकर बच जाने वाला योद्धा। ओपै—शोभित होता। दरगाह—दरबार, सभा। आंवेरौ—आमेर वाला, भोजराज। थाट—सेना। विडार—नाश कर। वडाळौ—वड़ा, महान्। थंभ—स्तम्भ।

१. सरिस—सदृश। नमै—झुकते हैं। अनमी—अनम्र, उद्धत। वसि—वश में। विसम समै—विषम समय में। असहां—शत्रुओं। ऊचा वंस तणौ—उच्च वंश को। आंबेरा—आमेर राज्य के कछवाहा। तत—तत्व। लाधौ—मिला।

२. चौरंगी—चतुरंगिनी सेना, गज, रथ, अश्व और पैदल सेना। गज डसणां—गज दन्त। भेड़ुक—सहायक, भिड़ने वालों। अरोड़ै—रोकने वाले,जबरदस्त। थाणां—सैनिक चोकियां। थोभै—रोके, आगे न बढ़ने दे। कूरमां तणा—कछवाहों का।

जुधि प्रबि सुसवळां जूटवौ, चाग्रे वित ऊपरौ चित ।
राम सुजाव ऊजळे रजवटि, कुळ मोटे मोटा स सुक्रित ।।३।।

कळि अवधूत कळोधर कूंतळ, ग्रमिया धूतग वरियांम ।
आगे जग तूं जिम ओळखिया, नाथहरा रहिया त्यां नांम ।।४।।

६३. गीत ठाकर रणजीतसिंघ रौ झाझ रा जुद्ध रौ

झंडा खूटिया तमाम फीलां हजारी हालिया जंगां,
ऊड़े तोपां सोर जोर ढंके गौ आदीत ।
भैचके कारिमा हिये आन भड़ां मांण भागा,
जाडा बोहां बीच बैंड झोंकिया रणजीत ।।१।।

---

६३. गीतसार—उपरांकित गीत में जयपुर के चौमू ठिकाने के स्वामी रणजीतसिंह नाथावत ने शेखावाटी के फतहपुर स्थान पर जार्ज टामस को पराजित कर विजय प्राप्त की थी, उसका वर्णन किया गया है। कवि कहता है कि गजराजों पर ध्वज फहराते हुए रणजीतसिंह ने युद्ध भूमि में प्रवेश किया। अंग्रेजों की तोपों के धुंए से आकाश में सूर्य का तेज मन्द हो गया और कितने ही किंपुरुष युद्ध स्थल से घर की ओर भाग चले। उस समय रणजीतसिंह ने आक्रमण कर सेनानायक जार्ज टामस को परास्त किया।

---

३. जुधि—युद्ध। प्रबि—पर्व। सुसवळां—सु समर्थों, सशक्तों। जूटवौ—भिड़ना, टक्कर लेना। वित—धन, दौलत। चित—चित्त, मन। राम सुजाव—रामसिंह का पुत्र कुशलसिंह। ऊजळे—उज्ज्वल, निर्दोष। रजवटि—राजपूती, क्षत्रिय पथ। कुळ मोटे—महान् कुल। सुक्रित—सुकृत, सुन्दर कार्य।

४. कळि—कलियुग में, युद्ध में। अवधूत—योगी, सिद्ध पुरुष। कळोधर—कला को धारण करने वाला। कूंतळ—राजा कुंतिल देव की। धूतग—योद्धा। वरियाम—श्रेष्ठ। ओळखिया—पहिचाने। नाथहरा—नाथ (नाथा) के वंशधर। रहिया त्यां नांम—उनकी यश गाथा रही, अमर नाम रहा।

१. खूटिया—खुले। फीलां—हाथियों। हालिया—रवाना हुए। सोर जोर—घनी प्रचण्ड बारूद। ढंके गौ—छिप गया। आदीत—सूर्य। भैचके—भयचक्रित हुए। कारिमा—किंपुरुष। हिये—हृदय, मस्तिष्क। आन—अन्य। मांण—मान, गर्व। भागा—नष्ट हुआ। जाडा बोहां—सघन प्रहारों में। बैंड—घोड़ा, हाथी। झोंकिया—धकेले, झोंके।

आरवां कड़कै चकै धड़क्के ऊरव्वी आभ,
वड़कै डूंगरां शृंग भंगरां विछोड़।
भड़क्कै लाज रा लंग्र रतन्नेस वाळौ जोध,
आभ हूं अड़क्कै जोस वभके अरोड़ ।।२।।

ओळां भत्ती रीठ जूलां भे दुरद अंगां,
लुभट्टां सबोळा टोळा हबोळा सकाज।
विरोळा गैजूहां सींह ऊतौला गैणाग बीर,
राघौ नाम रटै जीह हंके बाजराज ।।३।।

कोमंडां भणके चिल्लां रणंकै भूडंडा कूंत,
ठणंकै भांझरां परी हाका ठांम ठांम।
हरक्खे झणंकै जंत्र नारदेस मुनी हत्थां,
तेग भट्टां पछट्टां धू खणंक्के तमांम ।।४।।

---

२. आरवां–तोपें। कड़क्के–गरजती है। चकै–भयचक्रित, विस्मित। धड़क्के–धड़ धड़ की ध्वनि, कंपन। ऊरव्वी आभ–भूमि और आकाश। वड़कै–वड़ड़ की ध्वनि, टूटते समय होने वाली आवाज। भंगरां–वन, झाड़ियाँ। विछोड़–छिन्न होकर, छोड़ कर। लंग्र–लंगर। जोध–पुत्र, योद्धा। आभ हूँ–आसमान से। अड़क्के–स्पर्श कर, अड़ कर। अरोड़–जबरदस्त।

३. ओळां भत्ती–उपल वर्षा की तरह। रीठ–युद्ध। जूळां–पृथ्वी, अलग। दुरद अंगां–हाथियों के अंगों पर। टोळा–समूह। बिरोळा–मंथन कर, विनाश। गैजूहां–गज यूथों। ऊतौला–प्रहार हेतु शस्त्र ऊपर उठाए हुए। गैणाग आकाश। राघौ नाम–अपने इष्ट देव राघव का नाम। जीह–जिह्वा से। हंके–हाँके, तेजी से चलाए। बाजराज–अश्वराज, श्रेष्ठ घोड़े।

४. कोमंडां–धनुषों के। भणंकै–आवाज करे। चिल्लां–प्रत्यंचाएँ। रणंकै–रणन ध्वनि। भूडंडा–भुजदण्ड। कूंत–बर्छे, भाले। ठणंकै–ठणण की ध्वनि। भांझरां–नूपुरें। परी–अप्सराओं। हाका–हल्ला। ठांम ठांम–स्थान स्थान पर। झणंकै–झनकार, झणण ध्वनि। जंत्र–यंत्र, वीणा। हत्थां–हाथों में। तेग–तलवार। पछट्टां–पछांटे, शस्त्राघात। धू–मस्तकों पर। खणंक्के–खणण करती चले।

टूटे सीस केई पार पंजरा कूंत फूटै,
रुण्ड धरा लूटै केई छूटै लाल रंग।
विछूटै जूसणां कड़ां केई बीर धसै बोम,
जाडा थंडा फसै केई जूटै जोम जंग ।।५।।

ओरम्मे व्रहास सप्पतास चौजां चाव लागै,
हुलासां सूरमां फौजां बागै चन्द्रहास।
रिखां हास मौजां हेत तमास तास देव रंजै,
खंडै जोस खाथै नाथै झाझवाड़ो खास ।।६।।

त्रभागां धमाकां खाथां बीजळां प्रभाकां तेगां,
फते बाका हाकां धाकां उड़ै कुंभा फाड़।
डंमरू डकै डाका साकाबंध चाका डोह,
बराकां सिरांका जूटा सुभट्टा बांबाड़ ।।७।।

---

५. पार–उस ओर, इधर से उधर। पंजरां–अस्थिपिंजरों के। कूत–भाले, वर्छे। फूटै–चीर के निकलते है। रुण्ड–कटे हुए शीश। धरा लूटै–रणस्थल पर लुढ़कते हैं। छूटै–बहे। लाल रंग–लोहू। विछूटै–खुले, टूटे। जूसणां–कवचों के। कड़ां–जंजीरों के बंधन। धसै–धँसते हैं। बोम–ताकत लगा कर, आकाश। जाडा थंडा–घने समूह में। फसै–फँसते हैं, धिर जाते हैं। जूटै–जुड़े, भिड़े। जोम–घमण्ड, गर्व। जंग–युद्ध।

६. ओरम्मे–झोंकते हैं। व्रहास–घोड़े। सप्पतास–सपताश्व। चौजां–मौज, विनोद। बागे–चले। चन्द्रहास–तलवार। रिखां हास–ऋषि नारद हास्य करते हैं। मौजां–आनन्द, दान। हेत–लिए। तास–उस, भय। खंडै–खण्डित किया। खाथै–शीघ्रता से। नाथै–नाथावत वीर रणजीतसिंह ने। झाझवाड़ो खास–जार्ज टॉमस की स्वयं की अंग रक्षक सेना।

७. त्रभागां–तीन धार वाले वर्छे, भाले शस्त्र। धमाकां–प्रचण्ड चोटें। खाथां–तेजी। बीजळां–बिजली की। प्रभाकां–कान्ति के, चमक के। तेगां–तलवारें। बाका–मुंह। हाकां धाकां–बलात्, दिन दहाड़े। कुंभा–गज शुण्डों, कुंभ स्थलों। डकै–बजे। डाका–दंडकों से। वंध चाका–निशानें, योद्धा। डोह–मंथन कर, मस्ती से। सिराकां–सिरह, प्रमुख पंक्ति के। बांबाड़–वीर श्रेष्ठ।

खळक्कै नारंगां खाळ बीज ज्यूं भळक्कै खगां,
वक्कै वीर किलक्कै चामुंडा छक्खै वेत ।
दड़ा सा बिछूटा माथा धड़ा थी रुळन्ता डोलै,
कुरू खेत जूटा जांणी पाँडू कैरू खेत ।।८।।

पौतारे भड़ांळां पाळां चाळां लागा बरां पूर,
कुंजरां छड़ाळां ध्रीव दूसारां काढ़ाळ ।
भाटकै कराळ जोस जंगां मुदी लाज भुजां,
वादोवादी महावीर झाटकै बाढाळ ।।६।।

जोस में अथागां जड़ै कुंजरां छडाळां जोम
धणी आगां छळां जांगां उरिंदा उध्राम ।
वीज सा सळाव खाता ऊनागा दुधारा वागा,
आधंतरां लागा भागा फिरंगी अमांम ।।१०।।

---

८. खळक्कै–वहने लगे । नारंगां–लोहू के । खाळ–पहाड़ी नाले । बीज–विद्युत । भळक्कै–चमके । वक्कै–बोलते हैं । वीर–बावन वीर, बैताल । किळक्कै–हर्ष ध्वनि करे, किलकते हैं । छक्कै–छकित, उन्मत्त । वेत–अवसर । दड़ा सा–कंदुक तुल्य, बड़ी गेंद जैसे । बिछूटा–कट कर गिरते हैं । माथा–मस्तक । धड़ां थी–धट से । रुळन्तां डोळे–पैरों की टक्करों से इधर उधर चक्कर खाते फिरते हैं । जूटा–भिड़े । पांडू कैरू–पाण्डव और कौरव वीर । खेत–रण क्षेत्र ।

६. पौतारे–प्रोत्साहित करे । भड़ाळा पाळां-पदाति योद्धाओं को । चाळां लागा–युद्ध कुतूहल लगे । कुंजरां–हाथियों । छड़ाळां–भालों । ध्रीब–प्रहार । दूसारां–भाले । काढ़ाळ–निकालने वाले । भाटकै–टक्करें देते हैं । कराळ–विकराल, करारी । मुदी–प्रमुख । बादोवदी–हठ पूर्वक । झाटकै–जबरदस्त आघात करे । बाढ़ाळ–तलवार के ।

१०. अथागां–अथाह, अपार । जड़ै–वार करे । धणी–स्वामी । आगां–आगे, सामने । छळां–युद्ध । उरिदां–वैरियों के । उध्राम–व्यग्रता से, भयानक, उधेड़ने वाली । बीजळां–विद्युत सदृश । सळाक–चमक । खाता–करते, जल्दी से । ऊनागा–नग्न । दुधारा–द्विधाराओं वाले शस्त्र । वागा–चलने लगे, लड़ने लगे । आधंतरां लागा–आकाश के जा लगे । फिरंगी–अंग्रेज । अमांम–प्रतिष्ठा खोकर, गर्वविहीन होकर ।

छाजियौ सूरमां पणौ लेतां तोपां पूर छकां,
घूरिमां विहंडै माडां चाडां जे धिराज ।
जोध विनां अत्री जौन ऊरमां दिखातो जतु,
जांणतौ कूरमा मही निछत्री जिहाज ।।११।।

—हणूंतदान दधिवाड़िया रौ कह्यौ

६४. गीत चांदसिंघ बालापौता कछवाहा रौ

घूरे त्रम्बाळां मचायौ जंग मेवाड़ चीरवै घाट,
ध्रावियौ जेण वेळां काळा नाग सो धैंधींग ।
जटा धार तीजो नयण ज्वाळा सो जगायौ जेम,
स सिंधू कराळो रूप आयौ चांद सींग ।।१।
बागी हाक दवा सु गोळियां ऊजाळे छूटै,
जगै क्रोधवान महाबोला बीर जंग ।
मूंकां नाद बधूळा सै नग्गी खाग खळां माथै,
तोप दग्गी गोळा जिम मेळियौ तुरंग ।।२।।

---

६४. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत शेखावत क्षत्रियों की बालापोता प्रशाखा के वीर चाँदसिंह पर रचित है । चाँदसिंह द्वारा उदयपुर राज्य के चीरवा घाट नामक स्थान पर लड़ कर वीरगति प्राप्त करने का गीत में आलेखन है ।

---

११. छाजियौ—शोभित हुआ । सूरमां पणौ—वीरत्व । पूर छाकां—पूरे छके हुए । धूरिमां—शत्रुओं के मस्तक । विहंडै—खण्डित करें, काटे । माडां—जबरन, बलात् । चाडां—सहायतार्थ । अत्री—इतनी । ऊरमां—पुरुषार्थ । निछत्री—क्षत्रियों से विहीन । जिहाज—जार्ज टॉमस ।

१. घूरे—नाद करे, ध्वनि करै । त्रम्बाळां—ताम्र धातु के पैंदे वाले नगाड़े । चीरवे घाट—मेवाड़ की चीरवा नामक गिरि कक्ष या घाट । ध्रवियौ—मारने लगा, वरसने लगा । जेण वेळां—जिस समय । काळा नाग सो—काले सर्प सदृश, काले हाथी के समान । धैंधींग—वीर । जटाधार—शिव । तीजो—तृतीय । ज्वाला सो—ज्वाला तुल्य । जगायौ—जाग्रत किया, समाधि से उठाया ।

२. बागी—हुई । जंग—युद्ध । मूंकां—छूटै, मुक्त हुए. निकले । बधूळा—वात्यचक्र । नग्गी खाग—नग्न कृपाणें । माथै—पर । मेळियौ—मिलाया, शामिल किया । तुरंग—घोड़ा ।

चन्द्रहासां खागां कै प्रचंडां झुंड बीर चाळै,
खुले रुण्ड मुण्डा कै प्रजाळै लोही खाळ ।
पोतरै विहारी वाळे रिमां थंडां कै पछाड़े,
करे सूर धीरां धावा विहंडां कराळ ।।३।।

खिरेगो खळां नूं मार मंडे फूलधारां खेत,
धरेगो बिजैत, नाम जूझारां सधीर ।
करेगो प्रीति रा पूर लोही धार छके काळी,
बरेगो अपछरां बालोपोतौ महाबीर ।।४।।

६५. गीत राव करमसीं जोधाउत राठौड़ रौ

राखत जो नहीं कमौ रिण रहचै,
घाय मिळे रिण असुर घड़ ।
तो जड़ जंगळ जात जैता,
ज्यूं जैतारण ही जात जड़ ।।१।।

---

६५. गीतसार–ऊपर लिखित गीत राव जोधा राठौड़ के नवें पुत्र कर्मसी राठौड़ की युद्ध वीरता पर रचित है । गीत में कर्मसिंह द्वारा बीकानेर के अपने बंधु स्वामी बीका, द्रोणपुर के शासक बीदा, मेड़ता के शासक दूदा और जैतारण के अधिपति जैतावतों की युद्धों में सहायता करने का वर्णन है । उसने अपने चारों राव पदधारी बंधुओं की सहायता की थीं ।

---

३. चन्द्रहासा–तलवारें । खागां–कृपाणें । चाळै–विनोद, युद्ध । खाळ–नाले । पोतरै–पौत्र । रिमां थंडा–शत्रुसमूह । विहंडां–खण्डित कर, तितर बितर ।

४. खिरेगो– खंवित हुआ, गिर पड़ा । फूल धारां–तलवार की धाराओं में । धरेगो–संसार में पीछे छोड़ गया । बिजैत–विजेता का । छकै–तृप्त । बरेगो–वरण करके गया । अपछरा–अप्सरा । वालो पौतो–राव बाला कछवाहा का वंशज ।

१. कमौ–कर्मसी, राव जोधा का ९वां पुत्र जिससे राठौड़ों की कर्मसोत प्रशाखा का प्रचलन हुआ । रिण–युद्ध । रहचै–लड़ कर । असुर घड़–वैरियों की सेना । जंगळ–जांगल देश, बीकानेर राज्य का प्राचीन नाम । जैता–राव जैतसिंह । जड़–मूल, जड़मूल ।

पौह धमौरो अनै द्रोणपुर,
पौह मेड़तो जांगळू पह।
काढ़त जड़ां सहत किलमायण,
करमसी जौ नह करत कळह ।।२।।
समहर चौ भरभार साहियां,
सींह करत जौ नहीं समेळ।
बीका बीदा दूद जैतायण,
इतरां होवत जड़ां ऊखेळ ।।३।।
निग्रह भौम घणा नर नामिया,
घण दळ साभ्रण रचण घण घाव।
राखी भले कमै चहुं रावां,
जड़ ऊपड़ती जोध सुजाव ।।४।।
—माला सांदू भदोरा रौ कह्यौ

६६. गीत राव करमसी जोधाउत राठौड़ रौ

कसे पीठ पाखरां पमंग दळां आरंभ कियां, दूठ बीको सजे आवियौ दाव।
दाख बळ करमसी भलो छळ दाखियौ, राखियौ राव रौ वचन तद राव ।।१।।

---

६६. **गीतसार**—उपरांकित गीत राव जोधा के छोटे पुत्र राव कर्मसिंह राठौड़ की रण क्रीड़ा पर सर्जित है। राव कर्मसिंह ने बीकानेर के राव बीका द्वारा जोधपुर के राव सूजा पर आक्रमण करने पर राव सूजा की सहायता की थी। गीत में सूजा के पक्ष में लड़ने का संकेत है।

---

२. पौह—राजा, योद्धा। धमौरो—राव कांधल की राजधानी का नाम। अनै—अन्य। काढ़त—निकाल देता। जड़ां सहत—जड़ सहित, बुनियाद सहित। किलमायण—मुसलमान, कलमा पढ़ने वाले। कळह—युद्ध।

३. समहर चौ—युद्ध का। भर भार—जिम्मेदारी। साहियां—झेले हुए, उठाए हुए। सींह—कर्मसिंह। समेळ—शामिल होने का भाव, समेळ स्थान का युद्ध। इतरां—इतने। ऊखेळ—उपाड़, जड़ रहित, निर्मूल।

४. निग्रह—दमन। घणा—बहुतेरों को। नामिया—झुकाए, अधीन बनाए। घण दळ—बहुत अधिक सेना। साभ्रण—सजा देकर, मार कर। कमै—कर्मसिंह ने। ऊपड़ती—उखड़ती। जोध सुजाव—राव जोधा के पुत्र कर्मसिंह ने।

१. पाखरां—घोड़ों की कवचें। पमंग—घोड़े। दूठ—वीर। सजे—सज्जित होकर। दाख—कह कर। छळ—युद्ध। तद—तब। राव—राव कर्मसी।

चढ़े आसोप सुं खड़े अति चंचळां,
आभ भुज अड़े पौरस अछायौ।
वयण सूजो गहण बींटियौ वीकड़े,
उग्राहण करेवा कमौ आयौ॥२॥

जोधपुर भीड़ पड़ियां थकां जोध रै,
लड़ण भुज नीम उरस लागौ।
रूक हथ राव सूजै सधर राखियौ,
भिड़े दूजौ वीकम राव भागौ॥३॥

लंगर फौजां तणा लार अत लगाया,
धकाया कमधजां कमध घेटौ।
भाग वळ भलोजी भलो कहियौ,
खाग बळ प्रवाड़ो लयौ खेटौ॥४॥

—माला सांदू भदोरा रौ कह्यौ

---

२ आसोप—मारवाड़ के एक ठिकाने का प्रमुख स्थान। खड़े—रवाने हुए, प्रस्थान किया। चंचळां—घोड़े। आभ भुज अड़ै—भुजाएँ आकाश को स्पर्श करती। पौरस—बल। अछायौ—परिपूर्ण, व्याप्त। वयण—वचन। सूजो—जोधपुर के शासक राव सूजा को। गहण—पकड़ने के लिए। बींटियौ—चौतरफ से घेर लिया। वीकड़े—बीकानेर के राव बीका ने। उग्राहण करेबा—उद्धार करने के लिए, मुक्त करने हेतु। कमौ—आसोप का स्वामी राव कर्मसिंह।

३. भीड़—विपत्ति, सहायक। थकां—होते हुए। उरस—आकाश के। रूक हथ—खड्ग धारण किए, हाथ में तलवार लेकर। सधर—दृढ़ता पूर्वक, धैर्य के साथ, वीर ने। भिड़े—सामने लड़ कर।

४. लंगर—समूह, शृंखला। तणा—का। लार—पीछे। धकाया—पीछा किया। घेटौ—धृष्ट, वीर। खाग-बळ—तलवार की ताकत से। प्रवाड़ो—प्रशंसा। खेटौ—युद्ध में।

६७. गीत ठाकर उदैसिंघ करमसोत खींवसर रौ

गजां संध निजोड़ण कमध ओ गाढ़ गुर,
बिढ़ण अणबिंध अबरी बरूंदा।
असमरां तोल छत्रबंध राजा अगै,
आंवळो तो जिसा कंध ऊदा ।।१।।
हुतासण झड़ै खग सगत भुज हड़हड़ै,
दुरत रण बीछड़ै गजां दौळां।
जेर हुवै जगत भेळा खड़ै जगत सूं,
जिकां हूंतां तूंहीं लड़ै जौळां ।।२।।
नाथ रा अकळ मांटी पणै नींबाहर,
अरि दल भखेवा कंदळ उरड़ै।
आग झळकियां बीजळ कमा अभनमा,
महा बळ पहां सु तूंहीं मुरड़ै ।।३।।

---

६७. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत नागौर प्रान्त के खींवसर ठिकाने के करमसोत शाखा के राठौड़ वीर ठाकुर उदयसिंह पर रचित है। उदयसिंह ने महाराजा अजितसिंह जोधपुर की उनके पुत्र वख्तसिंह द्वारा हत्या करने पर नाराजगी प्रकट करते हुए महाराजा अभयसिंह तथा वख्तसिंह का विरोध किया था। गीत में महाराजा अभयसिंह का साथ छोड़ कर अपने ठिकाने में चले जाने का समकालीन कवि ने आख्यान किया है।

---

१. गजां-संध–हाथियों के संधिस्थलों को। निजोड़न–खोलने, संधि-विच्छेद करने। कमध–राठौड़ वंशीय। गाढ़ गुर–दृढ़ वीर, श्रेष्ठ वीर। बिढ़ण–लड़ने के लिए। अण विंध–अभोगी। अबरी–विना वरण की हुई, विना लड़ाई में लड़ी हुई। बरूंदा–वरण करने वाला। असमरां–तलवारें। तोल–उठा कर, अनुमान लगा कर। छत्र बंध–छत्रधारी। अगै–सम्मुख, अग्रिम। आंवळो–वांका, टेढ़ा, सजा हुआ। जिसा–जैसा।

२. हुतासण–अग्नि स्फुलिंग। झड़ै–गिरते हैं। खग–तलवार। सगत–शक्ति, रणचण्डी। दुरत–प्रचण्ड। बीछड़ै–बिछुड़ते हैं। गजां दौळां–हाथियों के चारों तरफ। जेर–पराजित। भेळा–शामिल। खड़ै–प्रस्थान करते हैं। जिकां हूंतां–जिनसे, जिनके साथ। जौळां–अकेला, मैदान में (?)।

३. नाथ रा–हरनाथसिंह के पुत्र, उदयसिंह। मांटी पणै–मर्दानगी। नींबाहर–नीमा का पौत्र (?)। भखेवा–भक्ष्य बनाने का। कंदळ–युद्ध में। उरड़ै–जोश में आकर आगे घँसता है। आग झळकियां–अग्नि, ज्वाला धधकने पर। बीजळ–तलवार। अभनमा–अभिनव। पहां–राजाओं, योद्धाओं। मुरड़ै–रोष प्रकट कर लौट आता है।

राज रखपाळ रिछपाळ धर रूक रज,
चाळ-बंध समर करण चाळा।
अजा रै मरण धक-चाळ तूं आप रै,
केवियां काळ लंकाळ काळा ।।४।।

—अनोप सांदू रौ कह्यौ

६८. गीत प्रथीराज जैतावत रौ

राणी म रोइ पीथौ रण रीधल,
रिण गा छाडि तिके भड़ रोइ।
घण जूझै रिणमाल तणै घरि,
हुवै मरण तिम मंगळ होइ ।।१।।

पीथल तणौ मकरि दुख पछि अछि,
दिग गा तजि करि तांह दुख।
आदि तैं अेह अखा घरि आगै,
सार मरण घण घणौ सुख ।।२।।

---

६८. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत में कवि ने राठौड़ वीर पृथ्वीराज की वीरगति पर उसकी पत्नि द्वारा रुदन करने पर उसे चुप करते हुए कहा है कि हे रानी ! विलाप मत कर ! राव रणमल्ल के धराने में तो तुम्हारे पति की भाँति अनेक वीर युद्ध में जूझ कर मरें हैं। वीरगति पाने वालों के लिए चिन्ता नहीं की जाती है। रण से पलायन करने वाले ही वस्तुतः रुदन के पात्र हैं।

---

४. रिछपाळ—रक्षपाल, रक्षक। रूक—तलवार। रज—क्षत्रियत्व, राजपूत का धर्म। चाळबंध—वस्त्रांचल बाँधकर, सेना को पंक्तिवद्ध कर। चाळा—छेड़छाड़, कुतूहल। अजा रै—महाराजा अजीतसिंह जोधपुर के। केवियां—वैरियों के लिए। काळ—मृत्यु। लंकाळ—सिंह। काळा—वीर।

१. म रोइ—रुदन मत कर। पीथौ—पृथ्वीराज। गा छाडि—छोड़ कर गए, भाग गए। तिके—वे। भड़—योद्धा। घण—घने, बहुत। जूझै—युद्ध में लड़तें हुए मारे गए। रिणमाल—राव रणमल्ल की संतान वाले राठौड़। मंगळ—मांगलिक।

२. पीथळ तणौ—पृथ्वीराज का। पछि—पीछे, पश्चाताप। अछी—सुन्दरी। दिग—दिग्गज, योद्धा। तांह—उनका। आदि तैं—आदिकाल से ही, परम्परीण। अेह—यह। अखा—अक्षयराज के। घरि—घराने में, कुल में। सार—लोहा से, शस्त्र से।

मकरि अंदोह जैतउत मरतै,
आया भाजि सु रोइ अयार।
अे कुळवट सदा अखैराजां,
चढ़तां कुंते मंगळाचार ।।३।।

६९. गीत नारायण धनराजोत राठौड़ रौ

रयण गाज आवाज रण तूर पाखर रहच,
सालुळे सिंधवौ राग साजै।
दुरति धनराज रौ वैर जळ डोहतो,
मल्हपियो मूगली फौज माथै ।।१।।
धीरवे कमंध खगधार ओलर धीमें,
अरि घड़ा जाणतो जेण आफै।
सार जळ सांमहो हंस पावासरो,
फीलवै नाराइण लोह फाफै ।।२।।

---

६९. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत वीर श्रेष्ठ नारायण धनराज तनय पर रचित है। नारायण ने मुगल सेना के साथ घमासान युद्ध लड़ कर मृत्यु प्राप्त की थी। गीत में लिखा है कि वह समुद्र गर्जन जैसी रणतूर्य्य की आवाज एवं सिंधु रागिनी की ध्वनि होते समय शत्रु-सेना पर उमड़ कर खड्ग की बौछार करने लगा। वह वीर शत्रुता रूपी जल-निधि का मंथन करने के लिए तीव्रता से मुगल सेना पर झपट कर पहुंचता।

---

३. अंदोह–चिन्ता, सोच। जैतउत–जैता के पुत्र, पृथ्वीराज के। भाजि–भाग कर। अयार–अमित्र, शत्रु। कुळवट–कुलवृत्ति, कुल की रीति, वंश की मर्यादा। अखैराजां–अखैराज की संतानों की। कुंते–तलवार, भाले। मंगळाचार–खुशी के आचार-व्यवहार, मांगलिक कार्य कलाप।

१. रयण गाज–समुद्र की गर्जना। रण तूर–रण तूर्य्यं। पाखर–अश्व सेना, घोड़े की कवच। रहच–ध्वस्त करता। सालुळे–उमड़ कर चला। सिंधवौ राग–सिन्धु रागिनी, रणोत्साही रागिनी। साथै–साथ, संग। दुरति–दुःसह्य। वैर जळ डोहतो–शत्रुता रूपी जल का विलोड़न करता। मल्हपियो–तीव्रगति से चला, झपटा। मूगली–मुगलों की, बादशाही। माथै–ऊपर।

२. धीर वै–धैर्य पूर्वक, धीरे धीरे। कमंध–राठौड़। खग धार–खड्ग धारा। ओलर–तेजवर्षा, उमड़-घुमड़ कर। धीमें–वीरता के साथ। अरि घड़ा–दुश्मनों की फौज। जेण–जो, जिस। आफै–वीरता, जोश, गति, युद्ध। सार जळ–लोह धारा रूपी जल में। सांमहो–सामने, सम्मुख। पावासरो–मानसरोवर का। फीलवै–स्नान करता है। लोह फाफै–शस्त्रों की सघन बौछारों में।

सती पुहपा अनै सिवांणै,
जाय नह नांम संसार जिम यौ ।
हरी सिंह रहचि तौहि अवहड़ हरौ,
कमध नाराइण सरग क्रमियौ ।।३।।

७०. गीत फहीम राड़दड़े रा धणी रौ

विघन दीह विढ़तां फहीम अपरां वह वही,
जुड़े जग पतंग ची भांत जूवौ ।
हुंतो हींदू जनम अछर कहै वरीस हूं,
हूर कहै दूर हुय मीयो हुवौ ।।१।।

---

७०. गीतसार—ऊपर लिखा हुआ गीत बाडमेर प्रान्त के राड़धड़ा स्थान के फहीम पूंजावत राठौड़ पर है। गीत में वीर गीतनायक का सिर धड़ से विच्छिन्न होने के पश्चात् भी शत्रु सेना का संहार करते रहने तथा पति रूप से अप्सरा और हूर के विवाद करने का वर्णन है । अन्त में, वह हिन्दू योद्धा है अथवा मुसलमान यह निर्णय पाने के लिए ईश्वर के न्यायालय में जाने का रोचक वर्णन किया है ।

---

३. सती पुहपा—पुष्प कुंवरि नामक सती (?) । अनै—और, अन्य । सिंवाणै—मारवाड़ के शिवाना परगने का केन्द्रस्थान । जाय नह नांम—नाम नष्ट नहीं होगा । जिम—ज्यों, जिस प्रकार । रहचि तौहि—जल मथता, शत्रु नाश करता । अविहड़ हरौ—निर्भीक रहने वाला, अविहड़ का वंशज । सरग—स्वर्ग । क्रमिया—गया, चला ।

१. विघन दीह—विघ्न के दिन, युद्ध काल । विढ़ता—लड़ते हुए । अपरां—दूसरों, शत्रुओं । जुड़े—भिड़ा, जुटा । पतंग—पतंगा । ची भाँत—की तरह । जूवौ—अकेला, अलग ही । हूंतो—होता, था । अछर कहै—अप्सरा कहती है । वरीस हूँ—में वरण करूंगी । हूर—मुसलमान योद्धाओं को वरण करने वाली मुसलमान अप्सरा । मीयो हुवौ—मुसलमान हुआ ।

अरक कहै पूंजउत तणा जोय आरिणि,
वावरै तिजड़ धड़ कमळ वढिया।
कमध चै समधि तै रंभा वरिवा करै,
परी कहै वरीस किम कळम पढ़िया ॥२॥

रोद फहीम धड़ रहचतै हंसै रिव,
परी अछर दुन्है मांहि पालौ।
चवै चंपा वदन खुदाय पै न्याय चालो,
वदन वदै हर कन्है चालौ ॥३॥

कहर कोई पहर सिर विना विढ़ियौ कमंध,
कर ग्रहे सूर रथ वळण कीधी।
वांह गहि असुर सुर नारि दरगेह वडे,
दई रिणमाल हरै दुवै दीधी ॥४॥

—पदमा सांदुवण री कह्यौ

---

२. अरक—सूर्य। पूंजउत—पूंजाराम का पुत्र। जोय—देख। आरिणि—युद्ध। वावरै तिजड़—तलवार का प्रयोग, खड्गाघात। कमळ—सिर। वढ़िया—कटे हुए। कमध चै—राठौड़ कुलोत्पन्न होने के। समधि तै—सम्बन्ध से। रंभा—अप्सरा। वरिवा करै—वरण करने का प्रयत्न करती है। परी—हूर, पर धारी यवन संदरी। किम—कैसे।

३. रोद—मुसलमानों की। धड़—सेना। रहचतै—विध्वंस करते, मारते। रिव—रवि, सूर्य। दुन्है—दोनों। पालौ—रोको, मना करो। चवै—कहे, कहती है। चंपा वदन—सुर सुन्दरी, अप्सरा। खुदाय पै—खुदा के पास। न्याय चालों—न्याय के लिए चलो, भले ही चलो। वदै—कहती है। हर—विष्णु, ईश्वर। कन्है—पास। चालौ—चलो।

४. कहर—युद्ध, विपत्ति। पहर—प्रहर तक। वादियौ—लड़ता रहा। कमंध—धड़, राठौड़। कर ग्रहे—हाथ पकड़े। सूर रथ—सूर्य रथ, अप्सरा का विमान। वळण—चलने की। वांह गहि—भुजा पकड़े। असुर—मुसलमान। सुर—हिन्दू। दरगेह—दरगाह, ईश्वर के दरबार में। दई—विधाता, ईश्वर ने। दुवै—आज्ञा, दोनों को।

७१. गीत गोकळदास मानावत राठौड़ रौ

जुग वीता अनंत आवतां जातां, लागी कसूं हवरकै लाय ।
आधौ मेलि आध किम आयौ, खांन तणौ हंस कहै खुदाय ।।१।।
मान तणौ सुणि अमर तणै अति, खग आछटियौ खार खध ।
वप कमधज तणौं घाव वहंतां, आधोई उड़ियौ उरध ।।२।।
खेचै दंम बाही खेड़ेचै, मै पणि दंम खैंचियौ महे ।
सुधि नह रही आपौ सांभळतां, वढ़ पणि पखै चालियौ वहे ।।३।।
मीरां इम कहै बात अै मांनू भांति असी नह कोय भयौ ।
वातो-वात करंतां वांसै, अेतै वीजौ आधै यों हुयौ ।।४।।
भलौ भलौ गोकळ मुख भाखै, पीरां अर पैकंमरां परि ।
मीरां हंस राखियौ मीरां, केत राहा सारीख करि ।।५।।

---

७१. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत में कवि ने नागौर के राव अमरसिंह राठौड़ के प्रतिशोध में मुसलमान अमीर को मारकर गोकुलदास के वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है। गीत में कहा है कि जब अमीर अर्द्ध श्वास सहित स्वर्ग में पहुंचा तब खुदा ने विस्मित होकर पूछा कि आज तक तो सब कोई पूर्ण श्वास सहित स्वर्ग आते रहे हैं, आज यह कैसे हुआ ? तब अमीर ने कहा– मानसिंह के पुत्र ने ज्यों ही तलवार का प्रहार किया मैं आधा श्वास ही ले पाया कि शरीर के दो टुकड़े हो गए। फलत: आधा ऊपर चढ़ गया और आधा शरीर में रह गया।

---

१. आवतां जातां–आते और जाते हुए। हवरकैं–अब की बार, इस बार। लाय–प्रचण्ड अग्नि। मेलि–छोड़कर। किंम-कैसे। हंस-प्राण।

२. मान तणौ–मानसिंहोत गोकुलदास। अमर तणौ–राव अमरसिंह का। अति–निधन। खग–तलवार। आछटियौ–प्रहार किया। खार खध–अति कुपित होकर। वप–वपु, शरीर। वहंतां–होते, चलते। आधोई–अर्द्ध ही। उडियौ–उड़ा। उरध–उर्घ्व, ऊपर।

३. दंम–श्वास। बाही–प्रहार किया। खेड़ेचै–राठौड़ गोकुलदास ने। पणि–परन्तु, भी। महे–भीतर। सुधि–खबर, सावधानी। आपो सांभळता–अपने को सम्हालते। वढ–कटकर। पखै–एक तरफ। चालियौ वहे–चल पड़ा।

४. मीरां–अमीर। असी–ऐसी। वांसै–पीछे का पीछे। अेतै–इतने ही में। वीजौ, आधौ–शेष रहा आधा, दूसरा आधा।

५. भलौ–अच्छा। अर–और। पैकंमरां–पैगम्बरों ने। परी–भी, ऊपर। केतराहा–राहु केतु। सारीख–सदृश।

७२. गीत साहबसिंघ राठौड़ री कटार रौ

ताता भड़ गुड़ तीसरी ताळी, जेहा जम जाळी जहर ।
मारू राव वाळी प्रतिमाळी, काली रै हाळी कहर ।।१।।

लोटै रसणी अणी लागतां, डसणी बाट वजतूं डसै ।
साहबा तणी नागणी सुजड़ी, वहर लागणी मरण बसै ।।२।।

उथापणी थापणी आमंख, अख जापणी न जरंति वळै ।
कमधज तणी सांपणी कटारी, खळ काळिज कापणी खळै ।।३।।

अंब जाप जप जड़ी अतागी, जागी त्यां बागी जहर ।
पाळहरा नागी प्रतमाळी, लागी त्यां बागी लहर ।।४।।

---

७२. **गीतसार**–गीतकार ने उपर्युक्त गीत में राठौड़ वीर साहबसिंह की कटारी के प्रवाह का वर्णन किया है । वह कहता है कि साहबसिंह की कटारी सर्पिनी की भांति विषाक्त है जिसके चोट लगती है वही शत्रु पृथ्वी पर लुढ़क पड़ता है । वह खलों के कलेजों के टुकड़े-टुकड़े कर देती है ।

---

१. ताता भड़–फुर्तीले योद्धा, उग्र प्रकृति वीर । गुड़–गुड़ गुड़ शब्द ध्वनि ? तीसरी ताली–तृतीय वार की आवाज या ताली वजते ही । जमजाळी–यमराज का पाश । जहर–विष । मारू राव वाळी–राठौड़ वीर साहबसिंह की । प्रतिमाळी– कटारी । काली–कालिका देवी । हाळी–वाली, की । कहर–विपत्ति ।

२. लौटै–लुढ़के । रसणी–पृथ्वी पर । अणी–नोक । लागतां–लगते ही । डसणी–दंशनी, काटनेवाली । डसै–काटे, चोट करे । नागणी–सर्पिनी । सुजड़ी–कटारी । वहर–चीरती ।

३. उथापणी थापणी–उन्मूलन तथा स्थापित करने वाली । आमंख–माँस । अख–कलेजा, वृक्क । न जरंति–सहन नहीं की जा सकती, हजम नहीं हो सकती । सांपणी–सर्पिनी । खळ काळिज–शत्रुओं के कलेजों के । कापणी–टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली ।

४. अंब–अम्बिका, दुर्गा के । अतागी–अथाह, न त्याग ने वाली । पाळ हरा–गोपालदास के वंशज की । नागी–नग्न, नागिनी । बागी लहर–लहरें आने लगी ।

७३. गीत महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़ रौ

सरद बांध लीधी नरवदा लगै सीसोद्रीये,
डाहे जोगणपुर परि डांण ।
पातसाही लेत सिवौ हेकण पलक में,
पातसाही रही जसा रै पांण ।।१।।
फौज खूमांण री आई रेवा फिरी,
माड दिखणी अणी बांधइ मौड़ ।
ठौड़ दिली तखत सिवौ ऊठावतौ,
ठांम राखी दिली बडे राठौड़ ।।२।।
हाक कटकां नदी करी दीवांण हद,
सकळ असुरां तणा मेट उरसांण ।
खगां वळ सिवौ खुरसांण साझत खळां,
खाग वळ मारुवै राख खुरसाण ।।३।।

---

७३. गीतसार—ऊपरांकित गीत महाराजा जसवंतसिंह प्रथम द्वारा राजा शिवा मरहठा के विरुद्ध दक्षिण के सैनिक अभियान से सम्बन्धित है। गीतकार का कथन है कि राजा शिवा सिसोदिया ने अपने राज्य का विस्तार कर दक्षिण में नर्बदा नदी तक अपनी सीमा स्थिर बना ली थी और उसको रोकने के लिए यदि महाराजा जसवंतसिंह नहीं जाते तो वह सहजता से दिल्ली पर आधिपत्य स्थापित कर लेता।

---

१. सरद—सरहद, सीमा। लीधी—ली। लगै—तक। सीसोदीये—राजा छत्रपति शिवा ने, शिवा सीसोदिया कुलोत्पन्न होने के कारण उसे सीसोदिया कहा गया है। डाहे—अधिकार करे, दाव में ले। जोगणपुर—योगिनीपुर, दिल्ली। लेत—ले लेता। हेकण—एक। जसा रै—महाराजा जसवंतसिंह के। पांण—बल पर।

२. खूंमाण री—राजा शिवा की, शिवा उदयपुर के सीसोदिया वंशोत्पन्न होने से उसे खुमान कहा गया है। रेवा—नर्बदा। फिरी—घूम फिर कर। माड—बल पूर्वक, जैसलमेर। दिखणी—दक्षिण के, मरहठे। अणी—सेना। ठौड़—स्थान। ऊठावतौ—उठा देता, बादशाहत को समाप्त कर डालता। ठांम—स्थान, घर। राखी—रखा। बड़े राठौड़—महाराजा जसवंतसिंह ने।

३. हाक—प्रस्थान कर, गर्जना कर। कटकां—सेना की। दीवांण—राजा शिवा ने। हद—सीमा,। असुरां तणां—मुसलमानों का। उरसांण—उत्सव, प्रभाव। खगां बल—खड्ग बल से। खुरसांण—खुराशान देश वालों, मुसलमानों, बादशाह। साझत—मारता। खळां—वैरियों को। मारुवै राव—मारवाड़ के स्वामी महाराजा जसवंतसिंह ने।

सिघ गजसाह रै ताम कीनौं सरस,
वळे धर खंडां लग सांभळी वात ।
छत्र फिरावतौ सिवौ औरंग छतां
छत्र राख्यौ मरद सूरहर छात ।।४।।

७४. गीत महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़ रौ

हुतौ जसवंत तो थोक सगळा हुता,
हुती हिंदुआं तणी वात हाथे ।
देखसै असुर मुख कवण सुण देहरा,
सळकिया देव जसवंत साथे ।।१।।

पड़ै जन जोध पूकार सगळे पड़ी,
धरै नह अरज पतसाह धीठौ ।
राह बंधी हुई रखे कोई रोक से,
देवे जसवंत रौ साथ दीठौ ।।२।।

---

७४. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ प्रथम पर रचित है। गीत में गीतनायक के निधन पर हिन्दू समाज पर बादशाह औरंगजेब द्वारा मंदिरादि को ढहा कर अत्याचार करने का वर्णन है। वह कहता है कि जब तक संसार में जसवंतसिंह जीवित था तब तक हिन्दुओं के पास सब कुछ था किन्तु उसके मरते ही देवताओं तक ने अपना स्थान छोड़ कर स्वर्ग की राह ली।

---

४. गजसाह रै–महाराजा गजसिंह के पुत्र ने, जसवंतसिंह ने। ताम–तब। कीनौं–किया। वळे–पुनः, फिर। धर खंडां लग–समस्त खंडों तक, समस्त देशों तक। सांभळी–सुनी। फिरावतौ–फिरवाता। छतां–मौजूद रहते। सूरहर छात–महाराजा शूरसिंह के छत्र को धारण करने वाले जसवंतसिंह ने।

१. हुतौ–जीवित था। थोक–सर्व वस्तुएँ, सब बातें। हुता–था। तणी–की। वात हाथे–वात हाथ में थी, जैसा चाहते वैसा हो जाता था। असुर–दैत्य, मुसलमान। देहरा–देवालय, मन्दिर। सळकिया–चले गए। देव–देवता।

२. पड़ै–पड़ते ही, मृत्यु होते ही। सगळे पड़ी–सब जगह हुई। धरै नह अरज–प्रार्थना पर ध्यान तक नहीं देता। धीठौ–धृष्ट, ढीठ। राह बंधी–मार्गावरोध। देवे–देवताओं ने। दीठौ–देखा।

हतौ हिंदुग्रां तणौ ध्रम सूरा हरौ,
सवळ चिंता पड़ी देस सारे।
दुख मुरधर तणा हंदे कुण देखसै,
लळकिया देव जसवंत लारे ।।३।।
सुणी सुरळोक में वात गजसाह री,
हुसै हींदुग्रा तणी देख हांसी।
ग्रापरै वीज निज हंस ग्रवतारियौ,
ग्रावियौ ग्राप ग्रव देव ग्रासी ।।४।।

७५. गीत महाराजा ग्रजीतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

वैर ऊपटै कुरीठ जोम खत्रवाट छोळां बजे,
धरे चखां दावानळां खांडाहळां धीठ।
महा ग्राकारीठ खोंध करी ग्ररड़ावै माता,
गालरा करै जी ग्रजौ सिंघळी गरीठ ।।१।।

---

७५. गीतसार—ऊपरांकित गीत में जोधपुर के महाराजा ग्रजितसिंह राठौड़ के पराक्रम का वर्णन है। कवि ने महाराजा को सिंह ग्रौर दिल्ली के बादशाह को गजराज चित्रित कर रूपकात्मक चित्रण किया है। वह कहता है कि महाराजा के मन में यवनेश के प्रति भयानक वैर उमड़ चला। उसके शोधन के लिए क्षत्रित्व में उत्साह वृद्धि होकर तरंगे उठने लगी। फलतः महाराजा रूपी सिंह को घमासान युद्ध में क्रोध ग्राया देख कर वलवान मुसलमान योद्धा रूपी गज कातर ध्वनि करने लगे।

---

३. हतौ—मर गया। सूराहरौ—महाराजा सवाई शूरसिंह का पौत्र महाराजा जसवंतसिंह। मुरधर तणा—मारवाड़ देश का। लळकिया—चले गए। लारे—पीछे।

४. गजसाह री—महाराजा गजसिंह की। हुसै—होगी। हांसी—हँसी, हास्य। हंस—जीव। ग्रवतारियौ—ग्रवतरित हुग्रा। ग्रावियौ—ग्राया। ग्रासी—ग्राएँगे।

१. वैर ऊपटै—वैर बढ़ कर, विरोध उमड़ कर। कुरीठ—घना काला, भयानक। जोम—जोश, ग्रभिमान। खत्रवाट—क्षत्रियत्व। छोळां—तरंगे। बजे—प्रवाहित हो। चखां—चक्षुग्रों. नेत्रों। खांडाहळां—तलवारों। धीठ—ढीठ, महान् योद्धा। महा ग्राकारीठ—घमासान लड़ाई, बलवान्। खोंध—क्रोध, मुसलमान। ग्ररडावै—चीखे, चिग्घाड़ते हैं। माता—मोटे ताजे, मत्त। गाल रा—नाश, कलरव। ग्रजौ—महाराजा ग्रजितसिंह। सिंघळी—सिंह श्रेष्ठ। गरीठ—वलिष्ठ, प्रचंड काय, प्रतापी।

फूंतकारां उडावै कितां कितांई नै मारै फेर,
बळां दे मूंछारां सारधारां खांघीवंध ।
सुरत्तांणां जाडी जोड़ हसत्ती चाचरां सेतो,
करै वनांपती बांकौ डाकरां कमंध ।।२।।

भाराथां न भाजै जिको झाटके खगाटां भुजां,
पंजा नळां चाटके जड़क्के सेस पांव ।
दाव धाव बारणेस जवन्नेस सीस दे दे,
गज्जणेस हरो सींह गाजै गाढ़े राव ।।३।।

हिंदू खंडां रख्खवाळो गिरंदां धरम हाथां,
बधै स मदाळां रौदां थाहां वजरैळ ।
चगत्तेस गजराजां प्रसणेस हूंतां चोड़ै,
जसा रा अड़ेल सींह आदेस जटैल ।।४।।

---

२. फूंतकारां–फूत्कारों से । उड़ावै–मार भगाता है, दूर फेंक देता है । कितां–कितनों ही को । फेर–फिर, पुनः । वळां–वल, ताव । मूंछां रां–मूछों के । सारधारां–शस्त्रधारां । खांघीवंध– टेढ़ी पगड़ी बाँधने वाला, राठौड़ । सुरत्तांणां–सुल्तानों, मुगल शाहजादों । जाडी जोड़–घनी सेना, समूह । हसत्ती चांचरां–गज मस्तकों । वनांपती–वनराज, शेर । डाकरां–गर्जन, दहाड़ । कमंध–राठौड़, अजितसिंह ।

३. भाराथां–युद्धों में । न भाजै–रण त्याग कर भागता नहीं है । जिको–वह । झाटके–करारे प्रहार करता है । खगाटां–तलवारों के । पंजा–पज्जे, हाथल । नळां–पैर का भाग विशेष । जड़क्के–जमाता है, स्थिर करता है । सेस–शेषनाग । दाव–दाव-पेंच । धाव–आक्रमण । बारणेस–गजराज । जवन्नेस–वादशाह । गज्जणेस हरो–महाराजा गजसिंह का पौत्र, अजितसिंह । गाजै–दहाड़ता है । गाढ़े राव–महावीर, समर्थ ।

४. हिंदू खंडां–हिंदुओं के राज्यों को । गिरंदां–पर्वतों । बधै–मारता है । मदाळां–मदमत्तों, हाथियों । रौदां–मुसलमानों । थाहां–किलों, कंदराओं, निवास स्थानों । वजरैल–वज्र तुल्य । चगत्तेस–बादशाह । प्रसणेस–पिशुनों, शत्रुओं । हूंता–से । जसा रा–महाराजा जसवंतसिंह का पुत्र अजितसिंह । अड़ेल–हठीला । आदेस–अभिवादन, नमस्कार । जटैल–बब्बर सिंह, जटाधारी ।

७६. गीत महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

बडा विन्है अवतार संसार सारा बदै,
स्याम रा काम सारण सकाजा।
नंद रै घरे रहियौ श्री किसन जिम,
प्रोहत जैदेव घर अजण राजा ।।१।।

आपरा संत धू जेम कीधा अडग,
वणी रिध घणी प्रोहित तणी वार।
प्रगट गोकुळ ज्यूंही सिवपुरी पेखतां,
अजन राखण जतन किसन अवतार ।।२।।

धणी रौ स्याम ध्रम कियौ जांणै धणी,
दूर कर कंस औरंग तणौ दाव।
जादवां राव रहियौ कुसळ जोवतां,
रह्यौ जैदेव घर कमधजां राव ।।३।।

---

७६. गीतसार—कवि ने ऊपरांकित गीत में जोधपुर के महाराजा अजितसिंह को पहाड़ों में गुप्त रूप से जयदेव पुरोहित के घर पर पोषण प्राप्त करने का श्री कृष्ण के नन्द महर के घर पालित होने के साथ प्रतिमता दिखाते हुए वर्णन किया है। अन्त में नन्द और जयदेव के उक्त सुकृत की प्रशंसा की गई है।

---

१. विन्है—दोनों। सारा—समग्र। बदै—कहता है, वर्णन करता है। स्याम रा काम—स्वामी का कार्य। सारण—सफल करने में। श्री किसन जिम—जिस प्रकार श्री कृष्ण। प्रोहत—पुरोहित। अजण राजा—महाराजा अजितसिंह।

२. आप रा—अपने। धू जेम—ध्रुव ज्यों, ध्रुव की तरह। अडग—अविचल, निश्चिन्त। वणी—हुई। रिध—ऋद्धि। घणी—बहुत, अधिक। तणी—की। वार—समय, अवसर पर। सिवपुरी—सिरोही स्थान। पेखतां—देखते हुए। राखण—रक्षा करने। जतन—यत्न। किसन—श्री कृष्ण।

३. धणी रौ—स्वामी को। स्याम ध्रम—स्वामिधर्म। जांणै—जानते हैं। औरंग तणौ—बादशाह औरंगजेब का। दाव—घात। जादवां राव—यादवपति श्री कृष्ण। जोवतां—देखते। कमधजां राव—राठौड़ों का राजा अजितसिंह।

गौरधन तणौ तौ तणां पेखै गुणां,
　　सकौ कर जोड़ै बंदै सवाया।
नंद जैदेव् अवचळ रहौ नर भुयण,
　　उभै अवतार नर भुयण आया ।।४।।

—दुवारकादास दधिवाड़िया रौ कह्यौ

७७. गीत महाराजा अभयसिंह राठौड़ जोधपुर रौ

कळळ मांच दळ अकळ कांठळ सबळ कुंजरां,
　　चंचळ उछळ सरळ धसळ चाळौ।
जवन दळ ऊपरां खिमै बीजळ ज्यूंही,
　　अचां साबळ भळळ तूझ वाळौ ।।१।।

---

७७. **गीतसार**-उपरोक्त गीत में कवि ने महाराजा अभयसिंह राठौड़ द्वारा गुजरात के विद्रोही राज्यपाल सरविलंदखाँ पर आक्रमण कर अपदस्थ करने का वर्णन किया है। इसमें कवि ने अभयसिंह के भाले को विजली, गजसेना को मेघ घटा, गजमद को जलवर्षा और अश्वों के पाखरादि की ध्वनि को दादुर ध्वनि बतला वर्षा की क्रियाओं का आरोपण कर युद्ध का रूपकात्मक वर्णन किया है।

---

४. तो तणा-तेरा। पेखै-देखते। सकौ-सब कोई। वंदै-वन्दना करते हैं। अवचळ-अटल। उभै-दोनों। भुयण-भूमिलोक पर। आया-उत्पन्न हुए।

१. कळळ मांच-कोलाहल प्रारम्भ होकर। दळ-सेना। अकळ-असीम, वीर। कांठळ-घनघटा। कुंजरा-हाथियों की। चंचळ-घोड़े। उछळ-छलांग मारते। धसळ-लम्बे लम्बे डग भरना, आक्रमण करना। चाळौ-युद्ध। जवन दळ-मुसलमानों की सेना, सर बिलंद की फौज। खिमै-चमकती है। बीजळ-विद्युत। अचां-हाथ में का। सावळ-भाला, बर्छा। भळळ-दीप्त, चमकता। तूझ वाळौ-तुम्हारा, तेरे वाला।

घटा सिंधुर डमर पटा ओसर घरर,
वाज साकुर पखर ददर वारौ।
छतरधर असुर ऊपर खिवैं किर छटा,
थिर अतर अडर नर धजर थारौ ।।२।।

धरा गैंघड़ उरड़ गाज तोपां धड़ड़,
कैमरां सोंक झड़ कड़ड़ काचां।
किळम तड़ फाड़वा वड़ड़ ओझड़ कड़ड़,
अणी छड़ झवझवै अगड़ आचां ।।३।।

लाख लसकर डमर अठर वांसै लियां,
दिली सांमां धकै चाढ़ डहिया।
अजावत ताहरा बीज घांसा अगै,
रौद कांसा कमळ ढांक रहिया ।।४।।

—बखता खिड़िया रौ कह्यौ

---

२. घटा सिंधुर—गजघटा। डमर—आडम्बर, वैभव। पटा—हाथी के मद बहने के स्थान के केश, पटा अस्त्र। ओसर—बरस कर। घरर—मेघ गर्जना, भीषण ध्वनि। वाज—ध्वनित होकर। साकुर पखर—घोड़ों के रक्षा कवच जो लोहे की ग्रंथियाँ डालकर बनाएं जाते थे। ददर वारौ—दादुरों की, मेढ़कों की ध्वनि। छतरधर—छत्रधर, राजा। असुर ऊपर—नवाव सर विलंदखाँन पर। किर—मानो। छटा—विद्युत। थिर—स्थिर। अतर—अत्यधिक। अडर—निर्भीक। धजर—भाला, परशु। थारौ—तेरा, तुम्हारा।

३. धरा—भूमितल पर। गैंघड़—गजघटा, गजसेना। उरड़—जोश पूर्वक बलात् आगे बढ़ कर। गाज—गर्जना। धड़ड़—धड़धड़ की ध्वनि। कैंमरां—धनुषों के, कमानों की। सोंक—ध्वनि। कड़ड़—बिजली के कड़कने की आवाज, कड़ड़ ध्वनि। किलम तड़—मुसलमान सेना। फाड़वा—विदीर्ण करने। वड़ड़—टूटने की ध्वनि। ओझड़—भयंकर, चोट। कड़ड़—ध्वनि। अणी छड़—भाला, भाले की नोक। झवझवै—चमकती है। आचां—हाथों में।

४. लसकर—सेना। डमर—आडम्बर पूर्ण। वांसै लियां—अपने पीछे साथ में लिए हुए। दिली—दिल्ली। सांमां—सामने। धकै चाढ़—अपने आगे कर। डहिया—कुचले, मथ दिये। अजावत—महाराजा अजितसिंह के पुत्र महाराजा अभयसिंह। ताहरा—तुम्हारे। बीज घांसा—बिजली रूपी बल्लम के। आगैं—आगे, सामने। रौद—मुसलमान। कमल—मस्तक। ढांक—छिपाकर।

७८. गीत महाराजा बखतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

वनां बोलिया सचाळा मोर बीज खिवै चहुवळां,
सालुळे बादळां दळां आवियौ सुरेस।
दूनी मां आणंद हुवौ आविया सकाजा दीह,
ताकवां करीजै विदा राजा बखतेस ।।१।।

सिखंडां दादरां सौर चहुं ओर खिवै छटा,
रचै घणघौर घटा वूठा सुरां राव।
रेणां तुरां गजराज समपै सोव्रनां रीझां,
सुपातां सदन मेलो अजन सुजाव ।।२।।

---

७८. गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा बख्तसिह राठौड़ पर कथित है। कवि कीरतदान ने वर्षाऋतु के आगमन पर गीतनायक से अवकाश पर अपने घर जाने की स्वीकृति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की है। वन में वर्षा की खुशी से मोर बोलने लगे। चारों ओर बिजलियाँ चमकने लगीं। मेघघटाएँ इधर से उधर उमड़ती घुमड़ती जाने लगी है। संसार में आनंदातिरेक से हर्ष मनाया जाने लगा है। अतः हे राजा कवियों को भी दान द्रव्य से सम्मानित कर अपने अपने घर जाने की आज्ञा दीजिए।

---

१. बीज—विद्युत। खिवै—चमकती है। चहुवळां—चारों ओर। साळुळे—चल रहे है, गमन करते हैं। बादळां दळां—मेघ-समूह। आवियौ सुरेस—इन्द्र आगया है। दूनी मां—दुनियाँ में। आणंद—आनन्द। सकाजा—काम काज के। दीह—दिवस। ताकवां—कवियों को। विदा—पुरस्कार सहित जाने की आज्ञा। बखतेस—बख्तसिंह।

२. सिखंडां—मोर पक्षी। दादरां—दादुरों, दादुल। सौर—मधुर ध्वनि। छटा—बिजली। वूठा—बरसा, वर्षा करने लगा। सुरांराव—देवताओं का राजा, इन्द्र। रेणां—कवियों, याचकों। तुरां—घोड़े। समपै—सर्मापित करें, दान दें। सोव्रनां—स्वर्ण, सुन्दर वर्ण के। रीझां—प्रसन्न होकर दान देने को रीझ कहा जाता है। सुपातां—सुपात्रों, याचकों को। सदन—घर। मेलो—भेजिए। अजन सुजाव—महाराजा अजितसिंह के पुत्र, महाराजा बख्तसिंह।

नीर सरवरां भरे वरस्से सुरां चै नाथ,
भावियौ सारंग राग नै मलार भेव ।
भांजणां दाळद मौज भांमणे जमीणी भांण,
गुणी रुख सुध कीजै दूसरा गंगैव ।।३।।

डूबीया नदियां नाळा हालियां जोतिया हळ,
इळा चहुंवळां हुवै आणंद ओछाह ।
राजा कोड़ी जुगां तांई रीझां आद जोड़ राजा,
पातवां करीजै विदा हिन्दू पातिसाह ।।४।।

—कीरतदान बारहठ रौ कह्यौ

---

३. नीर—जल। । सरवरां—सरोवरों, जलाशयों । भरे—भर दिए, पूरित । वरस्से—बरस कर, वर्षा करके । सुरां चै नाथ—देवताओं के स्वामी ने, देवराज इन्द्र ने । भावियौ—मन को सुहावना लगा । सारंग राग—रागिनी विशेष, मोर और दादुलों का स्वर । मलार—रागिनी विशेष का नाम । भेव—भेद । भांजणां—नाश करना । दाळद—दरिद्रता । मौज—प्रसन्नता में । गुणी रुख—विद्वानों की ओर, कवियों की तरफ । सुध—ध्यान, खबर । दूसरा गंगैव—द्वितीया राव गांगा, अभिनव गांगा ।

४. हालियां—हालियों,कृषकों ने । जोतिया हळ—कृषि के लिए हल जोत दिये हैं । इळा-पृथ्वी पर । ओछाह—उत्सव । कोड़ी जुगां—करोड़ों युगों तक । तांई—तक । पातवां—कवियों को, याचकों को, प्रातकर्त्ताओं को । हिन्दू पात्तिसाह—हिन्दुओं का बादशाह, महाराजा बख्तसिंह जोधपुर ।

७६. गीत महाराजा राजसिंघ राठौड़ किसनगढ़ रौ

दळ दिखण मिळ दिल्ली दळां बध बेध खेध दहूं वळां,
धर लियण घूपट दियण धसमस रूकहथ राजान।
अवरंग संगर आहुरे फब फौज गज धज फरहरे,
धर फसर हैंवर धूज धर मद झरर कुंजर सिर चमर।
नर निजर नाहर डर निडर तन पहर बगतर छिलम छर,
हर समर हसवर कस कमर धर सर धसर धर कर सिफर
वर कंवर वीरत-वांन ॥१॥

---

७६. **गीतसार**–गीतकार प्रसिद्ध कवि वृन्द ने उपरोक्त गीत में किशनगढ़ के महाराजा राजसिंह राठौड़ के युद्ध का वर्णन किया है। गीत में लिखा है कि दिल्ली के राजसिंहासन की प्राप्ति के लिए शाहजादों के दोनों पक्षों में भंयकर विरोध उत्पन्न होकर युद्ध में परिणित हो गया। फलतः गजाश्वों की पीठ पर ध्वज-पताकाएँ फहराते हुए दिल्ली और दक्षिण की सेनाओं में घमासान युद्ध छिड़ गया।

---

१. दळ दिखण–दक्षिण के राज्यपाल की अधीनस्थ शाही सेना। बध बेध–विरोध बढ़कर, युद्ध। खेध–विरोध, युद्ध, दुःख। दहूं वळां–दोनों सेनाओं में, दोनों पक्षों में। धर लियण–राज्याधिकार प्राप्त करने के लिए। घूपट–अधिकार में,कब्जे में। रुकहथ–हाथ में तलवार ग्रहण कर, वीर। संगर–युद्ध। आहुरे–टक्कर ले। गज धज–गजों पर ध्वजाएं, गज और घोड़े। हैंवर–घोड़े। धूज–कम्पित होकर। मद झरर कुंजर–हाथियों के मद बहकर। बगतर–बख्तर, कवज। छिलम–झिलम, सिर पर धारण करने के टोप के नीचे पहिना जानेवाला जालीदार कवच जो गर्दन की सुरक्षा के लिए पहिना जाता था। छर–सिंह के अगले पैर का पंजा। समर–युद्ध। कस कमर–कमर बांधकर। धसर–प्रवेश कर। सिफर–ढाल। वीरत वांन–वीरता सूचक चिह्न अथवा वीरत्ववाला।

अणभंग पौरस ऊलसे अहराण अरि सिर ऊससे,
ध्रुव रूप वंस असंक धारण, धींग दोमज धीर।
त्रम्बाळ नौबत त्रह त्रहे गण भूत भैरव गह गहे,
उठ नाळ अरड़ड़ गाज गरड़ड़, नड़ अनड़ धड़ हड़ भड़ निवड़।
छुट वांण छड़ छड़ तूट तड़ तड़, अस उरड़ अड़वड़ घूमधड़ धड़,
झड़ त्रिजड़ ओझड़ झूम झड़ झड़ धड़कीज बेहड़ धार धड़बड़
विरच राजड़ वीर ।।२।।

कुळ किसन कळहण कोपियौ, अंग रंग अदभुत ओपियौ,
रिमराह वाह अथाह रिमहर, जोध सेर जंवाण।
गहपूर गय-घड़ गौड़णों मन मेळ हय थट मोड़णों,
घण वरण रण वण सघण घण खग खिवण खणखण तीर छुण।
जुध जुड़ै जण जण दूण दण दण हुवै बैंण हण हण मांच गहगण,
घण दिखण दपट रोस घण किय कमध तिण खण दुयण कण
मांण तण महरांण ।।३।।

---

२. अणभंग—अभंग, अजेय, वीर। पौरस—पौरुष, बल। ऊलसे—उल्लसित। अहराण—युद्ध स्थल में। अरि—शत्रु। ऊससे—जोश में उफनते हुए। ध्रुव—ध्रुव, अटल। धींग—जबरदस्त वीर। दोमझ धीर—युद्ध में दृढ़ रहनेवाला, धैर्य रखनेवाला। त्रम्बाळ—ताम्बा धातु के पेंदे वाले नगाड़े। त्रहत्रहे—बजने से होने वाली ध्वनि, नाद। गहगहे—प्रफुल्लित होकर। नाळ—तोप की। अरड़ड़—तोपों के चलने पर उत्पन्न ध्वनि। गाज—गर्जना। गरड़ड़—गड़गड़ाहट। नड़—अनड़ अविजितों को विजय करने वालें, निर्बन्ध। धड़हड़—धड़धड़ाने की आवाज। भड़—योद्धा। निबड़—भयंकर, प्रहार। छुट—चलकर। बांण—छोटी तोप, तीर। छड़छड़—बाण चलाने पर होने वाली ध्वनि। अस—अश्व। उरड़—जोश में, जबरदस्ती घुसने। अड़वड़—भीड़ में धकापेल। त्रिजड़—तलवार। ओझड़—प्रहार, झडी। बेहड़—विदीर्ण होकर, घनी। विरच—रचकर, कर। राजड़—गीतनायक महाराजा राजसिंह।

३. कुळ किसन—राजसिंह के पूर्वज किसनसिंह के कुल में उत्पन्न। कळहण—युद्ध में। ओपियौ—शोभित हुआ। रिमराह—युद्ध, युद्धपथ। वाह—प्रहार। रिमहर—शत्रुओं। जंवाण—युवा,वीर। गहपूर—गाढ़ से परिपूर्ण, सिंह, वीरता से पूर्ण। गयघड़—गज सेना। गौड़णों—संहार करने वाला, नाशक। हयथट—अश्व समूह को। मोड़णों—पीछे धकेलने। घण बरण—मेघ वर्णीय। सघण—सघन। खग खिवण—खग रूपी बिजली की चमक, कौंध। तीर—बाण। छुण—आवाज विशेष। मांच—मचकर, होकर। कमध—कर्मध्वज, गीत नायक राठौड़ कुलोत्पन्न राजसिंह। तिण खण—उस क्षण। दुयण—शत्रु। महरांण—महाराजा, समुन्द्र।

भाराथ लख दळ भंजणों गह फौज मौजां गंजणों,
जगमाल भारह माल जेहो, बीरहर बानैत।
असपत्त छळवळ आदरे पिसणां पछाड़े पाधरे,
खग बाज खड़ खड़ खाट खड़ खड़ तड़ तिड़ तड़तड़ ताड़तड़।
बंध बड़ड़ ऊवड़ कंध कड़ लुथलुत्थ लड़ थड़ प्राण पड़,
जुध ग्रीध झड़ फड़ अंत अड़, हंस वीर हड़ हड़ भांज हड
जण जुद्ध धूहड़ जैत ।।४।।
—महाकवि वृन्द रौ कह्यौ

---

४. भाराथ—युद्ध में। लख दल—लक्षाधिक सेना का। भंजणों—संहार करने वाला, गह—गर्व। गंजणों—संहार करने वाला। जगमाल—गीत नायक के पूर्वज का नाम। भारह—राजा भारमल। माल जेहा—मारवाड़ के शासक राव मालदेव जैसा, गीत नायक राव मालदेव के पौत्र किशनसिंह का वंशधर था। बानैत—वीरता का द्योतक चिन्ह विशेष धारण करने वाला। असपत्त—बादशाह। आदरे—स्वीकार करके। पिसणां—वैरियों को। पाधरे—सीधे, खुले रूप में। खग—तलवार। बाज—प्रहार काल में होने वाली ध्वनि। खड़खड़—ध्वनि विशेष। खाट—अर्जित-कर। तड़तड़—ध्वनि विशेष। बड़ड़—टूटने पर उत्पन्न ध्वनि। ऊवड़—खुलना, फटना। कंध—कंधे, स्कंध। कड़—कटि, कड़ियां। लड़थड़—लड़खड़ाकर। ग्रीध—गृद्धपक्षी। झड़फड़—उड़ने पर होने वाली पंख ध्वनि। अंत—आंतें, अंत्रावली। हड़हड़—अट्टहास की ध्वनि। जण—जन, योद्धा। जुद्ध—युद्ध। धूहड़—राठौड़। जैत—विजय।

८०. गीत किसनगढ़ रा किला री द्रिढ़ता रौ

आछां अलंगां सफीलां ऊंच आसमांन हूंता अड़ै,
पगां नींव पाताळां नै सेस रटां पीठ।
नैहरी समंदा नौख मच्छां ले हिलोळा नीरां,
दूजा मांन थां रचै मेर गिरां दीठ ।।१।।

---

८०. गीतसार—उपर्युक्त गीत किशनगढ़ के किले का निर्माण एवं दृढ़ता पर कथित है। यह दुर्ग किशनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह ने बनवाया था। गीत में किला, बुर्जे, सफीलें, नहर, पहाड़ी, खाई और परकोटा के वर्णन के साथ साथ निर्माता की कला प्रियता की भी सराहना की गई है।

---

१. अलंगा—उत्तुंग, ऊंची। सफीलां—दिवारें। हूंता—से। रटां—दांतों पर, फनों पर। नैहरी—नहर। हिलोळां—हिलोरें, तरंगें। दूजा मांन—द्वितीय मानसिंह, अभिनव मानसिंह। थां—आपने। मेर गिरां—सुमेरुगिरि, गिरिशिखर। दीठ—दृष्टि पड़ने वाला।

चक्कारां बुरज्जां चौड़ ग्ररौड़ बेळ रा चाव,
ग्राखां जेम नाग माथै नांमरौ ग्रठीळ।
जळां गंगा ऊजळै चहुं ग्रोड़ां खाई जोड़,
हाटिकां गिरंदा जिसौ वणायौ हठील ।।२।।

ग्रांटां दै कम्मरां कोटां दांतरा ऊगिया ईसा,
जम्मी भार सीस रूपे नंचका जमाई।
सारे भूप वहाद्रेस हिलोहिळां जळां सोभा,
भिड़े गिणां सोवन्ना दुरंगा थयौ भांई ।।३।।

मिण धरा भागीरथी हेमगिरा त्रहूं मेळ,
करां जुगां ऊपरां भांराथ जुड़ा त्रकूट।
चाव धरा विचित्रां राजान तणा वाळी चौजां,
दोहूं राहां ग्रादेसियौ भुरज्जा सादूठ ।।४।।

—गंगाराम रौ कह्यौ

---

२. बुरज्जां—बुर्जे। चौड़—चौड़ी। ग्ररौड़—जबरदस्त। बेळ—रक्षा, चित्रकारी। ग्राखां—कहें, ग्रक्षय, तक्षक। नाग माथै—शेषनाग के सिर पर। ग्रठील—ग्रडिग, सुदृढ़। जळां—जल। ऊजळै—वेग से बहता है, उज्ज्वल। चहुं ग्रोडां—चारों तरफ। हाटिकां गिरंदा—स्वर्णगिरि। वणायौ—बनवाया। हठील—हठीले ने सुदृढ़।

३. ग्रांटा—चारों ग्रौर लपेटा। कम्मरां—कटि भाग के। दांत रा—पत्थरों के दन्त। ऊगिया—निकले हुए। ईसा—ऐसे। नंचका—न हटने वाली, निश्चित। बहाद्रेस—महाराजा बहादुरसिंह ने। हिलोळिया—ग्रान्दोलित किये। सोवन्ना—स्वर्ण वाले। थयौ—हुग्रा।

४. मिणधरा—पाताल लोक। भागीरथी—गंगा भूमिलोक। हेमगिरां—सुमेरुगिरि। त्रहूं मेळ—तीनों का एक साथ मिलान। त्रकूट—त्रिकुटाचल, लंका। दोहूंराहां—दोनों धर्मों वालों ने। ग्रादेसियौ—नमस्कार किया, वंदना की, सराहा। भुरज्जा—बुर्जे। सादूठ—जबरदस्त।

८१. गीत राजा पदमसिंघ राठौड़ रतलाम रौ

न्रतां लागियां संगीत ताळां परी सै सुभावां नचै,
खुरीसै चुभावां नाळां सुमां धुखै राव।
सकौ मोल तरीसैं हजार आठ दूण साजां,
राजा इसौ नीळो तूं ही बरीसै हयराव ।।१।।

धारा नीर आपगा अपार बी ऊपरां धावै,
लावै न समीर बार विमग्गां लार।
हेड़ेच आचार बी अेरसा देख देव हाव,
खड़ेच लुटावै ईसा आरबी तौखार ।।२।।

छूना सेस सुलंबी सुदेस आळा वाळ छूटै,
तूटै डाळा प्रलंबी भरेस जूना ताक।
छंछाळा ऊत्तताळा समाजा झलंबी छापै,
आपै पत्ता वाळा साजां झलंबी अैराक ।।३।।

---

८१. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत मालव प्रदेश के रतलाम राज्य के राजा पदमसिंह राठौड़ की घोड़ी पर कथित है। मध्यकाल के संघर्षशील युग में अश्व का बड़ा महत्व रहा है। गीत में घोड़ी की आकृति, उसकी चाल और उसके आभूषणों के साथ साथ गीत नायक की भी प्रशंसा की गई है। लिखा है कि वह आपार जल राशि को अबाधगति से पार करने की क्षमता रखने वाली तथा पवन के वेग से भी तीव्रगामी है।

---

१. न्रतां–नृत्य। संगीत ताळा–संगीत की तालों पर। परीसैं–अप्सरा जैसी। नचै–नृत्य करती है। खुरी सैं–घोड़ी के पैर से, सुमों में जड़ित नालें। नाळां–पैरों की नली। सुमां–सुमों, कृपणों के धुखे–चले. कुपित हुए सुलगती है। तरी सैं–तीस हजार। आठ दूण–सोलह शृंगार। नीलो–नील वर्णीय। बरीसै–दान करता है। हयराव–अश्वराज।

२. आपगा–नदी। अपांर बी–अपरिमित। ऊपरां धावै–ऊपर चलती है। विमग्गां–विकट पथ। लार–पीछे पीछे। हेड़ेचे–हांकते, चलाते। अरसा–ऐसा। खेडेच–राठौड़, खेड़ स्थान पर राठौड़ों का राज्य रहने के कारण यहां गीत नायक के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। ईसा–ऐसा। आरबी तौखार–अरबी जाति के घोड़े।

३. छूना सेस–शेषनाग का बच्चा। आळा–अयाल, वाला। बाळ–केशसमूह। डाळा–वृक्ष की शाखा। प्रलंबी–बन्दर, लम्बी दुम। छंछाळा–घोड़े, हाथी। आपै–देता है, अर्पित करता है। झलंबी–झिलमिल करते, चमकते। अैराक घोड़े।

सरीतां आदीत रत्थां जूत रै उरागां सांचौ,
ताागा काचा सूत रै फरीता तारूप ।
हूंस दूजा चाहै मनां अेहा हेत रै हाथ,
सकोपै भूत रै वाय दूत रै सारूप ।।४।।
सभावां सयानां जे असीस ले साल सूल जावै,
आव डील आया नूं उतूळा जावै ऊप ।
जोय मोल तरानां वखानां हाथी भूल जावै,
भूल जावै परांती मयानां हूंस भूप ।।५।।
कथां मंड सथां कंध टंकी रा वखाण केहा,
वेहा तूजियां कौमंड संध बंकी रा तणाव ।
इसा धीस मक्रकेत धंकीरा उफांण आंणै,
वणै जांण छत्रकेत लंकी रा वणाव ।।६।।
मारू राव चाव क्रीत भारा रौ ऊफांण मांही,
दान जोयां लारां रौ कहां वसु दीण ।
जाको पदमेस पांण थारा रौ पेखतां जूवौ,
हूवौ भांण बारा रौ केकांण मांण हीण ।।७।।

---

४. आदी रत्थां–सूर्य का रथ । जूत रै–जुतने । उरागां–वक्षस्थल । तागा–धागा, डोरा । काचा सूत रै–कच्चे सूत्र के, कच्चे धागे के । फरीता–फिरती, घूमती । हूंस–इच्छा, उमंग । अेहा–ऐसे । हेत रै–प्रीति के, हित के । सकोपै–क्रोधित । भूत रै– प्रेत के । वाय–वायु । सारूप–सदृश ।

५. सभावां–स्वभाव । आव–कान्ति, दमक । डील–शरीरी । उतूळा–अतुलनीय । ऊप–उपमा, समानता । जोय–देखकर, सुनकर । वखाना–वर्णन करना, सराहना करना । परांती–दूर से ही । मयानां–सवारी विशेष, एक किस्म की पालकी । हूंस–इच्छा ।

६. कंथा मंड–कथा में मंडित । सथां–संहिता ? कंध–स्कंध । संध–संधि । टंकी–धनुष । वखाण–वर्णन । केहा–कैसा । तूजिया–धनुष । कौमंड–धनुष । तणाव–खींचाव । मक्रकेत–मक्रकेतु, कामदेव । धंकीरा–इच्छुक जोश । उफांण–उफान, जोश । जांण–मानो । छत्रकेत–राजा, छत्र एवं ध्वजधारी, मयूर । लंकी–सिंह-कटि, कमर, कपोत । वणाव–आकृति, शृंगार ।

७. मारूराव–मारवाड़ नरेश, यहां रतलाम वालों का मूल स्थान मारवाड़ होने के कारण गीत नायक को मारवाड़ का राजा सम्बोधित किया गया है । चावक्रीत–कीर्ति-लोभी । जोयां–अवलोकने पर । लारां रौ–पीछे का, कुल-परम्परा का । जाको–जिसको । पांण–हाथ. बल । थारा रौ–तुम्हारे का, आप का । पेखतां–देखते हुए । जूवौ–जुदा । भांण–सूर्य का । केकांण–अश्व, उच्चैः श्रवा । मांण हीण–मान रहित ।

८२. गीत ठाकर जोरावरसिंघ राठौड़ गोठियाणां रौ

भारी रचायौ जुद्ध यूं नाम क्रामती बढ़ावा भूरौ,
जचायौ अरिन्द्रा हीड़ दै महा सोक जोर।
मचायौ लंक ज्यूं सोर गोठाणै महीप मानो,
अचायौ धिकायौ सैन घेरचौ चहुं ओर ।।१।।

तड़ा तड़ी वागी जठै कायरां प्राण यूं तुकै,
अेडचा पीठ लागी केती फौज री अवूज।
भूमी पांव न टिकै बचाय जी भेड़ियां भागी,
आगी अहंकारी देख न ठंवै अगूज ।।२।।

---

८२. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत किशनगढ़ रियासत के गोठियाणां ठिकाने के स्वामी जोरावरसिंह पर कथित है। गीतनायक ने राज्य की सेना को युद्ध में उलटे पांव पीछे खदेड़ कर वीरता दिखाई थी। कवि ने कहा कि उस वीर जोरावरसिंह ने शत्रु की अपार सेना का तनिक भी भय नहीं माना और अपनी कुल-परम्परा का निर्वाह कर वीरगति प्राप्त की।

---

१. भारी रचायौ—भयानक किया। क्रामती—क्रान्ति। भूरौ—बब्बर सिंह, रणकेशरी। जचायौ—जुड़ाया, जंचाया। अरिंद्रां—वैरियों। हीड़ दै—घेरे में लेकर, बंदूकों की आवाज करके। गोठाणै—गोठियाणां के। अचायौ—अकस्मात, निशंक, अनचाहा। धिकायौ—चलाया हुआ, धकेला हुआ। घेरचौ—घेर लिया, चारों ओर से घेरना।

२. तड़ा तड़ी—गोलियों की तड़तड़ की आवाज। वागी—हुई, बजी। तठै—वहां, तहां। तुकै—ताकते हैं। अेडचा पीठ—एड़िया पीठ के, बेतहासा भागे। केती—कितनी ही। अवूझ—विना पूछे ही, अबोधता। भेड़ियां—भेड़ें, कायर पुरुष। भागी—भाग चली। आगी—आगे, अग्नि। न ठंवै—नहीं ठहरते हैं, रुकते नहीं। अगूज—कायर।

सूर वीर रोके पैर जीत डंकां दैण सारू,
जिसी सुणीं भाखसी निसंकां सत्त जीह।
बामीवंध जोरावरो बोलणौ बायकां बंका,
संका चित्त न धारी सत्रवां हंदी सींह ।।३।।

ताखड़ा चलावै बेहूँ दळां रा तुपकां तोपां,
मांच्यौ घोर सबद कैती दूर में महान।
छिप्यौ भाण धुंग्रां सूं रैन ज्यूं अंधकार छायौ,
मानो भादो मास घटा चढ़ी आसमान ।।४।।

घड़ा सूं सवाई रीठ लगाई गोळियां गोळां,
घणी मेघ झड़ी श्रोणधारा सूरां गात।
दामण्या दमंकै तेगां भुजां में अपार देखो,
भीम वीजौ अरचां संग आथप्यो भारात ।।५।।

कटै सीस कैतां फटै काळजा कुवीरां केरां,
रटै मुख बचाळा बचावैळो तो राम।
राकसां वंस पै वीरभद्र हणुमान रूठौ,
जूटौ जंग मोटा ईसी भांत आठों जाम ।।६।।

---

३. जीत डंका—विजयकारी नगाड़ों के दण्डक। सारू—लिए। जिसी—जैसी। भाखसी—कहेगा। सत्त—सत्य। जीह-जिह्वा, वाणी। वामी बंध—राठौड़, बाएँ हाथ की ओर से पगड़ी बाँधने वाले। वायकां बंका—वक्र वचन बोलने वाले, चुभते हुए वचन वक्ता। सत्रवां हंदी—शत्रुओं की। सींह—सिंह ने, निर्भीक वीर ने।

४. ताखड़ा—तगड़े, बलवान्। बेहूं दळां रा—दोनों दल वाले। तुपकां—बन्दूकें। मांच्यौ—हुआ, छिड़ा। धोर सवद—भयानक शब्दध्वनि। छिप्यौ भांण धुंग्रां सूं—सूर्य धूम्र से छिप गया। रैन—रात्रि। छायौ—फैल गया। भादोमास घटा—भाद्रपद महीने की मेघघटा।

५. घड़ा सूं—सेना से। रीठ—प्रहार। घणी—धनी। झड़ी—बौछार। दामण्या दमंकै तेगां—तलवारें रूपी बिजलियाँ चमकने लगीं। भीम बीजो—द्वितीय भीमसिंह ने, जोरावरसिंह ने। अरचां-वैरियों के। आथप्यो—स्थापित किया, रचा, प्रारंभ किया। भारात—भयानक युद्ध।

६. कैतां—कितनेही के। काळजा—कलेजे। कुवीरां केरा—कायरों के। बचाळा—बचेगें, जीवित रहेंगे। बचावैलो—बचाएगा। रूठौ—कुपित हुआ। जूटौ—जुड़ा, भिड़ा। मोटा—भयानक, महां भयंकर। ईसी—ऐसी।

सुणे मार मार सब्द ध्यान में कैलास वासी सिंभु,
छायौ रुण्ड माळा सारू हिया में उछाह ।
मारू धरा कांठै ग्यांन द्रस्टी देख राड मांची,
नंदी पै सवार व्है पधारे सक्ती नाह ।।७।।

बादोबाद धाय देव तमासो देखबा वाधा,
अड़ोथड़ीं मावै नां वीमाण आसमान ।
भरै छै जोगण्या पत्र फिरै छै मोद में भीनी,
गाढ़ी रंभा हियै फूली करै छै सुगान ।।८।।

महादेव धारी कंठ दौवड़ा मुण्ड री माळा,
ऊजाळा साख रा बात राखदी अख्यात ।
भूरौ बाघ जीत सत्रू पौढ़ियौ संग्राम भूमि,
भलो नांम जीतायौ पंडवां वाळी भांत ।।९।।

बिमाणां विठाय लेगी अच्छरां गावती बनां,
अम्बरां सुलोक गई पावती आणंद ।
सुरां नरां लाख लाख साबासी ऊचारै सारै,
च्यारूं कूंट रहसी कीत जतै सूर चंद ।।१०।।

---

७. मार मार सब्द–मारो मारो के बोल । छायौ–उत्पन्न हुआ,बढ़कर फैला । हिया में–हृदय में । उछाह–उत्साह । कांठै–किनारे पर, सीमा पर । राड़ मांची–युद्ध छिड़ा । नंदी पै–नन्दिगण पर । सक्तीनाह–गौरीपति, शिव ।

८. बादोवाद–हठ ठानकर । धाय–आकर, चलकर । वाधा–वढ़े । अड़ोथड़ी–भीड़ भाड़ । मावै नां–अन्दर समाहित नहीं होती । जोगण्या–योगिनियाँ, चंडिकाएँ । फिरै छै–घूमती हैं, फिरती हैं । गाढ़ी–गहरी । हियै फूली–प्रफुल्ल हृदय से ।

९. दौवड़ा–द्विलड़ी । ऊजाळा–उज्ज्वल । साख रा–शाखा वाले । अख्यात–अक्षय,प्रसिद्धि । भूरौ बाघ–केशरीसिंह । जीत–विजित कर । भांत–भाँति ।

१०. अच्छरां–अप्सराएँ । गावती बनां–दुलहा के गीत गाती हुई । अम्बरां–देवताओं के । पावती–पाती हुई । ऊचारै–उच्चरित करती हुई । च्यारूं कूंट–चारों दिशाओं में । रहसी कीत–कीर्ति रहेगी । जतै–जब तक ।

दोखियां झुण्ड में राड़े मचायौ दरौळ देखो,
राजा रंक जेते तेते भाखैं घणा रंग।
बंस री अनादी चाल निभाई नासती बारां,
मांहो मांहे छत्री मनां धरै छै उमंग ॥११॥
वखांणै रूपगां कवी 'बांको' अेम बीरताई,
महाबळी सत्रवां री मिटाई मरौड़।
बीजै पाई आप भुजां पांण सूं आराण बीच,
रांणी जायां पांव पाछा दिराया राठौड़ ॥१२॥
—बांकीदान दधवाड़िया चारणवास रौ कह्यौ

११. दोखियां—वैरियों के। राड़े—युद्धवीर ने,युद्ध। मचायौ—छेड़ा, आरम्भ किया। दरौळा—खलवली, उपद्रव। भाखैं—कहते हैं। घणा रंग—धन्य धन्य, रंग है रंग है। अनादी चाल—अनादि परम्परा। नासती बारां—गए बीते युग में। मांहो मांहे—भीतर ही भीतर। धरै छै—धारण करते हैं।

१२. वखांणै—वर्णन करते हैं। रूपगां—यशकाव्यों, गीत नामक छंदों द्वारा। कवी वांको—वांकीदान कवि। मिटाई—नष्ट की। मरौड़—ऐंठ। बीजै—विजय। पाई—प्राप्त की। भुजां पांण—भुज बल से। आराण—युद्ध स्थल में। रांणी जायां—राजाओं को। पांव पाछा—पीछे पैर।

८३. गीत प्रतापसिंघ राठौड़ रौ सिंघ री सिकार रौ

हल्ला करोळां तब्बला वाज घेरियौ गिरंद हिंदू,
जगायौ अडिन्दू जांणै नौहथो जटैत।
दीठ होहा वूठतौ ऊठियौ रोस रत्ते देख,
पत्ते आप मत्ते यूं वाकारियौ पटैत ॥१॥

८३. गीतसार—उपर्युक्त गीत कुमार प्रतापसिंह राठौड़ की सिंह—आखेट से सम्बधित है। कवि ने गीत में सिंह की 'हाके' की शिकार का वर्णन करते हुए लिखा है कि प्रतापसिंह ने गरिमालाओं को अपने मनुष्यों द्वारा घेर कर नव हत्थे सिंह को जगाया। वह करोलों द्वार उठाये जाने पर हुंकार—ध्वनि करता हाके वालों की आवाज पर झपटा। उस समय वह पंख आये सर्प, आकाश से टूट कर पृथ्वी पर गिरते तारे अथवा तोप से निकले हुए गोलों की गति के समान दृष्टि-गोचर हुआ।

१. करोळां—शिकारी जानवरों की खबर लाने वाले। तब्बलां वाज—तब्बल वाद्य की ध्वनि। घेरियौ—घेरे में लिया। गिरंद—गिरि। अड़िन्दू—अड़ियल, हठीला। नौहथो—नव हाथ लम्बाई माप के शरीर वाला। जटैत—जटाधारी। दीठ—दृष्टि। वूठतौ—बोलता हुआ। रोस रत्ते—रोष में आरक्त मुख। आप मत्ते—स्वेच्छाचारी। बाकारियो—ललकारा। पटैत—पटोंवाला, बड़े केशों वाला, सिंह।

तूटियौ अधाप वेग होफरैळ रातांखियो,
सांप पांखियो कै धाप डांखियो संठीर।
ताप खाई मैंगळां अलाप हूँ अमाप तेज,
कंवरा सिंगार आप बुळायौ कंठीर ।।२।।

बांध चाळां चौतरफां रोकियौ थाहरां बीच,
चढ़ै इंद्र अटा हूँ विलोकियौ सचाळ।
भीम नाद आग्राजतौ तोकियौ गैणांग भुजां,
लागे खेटै रायजादो कोकियौ लंकाळ ।।३।।

लागी पीठ बाहरां विलागो वौम परां लागो,
नरां आयौ अधायौ भाखरां नरेस।
देखो रूप हवाई अवाई थाई दसौं दिसा,
दाकालियौ केहरी सवाई बिरद्देस ।।४।।

छट्टा स्याम घट्टा रूप सट्टा आतपत्र छायौ,
अधायौ आराण धायौ अभायौ अवीह।
क्रान्त अंगा तायौ हेम चलायौ सक्रोध काथै,
सूधा बोल माथै आयौ बावरेल सींह ।।५।।

---

२. तूटियौ—झपटा। अधाप—अतृप्त, अधीर। होफरैळ—हुंकार करने वाला। रातांखियो—आरक्त नेत्रवाला। पांखियो—पंख आया। धाप—तृप्त। डांखियो—भूखा। संठीर—भीमकाय। मैंगळां—हाथियों। कंठीर—सिंह।

३. बांध चाळां—वस्त्र का छोर बांध, सेना से घेर कर। थाहरां—कंदराओं। विलोकियौ—देखने का भाव। आग्राजतौ—गर्जना करता। तोकियौ—उठाये हुए। गैणांग—आकाश। खेटै—विग्रह, लड़ाई। कोकियौ—आवाज देकर उठाया हुआ। लंकाळ—सिंह।

४. बाहरां—चारो ओर, पीछे लग कर। विलागो—जा लगा। वौम—व्योम, आकाश। परां—पंख। अधायौ—भूखा, अतृप्त। भाखरां नरेस—गिरि भूभाग का राजा, सिंह। थाई—हुई। दाकालियौ—ललकारा। केहरी—केशरी, नाहर। बिरद्देस—विरुदों वाला विरुदसिंह का वंशज।

५. छट्टा स्याम घट्टा रूप—श्यामल मेघ घटा में विद्युत के स्वरूप वाला। सट्टा—गर्दन की केशराशि। आतपत्र—छत्र। छायौ—आच्छादित, तना हुआ। आराण—युद्ध। धायौ—तेज गति से चला। अवीह—निर्भय। तायौ—तपाया हुआ। हेम—स्वर्ण। काथै—शीघ्रता से। सूधा बोल माथै—बोली पर सीधा। बावरेल—बब्बर, बर्बरसिंह।

गैंण तारो तूटो छपा छूटो तोप हूँ गोळो,
चिल्ला हूं विछूटो बांण नारंगां चठेल।
जोगी जटा थटा हूंत जांणै वीरभद्र जूटौ,
असै रूप आय जूटौ नौहथो अठेल ॥६॥

धाक हाक डाक ध्रीह धूंसां आभ धूजाड़ियौ,
गिरां गूंजाड़ियौ डांण सूख गौ गयंद।
औझाड़ियौ ढाल हूंता नाराज झाड़ियौ आचां,
मारू पत्ते फत्तौ पाय पाड़ियौ मयंद ॥७॥

चम्मरां ढुळन्ता मेघाडम्मरां बाहुड़े चमूं,
तोड़ आडम्मरां देतौ चौहरां तणांव।
छाड जूनां अंबरां अखाड़ां सिधां औछाड़िया,
बणाया अनोखा बाघम्बरां चाव ॥८॥

---

६. गैंण–आकाश से। तूटो–टूटा। छपा–क्षपा, रात्रि में। चिल्ला–धनुष की डोरी से। नारंगां–लालरंग, रुधिर। जीगी जटा–शिव की जटा से। थटा हूंत–समूह से,सेना से। असै–ऐसे। जूटौ–भिड़ा। अठेल–अडिग।

७. डाक–ढाक बादित्र। ध्रीह–वाद्य ध्वनि। घूंसां–घूंसा वाद्य, नगाड़े। आभ–आकाश। धूजाड़ियौ–कंपित किया। गूंजाड़ियो–गुञ्जित। डांण–मद। गयंद–हाथी का। औझाड़ियो–डांटा, हटकारा, रोका। नाराज–तलवार। आचां–हाथों से। मयंद–सिंह।

८. चम्मरां–चंवर। ढुळंता–ढुलाते हुए। बाहुड़े–वापस लौटे,पीछे फिर कर आए। चमू–सेना। जूनां–पुराने। अंबरा–वस्त्रों। औछाड़ियौ–आच्छादित किये। चाव–चाह पूर्वक, इच्छा से।

८४. गीत ठाकर दुरगादास आसकरणोत राठौड़ रौ

इळा ऊगटै काट है थाट मेळे अभंग, अकळ वे बात संसार आखै ।
राह हींदू तणौ साह औरंग रोहे, राह हींदू तणौ दुरग राखै ।।१।।

खेध चढ़िया धरा वेध बे खड़ खड़ै, सुध्रम राखण कजां जुगां सारू ।
म्रजादा वेद री खूंद मेटण मतै, म्रजादा वेद री ग्रहै मारू ।।२।।

आदरे वाद लागां विन्है आहुड़े, किलम विखियाद कर वाद केवा ।
डीकरौ खुरम री ऊथपै देवतां, डीकरौ आस रौ थपै देवां ।।३।।

---

८४. गीतसार–उपर्युक्त गीत प्रसिद्ध वीरदुर्गादास राठौड़ पर रचित है । गीत में गीतनायक दुर्गादास और बादशाह औरंगजेब के विरोध तथा युद्धों का संकेतन किया गया है । कवि का कथन है कि औरंगजेब हिन्दू धर्म और देव मंदिरों को नष्ट करता है और बीर दुर्गादास पुनः देव भवनों में देव-प्रतिमाओं की पुनः स्थापना कर देता है ।

---

१. इळा–पृथ्वी ।ऊगटै–उदय होकर, प्रकट होकर । काट–पाप । है थाट– अश्व सेना । मेळे–मिलाकर । अभंग–अपार, अखंड, वीर । अकळ–आकुल होकर, अखिल । आखै–कहते हैं, कहे । राह–मार्ग । तणौ–को । रोहे–रोके, रोक लगाता है । दुरग–दुर्गादास ।

२. खेध–विरोध, वैर । धरा–भूमि, राज्य । वेध–युद्ध । वे–दोनों । सुधम्र–स्वधर्म । कजां–लिए ।जुगां सारू–युग युगान्तर तक । खूंद–मुसलमान, औरंगजेब । ग्रहै–ग्रहण करे, पकड़ता है, धारण किए । मारू–मरुदेशीय वीर दुर्गादास ।

३. आदरे–स्वीकार कर के । वाद–विवाद, युद्ध । विन्हैं–दोनो । आहुड़े–भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं । किलम–मुसलमान । केवा–प्रतिशोध, बदला । डीकरौ–पुत्र । खुरम रौ–खुर्रमका, शाहजहाँ का, औरंगजेब । ऊथपै उलटता है । आस रौ–आसकरण का, दुर्गादास । थपै–स्थापित करता है ।

पटक रहियौ भ्रगुट घणौं ही असपति, मुरधरा काज पर धरा मारी ।
पालटै तखत पिंण धरम नहीं पालटै, धरम री सरम करणोत धारी ।।४।।

देवड़ां कूरमां अनै हाडा दगग अनै, चमक चीतौड़ पह दीध चांटी ।
नींमहर कमंध नूं खाळ बांधत नहीं, मुखां कलमौ भणत घणां मांटी ।।५।।

—कल्लै जीवण री कह्यौ

---

४. अकट—मस्तक । असपति—बादशाह । मुरधरा—मारवाड़ । मारी—लूटी, मारकाट की । पिंण—परन्तु । पालटै—पलटता है, परिवर्त्तन करता है । करणोत—कर्ण का वंशज, दुर्गादास ।

५. कूरमां—कछवाहा । अनै—अन्य । पह—राजा, महाराणा । चांटी—भाग गए— दौड़ गए । नींमहर—नीमा का पौत्र, दुर्गादास । भणत—पढ़ते । मांटी—पुरुष, बलवान ।

८५. गीत हाथीसिंघ चांपावत रौ अजमेर रा जुद्ध रौ

अवसाण बड़े अखियात उबारी, बिरद पगार भरन्तै बाथ ।
दळपति चाडि बिहंडतौ दुयणां, हाथी भला दिखाया हाथ ।।१।।

---

८५. गीतसार—उपरिलिखित गीत ठाकुर हाथीसिंह चांपावत शाखा के राठौड़ वीर का है । हाथीसिंह ने बीकानेर के महाराजा दलपतसिंह को अजमेर की शाही कारागार से बंधन मुक्त करने के लिए जूझ कर प्राण त्याग किया था । गीत में राजा दलपसिंह की सहायता करते हुए मारे जाने का कवि ने वर्णन किया है ।

---

१. अवसाण—अवसर, मौका, दाव । अखियात—प्रसिद्धि । उबारी—रक्षा की, बचाई । पगार—पगडंडी, पराक्रम । भरन्तै बाथ—भुजपाश में लेता । दळपति—बीकानेर के महाराजा दलपतसिंह की । चाडि—सहायता । बिहंडतौ—नाश करता । दुयणां—वैरियों को । हाथी—गीतनायक हाथीसिंह ने । भला—अच्छा । दिखाया हाथ—हाथों के वार किए, हस्त लाघवता दिखाई ।

दांमण दसण सूंड करि दाखवि, नर तरवर नामतौ निराट।
मांडण हरौ हुवौ रण मांडण, हाथी हेड़वतौ हय थाट ।।२।।

बहतौ बिरद मछरि मद बहतौ, बाग घड़ा वरियाम विभाड़ि।
पाल तणौ सूंडाळ तणी परि, अर भू परि नांखिया ऊपाड़ि ।।३।।

आयौ खांडि खड़ग ऊखाणियै, जण जण वाहे जुवौ जुवौ।
मारे मार महा रिण मांहे, हाथी हाथी कटक हुवौ ।।४।।

वीका हरौ सांभळे विवनौ, हाथी हियै न बैठो हारि।
रिण रीधल रहियौ रिण मांहे, मांझी मूवौ मांझियां मारि ।।५।।

—आसा सिंढायच री कह्यौ

---

२. दांमण—दामिनी, तलवार बंधन। दसण—दांत। नर तरवर—मनुष्य रूपी वृक्षों को। नामतौ—झुकाता, नमाता। निराट—बिलकुल, निपट। मांडणहरै—राव मांडण का पौत्र हाथीसिंह। हेड़वतौ—हांकता, धकेलता। हय थाट—गज समूह।

३. बहतौ—प्रवाहित। मछरि—मत्सर, गर्व। मद—हाथी की मस्त अवस्था में उसकी गर्दत से बहने वाला जल, मद। घड़ा—सेना। वरियाम—श्रेष्ठ। बिभाड़ि—संहार। पाल तणौ—गोपालदास का पुत्र हाथीसिंह। सूंडाळ तणि परि—हाथी की भाँति। अर—वैरी। नांखिया ऊपाड़ि—उखाड़ कर पटक दिए।

४. खांडि—काटतामारता। खड़ग—तलवार। ऊखाणियैं—ध्वस्त करता, प्रहार हेतु तलवार ऊपर उठाए हुए। जुवौ जुवौ—पृथक पृथक।

५. वीकाहरौ—राव वीका का वंशज राजा दलपतसिंह बीकानेर। सांभळे—सुनकर। विवना—मारा गया। हियै न बैठो हारि—हृदय में, हार मानकर चुप न रहा। रिण रीधल—युद्ध में रीझने वाला, युद्ध में सफलता प्राप्त करने वाला। माझी—मुखिया।

८६. गीत ठाकर सवाईसिंघ चांपावत पोहकरण रौ

जै जै अरावां आरोध चंडां उभंडां पाखरां जठै,
पूतारां भडाळां थटै तेगा वाह पूर।
दूवा सूं ऊपटै क्रोध कठठे दिले सां दांई,
सवाई मानजै जठै थांरी अंत सूर ।।१।।

हमल्ला दुरद्दां रुक्की न हल्ले विरद्दां हक्की,
पलीते हैजम्मा हक्की मुक्की वज्र पात।
कड़क्की न बीज झंखी कराळ काळका जक्की,
श्रोण छक्की भैंसा भक्खी न धक्की साबात ।।२।।

---

८६. गीतसार–उपरांकित गीत मारवाड़ के पोहकरण ठिकाने के प्रसिद्ध वीर ठाकुर सवाईसिंह चांपावत राठौड़ की छलाघात से हुई युद्ध-मृत्यु पर कथित है। सवाईसिंह को जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने अमीरखां टोंक वालों के पूर्वज से षड्यन्त्र करवा कर नागोर के मूंडवा ग्राम में तम्बू में बारूद बिछवाकर मरवाया था। गीत में मानसिंह और नवाब अमीरखां के उक्त दुष्कृत की भर्त्सना की गई।

---

१. अरावां–छोटी, तोपें। आरोध–पूजन करवाकर, अर्चित करके। चंडा–चण्डिका। उभंडां–ओढाए हुए। पाखरां–लोहे की झूलधारी अश्व। पूतारां–प्रोत्साहन। भड़ाळां–योद्धाओं। थटै–सेना, समूह। ऊपटै–उमड़े। कठठे–बाहर निकले, प्रस्थान किया बलवान। थांरौ–तेरा, तुम्हारा। अन्त–मौत, नाश।

२. दुरद्दां–हाथियों। पलीतै–तोप का पलीता। हैजम्मा हक्की–फौजे रवाना हुई। मुक्की–पड़ी, छूटी। बज्रपात–बिजली, वज्रायुध। कड़क्की–गर्जना की। बीज–विद्युत। झंखी–देखने में आई, चमकी। काळका–कालिका देवी। छक्की–मस्त हुई। भैंसा भक्खी–भैंसा का भक्षण करने वाली, महिषमर्दनी। साबात–बारूद, सुरंग।

कच्छी घाट बंगां खेत आरब्बी अेराक जम्मी,
मांझी जंगां पड़ै नागां गोट कासम्मी माग ।
पैंनागां बयंडां भ्रमी लाखरा पाखरां पड़ी,
बैडांका विखम्मी घड़ी ऊपड़ी न बाग ।।३।।

नेत बंध जंग बंध बाना बंध नत्थी छानां,
छेक कंध अनम्मी कैकंध लोहा छंद ।
छाक पानां सरम्मी धियागां लागां छाका,
बंध बानां अराना न वागा रूक बंध ।।४।।

सिराजी गुलावी भल्ली उनै पब्बै ताजसाही,
अखै राजसाही सूरां झल्ली न अमान ।
धाई छाड मानसाई छल्ली न जोधांण वाळी,
चल्ली ना जोधांण वाळी झड़प्फां चौगान ।।५।।

सालुळै न चातुरंगी साड घटा आडी सांमी,
छूट ऊट जूट तूट नामी नां अछेह ।
विसम्मीजै सवाई दगा था येम बंध वांमी,
थटी बातां निकांमी विधाता हाथ थेंह ।।६।।

---

३. कच्छी घाट–कच्छ देशीय । बंगांखेत–बंगक्षेत्रीय । आरब्बी–अरब देशीय । अेराक–इराक देश के, इराकी घोड़े । गोट–गुटिका । कासम्मी माग–आकाश मार्ग । पैंनागां–हाथियों । बयंडा–हाथियों । बैडांकां–घोड़ों । विखम्मी–विषम । बाग–लगाम ।

४. नेत बंध–वीरता का चिन्ह । बानाबंध–वीरता का चिन्हधारी । नत्थी–नहीं । छानां–अप्रकट । अनम्मी–किसी का बंधन न सहने वाला । धियागां–आसमान, कुपित । छाका–मत्त । बागा–चले । रूकबंध–खड्गधारी ।

५. सिराजी ऊनै पब्बै ताजसाही–तलवारों की किस्मों के नाम हैं । झल्ली–ग्रहण की । अमान–असंख्य । मानशाही, महाराजा मानसिंह द्वारा बनाई हुई तलवार । छल्ली न–नहीं चली । झड़प्फां–झड़पें, प्रहार । चौगान–मैदान, रणस्थल ।

६. सालुळै न–उमड़ती हुई नहीं चली । चातुरंगी–सेना । साड घटा–आसाढ़ मास की मेघ घटा तुल्य गजसेना । आडी सांमी–सामने से अवरोधक बनी । अछेह–अपार । बिसम्मीजं–मृत्यु हुई । सवाई–ठाकुर सवाईसिंह । दगा था–धोखा से । बंधबांमी–राठोड़, बाएँ हाथ से पगड़ी बाँधने वाले । थटी–घटी, प्रकट हुई । निकांमी बुरी ।

उभै राहां ऊतोळ को करै ऊंच छाजां वाळी,
फौजा लोळ लोप सिंधू पाजां वाळी फैल ।
आडा जीत दिलेसां उथाप थाप राजां वाळी,
गई चांपा अन्त तो अवाजां वाळी गैल ।।७।।

---

७. उभै राहां—दोनों धर्म वालों में । ऊंच छाजां—उत्सव, उच्च शोभा, हेतु ऊपर उठाई हुई तलवारें । लोप—उल्लंघन कर । पाजां—मर्यादा । दिलेसां—बादशाहों । उथाप—अधिकार च्युत । थाप—अधिकारस्थापन । गैल—पीछे ही ।

८७. गीत ठाकर सरदारसिंघ रतनसिंघोत रौ

जोधां कूरमां सकोधां बिन्है बाजिया आराण जावां,
अराबां सोर आवाजियौ आकास ।
लोहां सिरदारै बिरद्दां रै भारे आभ लागै,
वखतेस आगै खळां मेळियौ व्रहास ।।१।।

---

८७. गीतसार–उपर्युक्त गीत ठाकुर सरदारसिंह रतनसिंहोत पर कथित है । गीतनायक ने गगवाणा के रणक्षेत्र में राजाधिराज बख्तसिंह की ओर से जयपुर की सेना से युद्ध लड़ा था । गीत में उभय पक्षों में रण वाद्य बजने के साथ ही बख्तसिंह के हरावल में रहकर प्रतिपक्षी सेना पर आक्रमण करने का वर्णन है ।

---

१. जोधां—राठौड़ की जोधा शाखा के योद्धा । सकोधां—सक्रुद्धहोकर । बिन्है—दोनों ओर से । आराण—युद्ध । अराबां—तोपें । सोर—बारूद । आवाजियौ—गर्जना हुई । लोहां—शस्त्रों से । बिरद्दां रै भारे—अनेक बिरदों का धारण कर्त्ता, विरुद-समूह धारक । आभ लागै—आसमान को स्पर्श करता हुआ । मेळियौ—मिलाया, भिड़ाया । व्रहास—घोड़ा ।

जूभाऊं डंडाळां घोस बीरताळां वजै जुद्ध,
किरम्माळां बहै ढहै पटाळां रा कंध ।
ऊमरां वडाळां चाळां बांधी सिंघ वाळां,
कूरमां सूं निराताळां बाजिया कमंध ।।२।।

सत्थे सुरां ग्रह्या पत्र आई सत्थां सूळपांणी,
ग्रीभणी अच्छरां परां ढांकियौ गिगन ।
बधै धणी तणी चाड अखाड़े सांफळे बागा,
रिमहरां पाड़े खागां दूसरौ रतन ।।३।।

सगत्ती धपाड़ै रत्त ग्रीभणी भराड़ै गाळा,
रुद्र माळा पोवाड़ै वराड़ै सूरां रंभ ।
नीभरणां भाड़ै रूकां मुरधरा चाडै नीर,
सात्रवां पछाड़ै जुधि थयौ जीवत संभ ।।४।।

---

२. जूभाऊ–युद्धोत्साही, जूझने वाले । डंडाळां–नगाड़ों । घोस–घोष । किरम्माळां–तलवारें । बहै–वहती है । ढहै–कटकर गिरते हैं । पटाळां रा कंध–हाथियों के कंधे । ऊमरां–उमराव । वडालां–वड़े, उच्चपदधारी । चाळा बांधी–वस्त्रांचल बाँधकर, पंक्तिवद्ध होकर । निराताळां–निरन्तर, भंयकर । बाजिया–लड़ने लगे । कमंध–कर्मध्वज, राठौड़ ।

३. सत्थे–साथ में । सुरां–चण्डिकाएँ । ग्रह्या पत्र–खप्पर, रक्त पात्र लिए । सूळ पाणी–त्रिशूलधर, महादेव । ग्रीभणी–गृद्धनियाँ । अच्छरां–अप्सराओं के । परां–पंखों से । ढांकियौ–ढंक गया, आच्छादित । गिगन–गगन, आकाश । वधे–वढ़कर । धणी तणी चाड–स्वामी की मदद पर । सांफळे–युद्ध । बागा–लड़ने लगे । रिमहरां–वैरियों । पाड़े–गिराकर । खागां–तलवारों से । दूसरौ रतन–अभिनव रत्नसिंह ।

४. सगत्ती–शक्ति, युद्धदेवी को । धपाड़ै रत्त–रक्त पान से तृप्त कर । भराड़ै गाळा–मांस पिण्ड के ग्रास भरवाकर । पोवाड़ै–वनवाकर । बराड़ै–वरण करवाकर । रंभ–अप्सरा । नीभरणां–निर्भरनें । रूकां–तलवारों से । चाडै नीर–कान्तिमान कर । सात्रवां–शत्रुओं को । थयौ–हुआ । जीवत संभ–युद्ध में घायल होकर जीवित बचे रहने वाला योद्धा जीवत संभ कहलाता है ।

हंस भांजे सिंधुरां बिरोळे भेळे हजारियां,
करां तेग उभारियां धारियां सक्रोध ।
राजा चास धारे काजा कियां घूम साथि राजा,
जैत रा बाजतां वाजा ग्रायौ महाजोध ।।५।।

—किरतदान बारहठ री कह्यौ

---

५. सिंधुरां—हाथियों को । बिरोळे—छिन्न भिन्न कर । भेळे—परास्त किए मिलाये । हजारिया—हजारी मनसब वालों का । करां—हाथ । तेग—तलवार । ऊभारियां—ऊपर उठाए हुए । चास—पृथ्वी, भूमि । जैत रा—विजय के । बाजतां—बजते, नाद करते ।

८८. गीत ठाकर कलियाणदास राठौड़ बोरूंदा रौ

ग्राहणियै रूक नवी वरै ऊभौ, ग्रणिये त्रैभागे ग्रनल ।
कलै मुगळ कर लेह कटारी, मारियौ मुगल कटार मल ।।१।।
हणियै खसमि महळ विचि हुवतौ, खमे धाड़ ग्राणा में स क्रोध ।
जवन कन्हा वसि करै जड़ाळी, जैमल तणै साधियौ जोध ।।२।।

---

८८. **गीतसार**—उपरिलिखत गीत राठौड़ योद्धा कल्याणदास मेड़तिया पर कथित है । गीतनायक ने शाही महलों में ग्रपशब्द कहने पर किसी मुसलमान योद्धा को उसी की कटारी छीनकर मार दिया था । गीत में मुगल योद्धा से कटार छीनकर मारने का कवि ने वर्णन किया ।

---

१. ग्राहणियै—प्रहार करके, मारकर । रूक—तलवार । नवी वरै—नबी से वरदान प्राप्त, मुसलमान । ऊभौ—खड़े । ग्रणिये—नोक, पैना भाग । त्रैभागे—त्रिधारे, भाले का तीसरा भाग । ग्रनल—रोका नहीं जाने वाला,योद्धा । कलै—कल्याणदास । कर लेह—हाथ से लेकर, कर से छीनकर । कटारमल—कटार रखनेवाला योद्धा, कटार से लड़ने वाला वीर ।

२. हणियै—नाश करके, संहार करके । खसमि—स्वामी के, बादशाह के । महळ—राज प्रासाद । हुवतौ—प्रहार देता । खमे—सहनकर । धाड़—आघात, गर्जना कर । जवन—यवन । कन्हा—पास से । वसि करै—वश में कर, छीनकर । जड़ाळी—कटारी । जैमल तणै—राव जयमल मेड़तिया के पुत्र गीतनायक कल्याणदास । वह जयमल का सातवां पुत्र था । साधियौ—निशाना बनाया, मारा ।

विहंडे मीर वदै विख वयणे, वळि वळि भडां हणै त्रिकराळ ।
बळवंत कमंध आछटे विजड़ी, विजड़ी तिणि धड़चियौ बंगाळ ।।३।।

---

३. विहंडे–मारे । मीर–अमीर, मुसलमान उमराव । वदै–कहे, कहने पर । विख बयणे–विषाक्त वचन, कठोर वाणी, अपशब्द । वळि वळि–पुनः पुनः । भडां–योद्धाओं । हणै–मारे । बलवंत–सामर्थ्यशाली । कमंध–राठौड़, कल्याणदास राठौड़ ने । आछटे–झटका कर, प्रहार कर । विजड़ी–कटारी । तिणि–उसी से । धड़चियो–टुकड़े टुकड़े किए, मार दिया । बंगाळ–मुसलमान को ।

८६. गीत कलियाणदास मेड़तिया री वीरता रौ

अतरा बिरद तूझ कलियांण अऊचरां, पहां सिरोमणि कमध प्रवीत ।
चलण गिरंग चितनि चत्रभुज, आचि गंग मसतकि आदीत ।।१।।

जगड़ समौभ्रम जोध जैतहथ, भड़ां सिरोमणि कविलां भाण ।
पगे पहाड़ रिदै परमेसुर, भुजि सुरसरि भाळयळि भाण ।।२।।

---

८६. गीतसार–यह गीत जगन्नाथ के पुत्र कल्याणदास मेड़तिया का है । कवि ने कल्याणदास को योद्धाओं में शिरोमणि, युद्ध में गिरि तुल्य अविचल, अपने कुल में पवित्र, विष्णु भगवान की तरह उदार, गंगा के समान निर्मल हाथ और सूर्य तुल्य तेजस्वी ललाट वाले विरुदों को ग्रहण करने वाला कहा गया है ।

---

१. अतरा–इतने । अऊचरां–उच्चारण करते हैं, उच्चता के । पहां–योद्धाओं में । प्रबीत–पवित्र । चलण–गति में, पैर । गिरंग–गिरि, पर्वत । चितनि–मन, चित्त । आचि–हाथ । आदीत–आदित्य, सूर्य ।

२. जगड़ समौभ्रम–राव जगन्नाथ की समता की भ्रान्ति देने वाला, जगन्नाथ का पुत्र कल्याणदास । जोध–योद्धा । जैत हथ–जिसके हाथ में विजय रहती है । कविलां परिवार, कुल में । भाण–सूर्य । पगे–पैरों का । रिदै–हृदय । भुजि–हाथ । सुरसरि–गंगा ।

चडिस पूरित वीर वंसोधर, अतरै बोल नथि क्यूं आळि।
गमे मेरगिर उर श्री गोवंद, करि जान्हवी कमळ किरणाळि ।।३।।
वायक सुध कळियाण अतुळ वळ, विधि सहि आभोपम वंस।
ओयण अनड़ श्री पति आतम, सुरसरि सुकरि भ्रगुटि हरि हंस ।।४।।

—देवीदान कवि रौ कह्यौ

---

३. वीर वंसोधर—राव वीरमदेव का वंशधर, कल्याणदास। अतरै—इतने। नथि—नहीं। आळि—व्यर्थ, असत्य। गमे—गमन, पैर। मेर गिर—गिरि श्रृंग, स्थिर। जाह्नवी—गंगा। कमळ—मस्तक। किरणाळि—सूर्य।

४. वायक—वचन। अभोपम—कान्ति में अनुपम। ओयण—चरण। अनड़—पर्वत। सुकरि—हाथ। भ्रगुटि—मस्तक। हंस—सूर्य।

९०. गीत गिरधरदास केसोदासोत मेड़तिया बोरावड़ रौ

विधन वार गिरधर सधर वाधियै वीररसि,
पह सुछळि सगह आलम संपेखै।
मरण मंगळ जिसौ जांणियौ मोट मनि,
लाख दळ सबळ तिलमात लेखै ।।१।।

---

९०. गीतसार—उपर्युक्त गीत पर्बतसर परगने के बोरावड़ ठिकाने वालों के पूर्वज राठौड़ वीर गिरधरदास मेड़तिया पर रचित है। गीत में कवि ने वर्णन करते हुए कहा है कि उस वीर गिरधरदास ने युद्ध का संकट काल आजाने पर वीररसाभिभूत होकर धैर्य धारण किया। उस वीर ने मृत्यु को मंगलमय अनुभव कर लक्षाधिक शत्रु-सेना को नगण्य समझा। वह अपने साथियों के युद्ध से भाग खड़े होने पर भी स्वामि-धर्म का निर्वहन कर लड़ता रहा और अन्त में अप्सराओं का वरण कर सुरलोक में गया।

---

१. विधन वार—विपत्तिकाल में। गिरधर—गीतनायक गिरधरदास राठौड़, वह प्रसिद्ध वीर जयमल का पौत्र और केशवदास का पुत्र था। सधर—धैर्यवान्। वाधियै—वर्धित पह—राजा, योद्धा। सुछळि-युद्ध। सगह—सगर्व, प्रगाढ़ता। आलम—संसार। संपेखै—देखा, देखते हुए। मंगळजिसौ—कल्याणप्रद हुवे जैसा, शुभ कार्य हो जैसा। मोटमनि—उदार चित्त, विशाल मन वाला। सबळ—बलवान। तिलमात—तिलमात्र, तुच्छ, नगण्य।

ऊससै निहंग लग भार सिरि आवियौ,
बाहतौ कमंध जणि जणि वखांणै।
अंत ऊछाह रिमराह उर आंणियौ,
जुडंतै वहळ दळ तूछ जांणै ।।२।।

हणे असुराण तुडितांण जैमल हरै,
पाधरे पांण पिड़ि भुइ पचारै।
अमंगळ काळ आणंद सम ईखियौ,
सेन दूभर सुगम कीध सारै ।।३।।

हुवौ रिणथंभ निय साथ विमुहे हुवै,
त्रिदिव मंनव हूवा तिणि तमासै।
सांमिध्रम दाखि केसव तणौ सींघळी,
वरे गो रंभ सुरलोक वासै ।।४।।

---

२. ऊससै–जोश में उफन कर, उत्साह पूरित होकर। निहंग–आकाश। लग–स्पर्शकर, तक। भार–दायित्व। सिरि–सिर पर, ऊपर। बाहतौ–शास्त्रों की मार करता। कमंध–राठोड़ वीर को। जणि जणि–जन-जन। अंत–अन्तिम। ऊछाह–उत्साह, उत्सव। रिमराह–शत्रुओं,शत्रुता के मार्ग वालों। जुड़तै–लड़ते हुए, टक्कर लेते हुए। वहळ दळ–बहुसंख्यक सेना से जबरदस्त सेना से। तूछ–तुच्छ, सामान्य।

३. हणे असुराण–असुरों का नाशकर। तुड़ितांण–वंश गौरव को बढ़ाने वाला। जैमलहरै–जयमल के पोत्र ने। पाधरे–सीधे, सामने। पांण–बल, हाथ। पिड़िभुइ–युद्ध स्थल में। पचारै–ललकार कर, प्रोत्साहित कर। काळ–समय, मुत्य। आणंद सम–आनन्दप्रद कार्यों के सदृश। ईखियौ–देखा, अनुभव कर। सेन–सैन्य। दूभर–कठिनता से पार पाने वाली। सारै–सलवारों से, शस्त्रों से समस्त।

४. रिणथंम–युद्ध में स्तंभ तुल्य। निय साथ–अपने साथियों के। विमुहेहुवै–विमुख होने पर, भाग जाने पर। त्रिदिव–देवता। मंनव–मानव। तिणि–उस। तमासै–तमाशे, युद्ध कुतूहल। सामिध्रम–स्वामिधर्म। दाखि–निर्वाह कर, कहकर। केसव तणौ–राजा केशवदास का तनय, गीत नायक गिरधरदास। सींघली–श्रेष्ठ वीरसिंह। वरेगो–वरण करके गया। रंभ–अप्सरा। वासै–निवास किया, जा बसा।

६१. गीत गदाधरदास गिरधरदासोत मेड़तिया सबळपुर रौ

वधे वीर हाकां धाकां धोम गैणाग धूबै,
पवंग जुधि मेळियौ दळां पहिलै।
आप छळ बाप छळ सांमि छळ आदरे,
गदाधर खड़गधर जूझि गहिलै ।।१।।

दळे आदेसियौ वीरगुर दूसिरौ,
जैत्रहथ बाहतौ करग रण जंगि।
वीररसि हाकळे वाजि रिणि बावळे,
मेळियौ आंवळे थाटि अणभंगि ।।२।।

---

६१. ऊपर लिखा हुआ गीत मारवाड़ के पर्वतसर परगने के सबलपुर ठिकाने वालों के पूर्वज गदाधरदास मेड़तिया योद्धा पर सर्जित है। गीतकार ने लिखा है कि जिस समय वीर नाद से आकाश ध्वनित हुआ उस समय गदाधरदास ने शत्रुओं की सेना पर अपने अश्व से आक्रमण किया। वह वीर अपने, अपने पिता और अपने स्वामी के निमित्त तलवार ग्रहण कर युद्ध में जूझने लगा। उसने विपक्षियों का संहार कर घायल अवस्था में विजय लाभ कर यश अर्जित किया।

---

१. वधे—वढ़कर। हाकां—हुंकार, वीर नाद। धाकां—दहाड़, गर्जना। धोम—धूम्र। गैणाग—आकाश। धूबै—नगाड़े अथवा, तोपों के चलने की ध्वनि। पवंग—घोड़ा। मेळियै—मिलाया, शामिल किया। दळां पहिलै—विपक्षी सेना में, अपनी सेना में सबसे पहिले। छळ—युद्ध, लिए। सांमि—स्वामी। आदरे—स्वीकार कर। गदाधर—गीत-नायक गदाधरदास। खड़गधर—खड्ग ग्रहण कर। जूझि गहिलै—रणोन्मत्त।

२. दळे—अपनी सेना। आदेसियौ—आज्ञा दी, नमस्कार किया, सराहना की। वीर गुर दूसिरौ—द्वितीय वीर श्रेष्ठ वीरमदेव तुल्य गदाधरदास को। जैत्रहथ—जिसके हाथ से विजय होती है। बाहतौ—प्रहार करता, चलाता। करग—हाथ। जंगि—विकट, युद्ध। हाकळे—ललकार। वाजि—घोड़े को। रिणी बावळे—रण मस्त। मेळियौ—मिलाया, भिड़ाया। आंवळै थाटि—विकट सैन्य। अणभंगि—अभंगवीर।

सावळां हूलां पाड़ि रिप मातै समरि,
ऊजळे कमळि मुहरि अयारां ।
त्रिजड़ हथि नांखियौ खैंग गिरधर तणै,
सूर तन पूरियै सीसि सारां ।।३।।

भला भवाड़ि जैमाल केसव भुवणि,
जुड़े पह काजि पित आगळी जेम ।
बधे वाखांण त्यां भड़ां न्याय बडा,
ऊवरै जीवतांस्यंभ होइ अेम ।।४।।

---

३. सावळां–भालों, वर्छो । हूलां–प्रहार, विशेष प्रकार के आघात । पाड़ि–पछाड़ कर, मार कर । रिप–वैर । मातै समरि–भयानक युद्ध में । ऊजळे–उज्ज्वल, निष्कलंक । कमळि–मस्तक । मुहरि–सामने । अयारां–वैरियों । त्रिजड़ हथि–हाथ में तलवार ग्रहण कर । नांखियौ–डाला, धकेला । खैंग–घोड़ा । गिरधर तणै–गिरधरदास के पुत्र गदाधरदास ने । तन–शरीर । पूरियै–पूर्ण कर । सारां–तलवारों, समस्त ।

४. भला–अच्छा । भवाड़ि–कहलवाकर । जैमाल–प्रसिद्ध वीर राव जयमल राठौड़ जो महाराना उदयसिंह के पक्ष में चित्तौड़ की रक्षा करता हुआ बादशाह अकबर से लड़कर मारा गया था । केसव–राव जयमल का पुत्र और गीतनायक का प्रपितामह राजा केशवदास मेड़तिया । वह बादशाह अकबर का मनसवदार था । भुवणि–संसार में । जुड़े–लड़ा, भिड़ा । पह–राजा । काजि–कार्य में, लिए । आगळी–आगे, सम्मुख । बधे–बढ़े, बढ़कर । वखांण–वर्णन, किर्ति, प्रसिद्धि । भड़ां–भटों, योद्धाओं । न्याय–उचित, उपयुक्त । ऊवरै–जीवित रहे । जीवतां स्यंभ–युद्ध में घावों से आपूर्ण होकर जीवित रहने वाले योद्धाओं को 'जीवितस्यंभ' कहा जाता है । होइ–होकर । अेम–इस प्रकार, ऐसे ।

६२. गीत रघुनार्थासघ मेड़तिया मारोठ रौ

रचतै जुध भुगत रुघा वड रावत, ग्रावध ग्रन न हुई ग्रटक ।
सीमां ठेल कियौ नवसहसौ, केवांणे पैलौ कटक ।।१।।

ग्रारब सैन फाटतां पेटा, पड़िया भड़ तड़फै सर पाज ।
ग्रणभावतौ परूसै ऊभौ, ऊभौ खळ न रहै कोय ग्राज ।।२।।

खाटा दांत हुवा खगवाहां, मुंह फाटा फाटा उर मौर ।
कळह समै कहियौ कै वेळां, इसड़ी गोठ न दीन्ही ग्रौर ।।३।।

---

६२. **गीतसार**–गीत लेखक ने उपर्युक्त गीत में गौड़ावाटी के शासक रघुनार्थसिह मेड़तिया के ग्रासाम प्रान्त के रणक्षेत्र में युद्ध लड़ने की घटना का दावत के साथ रुपक बनाकर वर्णन किया है। इसमें लिखा है कि तलवारों की रसवती में भालों के ग्राहार से शत्रुग्रों का उदर पोपण किया गया, जो योद्धा इस रसोईधर में पहुंच गया भूखा नहीं लौटा। ग्रौर किसी भी ग्रागन्तुक का न नाम धाम पूछा ग्रौर न उसे जीमने से रोका ही गया।

---

१. रचते जुध भुगत–युद्ध रूपी भुक्ति। रूघा–रघुनार्थसिह। ग्रावध–ग्रायुध, हथियार। ग्रन–ग्रन्य। ग्रटक–रोक, बाधा। सीमां ठेल–हद बाहर कर, ग्रसीम। नव सहसौ–राठौड़, मारवाड़ राज्य में नव सहस्त्र ग्राम थे, इसलिए वहां के शासक राठौड़ों को नव हजार ग्रामों का स्वामी कहा गया है। केवांणे–तलवार। पैलो–दुश्मन का, उस पक्ष का। कटक–सेना।

२. फाटतां–विदीर्ण होते। भड़–योद्धा। तड़फै–तड़फड़ाते हैं, तड़फते हैं। ग्रणभावतौ–ग्ररुचिकर, विना भाता हुग्रा। परूसै–परोसा गया। ऊभौ–खड़ा। ऊभौ खळ न रहै–शत्रु साबित पैर खड़े नहीं रहे। कोय–कोई भी।

३. खाटा दांता हुवा–दाँत खट्टे हुए, परास्त हुए। खग वाहां–तलवार चलाने वालों, योद्धाग्रों। मुंह फाटा–मुख फटे रह गए। उर मौर–वक्षस्थल ग्रौर पीठ भाग। कळह समै–युद्ध समय। कै वेळां–कई बार। इसड़ी–ऐसी। गोठ–दावत, सहभोज। दीन्ही–दी गई।

सांवळ तणा धपावै सात्रव, भोजन सार छतीसौं भांत।
पूछियौ न कौ नकौ पालियौ, पड़ियौ सुज चढ़ियौ रण पांत ।।४।।

रूकां तणौ रचाय रसोड़ौ, भालां पेट सत्रां भरिया।
जीमण हार मूग्रा सह जोगा, ग्रण जीमिया सह ऊवरिया ।।५।।

दुसमण कहै ग्रनौखी दीठी, रुघपत भुगत तुहाळै राज।
खाधी जिकां तिकां तैं खाधा, भूखा रह्यास छूटा भाज ।।६।।

दळ ग्रासाम भुगत देखाळै, वीरहरा रण ताळ विमेक।
कुड़छी खाग झाट तळ कैंवी, ग्रायौ जिकौ न ग्रायौ ग्रेक ।।७।।

---

४. सांवळ तणा—श्यामलदास के पुत्र रघुनाथसिंह ने। धपावै—तृप्त किये। सात्रव—शत्रुग्रों। सार-शस्त्र-ग्रस्त्र। न कौ—कोई ने नहीं। पालियौ—रोका, मना किया। सुज—वह। रण पांत—रण पंक्ति में।

५. रूकां तणौ—तलवारों का। रसोड़ौ—भोजनालय, भोजन। भालां—बलमों की चोटों से। सत्रां—वैरियों के। भरिया—पूरित किए, तृप्त किए। जीमणहार—भोजन करने वाले। सह—सब। जोगा—योग्य थे वे। ग्रण जीमिया—विना भोजन किए, भूखे। ऊवरिया—शेष रहे, बचे रह गए।

६. दीठी—देखी। रूघपत—रघुनाथसिंह की। भुगत—भुक्ति, दावत। तुहाळै—तेरे वाले, तुम्हारे। खाधी—जीमी, खाई। जिकां—जो, वे। तिकां—तिनको, उनको। तैं—तुम। खाधा—खा गए। छूटा भाज—भाग निकले, भाग छूटे।

७. ग्रासाम—ग्रासाम प्रदेश। वीरहरा—राव वीरमदेव का वंशज। रणताळ—रणस्थल, युद्ध समय। विमेक—बोध। कुड़छी खाग—बड़े चम्मच रूपी तलवार। झाट—प्रहार। तळ—नीचे, स्थल। कैंवी—वैरी। जिको—जो। न ग्रायौ—जीवित लौट कर नहीं ग्राए।

९३. गीत सेरसिंघ नै कुसळसिंघ राठौड़ रौ

बागा बेताळा किलक्कां खागां नागां निराताळा वीर,
जौम गौम बागा तोपां जागै धूम जूह।
चखां चौळ भाखियौ अफेर सेर नूरां चौज,
हूरां रै जहूरां लागौ सूरां रै समूह ।।१।।

जटी आराण रै विन्है जोधाण रा भाण जूटा,
बीछूटा बांण ज्यूं आसमांण रा बेधांण
कंज भेजां कळेजां केवाण फूलधारां कटै,
मजेजां ऊपटै सची रूप रौ मोहांण ।।२।।

---

९३. गीतसार—प्रोक्त गीत मारवाड़ के महाराजा रामसिंह और नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह के मेड़ता के युद्ध में मारे गए ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया रिया और ठाकुर कुशलसिंह चापावत आऊवा की वीरता पर लिखा हुआ है। शेरसिंह ने रामसिंह और कुशलसिंह ने बख्तसिंह के पक्ष में शस्त्र ग्रहण कर शौर्य प्रदर्शित करते हुए मृत्यु का वरण किया था। गीत में युद्ध की भयानकता और उभयवीरों के पराक्रम का वर्णन किया गया है।

---

१. बागा—बजने लगे, लड़ने लगे। किलक्कां—हर्षध्वनि, किलकारी। खागां नागां—नग्न तलवारों से। निराताळा—भंयकर, निरंतर। जौम—जोम। गौम—आकाश। बागा—ध्वनि हुए, गुंजित हुए। धूमजूह—धुंधकार। चखां चौळ—क्रोधातिरेक से लाल नेत्र। भाखियौ—कहा, बोला। अफेर—न फिरने वाला। सेर—शेरसिंह। नूर—कान्तिवाला, श्री सम्पन्न। हूरां रै—अप्सराओं के। जहूरां—समूह कांति, प्रकाश।

२. जटी—जहां, शिव। आराण रै—युद्ध के। बिन्है—दोनो। जोधाण रा—जोधपुर के। भाण—सूर्य। जूटा—भिड़े, लड़ने लगे। बीछूटा—छूटे हुए, चलाए गए। बेधाण—छिद्र करने वाले। कंज—मस्तक। भेजां—मज्जा। केवाण—तलवार। मजेजां—मिजाज रखने वाले? ऊपटै—उमड़े। सची—शची। मोहांण—मुग्धा, मोहित।

चोट निराताळां खागां झाळां जंगां बीरचाळां,
काळां बीर मोहबियौ खळां रौ प्रळै काळ।
आखाड़ां अथोवियौ सिंघालौ जोध सदा वाळौ,
लोभी मंजू घोखां वाळौ सोभियौ लंकाळ ।।३।।

वेथटां अथागौ मारू धरा रौ ऊपट्टां बेध,
भूरौ बोम बिलागौ सुभट्टां राम भूप।
झेल घट्टां आपरां पार रां बाह खाग झट्टां,
रंभा रूप रट्टां लागौ बीर घट्टां रूप ।।४।।

काळ खाग धारां गै काळंगां धू बिहार कीधौ,
धून कळाधार जंगां बाखांणै सधीर।
लोभा चारु सोभा जांणै नारंगां चा हार लीधौ,
वारंगां तमास रीधौ सीधौ सूर वीर ।।५।।

---

३. चोट—प्रहार। निराताळां—भयानक, अनवरत। खागां—तलवारों। जंगा—युद्ध। काळां बीर—प्रचण्डवीर, यमराज तुल्य वीर। खळां रौ—वैरियों का। आखाडां—रणस्थलों। अथोवियौ—अधीर, लड़ने की प्रबलेच्छा वाला। सदावाळौ—सरदारसिंह वाला, शेरसिंह मेड़तिया। धौखां वाळौ—प्रहार या बौछार करने वाला। लंकाळ—योद्धा, सिंह।

४. वे थटां—दोनों सेनाओं में। अथागौ—अथकित, गहरा, अत्यधिक। मारूधरा—मारवाड़ राज्य। उपट्टां बेध—विरोध उत्पन्न हुआ। भूरौ—वीर, सिंह। बोम बिलागौ—आकाश को छूने लगा। राम भूप—महाराजा रामसिंह के पक्ष का। घट्टां—समूह, सेना। पार रां—परायों की, विपक्षी। बाह खाग झट्टाँ—तलवार के प्रभावशाली प्रहार देकर। रट्टां—टक्करें लेने लगा, चित्त में विचारने लगा। घट्टां—घनघोर, बादलों की भांति चारों ओर छा जाने वाला।

५. खागधारां—कृपाण धार। गै—हाथियों। काळंगा—श्यामल, काले रंग के। धू विहार—मस्तक विदीर्ण या काट कर। कळाधार—नारदमुनि। जंगा—युद्ध को। बाखांणै—बखान करता है। लोभा—लुब्ध। नारंगां चा—रक्त का, अप्सरा का, मस्तक का। हार—गलहार, आहार। बारंगां—अप्सराओं। रीधौ—प्रसन्न हुआ।

राड़िगारा लूंण रा उजेळी धारा उरेड़ते,
मेळी भू मेड़ते प्राझी रूक-धारां मौति।
छरां हूं नेहड़ां तोड़ि जोड़िया छेहड़ा छोड़ि,
जौति हूँ नेहड़ां जोड़ि मिळैगौ साजौति ।।६।।

६४. गीत ठाकुर सिवनार्थसिंघ कुचामण रौ

दिल ऊजळ सिवा अभनमां दूदा, बडपण आखै बीस बिसा।
कपड़ां दिसां म देखे कमधज, देखीजै आखरां दिसा ।।१।।

---

६४. गीतसार—इस गीत में कवि ने ठाकुर शिवनार्थसिंह कुचामन का नर्णन करते हुए कहा है कि-हे अभिनव राव दूदा (शिवनार्थसिंह) तेरे यश की प्रसिद्धि समुद्रों तक फैल चुकी है। अतः तुम कवि के फटे पुराने वस्त्रों को देखकर उसका सम्मान करने की मत सोचो; अपितु उसकी काव्य रचना की उत्कृष्टता की परीक्षा कर यथायोग्य सम्मान प्रदान करो।

---

६. राड़िगारा—युद्धप्रेमी, प्रचण्डवीर। लूंण रा उजेळी—स्वामी के नमक को सफल करने वाले, नमक को उज्ज्वल करने वाले। धारा—तलवारें। उरेड़ते—पराक्रम दिखाते, उत्साह पूर्वक आघात करते हुए। भू मेड़ते—मेड़ता की भूमि पर। प्राझी—सघन, अत्यधिक। रूक धारा—खड्गधारा। मौति—मृत्यु। छरां—तलवार से, हाथ से। नेहड़ा—बंधन, स्नेह। छेहड़ा—अञ्चल, गंठजोड़। नेहड़ा—स्नेह, प्रीति। मिलेगौ—मिल गया।

१. दिल ऊजळ—पवित्र हृदय। सिवा—शिवनार्थसिंह। अभनमां दूदा—अभिनव राव दूदा, गीतनायक राव दूदा का वंशज है, इसलिए यहां उसे इस समय में दूदा जैसा व्यवहार करने वाला बताया है। आखै—कहते हैं। बीसबिसा—अडिग पूर्ण रूप से श्रेष्ठ। दिसां—तरफ। म देखे—मत देख। आखरां—काव्य रचना।

प्रभता समंद कड़ां लग पूगी, ओपम भड़ां अरोड़ां ।
जग दातार पोसाक न जौजै, जोजै रूपक जोड़ां ।।२।।
आरख इंद सुपातां ओठंभ, कमधज पारख कीजै ।
आडंबर मत भाळे अपहड़, भलां गुणां भाळीजै ।।३।।
सांभळ कथ लीजै सूजा रा, नित जस हाका नवां नवां ।
सूमां दहल मनावण सुकवी, सहळ म जांणे कमध सिवा ।।४।।

---

२. प्रभता–प्रभुता, वैभव । संमद कड़ांलग–समुद्र तट तक । पूगी–पहुंची, फैल गई । ओपम–उपमा, शोभा सुन्दरता । अरोड़ां–जबरदस्तों, नहीं रुकने वालों । पोसाक–वेश भूषा । न जौजै–मत देखिए । रूपक जोडां–काव्य कला, गीतादि छंदों की तुकें ।

३. आरख–समान, तुल्य । इंद–इन्द्र । सुपातां–सुपात्रों, सुकवियों । ओठंभ–आश्रय-दाता । पारख–परख, पहिचान । आडंबर–ऊपरी तड़क भड़क । भाळै–देखै । अपहड़–दानवीर, उदार पुरुष । भला–अच्छे, उत्तम ।

४. सांभल–सुनकर । कथ–कथन । सूजारा–सूरजमल्ल के पुत्र शिवनाथसिंह । जस हाका–यश चर्चा । सूमा–कजूंसों । म जांणे–मत समझे । कमध सिवा–राठौड़ शिवनाथसिंह ।

६५. गीत राव बाघसिंघ मेड़तिया मसूदा रौ

इखू पाथ रौ कै वज्र सुरां नाथ रौ भलूळ आग,
सूळ रुद्र हाथ रौ कै जत्र मूळसार ।
धूरम्वी छमाथ रौ कै कौळंछी दाध रौ धाव,
चूरम्वी भाराथ रौ कै बाघ रौ चौधार ।।१।।

---

६५. गीतसार–उपर्युक्त गीत अजमेर मेरवाड़ के मसूदा संस्थान के अधिपति राव बाघसिंह मेड़तिया के भेला की प्रशंसा का अभिव्यंजक है । इसमें भाला के प्रहार को अर्जुन के वाण, इन्द्र के वज्र, शिव के त्रिशूल, यमराज के लोहदण्ड, कालिका के शूल, विष्णु के चक्र, कालियनाग के क्रोध और रुद्र के तृतीय नेत्र की ज्वाला तुल्य प्रभावशाली बतलाकर वर्णन किया गया है ।

---

१. इखू–तीर, बाण । पाथ रौ–अर्जुन का । सुरांनाथ रौ–इन्द्र का । भलूळ आग–धधकती अग्नि । सूळ–त्रिशूल । जत्र–यमराज का । मूलसार–लोह दण्ड । धूरम्वी– (?) । छमाथ रौ–षडानन का, स्वामि कार्त्तिकेय का । कौळंछी– (?) । धाव–अभिग्रह, धावा । चूरम्वी–संहार करने वाला । भाराथ रौ–युद्ध का । बाघ रौ–रावं बाघसिंह का । चौधार–चार तीक्ष्ण धार वाला भाला ।

ताप मारतण्ड रौ कै पंड रौ ससत्र तवां,
हूह कच्छ खण्ड रौ कै हाथ पाथ हूंत।
त्रसूळ चामंड रौ कै अलारा चूक रौ तेज,
काळा रौ प्रचंड रोस कै आग झाळ कूंत ।।२।।

वळे पंच सीस रौ कै तीसरौ सिव नेत्र वाचां,
डाच विहंगेस रौ कै अतंका छ डंड।
सर वहान कीस रौ कै धन्वी नाराच सेना,
मल्ला रा अधीस रौ कै वीर नाच मंड ।।३।।

जैतमाल हरा हूंत जूटवौ जंवार जुद्धां,
केवियां खूटवौ कै बिना मीच काळ।
हूह रौ म्रदंग रौ कै जूटवौ हाकिये हेले,
छाकिये कमंध रौ कै छूटवौ छड़ाळ ।।४।।

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

---

२. ताप—आतप। मारतंड रौ—सूर्य का। पंड रौ—पाडण्व का अर्जुन का। तवां—कहें। हूह—प्रसिद्ध गन्धर्व जो तबला बजाने में निपुण माना गया है। चामंड रौ—चामुण्डा का। अलारा चकू रौ—विष्णु के चक्र का, आलात चक्र का। काळा रौ—कालियनाग का। रोस—रोष, क्रोध। आग झाळ—अग्नि ज्वाला। कूंत—भाला।

३. वळे—पुनः भस्मीकड़ा। पंचसीस रौ—शिव का। तीसरौ—तृतीय। वाचां—कहे। डाच—मुख, वाका। विहंगेस रौ—पक्षीराज का, गरुड़ का। अंतकाछ—यमराज का। डंड—लोहदण्ड, गदा। सर वहान—वाण का छोड़ना। कीस रौ—हनुमान का। धन्वी—धनुर्धर। नाराच—शर, तीर। मल्ला रा अधीस रौ—मल्लों के स्वामी का, शिव का। नाच—नृत्य। मंड—रचना, करना।

४. जैतमाल हरा हूंत—जैतमाल के वंशज से, राव बाघसिंह से। जूटवौ—टक्कर लेना, भिड़ना। जंवार—जवाहिरसिंह, संभवतः महाराजा जवाहरमल्ल जाट भरतपुर। जुद्धां—युद्धों में। केवियां—वैरियों का। खूटवौ—नष्ट होना, समाप्त होना। बिना काळ मीच—अकाल मृत्यु। हूह रौ—हूह नामक प्रसिद्ध गन्धर्व का। म्रदंग रौ—दुंदुभि पर ताल देना। हाकिये हेले—हाके की शिकार में सिंह के उठकर झपटने के। छाकिये—छकित, मत्त हुए। कमंध रौ—राठौड़ राव बाघसिंह का। छूटबौ—चलना, प्रहार हेतु चलना। छड़ाळ—भाला, छड़वाले शस्त्र का।

९६. गीत पहाड़सिंघ महेचा जसोल रौ

समर भांजवा थाट वांकां भड़ां सालुळै, दुजड़ ग्रह विडांणी धरा दावै ।
अगंज जोध डिगन्तो भुजां ऊपरै, विरद पत महेचौ आभ ढावै ।।१।।

धरा रौ थंभ रजपूत वट धारियां, पटाळौ केहरी जोम पूरै ।
बणै जुध रूप कंठीर रै वीर वर, चात मालांण दळां चूरै ।।२।।

बिरद उजवाळ लंकाळ छिलतै बरै, सुतन बैरा तणौ खाग सूरौ ।
मांण रौ दजोंवण जेम बेढ़ीमणौ, भांजवा दोयणां बाघ भूरौ ।।३।।

---

९६. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मारवाड़ के मालानी प्रान्त के जसोल संस्थान के रावल पहाड़सिंह महेचा की युद्ध वीरता पर कहा हुआ है । कवि गीतनायक के पराक्रम का वर्णन करता हुआ कहता है कि पहाड़सिंह युद्ध में शत्रुओं को पराजित करने के लिए अपने वीर योद्धाओं को लेकर आक्रमण करता है और अपनी सैन्य शक्ति से दूसरों की भूमि पर अधिकार स्थापित कर लेता है । वह ऐसा महावीर है जो अपनी भुजाओं पर गिरते हुए आकाश को भी ऊपर ठहरा रख सकता हैं ।

---

१. भांजवा—नाश करने के लिए । थाट—सेना, समूह । वांकां—विकट । सालुळै—उमड़ कर, प्रयाण कर । दुजड़—तलवार । विडांणी—दूसरों की, अन्य लोगों की । दावै—अधिकार में लेने । अगंज—अजेय । जोध—योद्धा । डिगन्तो—डगमगाते हुए, लड़खड़ाते । महेचौ—राठौड़ों की महेचा शाखा वाला, महेवा स्थान पर इस शाखा वालों की राजधानी रहने के कारण वे महेचा कहलाने लगे । आभ—आसमान । ढावै—ऊपर रोके रखे, ऊपर ठहराये रखे ।

२. थंभ—स्तंभ । वट—बल, क्षत्रियत्व । धारियां—धारण किए । पटाळौ केहरी—गर्दन पर लम्बी केशराशि वाला सिंह, बब्बर शेर । जोम पूरै—जोश में आपूर्ण । बणै—बनता है । कंठीर रै—सिंह के । चात मालांण—मालानी प्रान्त का मुखिया । चूरै—नाश करे, चूर्ण करे ।

३. बिरद—बिरुद । उजवाळ—उज्ज्वल कर कीर्त्तिमान् कर । लंकाळ—सिंह । छिलतै—छलकते, जोश में उमड़ते । बैरा तणौ—रावल वैरीशाल का । खाग सूरौ—महान् शूरवीर, खड्गवीर । मांण रौ—मान का, मानधनी । दजोवण—दुर्योधन । बेढ़ीमणौ—युद्ध लड़ने वाला । दोयण—दुर्जनों, वैरियों को । बाघ भूरौ—बर्बर शेर, महान्वीर ।

सत्रवां साल वर वीर नव साहसौ, खाग ग्रहियां करां कळह खेलै ।
हाकळे दुश्रौ जसवंत भडां हैमरां, पहाड़ौ गैमरां घड़ा पेलै ।।४।।

—जाला सांदू रौ कह्यौ

६७. गीत पहाड़सिंघ महेचा जसोल रौ

फुणी धूणियौ सीस समंद ऊफणै, छळ छळे दोयणां गुमर छीजै ।
काहुळी चखां रढ़रांण भेळण किला, कमध किण सीस घमसांण कीजै ।।१।।

---

६७. गीतसार—ऊपर लिखित गीत जसोल ठिकाने के रावल पहाड़सिंह राठौड़ के सैनिक अभियान पर कथित है। गीतकार कहता है कि रावण की तरह हठीला वीर रावल पहाड़सिंह आज भंयकर क्रोध से रक्तिम नेत्र किए किसके अधिकार के दुर्ग को जीतने के लिए चढ़ाई करने को उद्यत हुआ है। उसके युद्धाभियान से शेषनाग का शीश लचक उठा है और समुद्र अपने तट का अतिक्रमण कर पाज से बाहर छलकने लगा है। शत्रुओं का गर्व खर्वित हो गया है।

---

४. सत्रवां—शत्रुओं। साल—शल्य। नव साहसौ—मारवाड़ में नव हजार ग्राम थे अतदर्थ उसके शासक राठौड़ों का नव सहस्र ग्रामपति सम्बोधन प्रचलित हुआ। करां—हाथों में। कळह—युद्ध। हाकळै—ललकार कर, प्रोत्साहित कर। दुश्रौ—द्वितीय। जसवंत—जसवंतसिह। हैमरां—घोड़ों को। पहाड़ौ—पहाड़सिंह। गैमरां घड़ा—गज सेना। पेलै—दवाता हैं, पीछे धकेलता है।

१. फुणी—शेषनाग। धूणियौ सीस—शीश धुनने लगा। ऊफणै—उफनने लगा, किनारों का अतिक्रमण करने लगा। छळछळे—छलक कर। दोयणां—वैरियों। गुमर—अभिमान। छीजै—जल कर नष्ट होने लगा, खर्वित। काहुळी—डरावनी। चखां—आंखें। रढ़ रांण—हठ और युद्ध में रावण जैसा वीर। भेळण—नाशकर अधिकृत करने। कमध—राठोड़ पहाड़सिंह। किण सीस—किस पर। घमसांण—घनघोर युद्ध।

थट रज धूंधळी सूर झंकौ थियौ, दसौं दिस सिंधवौ राग दीधो।
महपती दूसरां उवर भय न मावै, कुंवर किण ऊपरां कोप कीधो ।।२।।

भैचके अरी भालां किरण भळहळे, समवड़ी नम रह्या पगां सारू।
दुवा जसवंत मन ऊंच धारे दुभल, मूंछ किण ऊपरां ग्रहै मारू ।।३।।

पजाया खळां बांका भड़ां पहड़ां, समवड़ी खाग रौ नकू सूजै।
खेड़पत चढ़ै तूं तौ सहल खेलवा, धरा सह धड़हड़ै गैण धूजै ।।४।।

—जाला सांदू रौ कह्यौ

---

२. थटं–समूह, ठाठ। रज–धूलि, गर्द। सूर–सूर्य। झंखौ थियौ–धुंधला होगया, प्रभाविहीन। सिंधवौ–सिंधु, युद्ध काल की रागिनी। महपती–राजाओं। उवर–उर, हृदय। न मावै–समाहित नहीं होता है, असह्य लगता है। किण ऊपरां–किन पर।

३. भैचके–भयचक्रित। अरी–वैरी। झळहळे–चमके। समवड़ी–समानता वाले। नम रहया–नम्र बन गए, झुक रहे। पगां सारू–चरणों में पड़े रहने के लिए, मातहत बन कर रहने को। दुवा–द्वितीय। मन ऊंच–उदारचित्त। दुझल–प्रचण्ड वीर।

४. पजाया–मातहत किए, पराजित किए, उलझना। खळां–दुष्टों, वैरियों। पहड़ां–धोखेबाजों को, विचलितों को। नकू–कोई नही। खेड़पत–खेड़ स्थान का स्वामी। सहल–सैर सपाटे। धड़हड़ै–धड़धड़ा कर, दहल कर। गैण–गगन, आकाश। धूजै–कांप उठता है, कम्पित होता है।

९८. गीत चतरसिंघ बाला मोकळसर रौ

बांका भड़ जठै अनड़पण बांकौ, सांकौ दै दोय राह सरै।
वधांरौ खाडू बालावत, कमध अवेढ़ा वाद करै ।।१।।

रेस दियौ राजा राव राणां, समहर लियौ पटाळां सींह।
काळा खगां बजावण करगां, अड़पायत बाला अणबीह ।।२।।

नाथै भड़ां ऊनत्थां नाहर, दहलां पड़ै दसौ दिस देस।
बाला रेसां दियै बीजां नू, अड़पायत बाला अणरेस ।।३।।

---

९८. गीतसार—यह गीत राठौड़ों की बाला प्रशाखा के मोकलसर ठिकाने के वीर ठाकुर चतुरसिंह पर रचित है। गीत में चतुरसिंह की वीरता की सराहना करते हुए लिखा गया है कि जहां पर बांकुरे वीर हैं वहाँ पर ही दुर्जेय दुर्ग बने होते हैं जिनके सामने क्या हिन्दू और क्या यवन सभी शंकित रहते हैं। राठौड़ वीर चतुरसिंह अपनी वीरता से वृद्धि प्राप्त कर जागीरों का उपभोग करता है। और सदैव खतरनाक कार्य करता रहता है।

---

१. वांका भड़—वहादुर योद्धा, विकट वीर। जठै—जहां पर। अनड़—दुर्ग—अनड़पन—किसी का वंधन न सहना, अनम्रता। सांकौ दै—शंका मानें, डरे। दोय राह—हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मानुयायी। सरै—श्रेष्ठ, मुखिया। वधारौ—वृद्धि, किसी कार्य की सफलता पर राजा उसके कर्त्ता को ग्रामादि देकर जागीर में वृद्धि करते थे, उन्नति। खाडू—प्राप्त करनेवाला, भोगनेवाला। अवेढ़ा—विकट, प्रतिकूल। वाद—विवाद, विग्रह।

२. रेस दियै—दवा दिए। समहर—युद्ध। पटाळां सींह—बब्बर सिंह तुल्य योद्धा। काळा—वीर। खगां वजावण—खड्गाघात करने वाले। करगां—हाथों से। अड़पायत—शक्तिवान, योद्धा। अणबीह—अभय, निडर।

३. नाथै—वश में करे। ऊनत्थां—जो बंधन नहीं मानते उनको। दहलां—भयजन्य, कम्पन। बीजा नूं—दूसरों को। अणरेस—अजय, अपराजित। बांकौ—विकट। मेवासौ—निवास स्थान। ओठंभ—रक्षक, आश्रयदाता।

चावा खाग त्याग दिस चारौं, करणां दान हमेस करां।
मोकळसर बांको मेवासौ, निज ओठंभ चतुरेस नरां ।।४।।

—जाला सांदू रौ कह्यौ

६६. गीत अमरसिंघ उदावत नींबाज रौ

बाजै रण तूर नगारा गाजै, अनड़ पड़ै पड़गाज।
अमर तणा दळ देख अवाजै, भाजै अरि घड़ पड़ै पुड़ भाज ।।१।।

हुबकै हथनाळि हवाई हुबकै, धूबै धोम सळसळै सोर।
संकै सत्र सबळा तणी सुण, ठावी निहस निसांणै ठोर ।।२।।

---

६६. गीतसार—यह गीत मारवाड़ के नींबाज ठिकाने के ठाकुर अमरसिंह के अजमेर में शाही सेना के विरुद्ध लड़े गए युद्ध का है। इसमें लिखा है कि रण तूर्य और नगाड़ों की आवाज से पर्वत प्रतिध्वनित होने लगे। अमरसिंह के युद्धार्थ सज्जित योद्धाओं के भय से शत्रु सेना डर कर रणस्थल त्याग कर भाग गई। और वह वीर विजय की हर्ष के बाजे बजवाता हुआ जोधपुर लौट आया।

---

४. चावा—चाहने वाला, शौकिन। करां—हाथों से। मोकळसर—जोधपुर के जालौर संभाग के एक ठिकाने का केन्द्र स्थान। वांको—विकट। मेवासा—स्थान। ओठंभ—आश्रयस्थल। चतुरेस—चतुरसिंह के।

१. वाजै रणतूर—रणतूर्य बजे। नगारा गाजै—नगाड़ों ने गर्जना की। अनड़—पर्वत। पड़गाज—प्रतिगर्जन, प्रतिशब्द गर्जन। भाजै—दौड़े, नाश करे। अरि घड़—शत्रु सेना। पुड़—पृथ्वी तल।

२. हुबकै—छूटे, गर्जन करे। हथनाळि—तोपनुमा छोटी बन्दूकें। धूबै—प्रज्वलित हुवे, प्रचंड होना। धोम—धूम। सळसळै—सुलगने का भाव। सोर—बारूद। सत्र—शत्रु। ठावी—निश्चितता की, ठीक निशाने की। निहस—ध्वनि, चोट गर्जन। निसांणै—नगाड़े वाद्य। ठोर—ध्वनि।

आखर अरि पड़ै नीभड़े उछड़े, धड़हड़ धूजै रिमां धड़।
सेरण भेर भयाकुळ सांमत, दुलहल ची धार कि दुजड़ ।।३।।

पांये सहि लाइ प्रथी पत, पधोरे धर प्रघळ ले पेस।
बाजे जैत्र तणै वाजन्ते, आयौ जैत करै अमरेस ।।४।।

१००. गीत ठाकर सुरताणसिंघ उदावत नींबाज रौ

सुपह मान घैंसाहरां सिलह तन साभियां,
गजर डंका जाहरां त्रम्वागळ गाजियां।
बीजळां थाहरां घेरतां वाजिया,
बरूथां नाहरां जेम नींबाजिया ।।१।।

---

१००. **गीतसार**–प्रोक्त गीत जोधपुर के नींबाज ठिकाने के ठाकुर सुरतानसिंह उदावत राठौड़ की रण-वीरता का द्योतक है। गीतनायक ने जोधपुर की सेना द्वारा घिर जाने पर बहादुरी के साथ आक्रान्ताओं का सामना करते हुए प्राणोत्सर्ग किया था। गीत में गीतनायक द्वारा प्रदर्शित वीरता का वर्णन किया गया है।

---

३. नीभड़े–कटकर अलग पड़े,संधि विहीन हुए। उछड़े–उखड़ कर,भागकर। धड़हड़–कंपन की ध्वनि। धूजै–कांपते हैं। रिमां धड़–शत्रुओं के शरीर। भयाकुळ–भयभीत, भय से व्याकुल। ची–की। दुजड़–तलवार।

४. पाये–चरणों में। सहि–सब। लाइ–लाकर, उपस्थित कर। पाधोरे–सीधे, आये। प्रघळ–अधिक। पेस–भेंट। बाजे–वादित्र। जैत्र तणै–विजय के। जैत करै–विजय प्राप्त कर।

१. सुपह मान–महाराजा मानसिंह जोधपुर ने। घैंसाहरां–सैन्यदल को। सिलह–कवचादि। साभियां–सज्जित कर। गजर डंका–प्रभात कालीन घड़ियाल की ध्वनि। त्रम्बागळ–नगाड़े। गाजियां–निनाद करने लगे, बजने लगे। बीजळां–तलवारें। थाहरां–किला, यहां नींबाज ठिकाने की जोधपुर स्थित हवेली से अभिप्रायः है, कंदरा। घेरतां–चारों ओर से घेरे में लेते समय। बाजिया–टक्कर लेने लगे, लड़ने लगे। बरूथां–सेनाओं से। नाहरां जेम–सिंहों की तरह। नींबाजिया–नींबाज ठिकाने वाले।

हड़हड़ै वीर बैताल वागो हको,
धड़हड़ै आतसां पड़ै मयंदा धको।
जमस किम खाय खगधार बहतौ जको,
सिरायत जोधपुर तणां वाजै सको ॥२॥

मछर धर मंझ सूर सत सुजळ माटकां,
कर सधर ध्यान गिरधर अकाटकां।
दुछर नर अडर हर हर उचर दाटकां,
फाटतां फजर वागौ गजर फाटकां ॥३॥

भड़ खगां छछोहां भीच छेटी भनैं,
विहंग जेठी समर खांचियौ बाज नैं।
गजां घेटी तरह झाड़ता कुलंग नैं,
कणेठी सूर सुरतांण जेठो कनैं ॥४॥

---

२. हड़हड़ै–हंसने की ध्वनि। वीर बैताल–बावन वीर, वैतालादि शिव के गण। वागो हको–हाक हुई, शोरगुल मचा। धड़हड़ै–धड़क कर, धड़धड़ आवाज कर। आतसां–अग्नि, तोपें। मयंद–हाथियों। किम–कैसे। खगधार–खड्गाघात। वहतौ–होते, चलते। जको–जो, वह। सिरायत–अव्वल पंक्ति के सरदार, जोधपुर में प्रथम पंक्ति के ठिकाने वाले सिरायत कहलाते थे जिन में नींबाज भी एक था। तणां–का।

३. मछर–मात्सर्य, गर्व। माटकां–कुलके, घटके। सधर–धैर्य धारण कर, धीरता पूर्वक। दुछर–सिंह। हर हर–शिव शिव। उचर–उच्चारणकर। फाटतां फजर–प्रातःकाल होते ही। वागौ–बजा, लड़ने लगे। गजर–निरन्तर प्रहार। फाटकां–द्वार के किवाड़ों या फाटक पर।

४. भड़–टक्कर लेकर, योद्धा। खगां–तलवारों। छछोहां–उत्युत्साही। भीच–योद्धा। छेटी–दूरी, अन्तर, अन्तिम। विहंग जेठी–गरुड़ के अग्रज अरुण ने, सूर्य के सारथी अरुण ने। समर–युद्ध में। खांचियौ बाज–की लगाम खींचकर सपातश्व घोड़े को स्थिर किया। गजां–हाथियों को। घेटी–गर्दनें, कण्ठों महिष। झाड़ता–काटकर गिराते। कुलंग–मुर्गे को। कणेठी–कनिष्ठ, अनुज। सूर–शूरसिंह। सुरतांण–सुरतानसिंह। जेठी कनैं–जेष्ठ भ्राता के पास।

अंक डाळी झड़ै निराताळी अघट,
नद वहै कराळी रुधर वाळी निपट।
बीर ताळी वजै उताळी रण विकट,
नचै काळी सहत कपाळी जांण नट ।।५।।

२०१. गीत ठाकर सुरतांणसिंघ उदावत नींबाज रौ

चाळां महीप रचातां चूक भाराथ मचायौ चौड़े,
खींचायौ ऊदांणी आदू प्रवाड़ा खटैत।
जमां सोर गंज परां भगायौ बासदे जांण,
पौढ़ियोड़ौ किनां जगायौ पटैत ।।१।।

---

२०१. गीतसार–उपरांकित नींबाज के ठाकुर सुरतानसिंह उदावत्त राठौड़ पर लिखा हुआ है। सुरतानसिंह जोधपुर के शासक मानसिंह की सेना से लड़कर वीरगति को प्राप्त हुआ था। यह युद्ध जोधपुर नगर स्थिति नींबाज की हवेली पर लड़ा गया था। सुरतानसिंह अपने भाई शंभूसिंह और अन्य सैनिक सरदारों सहित जूझकर धराशायी हुआ था। गीत में युद्ध का चित्रात्मक वर्णन हुआ है।

---

५. झड़ै–झड़ना, गिरना। निराताळी–भयंकर। अघट–निरंतर। नद वहै–नदी बहती है। कराळी–विकराल रूप धारण किए। रुधरवाळी–लोहू की। बीरताळी–बावन वीर ताली बजाते हैं। उताळी–सत्वरता से, शीघ्रता से। नचै–नृत्य करते हैं। काळी सहत–कालिकादेवी सहित। कपाळी–रुद्र, महादेव। जांण–मानो। नट–नर्त्तक. एक जाति विशेष का व्यक्ति।

१. चाळां–युद्ध, खेल। महीप–राजा, महाराजा मानसिंह। रचातां–रचना करते, शुरु करते। चूक–मारने, छलाघात, धोखा। भाराथ–युद्ध। चौड़े–खुलेआम। ऊदाणी–उदावत प्रशाखा का राठौड़ वीर सुरतानसिंह ने। आदू–आदिकालीन। खटैत–प्राप्त करने वाला। जमां–जमा हुआ। सोर–बारूद। गंज–ढेर, राशि। बासदे–अग्नि। किनां–किंवा, अथवा। पटैत–सिंह को।

ठांम ठांम तोपां तणौ जाळ रै मोरचे ठहै,
धूबै जेठ आदीत माळरै वाळी धूप ।
हल्ले बांधचाळ रै हवेली माथै हुवौ हाकौ,
सुरत्तांण रूप महाकाळ रै सरूप ।।२।।

छायौ धूंवाघौर गैण अरावां अंगार छूटै,
तूटै मानों नौलाख नखत्रां गोळा तेम ।
फूटै घौर हूंतां कै सफीळां आर पार फूटै,
ऊठै लागौ हजारां लोक रौ हल्लो अेम ।।३।।

क्रोधंगी सिंभू रै साथ सहत्थां केसरियां कीधा,
खळां माथे लीधां खाग अमोघां अखूट ।
प्याला भरै चौगणां गाळवां आगराई पीध,
दीधा आसमेद रा पांवंडा भड़ां दूट ।।४।।

---

२. ठांम ठांम—जगह जगह । जाल रैं—जाल-सा । ठहै—स्थापित किए, बनाए । धूबैं—धधके, जले । जेठ आदीत—जेष्ठ का सूर्य । माळ—माला, किरणें । धूप—अग्नि, आतप । बांधचाळ—वस्त्र का छोर बाँधकर । माथैं—पर । हाकौ—हल्ला, आक्रमण ।

३. गैण—आकाश । अरावां—तोपों से । अंगार—अग्निकण, गोले । छूटैं—छूटते हैं । तूटैं—टूटे । नखत्रां—नक्षत्रों । तेम—त्यों । फूटैं—फूटे, पार निकले । हूंतां—से । सफीलां—दिवालें । आर पार—इधर से उधर । ऊठै—वहां, होने लगा । अेम—यों, इस प्रकार ।

४. क्रोधंगी—सक्रुद्ध । केसरियां—केशर के रंग में रंगे हुए वस्त्र पहिन कर, यह पोशाक योद्धागण युद्ध में जूझ कर मरने के निश्चय के साथ धारण करते थे । खळां—दुष्टों, वैरियों । अमोघां—अचूक । अखूट—अपार, अखंडित । चौगणां—चार गुनें । गाळवां—पानी में घोल बनाया हुआ । आगराई—अफीम । आसमेद—अश्वमेध यज्ञ । पांवंडा—कदम, पैर । भड़ां दूट— दुघर्षवीर ।

हुवै हाक डाक वाक कायरां ऊबकै हियो,
डक डकै भैरवी वजावै रुद्र डाक।
धुकै ज्वाळा चसम्मा झड़ै कै खळां फूलधारां,
छकै घावां बकै कै दुवारा वाळी छाक ।।५।।

लूथबत्था हुवा कै खंजरां मार धरा लूटै,
प्राण छूटै वरै कै अच्छरां करै प्रीत।
तूटै सीस जूटै कै अकारा सूर नंगी तेगां,
रुद्र धारा छूटै कै फुहारां वाळी रीत ।।६।।

करै घाव छछोहा छटाका टूट झड़ै केई,
पड़ै केई उथल्लै अळूझै अंत्र पांय।
परी रत्थां चढ़ै केई खवां धू हिंडोळे पेचां,
खांगी बंधे लड़ै केई ऊठै झोक खाय ।।७।।

---

५. हाक–हल्ला। डाक–डमरू की ध्वनि। वाक–वाणी। ऊबकै–वमनकरे, घबरावे। हियो–हृदय। डकडकै–डक डक की ध्वनि, पानी अथवा रक्त को कण्ठ से पीने पर होने वाली आवाज। भैरवी–दुर्गा। डाक–ढाक वाद्य। धुकै–धधके, जले। चसम्मा–नेत्रों में। झड़ै–कटे, धराशायी हुवे। फूळधारां–तलवार की धाराएँ। छकै घावां–घावों से परिपूर्ण हुए, घावों से तृप्त हुए। बकै कै–कतिपय अंटसंट बकते हैं। दुवारा वाळी छाक–दोबार भट्टी से निकली हुई शराब पिये हुओं की तरह, मदमस्त की भांति।

६. लुथवत्था–गुत्थम गुत्थी। खंजरां मार–खड्गों की चोटों से। धरा लूटै–पृथ्वी पर लौटते हैं। वरै–वरण करते हैं। कै–कई। अच्छरां–अप्सराओं से। तूटै सीस–खण्डित शीश हुए। जुटै–जुड़ते, भिड़ते हैं। अकारा–उतावले, कठोर, तीव्र। नगी तेगां–नग्न तलवारों से। रुद्र धारा–रक्तधारा।

७. छछोहा–उत्साही, फुर्तीले। छटाका–बिजली के, तलवार के। टूक–टुकड़े। झड़ै–कटे, पड़ते। उथल्लै–उलटकर। अळूझै–उलझकर, फँसकर। अंत्र–आंतें। पांय–पैर। परी–अप्सराओं के। रत्थां–रथों, विमानों पर। खवां धू–मस्तक और कंधों पर। हिड़ोळे–हिलोरें लेते, झूलते। पेंच–पगड़ी के आंटे। खांगी बंधे–बाँए हाथ से पगड़ी बाँधने वाले, राठौड़। झोक–झुकते हुए, लड़खड़ाकर।

मावै नकौ सुरां रा विमांण झूले गैण मग्गी,
खेत जग्गी बावनेस चलै रुद्र खाळ।
लेण छाकां मांहि पत्र जोगणी भरेवा लागी,
तीन पौर वागी धू जनेवां निराताळ ।।८।।

पाड़ घणां पोढ़ियौ भाराथ बीच वरांपूर,
रोखंगी पाराथ जेम करे घौर राड़।
साथ बीच सरारा झड़ै कैं खागां सूर,
अेम पड़ै ऊदो नवै-कोटां रौ औछाड़ ।।९।।

ऊदो प्रव पायौ जको इतै भांण तपैं इळा,
थायौ थको भुजां खत्री पणां वाळौ थोक।
भाई भड़ां समेळां बधारे तोल इन्द भारी,
लीधां सती साथ ही पधारे देवलोक ।।१०।।

---

८. मावैं नकौ–समाहित नहीं होते, कोई कोई बैंठने का स्थान नहीं मिलता। सुरां रा–देवताओं के। गैंणमग्गी–आकाश पथ में। खेत जग्गी–रणक्षेत्र जाग्रत हुआ। बावनेस–बावन वीर। छाकां–छाक, रुधिर के प्याले। भरेवालागी–पूर्ण करने लगी। वागी–चली, वजी। धू–मस्तकों। जनेवां–तलवारें। निराताळ–निर्विलम्ब, निरन्तर भयंकर।

९. पाड़–पछाड़कर, धराशायी कर। पोढ़ियौ–रणभूमि में सोया, मारा गाया। भाराथ–युद्धस्थल। वरांपूर–वरों की इच्छायें पूर्ण करं वीर। रोखंगी–रोषीला। पाराथ–अर्जुन। राड़–युद्ध। औछाड़–ढ़ाल, रक्षक, छाया करने वाला।

१०. प्रव पायौ–पर्व प्राप्त किया। जको–जो, वह। भाण–भानु। इला–पृथ्वी। थायौ–स्थापित, हुआ। थको–रहते हुए। खत्री पणां–क्षत्रियत्व। थोक–समूह। समेळां–शामिल। बधारे–स्वागत किया, बढ़ाकर। लीधां–लिए हुए।

१०२. गीत ठाकर सुरतांणसिंघ उदावत री ठकुराणी रौ

वाजै त्रंबाळा जूझ रा डंका गाजै बौम वकै वीर,
अड़ै जंगां झड़ै अंगां तोड़ रिमां आव।
कंथ सुरां मंदरां पधारो महासती कहै,
रंभा कहै विमांणां पधारो मारू राव ॥१॥

डाक चमू वजाड़ै धपाड़ै गीधां गळां डळां,
बीजूजळां भुजांबळां भांजे खळां बीह।
अच्छरां अरज्जां करै आंटीला विमांणां आवौ,
अंगहोमां कहै ऊभी आवौ पुरां ईह ॥२॥

---

१०२. गीतसार—उपरिलिखित गीत नींवाज के स्वामी ठाकुर सुरतानसिंह उदावत की वीर ठकुरानी चौहानजी पर रचित है। गीतनायिका ने अपने पति के युद्धस्थल पर मारे जाने के बाद उसके शव को गोद में लेकर अग्नि प्रवेश किया था। वह जोधपुर के बोसलपुर ठिकाने के राव दुर्जनसिंह की राजकुमारी थी। गीत में कवि ने अप्सराओं और सती के वर प्राति के सम्बाद का वर्णन किया।

---

१. वाजे त्रम्वाळा—युद्धकारी नगाड़े बजे अथवा वाद्य बजने लगे। डंकां गाजे—दण्डकों की चोट से ध्वनित हुए। बौम—व्योम में, आकाश में। वकै वीर—हर्ष से बोलने लगे। अड़ै जंगां—युद्ध में अड़कर, हठ ठानकर। झड़ै अंगां—अंग प्रत्यंग कट पड़े। तोड़—तोड़कर, भंजित कर। रिमां आव—वैरियों की आयु को। कंथ—पति, कान्त। सुरां मंदरां—देव प्रासादों में, स्वर्ग लोक में। रंभा—अप्सरा। मारूराव—सुरतानसिंह राठौड़ कुलोत्पन्न होने के कारण उसे मारवाड़ का राव कहा गया है।

२. डाक—ढाक वाद्य। चमू—सेना में। बजाड़ै—बजवाए। धपाड़ै—तृप्त किए। गीधां—गृद्धों को। गळां डळां—मांस के टुकड़ों, मांस पिण्डों से। बीजूजळां—कृपाणों। भांजे—संहार किये। खळां—वैरियों। बीह—डरपोक, भयभीत कर। अच्छरा—अप्सरा। अरज्जां करै—निवेदन करती हैं। आंटीला—आंट रखने वाले, हठीला। अंगहोमां—सती शरीर होमने वाली। ऊभी—खड़ी हुई। पुरा इह—इस पुरी में, ईशपुरी, स्वर्ग में।

हमैं घणी वेळां हुई अढ़ंगौ भाराथ व्हैतां,
सावळां घमोड़ां दैता व्हैतां सरां सोक।
इन्द्र री परी वरम्माळा रळै गळे रथां ग्रावौ,
लीजै हवा ग्राखै ऊदा चालो सती लोक।।३।।

छत्रधारी दूजा जगां धराथंभ ऊदां छात,
सिंभू रा सिंघळी दौलाहरा सुरत्तांण।
कळे मेट पधारीजै लीजै प्याला सती कै छै,
ग्रावौ चहुवांण दै छै चावडा री ग्रांण।।४।।

दोहूं पखां चाढ़ नीर ग्राग झाळां होम देही,
पला नेह बधाड़ै हटाड़ै ग्रंग पोख।
कंथ साथ दुरज्जेस धीया खमां खमां कहती,
लेती प्याला ग्रमी रा पधारे सती लोक।।५।।

—वना खिड़िया रौ कह्यौ

---

३. हमैं—ग्रब। घणी वेळां—बहुत समय। ग्रढ़ंगौ—बेढ़ंगा, विकट। भाराथ व्हैतां—युद्ध होते हुए। सावळां घमोड़ां—भालों की चोटें। सरां सोक—बाणों के चलते समय होने वाली ध्वनि। इंद्र परी—इन्द्र की ग्रप्सरा। राळै गळे—गले में डालती हैं कंठों पर पहिनाती है। रथां—विमानों में। ग्राखै—कहती है। ऊदा—हे उदावत, सुरतानसिंह।

४. छत्रधारी—राजा, बड़ा सरदार जिसके शीश पर छत्र रहता है। दूजा जगा—द्वितीय जगरामसिंह। धराथंभ—पृथ्वी की रक्षा के लिए स्तभं तुल्य। ऊदां छात—उदावतों के शिरोमणि। सिंघळी—श्रेष्ठ, सिंह। दौलाहरा—दौलतसिंह के पौत्र। सुरत्तांण—ठाकुर सुरताणसिंह। कळे—कलह, युद्ध। मेट—मिटाकर, समाप्त कर। चावंड री ग्रांण—देवी चामुण्डा की दुहाई, चामुण्डा राठौड़ों की कुलदेवी है।

५. दोहूं पखां—दोनों पक्ष, पितृ ग्रौर पतिपक्ष। चाढ़ नीर—गौरवान्वित कर, कान्ति चढ़ाकर। ग्राग झाळां—ग्रग्नि की लपटों में, चिता में। होमदेही—शरीर का हवन कर। पला—ग्राञ्चल, गठजोड़ा, पति के प्रति। नेह—स्नेह, प्रीति। बधाड़ै—बढ़ाकर। हटाड़ै—हटाकर, दूर। पोख—पोषण। दुरज्जेस धीया—दुर्जनसिंह की पुत्री। खमां खमां—क्षमा क्षमा, राजपूतों में ग्रपने से सम्मान, ग्रायु, पद ग्रादि में बड़े को 'ख़मांघणी' कहकर ग्रभिवादन करने का प्रचलन है। ग्रमी रा—ग्रमृत के। पधारे—पधार गई।

१०३. ठाकर रूपसिंघ उदावत रायपुर रौ

कीजै नींब री घूंट ज्यूं पीजै प्यालो काळकूट केम,
मणां तोलियां तुलीजै केम मेर।
बीजौ किलो पांतरे अमीरदौलो घेर बैठो,
न जावै भेळियौ किलो रायांनेर।।१।।

दगै तोपां बहै गोळां होहल्ला मोरछां दौळां,
जोर लार सकै सूता सेर नूं जगाय।
भुरज्जाळ वांकड़ो वींटियौ दूजां गढ़ां भोळै,
लोहा जाळ धसै केहौ नसैणी लगाय।।२।।

---

१०४. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत मारवाड़ के रायपुर ठिकाने के ठाकुर रूपसिंह उदावत द्वारा नवाव अमीरखाँ के रायपुर किले को घेरने पर लड़े गए युद्ध पर कहा हुआ है। गीत में लिखा है कि अमीरखाँ ने अन्य किलों की भाँति सहजता में जीतने की धारणा से रायपुर पर घेरा डाला परन्तु वह ऐसा सुदृढ़ एवं वीरों द्वारा रक्षित था कि उस पर विजय नहीं पा सका। भला, सुमेरुगिरी भी कहीं मन के बाटों से तोला जा सकता है। अन्ततः नवाव को निराश होकर वहाँ से घेरा उठाना पड़ा।

---

१. नींव री–निंब की, कड़वा। काळकूट–विष। मणां–मन के बाट। केम–कैसे। मेर–शृंग, सुमेरुगिरि। बीजौ–दूसरो, अन्य। पांतरे–भूल से, भ्रमवश। अमीरदौलो–नवाब अमीरखाँ टोंक वालों का पूर्वज। घेर बैठो–घेर लिया। भेळियौ–हस्तगत करना, कब्जा करना। रायांनेर–रायपुर।

२. वहै–चलते हैं। दौळां–आसपास, चौतरफ। सूता–नींद में सोये को। नूं–को, ने। भुरज्जाळ–किला। वांकड़ों–विकट। वींटियौ–घेरा। भोळै–भोलेपन से। धसै–प्रवेश करके। नसैणी–सोपान, सीढ़ी।

लेर बीड़ो लीधी जिकां पूनां री संपदा लूट,
　　फरूकाबाद नै कीधी खाख साफ फेर।
तिकां लेवियै देर हल्लो न कीधौ बजाड़ तासा,
　　ऊदारा पोतां रौ कोट दूसरो आसेर ।।३।।
रायांनेर बज्र सो वणायौ गाढ़े राव रूपै,
　　आयौ श्रीगोपाल बेल चाढ़े बंस आव।
हजारां रसाला वाढ़े अखाड़ां दिखाया हाथ,
　　नबी री कसम्मा काढ़ै वखाणै नबाव ।।४।।

—वांकीदास आसिया रौ कह्यौ

१०४. गीत राउत भीमा रताउत रौ सेतरावा रा जुद्ध रौ

निहसावै सुहड़ि न्रिभे निय नाइक, समहरि भोमि ऊछजे सार।
रिण गहिले फेरियौ रताउति, सेत्रावै ऊपरि संघार ।।१।।

---

१०४. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत रावत भीम रता के पुत्र पर कथित है। गीत में रावत भीम द्वारा सेतरावा ग्राम पर आक्रमण कर वहाँ के स्वामी मोकल और अचल (अचलदास) को रणक्षेत्र में मारने का वर्णन हुआ है। यह भी संकेत दिया है कि उसने सेतरावा के किले को ध्वस्त कर उस स्थान को समतल बना दिया।

---

३. लेर बीड़ो—बीड़ा लेकर, प्रण धारण कर। जिकां—जिन्होंने। पूनां री—पूना नगर की। खाख साफ फेर—मिट्टी में मिला दिया। तिकां—उन्हें। लेवियै—विजय करने में। बजाड़ तासा—तासे नामक वाजे बजवा कर। ऊदा रा—उदयसिंह के। पौतां रौ—वंशजों का। आसेर—किला।

४. गाढ़ेराव—विकटवीर। रूपै—रूपसिंह ने। बेल—सहायता पर। चाढे बंस आव—कुल को कीर्तिमान कर। रसाला—घुड़सेना। वाढ़े—काटकर। अखाड़ा—युद्धभूमि में। कसम्मा—शपथ। काढ़ै—निकाले, खाते हैं।

१. निहसावै—जोश दिलवाकर। सुहड़ि—सुभट, योद्धा। न्रिभे—निर्भय। निय—निज, अपने, निकट। समहरि—युद्ध। ऊछजे सार—प्रहार के लिए तलवार अथवा शस्त्र ऊपर उठाकर। रिण गहिले—रणोन्मत्त। फेरियौ—घुमाया। रताउति—रता अथवा रतनसिंह का पुत्र गीतनायक रावत भीम। सेत्रावै—सेतरावा नामक स्थान। संघार—संहार, नाश।

नाठै तोइ थळ घणी न छूटै, कळहणि काळ बिलागो कांस ।
भुंइ अविहड़ां तणी भीमाजळि, घण झूंझारि फेरियौ घांस ।।२।।
मोकळ अचल पाड़िया मांझी, गह तजि बीजा सुहड़ि गया ।
कमधजि भला थळेचां कैरा, कोट बेंट सैंलोट किया ।।३।।

—नांणद वारहठ रौ कह्यौ

१०५. गीत कचरा राठौड़ रौ विवाह रा रूपक रौ

पड़ जन पतसाह जांन पतसाही, चहुं वेद स ढुळता चंमर ।
गावै अच्छर रंभण गहमह, कचरौ परणीजै कंवर ।।१।।

---

१०५. गीतसार—कवि ने उपरांकित गीत में वीर कचरा जसवंतसिहोत द्वारा लड़े गए युद्ध का विवाह के साथ रूपक रचा है । गीत में वर्णन किया है कि शाही सेना के रूप में बारात है और बादशाह उसमें बड़ा बराती है । चारों ओर झल रहे चंवरों की क्रियाएँ चारों वेदों की ध्वनि है । गायनिएँ अप्सराएँ हैं । ऐसे युद्ध रूपी विवाह का दुलहा कचरा विवाह कर रहा है ।

---

२. नाठै तोई—भागकर अन्यत्र जाना चाहे तो भी । थळ—स्थल, बालुकामयी भूमि । घणी—बहुत । न छूटै—पीछे छोड़कर नहीं जा सकते, छोड़ी नहीं जा सकती । कळहणि—युद्ध में । काळ—यमराज । बिलागो—विशेष रूप से लगा, सलग्न हुआ । कांस—भाला शस्त्र । भुंई—भूमि । अविहड़ां—मजबूत, जबरदस्त । तणी—की । भीमाजळि—गीतनायक रावत भीम । घण—घने । झूंझारि—जूझार, वीर । घांस—फंदा, तीर, भाला या बर्छे की नोक ।

३. मोकळ अचळ—मोकल और अचल जो सेतरावा ग्राम वालों में प्रमुख थे । पाड़िया—रणस्थल में मार गिराए । मांझी—मुखिया । गह—गाढ़, दृढ़ता, गर्व । बीजा—दूसरे लोग । सुहड़ि—बहादुर, वीर । थळेचां—थल प्रदेश के । कैरा—के । थळे चां कैरा—थल में युद्ध लड़ने वाले । कोट—किला । बेंट—बल, बैठकें । सैंलोट—समतल, भूमि के बराबर ।

१. पड़जन—अपर बराती, बड़े बराती । जांन—बरात । चहुं वेद स ढुळता चंमर—चारों वेदों के पाठ रूपी चंवर ढुलाए जारहे हैं । चहुंवे दस ढुळता चंमर—चारों दिशाओं में चंवर झल रहे हैं । अच्छर—अप्सरा । रंभण—रम्भाएँ, रमण । गहमह—जलसा, भीड़ । परणीजै—विवाह करता है ।

पेखण कमंध कळह परणांवण, लिखिया रुद्र नारद लगन ।
जोगणपुरा मांडही जांनी, जोगणपुर रचियौ जगन ।।२।।
तीर ग्रखत ढाल गज तोरण, चहुँ दस कळळ स मंगळाचार ।
चौंरी वडी पेखियै चकतें, करण कळोधर राजकंवार ।।३।।
पौढ़ि पिलंग चाव सति पाथर, रहे महल विच घणौ रस ।
तोनैं दियौ हिंदवे तुरके, जसवंत रा मांड चै जस ।।४।।

१०६. गीत सुन्दरदास गोगादे राठौड़ तेना रौ

थह मूंजा तणी ग्रांवळां थाटां, बांका भड़ कूदणां ब्रहास ।
चलतौ ग्रनड़ थळेचौ चौरंग, दुजड़ हथां भड़ सुन्दरदास ।।१।।

---

१०६. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने तेना के स्वामी सुन्दरदास की वीरता का वर्णन किया है । वह कहता है कि वीर सुन्दरदास सुसज्जित सैन्य दल के बल पर मंडोवर के समीप तक के ग्रामों का लगान लेता है। वह देश की रक्षा के लिए ग्रर्गला तुल्य है ।

---

२. पेखण—देखने । कमंध—राठौड़ । कळह—युद्ध । परणावण—विवाह करने । लगन—लग्न, विवाह की रस्म विशेष । जोगणपुरा—योगिनीपुर वाले, दिल्ली के बादशाह । मांडही—कन्यापक्ष वाले । जांनी—वरात पक्षीय । जगन—यज्ञ, विवाह ।

३. तीर ग्रखत—बाण रूपी ग्रक्षत । कळळ—कोलाहल, घोड़ों का कोलाहल । मंगळाचार—मांगलिक कार्य । चौंरी—चंवरी । चकते—मुसलमान, बादशाह । करण कळोधर—कर्णसिंह की कला को धारण करने वाला, कर्णसिंह के कुल का उद्धारक ।

४. पौढ़ि—पलंग पर पौढ़ कर । चाव—उमंग, चाह । पाथर—सोया हुग्रा । घणौ रस—ग्रधिक प्रेम । तोनैं—तुमको । जसवंत रा— हे जसवंतसिंह के पुत्र कचरा । मांड चैं—मांड के, कन्यापक्ष के लोगों ने ।

१. थह—दुर्ग । मूंजा तणी—मुञ्जराज की । ग्रांवळां थाटां—सुसज्जित सेना, विकट सेना । बांका—विकट । भड़—भट्ट, योद्धा । ब्रहास—घोड़े । चलतौ—चलता हुग्रा । ग्रनड़—पर्वत । थलेचौ—थली प्रदेश का स्वामी । चौरंग—चतुरंगिनी, फौज । दुजड़ हथां—तलवार धारी ।

महमा सधण अभनमौ मेहो, घण ताय नेतर लाज घणा ।
भड़ां कमाड़ लोहमी भागळ, तेनो आगळ देस तणी ।।२।।
जडळग हथो साथ थी जाडै, मछर सपूर नभ्रै मणौ ।
मुरधर वरग नचीता माल्हो, तांडै आडो रांम तणौ ।।३।।
खेतल हरौ मंडौवर खेडां, भड़ां किंवाड़ लहै धर भोग ।
वणियौ पाट सहसमल वीकै, गहियां खाग कळोधर गोग ।।४।।

१०७. गीत रावल पूंजा गहलौत डूंगरपुर रौ

नमौ भाळ रा सूर गहलौत रावळ निडर,
उरड़ खत्रवाट पौरस उमाहे ।
काजळी रमंतां ऊजळी कटारी,
वीजळी ऊपरां तूं हीज वाहे ।।१।।

---

१०७. गीतसार—उपर्युक्त गीत रावल पुंजराज सीसोदिया डूंगरपुर पर रचित है । इस में कवि ने श्रावणमास में आकाश से कड़कती पृथ्वी पर पड़ी बिजली पर गीत नायक द्वारा कटार से प्रहार करने का वर्णन किया है । कवि ने उत्प्रेक्षा की है कि पृथ्वी की बिजली (कटारी) से घायल हुई आकाश की बिजली चोट खाकर बादल में जा छिपी ।

---

२. महमा—महिमा । अभनमौ मेहो—अभिनव मेहराज, सुंदरदास । घण—अधिक । ताय—उसके, ताप । नेतर— नेत्रों में । घणी—घनी । कमाड़—कपाट, रक्षक । लोहमी—लोहे की । भागळ—भुजागळ, अर्गला । तेनो—तेना स्थान । आगळ—अर्गला । तणी—की ।

३. जड़ळग हथो—खड्गधारी योद्धा । जाडै—घने । मछर—गर्वीला, अहंकारी । नभ्रै मणौ—निर्भीक मन वाला, निशंक । वरग—वर्ण, जाती । नचीता—निश्चिन्तता से । माल्हो—घूमोफिरो, चलो । तांडै—दहाड़ता है । आडो—अवरोधक, ओट बना हुआ । रांम तणौ—रामसिंह का पुत्र सुंदरदास ।

४. खेतलहरौ—खेत (क्षेत्रसिंह) का पौत्र सुंदरदास । खेडां—खेतों का, युद्ध । लहै—लेता है, वसूल करता है । धर भोग—भूमि का लगान । पाट—राजगद्दी । गहियां—धारण किए, पकड़े । खाग—तलवार । कळोधर गोग—गोगादे की शक्ति को धारण करने वाला, गोगादे के कुल का उद्धारक, सुंदरदास ।

१. भाळ रा—ललाट का, भाग्यशाली । रावळ—रावल उपटंकधारी पुंजराज । उरड़—साहस, बल पूर्वक प्रवेश करने की क्रिया का भाव । खत्रवाट—क्षत्रियत्व । उमाहे—उमंग में भरकर । काजळी—कजली तीज । रमंतां—खेलते । बीजळी—विद्युत । वाहे—वार करे ।

लाय धर अंबर री दोय जाणै लड़ी,
खड़हड़ी दोय जांणै अड़ी खीज ।
कहर श्री पुंज रावळ जड़ी कटारी.
बीज ऊपरि पड़ी दूसरी बीज ।।२।।

करै ऊछांह मंगळ धमळ कांमणी,
हौंस रळियामणी राग रंग होय ।
सांमणी तीज तिण दीह जड़की सुजड़,
दामणी तणै अध्रियामणी दोय ।।३।।

भमे धर पाट मुरछ हुव अवर भड़,
धम धमे घाट गोळां जिही धीज ।
कसि करि दळै तायळ हुई कटारी,
बादळ धसी घायल हुई बीज ।।४।।

---

२. लाय–प्रचण्डाग्नि । धर अंबर री–पृथ्वी और आकाश की । खेड़हड़ी–चमकी, टक्कराई, गिरी । अड़ी खीज–रुष्ट होकर जा भिड़ी । कहर–विपत्ति में । जड़ी–चलाई । बीज–विजली ।

३ ऊछाह–उत्सव । मंगळ धमळ–मांगलिक गायन । कांमणी–नारियाँ । हौंस–इच्छा, उमंग । रळियामणी सुन्दर–सांमणी तीज–श्रावणमास की तृतीया । तिण दीह–उस दिन । जड़की–प्रहार की । सुजड़ी–कटारी । दामणी–दामिनी, विजली । अध्रियामणी–भयानक, डरावनी ।

४. भमे–भ्रमण करे । मुरछ–तीन । हुव–होवे । अवर–अन्य । भड़–योद्धा । धम धेम–धमाके से छूटे । धीज–प्रतिस्पर्द्धा, धैर्य । दळै–म्यान, खण्ड होकर तायळ–उग्र, तीक्ष्ण ।

१०८. गीत आना गहलौत रौ आखेट रौ

गिड़ अर गहलौत अनड़ सिर गाजै, वाजै दहूं तणा हथ बाढ़।
अेकळ गुड़ै गुड़ै दी ओखळ, जड़ि गुड़ै गुड़ै जमडाढ़।।१।।

आनै अेकळ अढंगी अेहुवै, जंग जड़ियाळ न चूका जाड़।
अणभंग अलंग हूंत ऊतरिया, फलंग फलंग करता अंग फाड़।।२।।

वाही वेहुवै हंस विछूटां, रिणवट थट तांहे करट।
सूरां अलट पलट वीचि साझे, डाढ़ा झपट जमडढ़ झपट।।३।।

चूर हुवै तन तीस चलाणी, पोहो पैंतीस चलाणी पूर।
दीठां सूर वखांणै दहुंवै, सूर सराहे दहुंवै सूर।।४।।

---

१०८. गीतसार–कवि ने उपर्युक्त गीत में क्षत्रियों की गहलोत शाखा के वीर आना की शूकर आखेट पर रचा है। इसमें वाराह और आना दोनों के गिरि शृंग पर जूझने तथा अन्त में दोनों के एक साथ प्राणान्त का वर्णन है।

---

१. गिड़–शूकर। अर–अरु, और। अनड़ सिर–गिरि शिखर पर। गाजै–गर्जन करते हैं। वाजै दहूं तणा हथ बाढ़–दोनों के हाथों के प्रहार होने लगे। अेकळ–एकाकी रहने वाला बलवान सूअर। गुड़ै–लुढ़कते हुए। ओखळ–चोट। जमदाढ़–कटारी।

२. आनै–गीतनायक आना। अढंगी–जबरदस्त, भयंकर। अेहुवे–ऐसे, दोनों ऐसे। जड़ियाळ–वह जिससे प्रहार किया जाय। अणभंग–बहादुर, अखंड। अलंग हूंत–दूर से, ऊपर से। फलंग फलंग करता–छलांगे भरते हुए। फाड़–विदीर्ण हो।

३. वाही–बाजू के भाग से, चलाने की क्रिया का भाव। वेहुवै–दोनों के। हंस–प्राण। विछूटां–मुक्त हुए। रिणवट–युद्ध पथ। करट–हाथी का कपोल दुश्मन। साझे–मार डाला। डाढ़ा झदट–दाढ़ों या दन्त शूलों की चोटों से। जमडढ़–कटारी की।

४. चूर–चूर्ण चूर्ण। पोहो–योद्धा। दीठां–देखते ही। सूर–वीर। वखांणै–प्रशंसा करने लगे। सूर–सूर्य ने।

१०६. गीत बिहारीदास गहलोत रौ

धौंसां पड़ि ध्रीह धरा पुड़ धड़हड़, बाज फड़हड़ नास बरहास ।
आयां दळां सांमहूं आतो, दैवा मरण बिहारीदास ।।१।।

बाटां निति जोवतौ बिहारी, अचड़ां काजि बडौ अवनाड़ ।
कटकां तणां सण जोय काळै, काळै जड़िया नहीं कींवाड़ ।।२।।

रावत कुसळ तणौ वड रावत, कारिज विढ़ण उछाह किया ।
चाळां-बांधि आवियौ चोड़ै, दाटिक फाटिक नथी दिया ।।३।।

---

१०६. गीतसार—उपर्युक्त गीत रावत पदधारी प्रतापसिंह गहलोत के पुत्र बिहारीदास पर रचित है । गीत में उल्लेख है कि बिहारीदास सदैव शत्रुओं की प्रतीक्षा करता रहता था । वह अपने दुर्ग के कभी भी किंवाड़ बंद नहीं करता था । युद्ध में जूझ कर काम आने के लिए उत्सव मनाकर रण भूमि में प्रविष्ट हुआ और दुर्गों में छिपकर न रहने वाला वीरगीतों में अमर हो गया ।

---

१. धौंसां—नगाड़ों, धौंसा नामक वाद्य । ध्रीह—चोट, ध्वनित । धरा पुड़—पृथ्वीतल । धड़हड़—धड़कने की आवाज, कंपन । बाज—ध्वनित । नास—नासिका, नथुनें । बरहास—घौड़े । आयां—आने पर, आए हुओं के । सांमहूं—सम्मुख । दैवा—देने के लिए ।

२. बाटां निति जोवतौ—प्रतिदिन मार्ग देखता रहता, शत्रुओं की राह देखता रहता । अचड़ां—श्रेष्ठ कार्यों के । काजि—लिए, कार्य । अवनाड़—अनम्र, स्वतंत्र प्रकृति का वीर, निर्बंध । कटकां तणां—सेनाओं के । घसण—पथ । जोय—देखता । काळै—वीर । जड़िया—बंद किये । कींवाड़—कपाट, फाटक ।

३. कुसल तणौ—कुशलसिंह का । विढ़ण—लड़ मरने के लिए । उछाह—उत्सव । चाळां बांधि—सेना को पंक्ति बद्ध कर, वस्त्राञ्चल बाँधकर, कमर कसकर । दाटिक—बड़ा वीर । फाटिक—फाटक । नथी दिया—नहीं जुड़े, बंद नहीं किया ।

पता सुजाव गाहतौ पिसणां, बलू जोध यम बरवरियौ।
आडो आय मही तट ऊपरि, आडी धरां ऊसरियौ ॥४॥

असा हुवै माथा उपहारा, माथै लियां सचाणो मौत।
रिम आयां भींतां नह रहियौ, गीतां बिचि रहियौ गहलौत ॥५॥

११०. गीत अचळसिंघ राणावत रौ

धाराहर सिहर डंवर घड़ धारवि, अजर उमंड भर लोह अति।
अरि सिर समर बरसतै अचळा, रातंवर धर थयी रति ॥१॥

---

११०. गीतसार—उपर्युक्त गीत अचलसिंह राणावत योद्धा पर सर्जित है। गीतकार ने गीतनायक के युद्ध का वर्षा के साथ सादृश्य प्रकट करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार गिरि शिखरों पर वर्षा होकर पानी की धारा वहती है उसी प्रकार शत्रुओं के सिर पर शस्त्र बरसा कर अचलदास ने पृथ्वी को लाल रंग में रंग दिया।

---

४. पता सुजाव—प्रतापसिंह का पुत्र। गाहतौ—कुचलता, रौंदता। पिसणां—पिशुनों, वैरी। आडो आय—सामने आकर, ओट स्वरूप। मही तट ऊपरि—माहि नदी के किनारे पर ? आडी धारां—तिरछे प्रहरों। ऊसरियौ—बरसने लगा, प्रहार झड़ी लगादी।

५. असा—ऐसा। माथै लियां—सिर पर लिए। सचाणी—इच्छापूर्वक। रिम—वैरी। भींतां—दिवालों के भीतर, किलों में। गीतांवीर गीतों में, कीर्तिकाव्यों में।

१. धाराहर—मेघ, जलधारा। सिहर—शिखर। उमंड़—उमड़ घुमड़। अरि सिर—वैरियों के मस्तकों पर। समर—युद्ध में। अचळा—अचलसिंह। रातम्बर—रक्तवर्णीय, लाल। धर—पृथ्वी। थयी—हुई। रति—रक्तिम रक्त से।

सावळ बहळ प्पणंग कळ सायक, जड़कळक वीजळ खवें जंग ।
वपि खळ कमळ पाळ तण वूठां, रैण चळौवळ थयी गर ।।२।।
अणभंग विया अजव्र घण ओखंग, वढंग गजि रग गंग सवळ ।
उतबंग खळां श्रवत जंग आवध, पतंग थयौ रंग अत्रनि खळ ।।३।।
अंग खळ बौळ भळण आहड़ै, व्यराजि जळ छौळ वरि ।
अंग झकबौळ रुधर व्है आई, कमळा चौळ सरूप करि ।।४।।

१११. गीत सूरतसिंघ सगतावत रौ

कटक राण सुरताण रा आण चढ़िया कड़ै,
घड़ै गज पाट त्रंमाळ घुरतो ।
बीजळां झड़ै माहव चढै विमाणां,
सूर पड़ि ऊपड़ै जठै सुरतो ।।१।।

---

१११. **गीतसार**—ऊपर लिखित गीत वीर सूरतसिंह शक्तावत सीसोदिया पर रचित है। सूरतसिंह ने मेवाड़ नरेश की ओर से रणवाजखा मेवाती से युद्ध कर वीरता दिखाई थी। उक्त युद्ध में सूरतसिंह का जेठ भ्राता माहवसिंह तो युद्ध में मारा गया और वह घायल होकर जीवित बच रहा था। गीत में सूरतसिंह के घायल होने का वर्णन हुआ है।

---

२. सावल—भाला, वर्छी। वहळ—आभां, चमक। प्यणंग—बूँदें। कळ—तोप, धनुष। सायक—वाण, गोले। जडळक—तलवार। बीजळ—विद्युत। खवे—चमकती है। वपि—वपु, शरीर। खळ—वैरी। कमळ—मस्तक। वूठां—बरसा। रैण—पृथ्वी। चलौवळ—लाल, रिक्तम, लोहू।

३. अणभंग—अभंग वीर। विया—दूसरा। अजव—अजवसिंह। ओखंग—तिरछा, वीर, चलाना। गजि—गर्जन कर, हाथी। गर—गिरि। सबळ—सवल, बलवान। उतबंग—उत्तमांग, शीश। श्रवत—बहते। आवध—आयुध, हथियार। पतंग थयौ—लाल हुआ। अवनीतळ—पृथ्वीतल।

४. बौळ—डुबो कर। आहड़ै—आहाड़ स्थानीय वीर, गीत नायक के पूर्वजों की आहाड़ में राजधानी होने से उसके लिए यह शब्द व्यवहृत हुआ है। छौळ—तरंग, लहर। झकबौळ—शराबोर। रुधर—रुधिर, लोहू। कमळा—पृथ्वी। चौळ—लाल, रक्तिम।

१. कटक—सेना। राण सुरताण रा—महाराना और दिल्ली के वादशाह का। आण—आकर। चढ़िया कड़ै—पीछे चढ़े, युद्धार्थ सामने आए। घड़ै गज—गजसेना। त्रंमाळ—नगाड़े। घुरतो—घोष करते हुए। बीजळां—तलवारें। झड़ै—बहती हैं, बौछार करती हैं। माहव—माहवसिंह। पड़ि ऊपड़ै—रण में गिर कर उठे। जठै—जहां पर। सुरतो—सूरतसिंह।

बैरियां ग्रसै बहसै नहसै वीरारस,
जगड़ हर असहै गज बौळ जाडे ।
अेक गाजै बौह पूरां झलि ऊबरै,
ऊतरै दूसरौ लोह आडे ।।२।।

बाढ़ि मेवातियां तातियां बीजळां,
खाटियां प्रवाड़ा विन्है गजखंभ ।
हंस जेठी तणौ मुकति प्रापत हुवौ,
सुज हुवौ कणौठी जीवतौसंभ ।।३।।

अड़ै राणा सुछळ चढ़ै धारां अणी,
चलायौ मांन रा वीर चाळौ ।
मरण माहव तणौ त्रहुँ लोक मझि,
ऊवरण धनौ सुरतेस वाळौ ।।४।।

---

२. ग्रसै पकड़े, संहार करे । बहसै–जोश में आना । नहसै–गरजना, प्रहार । जगड़ हर–जगतसिंह का पौत्र । असहै–ऐसे, नहीं सहन करता है । गजबौळ–घमासान युद्ध, हाथियों को डुबाने या मारने जैसा भयानक युद्ध । बौह पूरां–घावों से परिपूर्ण होकर, प्रहारों से क्षत होकर । ऊबरै–जीवित बचे । लोह आडे–तिरछे शस्त्र प्रहारों से ।

३. बाढ़ि–काट कर, मार कर । मेवातिया–रणबाज खां की सेना वाले । तातियां–आततायी, तेजधारा । बीजळां–तलवारों । खटिया–प्राप्त किया । प्रवाड़ा–प्रशस्ति कार्य, प्रसन्नतायुक्त विरुद । विन्है–दोनों । गज खंभ–गजस्तंभ, महान्‌वीर । हंस–प्राण । जेठी तणौ–जेष्ठ का, बड़े भाई का । प्रापत–प्राप्त । कणौठी–कनिष्ठ लघु । जीवतौ संभ–युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाले का विशेषण ।

४. सुछळ–युद्ध । धारां अणी–शस्त्रों की नोक । मान रा–मानसिंह शक्तावत के वंशजों ने । वीर चाळौ–वीरों का खेल, वीर–क्रीड़ा । तणौ–को । ऊबरण–बचने । धनौ–धन्य है । सुरतेस वाळौ–सूरतसिंह का ।

११२. गीत राजा भरतसिंघ सीसोदिया साहपुरा रौ

अडर ओप आराण कुरखेत वड़वा अगनि,
　　सक तड़िल कांबड़ा जोड़ साथां।
हाथि जिकां भाराथ नाराज पिसणां बिहंड,
　　हद घड़ी काळ उसताज हाथां ।।१।।

कळा धमणि सेस फूंका जहर कोयलां,
　　अरड़ अहरणि कमठ पीठि अवियाट।
धरणि कर दलावत जका असिमर धजर,
　　घण घड़ी जजर नोखै वजर घाट ।।२।।

---

११२. गीतसार—ऊपर लिखा हुआ गीत शाहपुरा राज्य के राजा भरतसिंह राणावत सीसोदिया की तलवार की प्रशंसा में रचित है। गीत लेखक ने इसमें लिखा है कि शत्रुओं के संहार के लिए भारतसिंह के हाथ में रहने वाली तलवार विजली के टुकड़ों को जोड़ कर श्रेष्ठ कारीगर द्वारा बनाई हुई है। उसके निर्माण में शेषनाग की फूत्कार रूपी धमनी, यंत्र की फूंक तथा विपाक्त कोयलों की ताप का व्यवहार किया गया है। और वह कच्छप की पीठ रूपी अहरण पर घड़ी गई है।

---

१. ओप—चमक, उपमा। आराण—युद्ध, लुहार की भट्टी। कुरखेत—कुरुक्षेत्र, रणस्थल। तड़िल—विद्युत। कावड़ा—लोह शलाका। जोड़ साथां—एक साथ मिलाकर। हाथि—हाथ में। जिकां—जो, वह। भाराथ—भारतसिंह। नाराज—खड्ग। पिसणां—पिशुनों, दुश्मनों। विहंड—नाश करने वाली। हद घड़ी—अपार कलाकृति से निर्मित हुई है। काळ उसताज—यमरूपी उस्ताद के।

२. कळ धमणि—लुहार के लोहा तृप्त करने की धमनी। सेस फूंकां—शेष नाग की फूत्कार। जहर—विष। अरड़—वलपूर्वक पीटकर। अहरणि—लोहे का चौकोर खण्ड जिस पर तप्त लोहे को रख कर लुहार औजार घड़ता है। कमठ—कच्छप की। अवियाट—तलवार, मनोहर, युद्ध। दलावत—दौलतसिंह तनय, राजा भारतसिंह। असिमर—युद्ध, तलवार। धजर—तलवार योद्धा। घण—घन, बड़ा हथौड़ा। घड़ी—बनाई। जजर—यमराज। नोखै—अनुपम। बजर—वज्र। घाट—आकृति में।

पांण भड़ ताळ चढि ताळ पांणी प्रळै,
तेज किरनाळ खरसांण तांणी ।
तसी किरमाळ सीसोद वाळा तई,
अंत टकसाळ घड़ि ढाळ आंणी ।।३।।

दाव बप धरे उसताज भेजां दुजड़,
चक्रधर तणा चक्रव छेदां चेत ।
जटाधर सूळ अवखेक पाटी जपै,
पखै खळ आंवळाभूळ रण खेत ।।४।।

---

३. पांण–हथियार की नोक अथवा धार को तीक्ष्ण करने की क्रिया, आभा । भड़–योद्धा । ताळ–समय, रणस्थल । ताळ पांणी प्रळै–प्रलयकालीन अपार जलराशि, अथाह प्रलयजल की आभ दी हुई । किरनाळ–सूर्य । खरसांण–हथियारों के धार लगाने का सकलीगर का चक्राकार यंत्र । तांणी–धार लगाई हुई, खींची हुई । तसी–वैसी । किरमाळ–तलवार । तईं–लिए । अंत–यमराज की । ढाळ–धातु को तरल बना कर किसी चौकटे में डाल कर वस्तु बनवाने की क्रिया को 'ढाळए' कहते हैं, ढाल । आंणी–लगवाई, दी ।

४. दुजड़–तलवार । चक्रधर–विष्णु, सिकलीगर । चक्रव–चक्र । छेदां–छिद्र । जटाधर–रुद्र । सूळ–त्रिशूल । अवखेक–अभिषेक, चमक की हुई । आंवळाभूल–पूर्ण रूप से संवारी हुई, सुश्रृंगारित ।

११३. गीत राजा उम्मेदसिंघ सीसोदिया साहपुरा रौ

झाळां वूठतौ कराळी तोपां वाहतौ अकाळी झाट,
तेण हूं कमाळी खुल्ले आरूढ़ां तांडीस।
बंका भूप ईसरेस काळी नाग सीस वागी,
परां विहंगेस वाळी तौवाळी पांडीस ।।१।।

जांगी फूंतकारां जाग पताकां चालतौ जीहां,
अरस्सा अढ़ारटंकी भाळतौ उपेग।
महावज्र वेग पड़ी जैसा रा उरेग माथै,
तौवाळी भाराथ वाळा वज्र भास तेग ।।२।।

---

११३. गीतसार—उपर्युक्त गीत शाहपुरा के शासक राजा उम्मेदसिंह के युद्ध पर रचित है। गीत नायक ने उदयपुर के भाग्नेय महाराजा माधवसिंह कछवाहा के पक्ष में जयपुर नरेश सवाई ईश्वरीसिंह कछवाहा से राजमहल के रणक्षेत्र में लोहा लिया था। गीत में महाराजा ईश्वरीसिंह को कालियनाग और राजा उम्मेदसिंह को पक्षीराज गरुड़ के रूप में उपमित कर वर्णन किया है।

---

१. झाळां वूठतो—अग्नि वरसाता हुआ। कराळी—विकराल। वाहतौ—प्रहार करता हुआ। अकाळी झाट—भयंकर प्रहार। कमाळी—शिव। खुल्ले—खुले, उघड़े। आरूढां—सवारी। तांडीस—नंदिगण, नृत्य करने वाला। भूप ईसरेस—महाराजा ईश्वरीसिंह कछवाहा जयपुर। काळी नाग—काले सर्प। वागी—चली। परां—पंख। विहंगेस वाळी—पक्षीराज गरुड़ की। तौवाळी—तुम्हारी, तेरी। पांडीस—कृपांण, तलवार।

२. जांगी—नगाड़ों की, युद्धकारी। फूंतकारां—फूत्कारें। पताकां—ध्वजाएें। जीहां—जिह्वाएें, जीमें। अरस्सां—आकाश। अढ़ारटंकी—निश्चित नाप का धनुप। भाळतौ—खोजता, ढूंढता। उपेग—उपाय। वेग—सत्वरता से। जैसा रा—महाराजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरीसिंह रूपी। उरेग माथै—सर्प पर, सर्प के शीश पर। भाराथ वाळा—राजा भारत सिंह के पुत्र उम्मेदसिंह। वज्रभास—वज्र सदृश। तेग—तलवार।

मत्ता जूझ माळा धूम खेहां धू निहाव मिल्ली,
आकळी बदल्ली पीठ कौम भार ऊक।
जोरावार खूनी नाग आसल्ली विरुद्ध जांण,
चल्ली राजपत्री डांण वाणास अचूक ।।३।।

भांमी तूक हाथां वाह आहंसी उम्मेद भूप,
भड़ाकेस माथै घत्थी काळकीट भांह।
तराजां खगेस आगै घडंबी ईसांण ताग,
मांण तंबी होय बैठो बंबी कोट मांह ।।४।।

—हुकमीचंद खिड़िया री कह्यौ

---

३. मत्ता जूझ—घनघोर युद्ध, उन्मत्त गजों की। माळा धूम—धूम्रमाला। खेहां—धूलिराशि। धू—मस्तक, ध्रुव। निहाव—प्रहार ध्वनि। आकळी—अकुलाकर। बदल्ली—फेरी, बदली। कौम—कूर्म, कच्छप। भार—वजन के कारण, दबाव से। ऊक—अग्नि। जोरावार—बलिष्ठ, प्रबल। खूनी—अपराधी, घातक, क्रुद्ध। नाग—सर्प। आसल्ली—असली, वास्तविक। जांण—मान कर, समझ कर। चल्ली—चली। राजपत्री—गरुड़। वाणास—तलवार।

४. भांमी—पिता, स्वामी। तूझ—तेरे। हाथां वाह—हाथों के प्रहार। आहंसी—साहसी, अंशधारी। भड़ाकेस(?) माथै—सिर, पर। घत्थी—आघात किया, चली। काळ कीट—यमराज की। भांह—तरह। तराजां—समान खगेस—गरुड़। धडंबी (?) । ईसांण—ईश्वरीसिंह। ताग—तक्षक। मांणतंबी—मानहीन, होकर, सम्मान और पृथ्वी विहीन होकर। बंबी कोट—बांबी रूपी दुर्ग में।

११४. गीत रावत मोहकमसिंघ देवळिया रौ त्रकुटबंध

अणभंग बिहूं थट यौं जुटे, अंग जोस धर कर ऊपटे,
सझि सको आवध आंमो सांमहा बकारै वर वीर।
इण भांत नख चढ़ि ओपिया, लहरीक किर हद लोपिया,
कर साहि किरमर सूर समहर अडर अरिहर पछट सिर पर।
कहर कर कर सकर संमसर वजर पड़ि वर गजर सिर गिर,
कससि कैंमर फूटि बडफर पार कर उर धरर रतधर।
जोय जटधर दाद दे वर चंड पत्र भर गूद पळचर,
धापड़ें रणधीर ।।१।।

---

११४. **गीतसार**—उल्लिखित गीत देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत प्रतापसिंह के अनुज रावत मोहकमसिंह सीसोदिया पर सर्जित है। रावत मोहकमसिंह ने विद्रोही तथा दस्युदल के भील नेता को युद्ध में पराजित कर मारा था। गीत में उभय **पक्षीय योद्धाओं** के लड़ने, घात–प्रतिघात और अन्त में गीतनायक **की विजय** का वर्णन किया गया है। गीतकार किशनगढ़ नरेश बहादुरसिंह राठौड़ है।

---

१. अणभंग–वीर, अटूट। विहूं थट–दोनों पक्षों वाले सैनिक। जुटे–भिड़े। जोस–जोश। ऊपटे–उमड़े। सको–सब कोई। आंमो–सांमहा–एक दूसरे के सामने। वकारे–ललकारते हैं। इण भांत–इस तरह। नख चढ़ि–सामने, या निशाने पर। ओपिया–शोभित हुए। लहरीक–समुद्र। किर–अथवा। हद–सीमा। लोपिया–उल्लंघन किया। कर साहि–हाथ में उठाकर। किरमर–तलवार। समहर–समर, युद्ध। अरिहर–शत्रुता रखने वाले, वैरी। पछट–प्रहार देकर, पछांट देकर। कहर करकर–उग्रता धारण कर। बजर–वज्र। गजर–निरन्तर प्रहार। सिर गिर–गिरि शिखर। कससि–खींचकर। कैंमर–धनुष। बडफर–ढाल, शरीर के बगल भाग का अंश विशेष। उर हृदय। धरर–गिरने की ध्वनि, धारा। रत धर–रुधिर की धारा। जोय–देखकर। जट धर–शिव। दाद–वाह वाही। चंड–चण्डिका, रण देवी। पत्र–खप्पर, पात्र। गूद–मांस। पळचर–गृद्ध, शृंगाल आदि मांसाहारी पक्षी एवं पशु। धपाड़े–अघाना, तृप्त किए।

नूर चढ़ियो भड़ निळां गढ़ लाज बांधी जिण गळां,
हद विहद कर हथवाह हुविया न्रमै नर नखतैत।
पंजर दुधारा परळकै रुहिराळ खाळ सु खरळकै,
मंडि सबळ दमंगळ दळण खळ दळ प्रबळ मिळ कळ अटळ अचपळ।
विहद छळबळ करत धकचळ बहळ बीजुळ धार बळबळ,
कटि कमळ खळ उछ्ळ पड़ियळ तड़छ तंडळ थहे रिण थळ।
रुहिर रळतळ प्रघळ डळ पळ अचळ जूवळ अणी अलियळ,
जुड़े करिवा जैत ।।२।।
तिणवार दळ दहुंवां तणां अति अड़ै भड़ अध्रियांवणां,
अवगाहि असहां अनड़ ऊभा वहौ सूर सिध अवसांण।
तन प्रचण्ड रण अति ताखड़ा वहौ लोह वाहै वेभ्रड़ा,
पड़ि भाट फड़ फड़ काट कोरड़ छुटै लंवछड़ ताड़ तड़ तड़।
बांण छुट वड़ सौक सड़ सड़ फूटि फिंफरड़ कळिज फड़ फड़,
अंतड़ ऊधड़ लोथ लड़थड़ ऊळझ आखड़ रुण्ड रड़वड़।
पंख झड़ फड़ वीर वड़ वड़ अछर अड़वड़ धरा धड़हड़,
इसौ मचि आराण ।।३।।

---

२. नूर–कान्ति। भड़–योद्धाओं के। निळां–ललाट। लाज–लज्जा। जिण–जिन्होंने। गळां–कंठों, गले। हद विहद–वेहद। हथवाह–प्रहार हुआ। हुविया–चोटें दी। नखतैत–नक्षत्रधारी। दुधारा–द्विधार वाले शस्त्र, तलवार, बर्छा। परळकै–चमकते हुए। रुहिराळ–लोहू। खाळ–नाले। खरळके–तरल पदार्थ के बहने की ध्वनि। दमंगळ–युद्ध। खळदळ–शत्रुदल। अचपळ–चंचल, अडिग। धकचळ–युद्ध, उपद्रव। बहळ–बहती है। बीजुळ–तलवार। बळबळ–वारबार, सतत। कमळ–मस्तक। पड़ियळ–पृथ्वी पर गिर कर। तड़छ–तड़छ खाकर। तंडल–सिर, टुकड़े। रिणथळ–रणस्थल। रुहिर–रक्त। रळतळ–फैलकर। प्रघळ–बहुत, अत्यधिक। डळ पळ–मांस के पिण्ड। अचळ–अचल। जूवळ–पैर। अळियळ–भ्रमर, रण दूलहा।

३. अड़ै–सामने डटे। अध्रियांवणां–भयंकर। अवगाहि–कुचल कर, विलोड़ कर। असहां–शत्रुओं को। अनड़–स्वतंत्र, अनम्र। ऊभा–खड़े। सिध अवसांण–अवसान सिद्ध। ताखड़ा–बलवान। बाह–शस्त्र प्रहार। वेभ्रड़ा–दोनों हाथों के वार। भाट–प्रहार, झटका। कोरड़–बगल का भाग। लंवछड़–तोड़ादार बन्दूक। तड़ तड़–गोली चलने की ध्वनि। बांण–तीर। सोंक–बाणों के चलने पर होने वाली ध्वनि। फिंफरड़–फेंफड़े। कळिज–कलेजा। अतड़–आन्त्र। ऊधड़–छिन्नविछिन्न होकर। लोथ–लाश। लड़थड़ लड़खड़ा कर। ऊळझ–परस्पर फँसकर।। आखड़–पैर रपटने की क्रिया का भाव। रड़वड़–लुढ़कना। झड़फड़–फड़फड़ाहट। बीर–बावन बीर। अछर– अप्सरा। अड़वड़–भीड़भाड़। आराण युद्ध।

दईवांण खत्रवट दाखतौ अणगंज मोहकम आखतौ,
समराथ निज हलकार साथी उरड़ियौ अणभंग।
अवगाढ़ पोरस ऊफणै वहौ खीभ करतो जुध वणै,
अति रोस ऊपट रूक रौ भट थोघि सह थट दुयण दहवट।
कमळ केई कट समळ सट पट फवि भपट सिर रंगट मट फट,
वणे रिणबट घाट अवघट लड़ै लटचट केई कुलट नट।
पलट ऊलट पड़त चटपट खहे खग भट विरद अति खट,
जीतवा कजि जंग ।।४।।

—महाराजा बहादरसिंघ राठौड़ रौ कह्यौ

---

४. दईवांण–दीवान, रावत पदधारी मोहकमसिंह। खत्रवट–क्षत्रियत्व। दाखतो–कहता हुआ। अणगंज–अजयी। आखतौ–कहता हुआ, अधीर। समराथ–समर्थ। हलकार–चला कर। उरड़ियो–बलपूर्वक आगे वंसकर। अणभंग–बहादुर। अवगाढ़–दृढ़ता। पोरस–पौरुष, पराक्रम। वहौ–वहुत। खीभ–नाराज, रुष्टता। रोस–रोष, क्रोध। ऊपट–उमड़कर। रूक–तलवार। रौ भट–युद्ध, विवाद, चोट। थोघि–थाह लेकर। थट–समूह, सेना। दुयण–दुर्जन, वैरी। दहवट–नाश। कमळ–शीश। समळ–चिल्ह। रंगट–रंगका, लोहूलुहान। मट फट–मटका फटकर, घड़ा फूटकर। रिणवट–युद्धमार्ग। अवघट–दुर्गम, विकट। लटचट–गुत्थम गुत्थ, केश पकड़कर लड़ने का भाव। कुलट नट–नट के कुलांच खाने की तरह, पैर को रखने का ढंग। खहे–भिड़कर, चोट देकर। खगभट–तलवार का भटका, खड्ग का प्रबल आघात। खट–प्राप्त कर। कजि–लिए। जंग–युद्ध।

११५. गीत महाराणा भीमसिंघ रा गजां री लड़ाई रौ

खूटा परांथी अनन्ता देहां उरांथी उखेड़े खंभ,
कपोळां भारांथी मद्दां जूटा काळ कीट ।
जज्रदूत तणा साथी तूटा गैण वज्र जेम,
राण वाळा हाथी छूटा जूटा आकारीट ।।१।।
रसम्मी उगन्ती वेळां सोभंती सिन्दूरां रेख,
स्वेतदन्ती धूति चंद गिरंद्दां समान ।
कुदरत्ती हुवा चक्खां रत्ती झाळ-पूळा क्रोध,
चीतौड़ पत्ती रा वागा हसत्ती चौगान ।।२।।
है दल्लां हमल्लां जूझ मल्लां वाज हाक,
पोगरां नवल्लां भल्लां मल्लां पांण ।
आदसल्लां दांतां झीक आडीया बगल्लां ऊठै,
अडील्लां जेण वल्लां गजां मचायौ आरांण ।।३।।

---

११५. गीतसार—प्रोक्तगीत मेवाड़ के महाराना भीमसिंह सीसोदिया के गजों की पारस्परिक युद्ध-क्रीड़ा पर सर्जित है । मध्यकाळीन शासक और जन-समाज में गजों की लड़ाई का बड़ा प्रचलन रहा है । उल्लिखित गीत में दो उन्मत्त गजों की भिड़न्त, उनके आघात और अन्त में उन्हें बांधने के लिए व्यवहृत उपकरणों आदि का चित्रण हुआ है ।

---

१. खूटा—खुले, उन्मुक्त हुए । परांथी—उधर से, दूर से । देहां—शरीर वाले । उरांथी—इधर से, पास से । उखेड़े—उखाड़कर । खंभ—खंभे, स्तम्भ । भारांथी—भारी, बडे । मद्दां—मदधारा वाले । जूटा—भिड़े, लड़ने लगे । काळकीट—मृत्युकीट, सर्प से । जज्रदूत—यमराज के दूत । तणा—का । तूटा—टूटे । गैण—आकाश से । आकारीठ—भयंकर रूप ।

२. रसम्मी—रश्मि, सूर्य किरणें । उगन्ती वेळां—उदयकाल में, प्रातःकाल में । स्वेतदंती—सफेद दांतों वाले । गिरंद्दां—पहाड़ों । चक्खां—चक्षुओं । रत्ती—रक्तिम, लाल । झालपूळा—आगबबूला, पूलों में लगी आग सदृश । वागा—लड़ने लगे । हसत्ती—हाथी । चौगान—मैदान, हाथियों और भैंसों आदि की लड़ाई के लिए नियत स्थान को चौगान कहते हैं ।

३. है दल्लां—अश्व समूह । जूझ—लड़ते । वाज—ध्वनित । पोगरां—शुण्डदण्डों । भल्लां—अच्छे, भाले, अंकुश । पांण—बल, हाथ । आदसल्लां— (?) । झीक—प्रहार । बगल्लां—बगलें, पार्श्वभाग । अडील्लां—हठीले, अकड़ने वाले । वल्लां—समय । मचायौ—छड़ा, प्रारंभ किया । आरांण—युद्ध, लड़ाई ।

अछक्कां रदन्ना तन्ना वदन्ना भचक्का ऊठे,
मचक्कां लचक्कां जम्मी थरक्के समांम ।
हको हक्का खांडेराव चक्रवा पसाव हाथी,
सारीसा धधक्का धक्का जूटा बे संग्राम ।।४।।

लागा डांण अद्रि गात अथागा लंगरां लोह,
खेध पै बिलागा बौम आगा जेम खांत ।
गाजता पुळिन्द्र जेम सामंद्र सा पुत्र गोती,
भद्रजाती नागा जोगी बागा ईसी भांत ।।५।।

चठठ्ठा वैभीत रट्टां दुकट्टां लोयणां चोळ,
ऊभै छटा घटा सक्र गात में अनूप ।
लंगरां रठठ्ठां पै अनूठा कट्टा आडी-लीह,
राण वाळा रूठा फील जूटा इसै रूप ।।६।।

---

४. अछक्का–अतृप्त, प्रहार । रदन्ना–दांतों । तन्नावदन्ना–शरीरों और मुख भागों । भचक्का–टक्कर खाने से उत्पन्न ध्वनि । मचक्कां लचक्कां–मचक खाकर लचकने से । जम्मी–भूमि । थरक्के–दोलित हुए, हिलने लगे । हको हक्का–हाक, चिग्घाड़ । सारीसा–समतुल्य । जूटा–भिड़े । बे–दोनों ।

५. डांण–मस्ती । अद्रिगात–गिरिगात्र, पर्वतकाय । अथागा–असीम । लंगरां–शृंखलाएँ । खेध–विरोध, युद्ध । बिलागा–जा लगे । बौम–व्योम, आकाश के । खांत–उमंग, इच्छा । गाजता–गर्जना करते । पुळिन्द्र–मेघ, बादल । सामंद्र–समुद्र । गोती–गोत्र वाले । भद्रजाती–हाथी, श्रेष्ठ जाति के गज । नागा–नग्न दादूपंथी साधु । जोगी–योगी । बागा–लड़ने लगे । इसी भांत–इस तरह से ।

६. चठठ्ठां–ध्वनि विशेष रट्टां–टक्करें । दुकट्टां–दोनों कूंटे, बड़े दांत । लोयणां–लोचनों, नेत्रों । चोळ–लाल । उभै–दोनों । छटा–बिजली, शोभा । सक्र–इन्द्र । गात–गात्र । लंगरां–शृंखलाएँ । रठठ्ठां–टक्करें, ध्वनि विशेष । आडी लीह–अन्तिम रेखा । रूठा–रुष्ट हुए । फील–हाथी ।

घत्तां धत्तां घत्तां घत्तां मावतां पूंतारै धीठ,
तत्था वेखि मत्ता मत्ता भिड़ै निराताळ।
वेखतां घुमंता बे वरुथां यूं अखाड़े वागा,
छत्रधारी भीमवाळा उमंता छंछाळ।।७।।

सिंदूरां कपोळां वीच हवोळां खळक्के श्रोण,
गिरंदां गैतूळां मच्चै वगूळां चौगान।
दोवळां हिलोळां टोळां श्रोळां दौळां प्रथी देखै,
मचोळा गायंदां वाळा धूजै आसमांन।।८।।

धूवांधोर चरक्खी स पंखी छूटा धरा धूम,
भयाणंखी देख चक्खी ओछारे सुभाळ।
कौमंखी गाजिया फील चोळ चक्खी पबै काळा,
आंवळां घडूस मुखी वे पखी उजाळ।।९।।

---

७. घत्तां धत्तां–हाथियों को जोश दिलाने के लिए प्रयुक्त शब्द। मावतां–महावतों। पूतारै–प्रोत्साहित करे। धीठ–धृष्ट, वीर। वेखि–देख कर। निराताळ–अनवरत, भयंकर। वेखतां–देखते हुए। बे–दोनों। बरूथां–सेना। अखाड़े बागा–मैदान में लड़ने लगे। उमंता–मदमस्त। छंछाळ–हाथी।

८. सिंदूरां–सिंदूरी रंग से। कपोळां–कपोल भाग। खळक्के–वेग से बहना। श्रोण–रुधिर। गिरंदां–पहाड़ों। गैतूळां–धूलि, आंधी। बगूळां–वायुचक्र, बवंडर। चौगान–मैदान में। दोवळां–दोनों ओर। हिलोळां–हिलोरें। टोळां–समूह। ओळां-दौळां–चारों तरफ। प्रथी–लोकसमाज। मचोळा–भिड़न्ते, टक्करें। गयंदा वाळा–हाथियों के। धूजै–कम्पित होता है।

९. चरक्खी–हाथियों को वश में करने का यंत्र विशेष, चर्खी। भयांणखी–भयानक। चक्खी–चक्षु, दृष्टि, दर्शक। कौमंखी–क्रोधी, योद्धा। चोळ चक्खी–लाल नेत्र वाले, सक्रुद्ध। पबै काळा–काले पहाड़ जैसे। आंवळां–सज्जित, बांके, विकट। घडूस मुखी–मेघ घटाकृति, बादल समूह जैसे। वे पखी–दोनों पक्ष को, दोनों पक्ष के। उजाळ–उज्ज्वल, निष्कलंक।

आदीतां बे घड़ी हूंतां बीता निसां जांम उभै,
　　भैंभीता न छंडै पांव मीता यूं भयांन।
पीलवानां करै दूर लगाड़े पलीता पूळां,
　　जीता खांडेराव बेहूं बदीता जहांन।।१०।।

लाखां द्रव अंवारै उतरै लूंण जड़ै लोहा,
　　अनंतां सोव्रन्नां तन्नां सिंगारे सरूप।
बापूकारै पूंतारै आंण ठांण बांधा बेहूं,
　　राणवाळा हाथी बीज भाळा रूप।।११।।

११६. गीत महाराणा भीमसिंघ मेवाड़ रा हाथियां रौ

मिळै सामठां हजारां लोग भागवो बसत्ती मनां,
　　सुणै खून आयौ जज्र हसत्ती समाथ।
लोप हाको दीघी भाट ओयणां मसत्ती लागै,
　　सांकळां हसत्ती तीनां तोड़ी हेके साथ।।१।।

---

११६. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मेवाड़ के महाराना भीमसिंह के मदान्ध तीन हाथियों की युद्ध-क्रीड़ा से सम्वन्धित है। इसमें हाथियों द्वारा अपनी लोह शृंखलाओं के बंधन तोड़ने, आपस में लड़ने और अन्त में जलते पलीतें एवं चर्खी यंत्र के माध्यम से उन्हें पकड़ कर अपने स्थानों पर बांधने का वर्णन किया गया है।

---

१०. आदीतां—सूर्य, आदित्य। बे—दो। हूंता—से। जांम—याम। उभै—दो। भैंभीता—भयभीत। पीलवानां—महावत लोग। लगाड़े—जलाकर, सुलगाकर, लगाकर। पूळां—मूंजा के डंठलों को बांधकर पूले बनाए जाते हैं। बेहूं—दोनों। बदीता—प्रशंसित। जहांन—संसार।

११. अंवारै—न्यौछावर करते हैं। उतारै लूंण—दृष्टि-दोष से रक्षा करने के लिए राई और नमक न्यौछावर किया जाता है। लोहा—लोह की जंजीरें। सोव्रन्नां—स्वर्ण। तन्नां—शरीरों को। वापूकरे—बाप बाप कह कर शान्त करते हैं। पूंतारे—प्रोत्साहित करे, पुचकार कर शान्त करते हैं। आंण—लाकर। ठांण—स्थान, गजशाला में। बीजभाळा—विद्युत ज्वाला।

१. भागवो बसत्ती मनां—बस्ती के लोगों को यत्र तत्र भागने के लिए मना किया। खून आयौ—क्रोध में भरा हुआ। जज्र—यमराज। हसत्ती—हाथी। लोप—उल्लंघन कर। भाट—प्रहार। ओयणां—पैरों। सांकळां—जंजीरें। तीनां तोड़ी—तीनों ने तोड़ डाली। हेके साथ—एक साथ ही।

जठै भाला चरख्खी एड़ियां आंण घणां जेतां,
ठांणां में मानवां केतां झंझेड़ियां ठाळ ।
वरूथां अज्ज्र सो ऊभौ बीफरे बेड़ियां वंध,
छेड़ियां जज्त्र सौ वोम वज्त्र सो छंछाळ ।।२।।

खुलातो लंगरां पांव डुलातो झाटकां खंभ,
चलातो अ्रसुण्डां झाळ सलातो चढील ।
छातो सीस रजि भोम उड़ातो गैणाग छिवै,
फबै रीस रातो आग जोम मातो फील ।।३।।

पिंडा जोय कोसां मेर सांकळां रठीठे पांव,
कीधां कोप को सो जज्त्र चलातो बौम कंध ।
ऊभौ ठांण बीच डाकी बीरभद्र ओप को सो,
गोळो तोप को सो तूटै नरां भू गयंध ।।४।।

---

२. भाला—बल्लम, अंकुश । चरख्खी—हाथी को वश में करने का एक उपकरण, चर्खी । ठांणां—हाथियों को बांधने के स्थान । झंझेड़िया—फफेड़ना, झकझोरना । ठाळ—चुन चुन कर । वरूथां—सेनाओं में । अज्ज्र सो—यमराज तुल्य । ऊभौ—खड़ा । बीफरे—क्रोध में आगबबूला हुआ । बेड़ियां—बेड़ियां, जंजीरें । जज्त्रसो—यमराज सदृश । बौम—आकाश । बज्त्र—वज्त्र, बिजली । छंछाळ—हाथी ।

३. लंगरां—शृंखलाओं । डुलातो—दोलित—करता । झाटकां—प्रहारों, झटकों से । खंभ—स्तंभ । अ्रसुंडा—शुण्डादण्ड । झाळ—क्रोधज्वाला । छातो—ढंकता, उड़ाता । रजी—धूलि से । गैणाग—आकाश । छिवै—शोभापाता । रीस रातो—क्रोध में लाल मुख किए । मातो—मस्त, प्रबल, मोटा ताजा । फील—हाथी ।

४. पिंडा जोय—देखने में शरीर के । कोसां मेर—कोसों तक पहाड़ हो जैसे । सांकळां—जंजीरें । रठीठे—घसीटती है । कोप—क्रोध । जज्त्र—यमराज । चलातो—चलतां । बोम कंध—आकाश में ऊंचे कंधे किये । ऊभौ—खड़ा हुआ । ठांण बीच—गाजशाला में । डाकी—वीर, भीमकाय । ओप को सो—उपमा का—सा । गयंद्र—हाथी ।

ग्रहै सेल डाचरो मरोड़े करै इंद्र गाज,
धुबै क्रोध साचरो सरूप काळ धीठ ।
चाचरो बंवोळे रंभा अपार मजीठ चोळ,
अेणवार तणां दीठां बणै आकारीठ ।।५।।

लागो मौत चाळे हेक आदमी तीं वार लूंठौ,
तिकौ काज बांधवा चलाय बूठौ तूप ।
पूठौ व्याळ जेण माथै अंगूठौ लागतां पांव,
दूठौ थको जूठौ हाथी तूठौ काळ रूप ।।६।।

करेवौ पळक्को काच पच्छरी उडेवौ किनां,
तच्छरी बादळां बीज ज्यां धरेबो तयंड़ ।
तरेबौ मच्छरी नीर देवौ जांणे हाथताळी,
बरेवौ अच्छरी सूर फरेवौ बयंड ।।७।।

---

५. डाचरो–मुंह को फाटते समय का खुला हुआ मुख, बटका भरना । धुबै–क्रोध से भड़कता । काळ धीठ–महाकाल, यमराज की दृष्टि । चाचरो मस्तक । बंवोळे–रक्ताभ । मजीठ चोळ–लाल रंग, मजिष्ठ का लाल रंग । दीठां–देखने पर । आकारीठ–महाघोर संग्राम, जबरदस्त ।

६. मौत चाळे–मृत्यु–क्रीड़ा । तीं वार–उस समय । लूंठो–बडा । तिकौ–वह । चलाय बूठौ तूप–तोप या बंदूक दाग बैठा । पूठौ–पीछे की ओर । व्याळ–सर्प, अयाल की पीठ पर । दूठौ क्रुद्ध, थको हुआ जूठौ–लड़ने लगा, भिड़ गया । तूठौ काळ रूप–काल सदृश झपटा, यमराज–सा झपटा ।

७. करेवौ पळको–पलका करना । काच–शीशे का । पच्छरी–पक्षी का । किनां अथवा । तच्छरी– (?) । बीज–विद्युत । तयंड– (?) तरेवो–तैरना । मच्छरी–मछली । नीर–जल में । देवौ–देना । हाथ की ताळी–हाथ कीताली । बरेवौ–वरण करना । अच्छरी–अप्सरा । बयंड–हाथी का ।

करे गाढ़ धायौ लोग सांकळां जड़ी रै काज,
अचाणंकी मोर हूं अड़ी रै जोस आंण।
सजै आयौ जिकां अंग कोर हूं वडी रै सूंड,
जोर हूं दडी रै दोटौ दीधो मल्ल जांण ।।८।।

लखै तेण बेळां धकै भैचक्के हजारां लोग,
अक्खै हरी हरी सारां मुक्खै कांप अंग।
टल्ला धू मचक्कै नाव नाक दांत भोम टक्कै,
सक्कै रीस बाव धक्कै झुक्कै मेर शृंग ।।९।।

बाज हाक चौतरफ्फां मचायौ आराण बेस,
जेण वार अयासां खंचायौ तेण जीव।
सेस करां हूंत उठै नाग रौ ऊंचायौ सीस,
देखे काळ खायौ लोग बचायौ दईव ।।१०।।

---

८. गाढ़—दृढ़ता। धायौ—चले, दौड़े। सांकळां जड़ी रै काज—हाथी को जंजीरों से बाँधने के लिए। अचाणंकी—अचानक। मोर सूं—पीठ से। अड़ी रै—स्पर्श करते ही। वडी रै सूंड—दीर्घ शुण्डवाला। दड़ी रै—गेंद के। दोटौ—चोट, हमला। तेण वेळां—उस समय। धकै—सामने, टक्कर से। भैचक्के—भय चक्रित हुए।

९. अक्खै—बोलने लगे। सारां—सब के सब। कांप—कम्पन। टल्ला—टक्कर। धू—मस्तक। नाक—नासिका। भोम टक्कै—भूमि पर जा टिके या छू गए। रीस—रोप। बाव—वायु के। मेर शृंग—गिरिशिखर।

१०. बाज हाक—हल्ला होकर। मचायौ—किया। आराण—युद्ध। अयासां—आकाश में। तेण—उसने। जीव—प्राण। सेस करां हूंत—सहस्त्रकरों या फनों का। ऊंचायौ—ऊपर उठा लिया। काळ खायौ—मृत्यु के ग्रास बने। दईव—विधाता ने, देवने।

पछै बांध लंगरां हठाळां पब्बै रूप पांव,
करे जव्र चाळो भाळो करायो करोड़ ।
खूटो ग्रेण रीत काळो मद्दाळो ऊबेड़े खंभ,
ग्रेळानाथ भीम वाळो दंताळो ग्ररोड़ ।।११।।

११७. गीत दुतिय त्रकुटबंध महाराणा संभुसिंघ रौ

ग्रधपतिय पुर उदियांण रौ, है तिलक कुळ हिंदवांण रौ ।
छळ ग्रचळ दळ दईवांण रौ, छक पेख उप्रवट पूर ।।
गुण चिरत धारण गात रा, निज ब्रिड़द जे रघुनाथ रा ।
ग्रत तेज ग्रप्रबळ ग्रमळ यळ, भण ग्रचळ दस द्वय भळळ भळ ।।
ढिग छत्र चांमर उजळ ढळ, जुधि स निसचळ पळळ जळ ।
गिण पीठ प्रत पळ गिरळ गळ, रजरूप दळ बळ रमळ रळ ।।
चतुरंग झळहळ मेर चळ सर संध कळमळ सळळ सळपळ ।
प्रळै करण परमाण ।।१।।

---

११७. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत उदयपुर राज्य के शासक महाराणा शंभुसिंह सीसोदिया पर कहा हुग्रा है । इसमें महाराणा के सामन्तों, सैनिक ग्रभियानों, गजाश्व सेना ग्रौर युद्ध सज्जा को देख कर शत्रुग्रों के भयातुर होकर ग्राधीनता स्वीकार करने ग्रादि का वर्णन किया गया है ।

---

११. पछै–फिर । लंगरां–लोहे की श्रृंखला से । हठाळां–हठीले, विवादी । पब्बै रूप–गिरि स्वरूप । जव्र चाळो–यमराज तुल्य खेल । खूटो–खुला । काळो मद्दाळो–मद ग्राया काला हाथी । ऊबेड़े–उखाड़े । ग्रेळानाथ–पृथ्वीनाथ, स्वामी, महाराना भीमसिंह दंताळो–हाथी ।

१. ग्रधपतिय–ग्रधिपति, स्वामी । पुर उदियांण रौ–उदयपुर रियासत को । कुळ–समस्त, वंश । छळ–युद्ध में । ग्रचळ–ग्रविचल । दईवांण रौ–दीवान को, महाराणा को । छक–मस्त, तृप्त । पेख–देखकर । उप्रवट–गर्व से सिर ऊपर रखने वाला, ऊर्ध्व । चिरत–चरित, चरित्र । गात रा–गाथाग्रों का, गात्र का । बिड़द–विरुद । ग्रत–ग्रत्यधिक । ग्रप्रबळ–महान् पराक्रमी, प्रचण्डबली । ग्रमळ–निर्मल, पवित्र, उज्ज्वल । यळ–पृथ्वी । दस द्वय–बारह । भळळ–दैदिप्यमान, कान्तिमान । ढिग–पास में । चामर–चंवर । उजळ–उज्ज्वल । ढळ–ढुलते हैं, झलते हैं । जुधि–युद्ध में । निसचळ–ग्रडिग । पळळ–निरन्तर । पीठ–पृष्ठ । प्रतपळ–प्रतिक्षण । रज रूप–राजपूती का स्वरूप । दळ–सेना । बळ–शक्ति । चतुरंग–चतुरंगिणी । झळहळ–चमकता । मेर–सुमेरुगिरि । चळ–चलायमान । सर–बाण । संध–संधान करने पर । कळमळ–ग्राकुळता का भाव, योद्धा । सळळ सळपळ–चलायमान, चलते हैं । प्रळै करण–प्रलय करने के लिए ।

धस मसक धड़हड़ै, खुरताळ पमगां खड़हड़ै।
अध डांण खगेस मत्त रा, सजै झिलम समाज ।।
जे सूर रथ हिय जोड़ रा, तन झपट गज धड़ तोड़ रा।
पखरंत मान हुं गिरर पर, सन्नाह ऋगळ झिलम सर ।।
कस कमर किरमर कुंत कर, भड़ समर सायुध तुगस भर।
बर बीर सूर हर अछर बर, थट धंक द्रोयण थरर थर ।।
फव फील पर झंड फरर फर, घण त्रंबक जांगीय घरर घर हर।
अमर गज सज होय ।।२।।

पख भद्रजातीय पाटका, झर सीस पोगर झाटका।
मद मसत खुल्लीय डांण मद रा, सिंध सुत सारीख ।।
कैंकाण चाळ कराळ रा, नित करण पुर हटनाळ रा।
कर लंगर झाटण कणण कण, ठल टलण घंटण ठणण ठण ।।
झल झूल रथ घण झणण झण, हय हींस दिस दिस हणण हण।
भमकार भेरीय भणण भण, न्रत सबद तंत्री तणण तण ।।
गजनाळ गोळण गणण गण, फणधरण खणखण फणण फण।
रण करण सादस राण ।।३।।

---

२. धस मसक–धसक कर। धड़हड़ै–धड़कते हैं। खुरताळ–पदचाप। पमगां–घोड़ों की। खड़हड़ै–खड़खड़ ध्वनि। अध–मृग। डांण–गति, दौड़ में। पांण–बल में। खगेस–गरुड़, पक्षीराज। झिलम–सिर और गर्दन की रक्षा के लिए पहिना जाने वाला युद्धकालीन जालीदार कवच, लोहे की झूल। सूर रथ–रवि रथ। गज धड़–गज सेना। तोड़ रा–बराबरी के, पराजित करने वाले। पखरंत–पाखर धारी, लोहे की जालीदार झूलधारी। सन्नाह–जिरह। ऋगळ–कवच। सर–सिर पर। किरमर–तलवार। कुंत–बल्लम, भाला। सायुध–आयुधों सहित, समस्त हथियार। तुगस–तर्कश, भाथा। अछर–अप्सरा। बर–दूलहा। थट–समूह। धंक–क्रोध, इच्छा। द्रोयण–वैरी। फील–हाथी। त्रंबक–नगाड़े। जांगीय–नगारची, तबले वाद्य।

३. भद्रजातीय–श्रेष्ठ जाति के हाथी। पोगर–गजमस्तक। झाटका–झटके, प्रहार। मदमसत–मदमस्त। खुल्लीय–खुली, उघड़ी। डांण–चाल, कदम। सारीख–सदृश। कैंकाण चाल–अश्व जैसी तेज चाल वाले। लंगर–लोहे की जंजीर। झाटण–फटकारें, तोड़ने वाला। घंटण–घंटे। झूल–झूलें। हय–घोड़े। हींस–हिनहिनाहट। भेरीय–नफीरी वाद्य। न्रत–नृत्य। सबद–शब्द, ध्वनि। तंत्री–तंत्री वाद्य। गजनाळ–हाथियों पर रख कर या उनसे धकेल कर चलाई जाने वाली तोपें। गोळण–गोले। फणधर–शेषनाग। सादस–सदृश।

सारूप प्रिय व्रत साथ रा, पह विजय पंजर पाथ रा।
भीमेण भारत बाथ रा, निडर सादळ नंद ।।
अवनेस पायक ओळ रा, भड़ भिड़े कुंण भूगोळ रा।
राजेंद्र ध्रुव धड़ अचड़ रड़, झट गरट आरख झड़ड़ झड़ ।।
तड़ तुपक असणां तड़ड़ तड़, छत ढंके अड़ अड़ निजड़ छड़।
हर अछर खड़भड़ बीर हड़ बाधार अरडड़ बड़ड़ वड़ ।।
जे भुरज पट्टड़ विजड़ जड़, गह सो मद वंब गड़ड़ गड़।
खड़ त्रिजड़ आगळ खांम ।।४।।

---

४. सारूप–महाराना स्वरूपसिंह के, सारूप–समान आकृति वाले। पह–राजा की। पाथ रा–पार्थ के। भीमेण–भीम पांडव। भारत–महाभारत में। बाथ रा–भुजाओं के। सादळ नंद–शार्दूलसिंह का पुत्र, महाराना स्वरूपसिंह। अवनेस–पृथ्वीपति। पायक–सेवक, पदाति। ओळ रा–समानता, पंक्ति के, पहिचान के। भिड़े–सामने आकर लड़े, युद्ध करे। कुंण–कौन। ध्रुव–ध्रुव। अचड़–श्रेष्ठ कार्य, बड़ा, महान। गरट–झुंड, सेना। आरख तुल्य, बल। तुपक–छोटी तोप। असणां–गोलों। तड़ड़ तड़–तड़तड़ ध्वनि। छत–पृथ्वी, क्षिति। ढंके–आच्छादित हो जाती है। छड़–भाले, बर्छे। हर–शिव। अछर–अप्सरा। खड़ भड़–उलट पुलट होकर, हलचल उत्पन्न होकर। बीर हड़–वीर वैतालों के हँसने से। बड़ड़ बड़–टूटते समय होने वाली ध्वनि। भुरज–बुर्ज। पट्टड़–पट्टे, नगर। विजड़–तलवार। गड़ड़ गड़–ध्वनि विशेष। त्रिजड़–तलवार। खांम–रोक, अटकाव, बंद करना।

११८. गीत महाराणा सरूपसिंघ री आखेट रौ

बावरैल डाळामथो रसा पाळां बेड़ वाळो,
कवल्लां अखाड़ वाळो रेड़ वाळो काथ।
हैजम्मा विरोळी केती जज्जदूतां हेड़वाळो,
भद्रजात्यां कपोळां भचेड़ वाळो भ्रात ।।१।।

भाळकी संपा-सी चक्खां भाळवां भंजातो आयौ,
हाथळां मंजातो आयौ हवद्दां हडूर।
ऊभै ओळां हूंतां रोस भाळका बझातौ आयौ,
गिरंदां गजातौ आयौ नौहत्थो गडूर ।।२।।

---

११८. गीतसार-उपर्युक्त गीत उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंह की आखेट पर रचित है। इसमें वन्य सिंह की भयानक आकृति, शिकारियों द्वारा कन्दरा से उठाने पर क्रोध और आक्रमण आदि की भयानकता का चित्रण किया गया है। बिजली के समान ज्वलित नेत्र तथा प्रलयकालीन ज्वाला स्फुलिंग तुल्य उस सक्रुद्ध सिंह की महाराना ने बन्दूक द्वारा आखेट की।

---

१. वावरैल-बर्बर, बब्बर। डाळामथो-डलिया सदृश मस्तक वाला, सिंह, वृक्ष की शाखा के तुल्य शीश वाला। वेड़-बीहड़। कवल्लां-वाराहों के। अखाड़-अखाड़े। हैजम्मा-सेनाएं। विरोळी-नष्ट की। केती-कितनी ही (सेनाओं को) नष्ट की। जज्जदूतां-यमदूतों। हेड़ वाळो-समूह, हांकने वाला। भद्रजात्यां-श्रेष्ठ जाति के हाथियों। कपोळां-कपोलों, गज मस्तकों। भचेड़ वाळो-टक्कर से तोड़ डालने वाला। भ्रात-बंधु।

२. संपा-सी-विद्युत-सी। चक्खां-नेत्र। भाळवां-शिकार की खबर लाने वालों, करोलों को। भंजातौ-दूर भगवाता, संहारता। हाथळां-हाथल, सिंह का पञ्जा। हवद्दां-गज होदे। हडूर-(?) ऊभै ओळां-दोनों पंक्तियों। हूंता-से। भाळका-ज्वाला का, क्रोध का। गिरंदां-पहाड़ों को। गंजातौ-गुंजित करता। गडूर-सिंहराज, बाराह।

अंबिका सवारी हंदो धाकळै नगीस ओळे,
  असम्भी माकळे सको नै हैळ बा रूप ।
सारोस चसम्मा होय धावीयो हाकळे सांमौ,
  साझे बोल देर फेर दाकळे सारूप ।।३।।
असैं बेग प्रळैकाळ झाळ री फुलंग वूठौ,
  जांणै वीज खंड होय विछूटो जीमूत ।
त्रकुट समीर हूंता सुमेर माथ रै तूटौ,
  कनां गोळो नाळ छूटौ बारूद रै कूंत ।।४।।
जकां रोके बिचाळां थी दूनाळ न्हाळ री जोड़ै,
  आरब्बां री जांमी संचा ढाळ री अमात ।
दूजा भीम श्री हथळ कपाळ ठाळ री दीधी,
  सकेक काळ री मूठ बह गई समाथ ।।५।।
री थायो जू हेम विमाणां झुखीयौ रंभां,
  आपां हूंकार थी धावै मूंकीयौ सराट ।
साधां री सेत रंगी फूंकार फूंकियौ रखे,
  नटी रौ तेवड़ी फाळां चूकीयौ नराट ।।६।।

---

३. हंदो–को । धाकळै–हाक देता हुआ, दकालता । नगीस–पहाड़ । ओळे–ओट में । सारोस–सरोष । चसम्मा–नेत्र । धावीयो–चला, दौड़ कर आया । हाकळे–दकालने, ललकारने । सांमौ–सामने । सारूप–महाराना स्वरूपसिंह ने ।

४. असैं वेग– ऐसे वेग से । प्रळैकाळ–प्रलयकालीन । झाळ री–ज्वाला का । फुलंग–स्फुलिंग । वूठौ–बरसा । जांणै–मानो । बीज–विद्युत का । विछूटो–छूटा । जीमूत–इन्द्र । त्रकुट–त्रकुटाचल से । समीर–पवन । सुमेर–सुमेरुगिरि । माथ रैं–मस्तक के । तूटौ–टूटा । कनां–किंवा, अथवा । नाळ–तोप, नाली । कूंत–कुंत ।

५. जकां–जो, जिसे । बिचाळां थी–बीच ही से । आरबां री–तोपखाने की । जांमी–जामगी, पलीता । संचा ढाळ री–संचे में ढलित, यंत्र द्वारा ढाली गई । दूजा भीम–द्वितीय भीमसिंह । कपाळ–कपाल, मस्तक । ठाळ–निशाना खोजकर, नीचे । मूठी–मूठ, मुष्टिका । बह गई–चली, टूट पड़ी । समाथ–समर्थ, मस्तक पर ।

६. झुखीयौ–झुके । रंभां–अप्सराएं । मूकियो–छूटा, मुक्त हुआ । सराट–ध्वनि विशेष । सेत रंगी–श्वेत रंग की । फूंकार–फूत्कार । तेवड़ी–प्रारंभ की । फाळां–छलांगे ।

तसां सारदूळां पाड़ै आखेटां थाहरां तौलै,
ओछाहां समोलै भोख जाहरां असोल।
खत्ती है जत्ती रा फतै आलमां जिहांन खोले,
जैजैकार बोलै सिवांपती रा ज सोल ।।७।।

११६. गीत रावत पहाड़सिंघ चूंडावत सलूम्बर रौ

आयो उरेड़ियौ जोम रौ पटेल माथै धारे आंट,
रवत्तेस दूर हूं तेड़ियौ काथै राग।
सांकळां हूं लांघणीक हेड़ियौ बीहतो सेर,
पूंछ चांप सूतो फेर छेड़ियौ पैनाग ।।१।।

---

११६. गीतसार—उपर्युक्त गीत मेवाड़ के सलूम्बर संस्थान के अधिपति रावत पहाड़सिंह चूंडावत की युद्ध वीरता पर कथित है। रावत पहाड़सिंह ने उज्जैन की समरस्थली में महादाजी सिंधिया से भयानक युद्ध लड़ कर अमरत्व प्राप्त किया था। गीत में लिखा है कि पहाड़सिंह ने श्रृंखला से उन्मुक्त हुए सिंह अथवा सुप्त नाग को छेड़ने पर क्रोध धारण कर झपटने की भांति माधव राव सिंधिया पर क्रुद्ध होकर आक्रमण किया और शत्रुओं का संहार कर परम ज्योति में अन्तर्लीन हो गया।

---

७. तसां—तैसे, ऐसा। सारदूळां—शार्दूलों को, शेरों को। पाड़ै—पछाड़े। थाहरां—सिंह की कंदरा। ओछाहां—उत्सव, उत्साह। भोख—धन्य। जसोल—यश गायक, विरुद गायक।

१. उरेड़ियौ जोम रौ—जोम में उमड़ता हुआ, जोम तथा उत्साह पूर्वक उमड़ कर। पटेल माथै—ग्वालियर वालों के पूर्वज महादाजी सिंधिया पर। धारे आंट—वैर धारण किए, शत्रुता ग्रहण किए। रत्तवेस—रावत पदधारी। तेड़ियौ—बुलवाया हुआ। काथै—सत्वरता से, आतुरता से। साकळां हूं—जंजीरों से। लांघणीक भूखा। हेड़ियौ—हांका हुआ। बीहतो—भयातुर, भयभीत; चांप—दबाकर। सूतो—सोया हुआ। छेड़ियौ—छेड़ा हुआ। पैनाग—सर्प।

घाट श्रौढ़ी पाहड़ेस धकेलतो नौढ़ी घड़ा,
जड़ां खळां ऊखेळतो धरा छळां जाग ।
गजां बौह बीच तुरी मेळतो परांथी गाढ़ौ,
लोह जाय मेळतो उरांथी द्रोह लाग ।।२।।
बिजाई कुवेर चढ़ै वींद ज्यूं श्रनोप वांने
श्रगोप गै भांजे यसौ हाथळां उठाय ।
श्रताळां करंतो होफ जंगां रोसा वक्र श्रोप,
कोप तोप भाळां लोप श्रायौ महाकाय ।।३।।
धूत नळां उछाजतौ भांजतौ हाथियां धक्के,
धारूजळां गांजतौ श्रनेक घड़ा धींग ।
काळकीट उप्रांजतौ ऊठियो लोयणां कोय,
नरवेधा दोयणां खंभ गांजतौ न्रसींग ।।४।।
चूंडै सोबादार किया खाग रा ऊछाज चोड़ै,
दहूं पासे चसम्मा श्राग रा तेज दीस ।
हैमरां श्रजेज बेग बाग रा उठाण हूंत,
सको हुश्रा नाग रा मजेज हीण सीस ।।५।।

---

२. घाट श्रौढ़ी–सेना का रक्षक, महान योद्धा । नौढ़ी घड़ा–नवौढ़ी सेना को । जाड़ां खळां–शत्रुश्रों का समूह । ऊखेळतो–उखाड़ता हुश्रा । धरा–पृथ्वी । छळां–युद्ध, लिए । गजां बौह–गजव्यूह, हाथी दल । मेळतो–मिलाता । परांथी–दूर से ही । उरांथी–इधर से, इस श्रोर से, हृदय से ।

३. बिजाई–द्वितीय । कुबेर–रावत कुबेरसिंह । वींद–दूलहा । श्रनोप वांने–श्रनुपम वेशभूषा । श्रगोप–चौड़े में, श्रगुप्त । गै–हाथी । यसौ–ऐसा । हाथळां–पञ्जा, हाथ । श्रताळां–भयंकर, जोशीली । होफ–दहाड़, गर्जना । तोप भाळां–तोप की ज्वाला । लोप–उल्लंघन कर, पर्वाह न कर ।

४. धूत–उन्मत्त हुश्रा, वीर । नळां–सिंह के श्रागे के पैर का भाग, पैर की पिंडली का श्रग्रभाग । उछाजतो–उछालता । भांजतौ–मारता, नाश करता । धक्के–सामने, धक्का लगाकर । धारूजळां–खड्गाघातों से । गांजतो–संहार करता । घड़ा–सेना । धींग–जबरदस्त, विकटवीर । काळकीट–यमराज । उप्रांजतो–(?) । लोयणां–नेत्रों । दोयणां–वैरियों । खंभ–स्तंभ । न्रसींग–भगवान् नृसिंह ।

५. चूंडै–रावत चूंडा का वंशधर रावत पहाड़सिंह ने । सोबादार–सूबेदार, राज्यपाल । ऊछाज– ऊपर उठाए हुए । चोड़ै–खुले, प्रकट । दहूं पासे–दोनों पार्श्व, दोनों श्रोर । चसम्मा–नेत्रों । दीस–दृष्टिगत । हैमरां–घोड़े । श्रजेज–निर्विलम्ब । बाग रा–लगाम के । उठाण–उठाने, ऊंची करने । हूंत–से । नाग रा–शेषनाग का, हाथी का । मजेज–गौरव । हीण–हीन ।

सन्नाहां न मावै सूर बड़ी बड़ी नाचै सूंडै,
आग झड़ी द्रोह ऊंडै चसम्मा अंटेल ।
भिड़ी खड़ी मूंछ भ्रूहां लोह रै हड़ूंडै भांत,
पड़ी अड़ी राड़ चूंडै अचूंडै पटेल ।।६।।

आसमेद ज्याग रा अमाप पांव देत आघो,
आछे खांप हूंत देत ओनागो अत्रीठ ।
लड़ाक सीसोद नेम गनीमां अहेत लागो,
नेतबंध बागो खेत अखाड़े नत्रीठ ।।७।।

रोक रोक तुरी भाण आराण विलोक रीझै,
विभ्रमोक त्रलोक त्रंबोक घोक बाज ।
बेध बेध सोंक झोक तोक बाण सेल खाग,
सीसोद गनीम तणा थोक हूं चोक सकाज ।।८।।

---

६. सन्नाहां–कवचों, जिरह । न मावै–समाहित नहीं होता । बड़ी बड़ी–बोटी बोटी, अंग प्रत्यंग । सूंडैं– (?) । आग झड़ी–अग्नि वर्षा । द्रोह ऊंडै–गहरे वैर से । चसम्मा–नेत्रों । अंटेल–गर्व वाला, शत्रुता रखने वाला । भिड़ी–मिली, स्पर्श करने लगी । भ्रूहां–भृकुटि, भ्रूहें । हड़ूंडैं–(?) । भांत–भांति । अड़ी–हठीली, वैर धारण कर । राड़–युद्ध । अचूंडै–विकराल, भयावह । पटेल–महादाजी पटेल ।

७. आसमेद ज्याग रा–अश्वमेध यज्ञ के । अमाप–अमित । पांव–कदम । देत आघो–आगे देता, अग्र देता, सामने दूर तक देता । आछे–अच्छे, हाथ । खांप हूंत–तलवार से । ओनागो–नग्न, म्यान बाहर की हुई । अत्रीठ–अधैर्यता । लडाक–लड़ाकू, वीर । गनीमां–शत्रुओं । अहेत लागो–वैर लग कर, अहित में लगा । नेत बंध–वीरता सूचक चिह्न धारी । बागो–लड़ने लगा । खेत अखाड़े–रणस्थल रूपी अखाड़े में । नत्रीठ–निःशंक, प्रहार झड़ी लगने लगा ।

८. तुरी–घोड़ा । भाण–सूर्य । आराण–रणभूमि । बिलोक–देख कर । रीझै–खुश होता है । विभ्रमोक–चकित (?) त्रंबोक–नगाड़े । घोक बाज–घोर निनाद होकर । सोक–बाणों के चलने पर उत्पन्न ध्वनि । झोक–धन्य, वाह वाह । तोक–उठाकर । बाण सेल खाग–तीर भाला और तलवार । गनीम तणा–शत्रुओं का । थोक हूं–समूह से, सेना के साथ ।

बारंगां उमंगां रंगां विमाणंगां सोंक बाज,
रारंगां अभंगां भड़ां दमंगां रोसार ।
पनंगां विहंगां ढंगां नारंगां अभीच पड़ा,
सारंगां खतंगां अंगां मातंगां दूसार ।।९।।

खत्री कंध जेम केही रोसार चसम्मा खोलै,
सार तोलै केहो सारसा चवै समंध ।
वार पड़ पूठ केही माथा मार मार बोलै,
काया तेग धार ऊठ डोलै कै कमंध ।।१०।।

सूर गैण बाथ घाले घणां तेग छूटा संध,
रोस जूटा घणां सूर भाले गाढ़ेराव ।
घणां सेल फूटा सीस करै खाग बाढ़ा घाव,
घणां खाग टूटा करै जम्मडाढ़ां घाव ।।११।।

---

९. बारंगां–अप्सराएँ । उमंगां–उमंग, उत्कण्ठित । विमाणंगां–विमानों में । रारंगां–नेत्र, आंखें । अभंगां भड़ां–निर्भीक वीरों । दमंगां रोसार–क्रोधातिरेक से नेत्रों से अग्निकण बरसते हैं । पनंगां–सर्पों पर, हथियारों पर । विहंगां–गरुड़ पक्षी, अनिल पक्षी । ढंगां–भांति । नारंगां–तीर, रक्त तलवार । अभीच–कायर । सारंगां–वाण । खतंगां–घायलों, क्षतों । मातंगां–हाथियों, मदमस्तों । दूसार–आर पार छेद कर, द्विधारा बर्छा, तलवार ।

१०. खत्री–क्षत्रिय । कंध–बिना सिर का धड़, कंधे, कंद । रोसार–कोपान्वित । चसम्मा खोलै–नेत्र खोलते हैं । सार तोलै–तलवार अथवा शस्त्रों को प्रहार हेतु ऊपर उठाते हैं । केही–कतिपय । सारसा–समतुल्यों को । चवै–कहते हैं । समंध–आपसी रिश्ता प्रकट कर । पूठ–पृष्ठ । माथा–मस्तक । काया–शरीर । तेग धार–खड्ग धारण किये । डोलै–लड़खड़ाते कदमों से फिरते हैं । कै–अनेक, कई । कमंध–धड़ ।

११. सूर–वीर । गैण–आसमान । बाथ घाले–भुजाओं में लपेटे हुए, भुजपाश में पकड़े । घणां–घने । छूटा संध–संधिस्थलों से विछिन्न हुए । रोस जूटा–रोष में भिड़ते हैं । भाले–बलम, सेल । गाढ़े राव–दृढ़ वीर । सेल–भाला । खाग बाढ़ा–तलवारों के प्रहारों के, तलवारों की धाराओं के । खाग टूटा–प्रहारों से टूटित तलवारों के बाद । जम्मडाढ़ां–कटारों के ।

नाराजां कै झड़े सूर अच्छरां लगावै नेह,
छेह पेलै केही सूर आभड़े नाछोत ।
देह त्यागै केही सूर जीरणां वसत्रां दोय,
सांदेहां विमाणां वैसे जावै कै साजोत ।।१२।।

दुझाल रा संध ज्यूं रहे न कोई खोज ओटी,
करै कै लाल रा जकै छोटी वूथ कूंत ।
धाराळां झाल रा नागां अगोठी काळ रा धूबै,
हाल रा चौसटी दै अनोठी वाण हूंत ।।१३।।

महाराग छंडेव छंडेव व्हैन देन गूंड,
बजंडेव डम्मरु चंडेव हत्थी वीस ।
संडेव छंडेव मेख पाथ वाण पाय साच,
उमंडेव मंडेव तंडेव नाच ईस ।।१४।।

---

१२. नाराजां–तलवारों । झड़े–कटे हुओं से । अच्छरां–अप्सराएँ । नेह–स्नेह, प्रेम । छेह–अन्त, आभड़े ना छोत–विना लिपटे हुए, स्पर्श नहीं करते हुए । जीरणां–जीर्ण, पुराने । वसत्रां दाय–वस्त्रों की तरह । सांदेहां–सशरीर । बैसे–बैठ कर । जावै–जाते हैं । कै–कई । सजोत–सज्योति, ब्रह्म में लीन होने ।

१३. दुझाल रा संध ज्यूं–प्रलयकाल की सी उछालें लेते समुद्र की भाँति । खीज–क्रोध, नाराजी । ओटी–बाधक बन कर, रक्षक । जकै–जो, वे । वूथ–मांस के टुकड़े । कूंत–भाला । धाराळां–तलवारें । नागां–हाथियों के । अगोठी–शिकार में जानवर के निकलने के पूर्व ही उसके मार्ग को रोककर बैठने को 'अगोठी बैठना' कहा जाता है । धूबै–संहार करे, बरसते हैं । हाल रा–प्यार जताने के गीत । चौसटी–चौंसठ चण्डिकाएँ । अनोठी बाणा–अनूठी वाणी । हूंत–से । छंडेड–चण्डिका, सहायतार्थ पुकार की ।

१४. छंडेव–चढ़ने वाला, शिव । गूंड–घूमर, चक्रनृत्य । बजंडेव–बजाने वाला । डंमरु–डमरु वाद्य । चंडेव–चण्डिका, रणदेवी । हत्थी बीस–बीस हाथों वाली, बीस हाथों से । संडेव–नंदि, बैल । छंडेव–चढ़ने वाला, शिव । पेख–देख कर । पाथ–पार्थ, अर्जुन । उमंडेव–उमड़कर । तंडेव नाच–ताण्डव नृत्य । ईस–शिव ।

ईख लंका खेत्रां त्रेता जुगेता संग्राम असौ,
उरधरेता केता धू त्रनेता उनन्द्र ।
रुद्र छाक लेता वीर देता राह जेता फिरै,
मळै हास हेता वेता अनेता मुनन्द्र ।।१५।।

पंथ आसमाण हूंत झपट्टी अपट्टी परां,
बरां कंठ लपट्टी अपट्टी जेण वार ।
सामट्टी झड़पफे गीध जट्टी तट्टी गणा सूधौं,
धूरजट्टी चूणै धू हजारां हाथ धार ।।१६।।

भद्रजाती चुणै सीस मोती श्रोण पंकां भिळै,
खात मोती मराळी नसंकां छुगै खूद ।
अंका कीध लंका राम मिळै बंका खेत अेम,
ग्रीध कंकां असंका नसंका लियै गूद ।।१७।।

---

१५. ईख–देख कर । लंका खेत्रां–लंकापुरी के रणक्षेत्र में । त्रेता–त्रेता । जुगेता–युग । असौ–ऐसा । उरधरेता–उर्ध्ववेता । केता–कितने ही । धू–मस्तक । त्रनेता–त्रिलोचन, शिव । उनन्द्र–उनिद्र, ऊंघता हुआ, जागृत होकर । रुद्र छाक–रुधिर की छाक, रक्त पान । वीर–वीर, गण । फिरै–घूमते हैं । मिळै–मिलते हैं । हास–हँसी । हेता–ऋषि । वेता–ज्ञानी, तत्व वेता ऋषि । अनेता–अनेक । मुनन्द्र–मुनि, ऋषि ।

१६. आसमाण–आकाश । हूंत–से । झपट्टी–तीव्रता से पकड़ने को दौड़ी । अपट्टी–उमड़ कर, बहुत अधिक । परां–पंखों, अप्सराएँ । बरां कंठ लपट्टी–अपने वांछनीय दूलहों के कण्ठों के लग झूमने लगी । अपट्टी–अपार । जेण वार–उस समय । सामट्टी–अत्यधिक । झड़पफे–पंखों की झपटें देते । गीध–गृद्ध पक्षी । जट्टी तट्टी–जहाँ तहां । गणां सूधौ–गणों सहित । धूरजट्टी–शिव । चूणै–चुनता है । धू–मस्तक ।

१७. भद्रजाती–उत्तम जाति के हाथी । श्रोण पंकां–रक्त और कीचड़ में । भिळै–मिले हुए, शामिल हुए । खात–चुगते हैं, खाते हैं । मराळी–हंस । नसंकां–निःशंक हो । खूद–कुरेच कर । मिळै–मिलकर, भिड़कर । खेत–रणक्षेत्र में । ग्रीध–गृद्ध । कंकां–कंक पक्षी । गूद–मस्तक की मज्जा, चर्वी ।

जूझवां फुहार टक्र उडै धके आय जेता,
अंग चक्र वार हुवा वक्र कै अथांण ।
केलपुरे अठी उठी चक्र वेग फेर कीधौ,
मार टक्र मारहठी सेन रौ मथांण ।।१८।।

चावदंत दीह अगां समां जूझ लाग चाळ,
नराताळ सामध्रमी तणै सांचो नेम ।
क्रोधवाळ रूप गनीमांण रौ विधूंस कीधौ,
जोधवाळे वीरभद्र दख्ख ज्याग जेम ।।१९।।

सीसोद उमंडे सुरांलोक लीधो सीस साटे,
हत्थी बीस मंडै ओक घाटां श्रोण हेत ।
रूठौ सारदूळ खांत अखाड़े उपाटां रोस,
खळां दांत खाटा करे सूतो वीर खेत ।।२०।।

---

१८. जूझवां–युद्धरत योद्धाओं। टक्र–टक्कर से। चक्र वार–प्रहार से चक्र हुए अथवा कटे हुए, चक्राकृति। वक्र–तिरछे। कैलपुरे–रावत पहाड़सिंह ने। अठी उठी–इधर उधर। मथांण–मंथन, विलोड़न।

१९. समां–समय। जूझ–युद्ध। लाग चाळे–क्रीड़ारत होकर। नराताळे–अत्यधिक, निधड़क होकर। गनीमांण–क्षत्रुओं का। विधूंस–विध्वंस। जोधवाळे–रावत जोधसिंह के पुत्र पहाड़सिंह ने। दख्य ज्याग–दक्ष के यज्ञ।

२०. सीसोद–सीसोदिया वंशीय गीत नायक पहाड़सिंह। उमंडे–उमड़ कर। सुरां लोक–स्वर्ग लोक। लीधो–लिया, प्राप्त किया। सीस साटे–सिर के बदले में। हत्थी वीस–वीस भुजाओं वाली, रण देवी। मंडै ओक–अञ्जली कर। श्रोण हेत–रक्तपान के लिए। रूठौ–रुष्ट हुआ, कुपित हुआ। सारदूळ–शार्दूल, सिंह। उपाटां रोस–रोष में उमड़ कर। खळां दांत खाटा करे–शत्रुओं के दांत खट्टे कर। सूतो–सो गया। खेत–रणक्षेत्र में।

बीत त्यागी जेम सुर नीरांण सीसोद वढ़े,
जुधा जुधा खळां तणा जिराण एकूंट ।
आभ क्रीत लागे चढै बीरांण धकायो आद,
बीराण चखावे स्वाद हालियो वैकूंट ।।२१।।

हुवौ जोखंत कांकळे ओत ओत जोत हूंतो,
जोत हूंतां रही नकां भंतका जुहार ।
सरै छांहां मही पूरी सातमी तंतका सार,
अंत समै लही पूरी अंतका उदार ।।२२।।

धणी खरी सरीत निबाही बाज फूलधारां,
गोळ कूंडे रीत चूडे अरी करी गाह ।
परी वरी हंस बैठ बिमाणां सैंजोत पूगौ,
मरी मरी टूक होय उडो प्रथी मांह ।।२३।।

—बद्रीदास खिड़िया रौ कह्यौ

---

२१. बीत–वित्त, द्रव्य । नीरांण–समुद्र । जिरांण–हजम करने, जीर्ण । आभ–आकाश तक । क्रीत–कीर्ति । वीरांण–वीर । चखावे–चखाकर । हालियो–चला, गया ।

२२. जोखंत–मारा गया, समाप्त हुआ । कांकळे–युद्ध में । जोत हूंतो–ज्योति से । भंतका–भ्रान्ति । सरै–शरों, बाणों मस्तकों की । छांहां–छाया । मही पूरी–पृथ्वी को आपूर्ण की । अन्त समै–अन्तिम काल में, मृत्यु समय में । लही–प्राप्त की । पूरी–पूर्ण, आपूरित कर । अंतका–अन्तक, यमराज ।

२३. धणी–स्वामी की । खरी–सच्ची । सरीत–शर्त, परीक्षा । निबाही–निर्वाह की । बाज–लड़कर । फूलधारां–तलवार धाराएँ । गोळकूंडे–चक्रव्यूह की । रीत–रीति । चूंडे–चूंडावत शाखावाले पहाड़सिंह ने । अरी–वैरियों । गाह–मंथन, नाशकर, कुचलकर । परी वरी–अप्सरा का वरण कर । हंस–जीव, प्राण । सैंजोत–साज्योति । पूगौ–पहुंचा । टूक होय–खण्ड खण्ड होकर । प्रथी मांह–पृथ्वी में ।

१२०. गीत रावत हमीरसिंघ चूंडावत भदेसर रौ

काढ़ी दळासी मंगळा प्रळै समंदा ऊजळी किनां,
खळां धू अरूठी जव्र गैथंडां खाणास ।
सरंगा विछूटी तूटी माध पव्वै काळा सीस,
वीर चूंडावाळी ज्वाला बीजळा वाणास ।।१।।

जटी ऊघड़ी कै चखां अराबां सावात जागे,
संधां ऊवड़ीक पव्वै भूमंडां सामाज ।
मामलां घड़ीक बूठी सतारा गिरंद माथै,
निहंगा तड़ीक जेम तुहाळी नाराज ।।२।।

---

१२०. गीतसार—ऊपर प्रस्तुत गीत मेवाड़ के भदेसर ठिकाने के रावत हम्मीरसिंह चूंडावत योद्धा पर प्रणीत है। इसमें गीत नायक की तलवार को प्रलयाग्नि अथवा मेघमाला में चमकती विद्युत के तुल्य उपमित कर युद्ध का वर्णन किया है। कवि का कथन है कि गीत नायक ने शत्रुओं का संहार करने के लिए प्रलयकालीन ज्वाला अथवा मेघमाला की बिजली जैसी अमोघ प्रभावकारी तलवार म्यान से बाहर की और पर्वतकाय श्यामल गज सेनाओं पर आघात करने लगा।

---

१. काढ़ी दळा—म्यान से निकाली। सी—जैसी। मंगळा—अग्नि ज्वाला। प्रळै—प्रलय। समंदा—समुद्रों। ऊजळी—उज्ज्वल। किनां—किंवां, अथवा। खळां धू—दुश्मनों के सिर। अरूठी—क्रुद्ध (?)। जव्र—वज्र यमराज। गै थंडां—गज समूह। खाणास—संहारक, खानेवाली। सरंगा—बादलों में से, आकाश से। बिछूटी—बिछुड़ी, टूटकर पड़ी हुई। तूटी—टूटी। माध—मार्ग महादा। पव्वै काळा सीस—श्यामल पहाड़ों पर, पर्वताकृति श्यामल गज सेना पर। बीजळा बाणास—विद्युत रूपा तलवार।

२. जटी—शिव। ऊघड़ी—खुले, उदघटित हुए। चखां—नेत्र। अराबां—तोपों। साबात—विशेष किस्म की बारूद, सुरंगों में भरी हुई बारूद। जगै—जलकर, धधककर। संधा—समुद्र, सिंधिया, मरहठे। ऊबड़ीक—ऊपर उठी। भूमंडा—पृथ्वी के शृंगार, हाथियों के। सामाज—समूह। मामलां घड़ीक—युद्ध घड़ी। बूठी—चली, बरसी। सतारा गिरंद माथै—पर्वत रूपी सतारा के स्वामी पर। निहंगा तड़ीक—आकाश की विद्युत। जेम—ज्यों। तुहाळी—तुम्हारी, तेरी। नाराज—तलवार।

सड़फ्फै गैझूह लोहां कै धरा तड़फ्फै सूर,
बड़क्कै खेचरां रंभा भड़क्कै वेवाण ।
महावेग बहिया गनीम अद्र तणै माथै,
क्रोधंगी हमीर वाळी दामणी केवाण ।।३।।
नीर बजै आसेर चढ़ायौ सालमेस नंद,
सोभा चहुंफेर चाह्यौ प्रवाड़े सनीम ।
ओझलाणो थारी समसेर छटा तणी आगै,
मेर फेर फूल पत्रां न आवै गनीम ।।४।।
—तेजराम आसिया रौ कह्यौ

१२१. गीत रावत प्रतापसिंघ चूंडावत आमेट रौ

आछे नेक आंटे गनीमां हूं मेळिया निराट ऊखा,
त्राछी खाई रूकां केक झेलिया त्रिताप ।
उली अणी पाछी देखी काथै खाग ऊखेलिया,
पैली अणी माथै काछी भेळिया प्रताप ।।१।।

---

१२१. **गीतसार**—उपरांकित गीत मेवाड़ के आमेट ठिकाने के रावत प्रतापसिंह चूंडावत के मरहठों से युद्ध लड़ने के प्रसंग का है । गीत में लिखा है कि प्रतापसिंह ने स्वपक्षीय योद्धाओं के भयाक्रान्त होकर युद्ध से पीछे हटते समय हाथ में खड्ग पकड़कर विपक्षी सेना पर घोड़े से भयानक आक्रमण कर शस्त्र संघात प्रारम्भ किया ।

---

३. सड़फ्फै—संहार करता है । गैझूह—गज समूह । लोहां—अस्त्र शस्त्रों से । कै—कितने ही । तड़फ्फै—तड़फते हैं । बड़क्कै—कड़कती आवाज में बोलने लगी । खेचरां—पिशाच योगिनियां । रंभा—अप्सरा । भड़क्कै—छीन छीन कर, झपट झपट कर । वेवाण—विमानों । बहिया—चली, वार किया । गनीम अद्र तणै माथै—गिरि सम शत्रु के सिर पर । क्रोधंगी—क्रोधी । दामणी केवाण—बिजली रूपी तलवार ।

४. नीर बजै—विजय नीर, यश विजय । आसेर—दुर्ग । चहुंफेर—चारों ओर । प्रवाड़े—वंश विरुद, कीर्ति कथा । ओझ लाणो—छिप गया, जल गया, अदृश्य हो गया, मुरझा गया । थारी—तेरी । समसेर छटा—विद्युत रूपी शमशेर । मेर—गिरि, पहाड़ । फेर—फिर । फूल पत्रां—पुष्प पत्र । न आवै—आने का साहस नहीं करता, नहीं आता । गनीम—वैरी ।

१. आछे नेक—अच्छे भले । आंटे—वैर, बदले में । गनीमां हूं—शत्रुओं से । मेळिया—मिलाया, भिड़ाया । निराट—बिलकुल, निपट । ऊखा—उषाकाल में । त्राछी खाई—भयभीत हुए । रूकां—तलवारों से । केक—कइयों ने । झेलिया—सहन किये । उली अणी—इस ओर की सेना, स्वपक्षीय फौज । पाछी—पीछे हटती । काथै—जल्दी से । खाग ऊखेलिया— खड्ग प्रहारों से पैर उखड़ते हुए । पैली अणी—उस ओर की सेना, विपक्षी सेना । काछी—घोड़ा । भेळिया—आक्रमण किया ।

धूपटै गनीमां धरा गढ़ा व्है नतारा ढोल,
कानां सुणै फता रौ खता रा बोल केम।
सतारा छात रा दळां ऊपरां अधायौ सिंघ,
जोध आयौ उलकापात रा तारा जेम ॥२॥

मूंछारां बळाका दीधां सीसोद गनीमां माथै,
धूर हास तमासै मुनिन्द्र रीधा धीर।
म्यान हूं उखेलतांई कीधा खाग तेढ़ीमणे,
वेढ़ीमणे मेळतांई कीधा महावीर ॥३॥

मेदपाट तणी कूक सांभळे विजाई मान,
बान आयौ अभूख उपाटां जेण बार।
मरेठां दनेउ भूक करंतौ जनेबां मूंढ़ै,
एक घाव रोई टेक जनेऊ उतार ॥४॥

---

२. धूपटै–लूटता है, उन्मुक्तहस्त, अधिकार करता है। गनीमां–शत्रुओं की। नतारा–नित्य, प्रति दिन का। फता रौ–फतहसिंह तनय, प्रतापसिंह। खता रा–अपमान जनक, दोष पूर्ण, दूषित। केम–कैसे। सतारा छात रा–पूना सतारा के राजा का, मरहठों का। दळां–सेनाओं। अधायो सिंघ–अतृप्त शेर, भूखा सिंह जो अत्यधिक क्रुद्ध होता है। जोध–योद्धा। उलकापातरा–उल्कापात का।

३. मूछारां बळा का दीधां–मूंछों के बल दिए हुए। गनीमां माथै–वैरियों पर। धूर–रुद्र। हास–हास्य, हँसी। रीधा–प्रसन्न हुए। उखेलतांई–बाहर निकालते ही। तेढ़ीमणे–विकटवीर। वेढ़ीमणे–युद्ध के लिए। मेळतांई–मिलाते ही, भिड़न्त करते ही।

४. मेदपाट तणी–मेवाड़ की। कूक सांभळे–पुकार सुनकर। विजाई मान–द्वितीय मानसिंह ने, प्रतापसिंह ने। अभूख–क्षुधित, तृप्त। उपाटां–(?)। मरेठां–मरहठों को। भूक करंतौ–उपहत करता, टुकड़े करता। जनेबां मूंढ़ै–तलवारों की धाराओं से। जनेऊ उतार–यज्ञोपवीत पहनते हैं उस विभाग को विदीर्ण करता।

नाराजां आराण झळी विजळी सिळाव नेजां,
दहूं फौज ऊलळी दारणां मिळी दीठ ।
लड़ाका रीसोद आडी धोड़ै धाड़ि धांख लागी,
राड़ि चोड़ै सीसोद गनीमां वागी रीठ ।।५।।

सूरां पूर झाटां मांची भ्रकूटां उठावै संभू,
सांची तान लावै रंभा रचावै संगीत ।
रिखीराज बावै बीण प्रबीण हरक्खां रतौ,
गावै सुखा चौसठि अंगोठी रुखां गीत ।।६।।

काळ वाळी चरक्खी असाध जूठौ नाग किनां,
रूठौ जिसौ जूठौ खत्री धंखै उरां रीस ।
एक बूठौ महारत्थी वाईक राळतौ आगि,
सायकां अरोड़ै टूटौ आध रती सीस ।।७।।

---

५. नाराजां–तलवारें ।आराण–रण । सिळाव–चमक । नेजां–भालों । ऊलळी–उमड़ी, युद्धरत हुई । दारणां–वीरों की, प्रचण्डों । मिळी दीठ–दृष्टि मिली, चौनजर हुए । लड़ाका–लड़ने वाले, वीर । आडी–सामने, ओट स्वरूप । धांख–इच्छा, क्रोध । राड़ि–युद्ध । रीठ–प्रहार ।

६. पूर झाटां–पूर्ण बल से प्रहार करना । मांची–हुई,लगाने लगे । भ्रकूटां–मस्तकों को, भृकुटि । तान–नृत्य, गानक्रिया । रंभा–अप्सरा । रिखीराज–नारद । बावै बीण–वीणा बजाते हुए । हरख्खां रतौ–हर्ष में अनुरक्त, प्रसन्नता से । चौसठि–चौसठ चण्डिकाएँ । रुखां–भांति ।

७. काळवाळी चरक्खी–कालचक्र, मृत्यु की चर्खी जिसमें जीव पिस कर नष्ट होते हैं । जूठौ–भिड़ा । नाग–हाथी, सर्प । किनां–अथवा । रूठौ–रुष्ट हुआ । खत्री धंखै–क्षत्रियत्व की प्रबलेच्छावाला । उरां रीस–हृदय में रोष भरकर, क्रोधधारण कर । वूठौ-बरसा । बाईक–वचनों से । राळतौ आगि–अग्नि गिराता । सायकां–तीरों की ।

सड़प्फै वीजूजळां हास मोहा बड़क्कै सूर,
सीसहार झड़प्फै पड़प्फै नथी संभ ।
ग्रीधणी हड़प्फै पळां सांमळी हड़प्फै गूद,
रुण्ड केई अड़प्फै पड़प्फै वरां रंभ ॥८॥

कै दिया नदीठ बैठ नागड़ै जोगिन्द्र केही,
सही लंका आघा घड़ै दीठ बंका सूर ।
दवा सूं पागड़ै लग्गौ नूपरां चलावे दहूं,
गहट्ठी वरां ऊपरां झागड़ै परी जे हूर ॥९॥

---

८. सड़प्फै–अविराम अतिवेग से चोटें मार रहें हैं । वीजूजळां–तलवारों की । बड़क्कै–छिन्न मस्तक, बड़बड़ाहट की आवाजें करते हुए । सीसहार–मुण्डमाला के लिए । झड़प्फे-झपट रहा है । पड़प्फै–किन्तु उनको उठाने में समर्थ नहीं । नथी–नहीं । संभ–शिव । ग्रीधणी–गृद्ध पक्षी । हड़प्फे–हड़बड़ाते हैं । पळां–मांस के लिए । सांमळी–चील्हें । हड़प्फे–छीना झपटी मचाती हैं । गूद–मज्जा । अड़प्फे–स्पर्द्धा करते हैं । वरां–वरों, दूलहों । रंभ–अप्सराएँ ।

९. नदीठ–जिसने दृष्टिपात न किया हो । नागड़ै–नग्न, दिगम्बर, शिव । केही–कई । आघा–अगाड़ी । घड़ै–बराबरी के । बंका–बांकुरे । दवा सूं–स्वीकृति से (?) । पागड़ै लग्गौ–रकाब पकड़े हुए, साथ साथ चलते हुए । नूपरां–नूपुर । चलावे–बजाती हैं । गहट्ठी वरां–वैभवशाली वरों, वर समूहों । झागड़ै–झगड़ा करती हैं । परी–अप्सराएँ ।

गोळां तणी मार लोप तोप रै जंजीरे गयौ,
आहड़ेस धारी नकौ बोलां तणी आप ।
अहूं लोकां मझारे औसाप पूगी रौळा तणी,
तापगीर हिये पूगी रौला तणी ताय ।।१०।।

उथापे गनीमां थांणां सूरां सीम थाप ऊभौ,
जोध पूरां काप ऊभौ भीम झाड़ झोड़ ।
अरी खांप धाप ऊभौ करी खावा धाप आघ,
आज री जगार्णा खांपा न मावै अरोड ।।११।।

—बद्रीदास खिड़िया रौ कह्यौ

---

१०. लोप—उल्लंघन कर, सहनकर । तोप रै जंजीरे—तोपों की पंक्ति के पास । आहड़ेस—सीसोदिया प्रतापसिंह । नकौ—कोई नहीं, कुछ नहीं । मझारे—में । औसाप—महिमा, कीर्ति । पूगी—पहुंची, फैली । रौळा तणी—युद्ध की । तापगीर—ताप देने वाले शत्रु, आतंककारी के । हिये—हृदय में । ताप—भय, आतप ।

११. उथापे—उन्मूल करे, उठावें । गनीमां तणां—दुश्मनों के । थांणां—सैनिक चौकियां । सूरां सीम थाभ—शूरवीरता की सीमा स्थापित या निर्धारित कर । ऊभौ—खड़ा । पूरां—पूर्ण । काप—टुकड़े कर, नाश कर । भीम—भयानक । अरी खांप—शत्रु जाति शत्रु को तलवार से । धाप—तृप्त हो । खावा—(?) । जगाणी—रावत जगा का वंशज, प्रतापसिंह । खांपां—तलवारें । अरोड़—जबरदस्त ।

१२२. गीत सगतसिंघ सगतावत सांवर रौ

सकतेस राजड़ दूसरौ, यण बार खत्रवट ऊधरौ
इन्द्रसिंघ तात परताप आरिख, दुवौ सुन्दरदास
भड़ थाट गोकळ भांण रा, रछपाळ धर गिर रांण रा
अमट भड़ थट सुभट ऊपट, खहण झट झट विकट खांखट
लपट खग झट झपट लट लट, चपट रोझट रपट चट चट
गरज गट थट दबट गाहट, फव घट नट बट कुलट फबियट
घरट घूम घट दळट घट घट, झपट खग झट निपट झळ पट
अछर पूरी आस ।।१।।

---

१८१. गीतसार–उपरांकित गीत अजमेर मेवाड़ के सांवर ठिकाने के अधिपति महाराज शक्तिसिंह शक्तावत सीसोदिया पर लिखित है। गीत में गीतकार ने महाराज शक्तिसिंह और इन्दोर (मालवा) वालों के पूर्वज मल्हार राव होल्कर के पारस्परिक युद्ध का वर्णन किया है। गीतनायक ने अजमेर के मरहठे राज्यपाल को पराभूत कर कीर्त्ति अर्जित की थी। कवि ने शक्तिसिंह को अपने पूर्वज प्रसिद्ध योद्धा महाराज शक्तिसिंह भींडर, शाही मनसबदार गोकुलदास और सुन्दरदास के समतुल्य वीर वर्णित किया है।

---

१. सकतेस–महाराना उदयसिंह मेवाड़ के छोटे पुत्र शक्तिसिंह जिससे सीसोदियों की शक्तावत शाखा का प्रचलन हुआ। राजड़ दूसरौ–द्वितीय राजसिंह, गीतनायक शक्तिसिंह। खत्रवट–क्षत्रियत्व। ऊधरौ–उर्घ्व, उद्धारक। तात–पिता। आरिख–सदृश। दुवौ–द्वितीय। भड़ थाट–योद्धा समूह, सैन्यदल। गोकळ–गीतनायक का पूर्वज शाही मनसबदार गोकुलदास। भांण–शक्तिसिंह प्रथम का पुत्र और गोकुलदास का पिता भाण। धर गिर–पृथ्वी और पहाड़ों का। रांण रा–मेवाड़ के महारानाओं का। अमट–अमिट। भड़थट–सेनादल। ऊपट–उमड़ कर, मर्यादा से बाहर आगे बढ़ कर। खहण–भिड़कर, युद्ध कर। खांखट–योद्धा, प्रहार देकर (?)। खग झट–खड्गाघात। लट लट–बालों की लटें पकड़कर। रोझट–लड़ाई, बखेड़ा। रपट–तेजी से बढ़कर, फिसलकर। थट–सेना। दबट–दौड़कर, दबाकर। गाहट–रोंदकर। घट–शरीर। नट बट–नट की भांति बल खाकर, नट का गोला। कुलट–कुलांच मार कर। फबियट–सुशोभित होते हैं। घरट–घरट्ट यंत्र। घट–शरीर। दलट–चूर्ण, दलन कर। झपट–गति से बढ़कर प्रहार देना। अछर–अप्सरा। पूरी आस–कामना पूर्ण।

सजि समर सोवादार सूं, मंड खंड थंड मलार सूं
गढ़पती दुरंग सिर कर गाज, आप रै अपांण
दळ मार ठेलै दिखणियां, यम भाट खेलै खग अण्या
बजि त्रम्बक गहक ठहक बिढ़क, खड़क भरड़क भड़क खाटक
भभक खळ चक घाव भक भक, धड़क दरड़क श्रोण धक धक
कटक हूकट भटक काटक, रटक छूटक भटक राटक
चटक छूटक मटक चाटक, बटक चंडियक गटक वाटक
भिड़ज रथ थंभि भांण ।।२।।

---

२. समर–युद्ध। सोवदार सूं–राज्यपाल से। मड–लड़कर। थंड–सेना, समूह। मलार सूं–मल्हार राव होल्कर, इन्दौर (मालवा) के राजाओं का पूर्वज। गढ़पती–राजा। दुरंग–किला। गज–गर्जना। आप रै–अपने, स्वयं के। आपांण–बल से, शक्ति के भरोसे। दळ–सेना। ठेलै–धकेल दिए, मार भगाए। दिखणियां–दक्षिण प्रान्त वाले, मरहठे मल्हारराव आदि। यम–इस प्रकार। भाट खेलै–युद्ध कर, शस्त्रों के प्रहार का खेल खेलकर। खग अण्या–तलवारों की नोकें, तलवारों से सेनाओं के साथ। बजि–ध्वनित होकर। त्रम्वक–नगाड़े। गहक–नगाड़े की ध्वनि। ठहक–ध्वनि। खड़क–ढोल के बजने की ध्वनि, खड़ खड़ शब्द। भरड़क–किसी वस्तु के विदीर्ण होने की ध्वनि। भड़क–योद्धा। खाटक–प्रचंडवीर, प्राप्तकर्त्ता, ढाल। चक–निशान, घाव। भकभक–रक्त वहने की ध्वनि। दरड़क–तरल पदार्थ के ऊपर से गिरने की ध्वनि। कटक–सेना। काटक–जबरदस्त। रटक–टक्कर। छूटक–छुटक प्रहार। राटक–युद्ध। चाटक(?)। बटक–बटके, ग्रास। चंडियक–चामुण्डा देवी, युद्ध प्रिय देवी। गटक–निगलकर। भिड़ज–घोड़े। थंभि–रोक कर। भांण–सूर्य।

मंडि सैनि चोड़ै मड़हटां, घण घाट घेचै औघटां
सतारा हूंत यम तूंहीज साहे, रूक सकता रांण
चहुवांण चाचिग चापड़ै, बडगूजर भीमला बड़वड़ै
कमर कसि नर सुकर किरमर, झिंगर गिर तर
डंवर नीझर फरर अंत्रीयर, फरर फींफर
ढीगर कोपर मंगर ढाढ़र यंदर जळधर समर ओसर
अछर मिळ वर सुवर आतुर धरर चौसर संकर उरधर
नीधसै नीसांण ॥३॥

---

३. मंडि–लड़कर, भिड़कर। चोड़ै–खुले मैदान में, प्रकट में। मड़हटा–मरहठे, महाराष्ट्रीय। घण–बहुत, अत्यधिक। घेचै–घसीटे। औघटां–विकट रीति से। सतारा–दक्षिण का एक नगर, पूना सतारा, मरहठे। हूंत–से। यम–इस प्रकार। साहे–लड़ता है, पकड़ता है, करता है। रूक-तलवार। सकता रांण–गीतनायक महाराज शक्तिसिंह। चाचिग–चाचगदेव। चापड़ै–युद्ध में। बडगूजर भीमला–बड़गुजर भीम से। किरमर–तलवार। झिंगर गिर–गिरि तरुवरों के झुण्ड। डंवर–वन, घना। नीझर–निर्झर। अंत्रीयर–आंतें, आंत्र। फींफर–फेंफड़े। ढीगर–ढेर (?) कोपर–कुहनी। मंगर–पीठ। ढाढ़र–डाडर, वक्षस्थल। यंद जळधर–मेघ रूपी इन्द्र। समर–युद्ध। ओसर–वर्षण कर। अछर–अप्सरा। मिळवर–वर प्राप्त होकर। चौसर–चार लड़ियों वाली माला, पुष्पहार। संकर–शंकर, शिव। उरधर–गले में धारण कर। नीधसै–ध्वनित, शब्दितय। नीसांण–वाद्य, नगाड़े आदि।

कहियेत बाबो केहरी, तिम घड़ा भंजण तेहरी
सगतेस गोकळ तखत सिरखौ, राज छत्र रखपाळ
भलकार बेटां भाइयां, दळकार भारथ दाइयां
धुवण रण घण तरण धुबियण, करण कण कण पिसण कणियण
गयण ठणियण दोयण गाहण, रंजण त्रिनयण अरण रुकियण
दमण उदमण रमण दारुण, धरण अहिफण चरण धमियण
प्रिसण घण जण सघण पुळियण, रसण कवियण रटियण
आहड़ा उजवाळ ।।४।।

---

४. तिम–त्यों। घड़ा–सेना। सकतेस गोकळ तखत सरखौ–महाराज शक्तिसिंह गोकुलदास और तख्तसिंह समतुल्य। रखपाळ–रक्षक। भलकार–बुलवा तथा एकत्रित कर। दळकार–सेना बनाकर। भारथ–युद्ध। दाइयां–समवयस्कों,दावेदारों। धुवण–तोपें, नगाड़े, क्रोधकर। धुबियण–ध्वनि करना। पिसण–शत्रु, दुश्मन। कणियण–छोटे छोटे टुकड़े। गयण–आकाश। ठणियण– (?)। दोयण–दुश्मन। गाहण–युद्ध, संहारकर। त्रिनयण–शंकर,त्रिलोचन। अरण–अरुण, सूर्य का सारथी। रुकियण–ठहर कर, रुक कर। दमण–द्रव्य, दमड़े, दमन। उदमण–स्वतंत्र रूप से, निर्बंध। धरण–पृथ्वी। अहिफण–शेष नाग का फन। धमियण–(?) प्रिसण–दुश्मन। घणजण–घनेरे, बहुत अधिक संख्या में सैनिक। पुळियण–भागते हैं। रसण–रसना, जिह्वा। कवियण–कविजन। रटियण–रटते हैं, विरुद एवं कीर्ति काव्यों द्वारा वर्णन करते हैं। आहड़ां–सीसोदियों या आहड़ स्थान वालों को। उजवाळ–उज्ज्वल कर, कीर्तिमान कर।

१२३. गीत ठाकर राजसिंघ संखवास रौ

संमत अठारे मेड़ते वरस अेकादसम,
भिड़ै मुरधर कमंध दिखण भाराथ ।
खाग बळ खळां आपा जिसा खपावण
नागपुर सजै विजपत प्रथीनाथ ।।१।।
जठै चहुवांण राजड़ जगत जाहरां,
सतारा सूं विजै भारथी संग ।
सलूंबर तणौ रावता मदत जैतसी,
आविया मिटावण जंग अणभंग ।।२।।
दुवे सहंस भड़ां सूं अजब तण दिखण दळ
लखां विच भांगड़ करण लूंभौ ।
वात मिस घात सत्र गनीमां विभाड़ण,
अड़ीखंभ विचारे मरण ऊभौ ।।३।।

---

१२३. गीतसार—उपर्युक्त गीत संखवास ठाकुर राजसिंह चौहान द्वारा संवत १८११ वि० में नागौर के पास गंगारडे स्थान पर मरहठों के साथ लड़े गए युद्ध विषयक है। वर्णित युद्ध प्रसिद्ध मरहठा जय अप्पा की सेना के साथ लड़ा गया था। इसमें मारवाड़ के अन्य वीरों के साथ साथ सलूम्बर का रावत जैत्रसिंह भी मारवाड़ के पक्ष में लड़कर वीरगति को प्राप्त हुआ था। गीतनायक भी युद्ध में धराशायी हुआ था।

---

१. कमंध—राठौड़। दिखण भाराथ—दक्षिण वालों से युद्ध। खागबळ—खड्ग बल से। खळां—वैरियों को। आपा—जय अप्पा सिंधिया। खपावण—नाश करने को। नागपुर—नागौर। विजपत—महाराजा विजयसिंह जोधपुर नरेश।

२. जठै—जहां पर। राजड़—ठाकुर राजसिंह, गीतनायक। सतारा—पूना सतारा। विजै भारथी—विजयभारती। जैतसी—रावत जैत्रसिंह सलूम्बर का स्वामी। अणभंग—अद्वितीय वीर।

३. दुवे सहंस—दो हजार। भडां सूं—योद्धाओं सहित। अजब तण—अजबसिंह तनय ठाकुर शेरसिंह संखवास। भांजगड़—युद्ध की पारस्परिक लड़ने न लड़ने की मंत्रणा। मिस—बहाने से। गनीमां—शत्रुओं को। विभाड़ण—नाश करने। अड़ीखंभ—स्तम्भ तुल्य, अडिग योद्धा। ऊभौ—खड़ा हुआ।

पाड़ आपा जिसा राड़कर पौढ़ियो,
अतळ वळ धाड़ बुध खगां चहुआंण ।
मेड़ते गनीमां हूंत विढ़ साहै क्रमंध,
गनीमां राजड़ो विढ़े नागांण ।।४।।
धरे गौ नातियां तणै जस सांमध्रम,
वरे गौ अछर सुरपुर विसावीस ।
दुख सरव हरे गौ मुरधरा देस रौ,
संभरी करे गौ नांम जग सीस ।।५।।

—सांदू चैनकरण रौ कह्यौ

१२४. गीत कंवर सेरसिंघ चुवांण संखवास रौ

सोर अंगारां दमंगां फैल जूटतां भीम सूं सेख,
ओरिया पमंगां ढीली वागां रा आरांण ।
सत्रां धू वाहता तूझ खागां रा वाखांण सेरा ।
वदै तूझ लोह लागां रा वाखांण ।।१।।

---

१२४. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मारवाड़ के संखावस ठिकाने के कुमारशेरसिंह चौहान के द्वारा मुसलमानों से लड़े गए युद्ध से सम्बन्धित है। गीत में कवि चैनकरण सांदू ने कहा है कि तोपों के बारूद की अग्नि के स्फुलिंगों के साथ शेरसिंह ने शेख के विरुद्ध युद्ध में अपने अश्व को धकेला और शत्रुओं के मस्तकों को शिव का आभूषण बना कर तथा स्वयं घावों से लोहू लुहान होकर वापस लौटा।

---

४. राड़कर—युद्ध लड़कर। पौढ़ियो—रणशायी हुआ। विढ़—लड़ कर। नागांण—नागौर।

५. नातियां—पौत्रों, संतति वालों। जस—कीर्ति। वरेगौ—वरण करके गया। अछर—अप्सरा। विसा वीस—निश्चय ही। हरेगौ—हरण कर के गया। संभरी—चौहान। करेगौ—करके गया। जग सीस—संसार पर।

१. सोर—बारूद। दमंगां—स्फुलिंग। जूटतां—युद्ध में भिड़ते समय। ओरिया—धकेले। पमंगां—घोड़े। वागां—लगामें। आरांण—युद्ध में। धू—मस्तक। वाहतौ—प्रहार करता। खागां रा—तलवारों के। वदै—सराहना करते हैं कहते हैं। लोह—शस्त्र।

वाज तासा अरावां असत्रां बोहड़ां री वाहां,
जठै खैगां ओहडां री खी वरा जारीफ ।
खळां सोहड़ां री सेन खागां श्रीहथां हूं खंड़े,
तूंही लागां लोहड़ां री जिहांन तारीफ ॥२॥

झोकतै तुरंगां जाडां थंडां चाहूवांण झौका,
चोड़ै थाहूवांण झौका मंडा वीर चाल ।
झिलम्मा सहेत खागां खळां ढाहूवांण झौका,
लोहां साहूवांण झौका संभरी लंकाळ ॥३॥

सामध्रमां तणा रा आसेर रायजादा सेर,
जुधां आडे अंक मांटी पणा रा जणाव ।
किलम्मां घणां रा सीस रुद्र आभूसणां कीधा,
वणे आप धवां आभूसणां रा वणाव ॥४॥

—चैनकरण सांदू रौ कह्यौ

---

२. तासा–वाद्य विशेष । अरावां–अरबी बाजे, तोपें । जठै–जहां । खैगां–घोड़े । खी वरा–अप्सराओं के वर । सोहड़ां री–योद्धाओं को । जिहांन–संसार ।

३. झोकतै–धकेलते । जाडा थंडां–घनी सेना के मध्य । झौका–धन्य धन्य । थाहूवांण–थाह लेने वाला । झिलम्मा–लोहे का जालीदार, सिर पर पहनने का कवच । सहेत–सहित । ढाहूवांण–ढाहने वाला, गिराने वाला साहूवांण–सहन करने वाला । संभरी–चौहान । लंकाळ–सिंह, योद्धा ।

४. आसेर–दुर्ग, आश्रेणिक । मांटी पणा–वहादुरी का । किलम्मा–मुसलमानों । घणां रा–बहुतों का । रुद्र–शिव । आभूसणा–मुण्डमाला, आभूषण ।

१२५. गीत ठाकर सेरसिंघ चुवांण संखवास रौ

सर खांचे स्यांमध्रमे सूरापण, जोवै धार सुधार जळ।
सुजड़ां काट उतारै सेरो, कमळ सत्रां खरसांण कळ ।।१।।

खत्रवट तणी डोर खांचतां, चाढ़ै वेग घणी सुविचार।
माथां रिमां फेरणी माथै, धजवड़ तणी उजाळै धार ।।२।।

पांणप जिळै घणी जगप्रभता, सुपह तणौ खांचतां सर।
संभू सुतण धरा राखियौ सांतरौ, कुरंद चकर अरि सीसकर ।।३।।

आसत निध चहुवांण अतुळबळ, जुध पंडत जाणग बहु जांण।
अरि उतवंग खरसांण ऊपरै, करवत जिसौ कियौ केवांण ।।४।।

---

१२५. **गीतसार**–कवि ने इस गीत में मारवाड़ के संखवास ठिकाने के ठाकुर शेरसिंह चहुवान की तलवार तथा युद्धकला की सराहना की है। गीत में लिखा है कि शेरसिंह सुविचार रूपी धनुष पर स्वामि–धर्म का वाण चढ़ा कर क्षात्रधर्म रूपी प्रत्यंचा को खींचता है। वह शत्रुओं के मस्तक रूपी खरसान पर अपनी कृपाण के धार लगाता है–तीक्षण बनाता है।

---

१. सर–वाण। स्यांम ध्रमे–स्वामिधर्म। जोवै–देखता है। धार जळ–रक्त, आब देने का जल। सुजड़ां–कटारियों से, तलवारों से। काट–मैल। कमळ–सिर। सत्रां–शत्रुओं के। खरसांण–तलवार को तीक्षण करने का यंत्र। कळ–भांति, यंत्र।

२. खत्रवट–क्षत्रिय मार्ग। धणी–धनुष। माथां–मस्तकों। रिमां–शत्रुओं। धजवड़ तणी–तलवार की।

३. पांणप–पानी, आब, चमक। घणी–अधिक, घनी। प्रभता–प्रभुत्व। सुपह–राजा, योद्धा। सर–वाण। सांतरौ–अच्छा, सुंदर। कुरंद–निर्धनता, कंगाली। चकर–चक्र। अरि–वैरी।

४. आसत निध–आस्तिकता के समुद्र या कोष। अतुळ बळ–अपरिमित शक्ति। जुध पंडत–युद्ध प्रवीण। जाणग–जानकर, ज्ञाता। बहु जांण–बहु ज्ञानी। उतवंग–उत्मांग, शीश। करवत–करपत्र। बढ़ई का औजार। जिसौ–जैसा। केवांण–तलवार को तीक्षण किया।

१२६. गीत रावत जोधसिंघ चौहाण कोठारिया रौ

मरद घाट जजराट लोह लाट बेढ़ीमणां,
तीख घरवाट खत्रवाट तोरा ।
जणातौ नहीं रजपूत वट जोधड़ा,
गमाता जमी निरवीज गोरा ।।१।।

डांखिया धसल रवतेस डग डोलड़ा,
पीथहर चोलड़ा अमल पीधा ।
ढावतां सरण वागा जगत ढोलड़ा,
कोड़ जुग बोलड़ा अमर कीधा ।।२।।

---

१२६. **गीतसार**—उल्लिखित गीत मेवाड़ के ठिकाने कोठारिया के रावत वीर जोधसिंह चहुवान पर कहा हुआ है। रावत जोधसिंह ने प्रथम स्वातंत्र्य समर में अंग्रेज सत्ता का सशस्त्र विरोध कर जोधपुर के आऊवा ठिकाने के स्वामी ठाकुर कुशालसिंह चांपावत को अपने वहां आश्रय प्रदान किया था। गीत में गीतनायक द्वारा अंग्रेजों का विरोध करने तथा शरणागतों की रक्षा करने का वर्णन हुआ है।

---

१. जजराट—यमराज। लोहलाट—लोहस्तम्भ। बेढ़ीमणां—युद्धकारी, योद्धा। तीख घरवाट—घराना की श्रेष्ठता। खत्रवाट तोरा—क्षत्रियत्व का गर्व। जणातौ नहीं—प्रकट नहीं करता। रजपूत वट—राजपूती का बल। जोधड़ा—रावत जोधसिंह। गमाता—खो देते, समाप्त कर डालते। निरबीज—निर्वीय, बिना बीज कर देते। गोरा—अंग्रेज सत्ताधारी।

२. डांखिया—भूखा सिंह। धसल—दहाड़, आक्रमण। रवतेस—रावत पदधारी जोधसिंह। पीथहर—रावत पृथ्वीसिंह के पौत्र। अमल—अफीम, अफीम का रस। ढावतां—आश्रय देने। वागा—बजे, नाद करे। ढोलड़ा—ढोल वाद्य, प्रशंसात्मक वाद्य। बोलड़ा—वचन। कीधा—किया।

मोखमां सुतन फिरंगाण लोपे हुकम,
　　कहै साबास दस देस काळा ।
जाणता जिसा ग्रहनाण ग्राया नजर,
　　उदैगिर भांण चहुवांण वाळा ।।३।।

पड़ै मचकूर लंधन खबर पाड़िया,
　　जोध खग भाड़िया धको जम रौ ।
राव बिन फिरंग भेले कवण राड़ियां,
　　भमै नव नाड़ियां बीच भमरौ ।।४।।

---

३. मोखमां सुतन—मोहकमसिंह के पुत्र रावत जोधसिंह । फिरंगाण—ग्रंग्रेज । लोपे—उल्लंघन करे । दस देस—दशों विलायतों वाले दशरें राज्यों के । काळा, भारतीय—वीर । जिसा—जैसा । ग्रहनाण—चिह्न, निशान । उदैगिर उदयाचल, उदयपुर के । भांण—सूर्य, हिन्दुग्रां सूर्य जो मेवाड़ के नरेशों का विशेषण है ।

४. मचकूर—मजकूर । लंधन—लंदन । जोध—जोधसिंह, योद्धा । खग भाड़ियां—तलवार के प्रहार देते समय । धको जम रौ—यमराज की सी टक्कर, यम जैसा ग्राधात । फिरंग—ग्रंग्रेजों से । भेले—ले, सामना कर लड़ने का साहस करे । कवण—कौन । राड़ियां—लड़ाइयां । भमै—चक्कर लगावे, भ्रमण करे । नव नाड़ियां—शरीर की नवों शिराग्रों में । भमरौ—जीव, प्राण ।

१२७. गीत सूरजमल चौहाण मूलेठी रौ

दळ हलक भाव समंद रा, असुरांण गोतां ऊपरां
राठौड़ रतना भिड़े अरिथट, अखियौ चहुवांण ।।
गरणाट गज घंटा गजै, वज हाक रण त्रम्वक बजै
वजत त्रंबक गजत परवत, धुजत अहिपत फुणज धरकत
भिड़त सकड़त सजत रणभ्रत, उडत ग्रीधत भमत अगणत
रजत थंभत थटत सरसत, तगत कायर भजत जित तित
हसत नारद नसत हरखत, अखत जोगण मुखत जय जय
सबळ बळ घमसांण ।।१।।

---

१२७. **गीतसार**–ऊपरिलिखित गीत चौहान वंशीय क्षत्रिय वीर ठाकुर सूरजमल्ल जागीरदार ठिकाना मूलेठी की युद्ध वीरता पर रचित है। गीतनायक ने गुजरात प्रदेश के ईडर राज्य की रक्षार्थ युद्ध में अपने जीवन को विपत्ति में डाला था। गीत में लिखा है कि युद्ध वाद्यों के घोष से गिरिखण्डों को प्रतिध्वनित करते हुए उस वीर ने अंग्रेजों की सेना को युद्ध स्थल से भगाकर वीरत्व प्रकट किया था।

---

१. दळ–सैन्य दल। हलक–हलचल। असुरांण–असुर, अंग्रेज। गोतां–गोत्र वाले। राठौड़ रतना–गीत नायक का सामन्त रतनसिंह राठौड़ योद्धा। अरि थट–शत्रु सेना। आवियौ–आया। गरणाट–ध्वनि विशेष। गजै–गर्जना करते। बज हाक–हाक होकर। त्रम्वक–नगाड़े। बाजै–ध्वनित होकर, बजकर। परवत–पर्वत। धुजत–कम्पित। अहिपत–शेषनाग। फुणज–फन। धरकत–धड़क कर। सजत–सज्जित। भ्रत–सैनिक। उडत–उड़ते हैं, उड़कर। ग्रीधत–गृद्ध पक्षी। भमत–आकाश में चक्कर लगाते। थंभत–रुकती हैं, ठहरती हैं। तगत–ताकते हैं। भजत–भागते हैं। जित तित–जहां–तहां, इधर–उधर। हसत–हँसते हैं। नसत–भागने वालों को, भागतों को। हरखत–हर्षित। अखत–कहती है, बोलती है। जोगण–योगिनी, रणदेवी। मुखत–मुँह से। घमसांण–घमासान, युद्ध।

तो रणजीत सुत जसराज रौ, आदीत सुभ तप आज रौ
कमधजां राखण राज काइम, धरा ईडर ढाल ।
जिण वार साबळ झब झबै, धर धूज धण तोपा धुवै
धुबक तोपक अतक धुंधक उडत भुजळग भड़क खगअग
अड़ड़ ओणंग धुयण गैणंग फुटत जोधत धड़क वहरक
चळक धक धक पड़त लड़थड़ जुवन पग पग
जोक सूरजमाल ।।२।।

खग झटां तंडळ खेळणां, इळ कीत ब्रद ऊझेलणां
चहुवांण जस कळस चाढ़ण, अनड़ भड़ अगजीत ।
फड़ फड़ां फींफर सिर फटै, केइ नरां धड़ खग अध कटै
कटत अध वप अड़प कड़ चप तुछप जड़दप
अछप छड़ तप झड़प ग्रीधप गटप पळ झप
दड़प मुंड दप धड़प रप दप कमळ धप धप

---

२. रणजीत सुत–महाराजा रणजीतसिंह के पुत्र। जसराज रौ–जसवन्तसिंह का। आदीत–आदित्य, सूर्य। कमधजां–राठौड़ों का। काइम–कायम, स्थिर, अटल। ढाल–रक्षक। सावळ–भाला। झबझबै–चमकता। धूज–कम्पित होकर। धुवै–चले, गर्जना करे। अतक–अत्यधिक। धुंधक–धुंधलापन, अंधकार। भुजळग–तलवार। अड़ड़–ध्वनि विशेष। ओणांग–भूमि गोले (?)। धुयण–धूम्र, ध्रुव। गैणंग–आकाश मण्डल। वरहक–पताकाएँ। चळक–रुधिर, लोहू। लड़थड़–लड़खड़ाकर। जुवन–यवन, अंग्रेज।

३. खग झटां–खड्गाघातों से। तंडल–मस्तक, टुकड़े। इळ–पृथ्वी पर। कीत–यशकथा। ब्रद–विरुद। उझेलणा–प्रचारित करना, वहाना, तरंगित। जस कळस–यश रूपी कलश। चाढ़ण–चढ़ाना। अनड़ भड़–अविजित भट। फींफर–फेंफड़े। धड़–शरीर। खग–तलवार। अध कटै–अर्द्ध कटे हुए। अधवप–आधा शरीर। अड़प–हठीला। कड़ चप– (?)। तुछप–तुच्छ। अछप– (?)। झड़प–फड़फड़ाहट, टक्कराने पर होने वाली ध्वनि। ग्रीधप–गृद्ध पक्षी। गटप–निगल कर। पळ–मास। दड़प–भारी चीज के गिरने पर होने वाली आवाज। मुंड–सिर। धड़प–शरीर। कमळ–मस्तक। भिड़ै–युद्ध करते हैं। अणभीत–अभीत, निर्भीक, निडर।

रणघोख नौवत धरहरे, गजां जवर झंडा फरहरे
आछटे रवदां खाग अनमी, अुदार इण वार ।
मदझरां लंगर खळभळ, सर सेस धवळक सळसळै
सळक धवळक सेस सवळक कळक समळक वीर करळक
पळक चरळक दुजक परळक भळक भुजळक
गळक जंबुक पळक गरळक झळक अनळक
बांण झरळक अळक वहळक केक अरळक
झड़प तेगां धार ।।४।।

भारथां पाराथ ज्यूं भिड़ै, पैदळां हैदळां थट पड़ै ।
फिरंगाण दळ वळ पाड़ फीटा, भांज खळ अणभंग ।।
पोगरां गज कट धर पड़ै, झिलमांण सहतां सिर झड़ै
झड़ण सिर झिळमांण ऋम धरण तोपण
गुणण खोपर उडण खम खम घणण पाखर
वजण धम धम थटत वीरण नचत थम थम
किलम भाजत जात ऋम ऋम पढ़त कव ऋन वडम ओपम
जीतियौ घण जंग ।।५।।

—करणीदान कवि रौ कह्यौ

---

४. रण घोख—रणघोष । घरहरे—ध्वनि करके । गजां-हाथियों पर । आछटे-पछाड़े, आघात करे । रवदां—वैरियों । अनमी—अनम्र, बांकुरा । उदाहर—उदयसिंह का पौत्र । मदझरां—मदमस्त हाथियों के । लंगर—लोह शृंखलाएँ । सेस—शेषनाग । धवळक—धवल, बैल के । सळसळै—चलायमान होते हैं, हिल उठते हैं । कळक—किलकारी । समळक—चिल्ह, चण्डी । करळक—बोलते हैं, करुण रव करते हैं । पळक—मांस । चरळक—भक्षी । दुजक—मांस भक्षी पक्षी । परळक—चमकना । झळक—चमक कर, भाला । भुजळक—कृपाण । गळक—मांस के टुकड़े । जंबुक—सियार । गरळक—निगलते हैं । भळक—ज्वाला, लपटें । अनळक—अग्नि । बांण—तोपें । झरळक—झड़ी, प्रहरों की बौछार । अळक—(?) । वहळक—सूर्य (?) । केक—कई । झड़प—झड़ी, टक्कर । तेगां धार—कृपाण धारा ।

५. भारथां—युद्धों में । पाराथ—अर्जुन । हैदळां—घुड़सेना । थट—समूह । फिरंगाण—अंग्रेज । पाड़ फीटा—लज्जित कर । भांज—नष्ट कर । किलम—मुसलमान । कव ऋन—कवि कर्णीदान । जीतियौ—विजय किया । जंग—युद्ध ।

१२८. गीत राव राजा भोज हाडा बूंदी रौ

जुग वीता च्यार सूर साखी जैं, राजा राव मुणौ यन राव ।
जस कारण चहुवाण भोज जिम, अधपति कणीं न बांटी आव ।।१।।
लाख बरीस कोड़ि सांसण लग, स्रवण सुणै दातार सहै ।
करी भोज जिम थियै बियै कह, आतम दम देतां अकहै ।।२।।
दसकत बेह लिखंत मेटै दन, वळै काज हाडै सवळ ।
सुरजन तणै नवाजै सुकवि, बांटि बळाबंध आरवळ ।।३।।
कीरति काज नवाज वडा कवि, थापिया जिण वडा अवथांण ।
जीवदान भोजे देतै जगि भाण साखि ऊवरियौ भाण ।।४।।

---

१२८. गीतसार—उपर्युक्त गीत बूंदी के हाडा वंशीय नरेश राव भोजराज पर कथित है । कवि ने गीत में किसी भाण नामक व्यक्ति को जीवदान देने का उल्लेख करते हुए लिखा है कि भगवान् सूर्य साक्षी दाता है कि चारों युगों में ऐसा कोई भी अन्य राजा अथवा राव पदधारी शासक नहीं हुआ जिसने कीर्ति के लिए राव भोज की भांति अपनी आयु का दान दिया हो ।

---

१. जुग वीता च्यार—चारों युग व्यतीत हुए । सूर—सूर्य । साखीजै—साक्षी देता है, साक्षी है । मुणौ—कहो । यन—अन्य । जस कारण—यश के लिए । अधपति—अधिपति, राजा । कणीं न—किसी ने नहीं, किस ने । आव—आयु ।

२. वरीस—देने वाला, दानी । कोड़ि—करोड़ । सांसण—शासन, चारणों को दान में प्राप्त ग्राम । श्रवण—कान । थियै—हुए । वियै—दूसरे, अन्य । आतम दम—जीवन, प्राण । अकहै—बिना कहे, कोई नहीं ।

३. दसकत—दस्तखत । बेह—विधाता, ब्रह्मा । लिखंत—लिखित, भाग्यलेख । मेटै—नष्ट कर देता है । दन—दिन । हाडे—क्षत्रियों के चौहान कुल की हाडा शाखा का राव भोज । सबळ—बलवान् । सुरजन तणै—राव सुर्जन तनय । नवाजै—कृपा करे । वळाबंध—आडावळा पहाड़ के कारण बूंदी राज्य के लिए बलाबंध शब्द व्यवहृत हुआ है । आरवळ—आयुर्बल, उम्र ।

४. कीरति—कीर्ति । काज—लिए । थापिया—स्थापित किये । अवथांण—स्थान । भाण—सूर्य । ऊवरियौ—उद्धार हुआ । भाण—भाण नाम का व्यक्ति ।

१२९. गीत महारावराजा भावसिंघ हाडा बूंदी रौ

जिम राव भोज जिम राव दूदरज, बळि रतनेसुर टेक वहै ।
रहै तिकै ताबीन राव री, राव किणीं ताबीन रहै ।।१।।

पौढ़ा तणा बिरद पोहौ पौढ़ा, पोहौ औढ़ा गहियां परमांण ।
चलै तिकै बांसै चहुवांणां, चालै किम बांसै चहुंवांण ।।२।।

हालै किम बूंदी राव हाडो, धुर तज किणीं न चित धरै ।
भावसाहि रिमराह भंयकर, करी बाप तिम आप करै ।।३।।

---

१२९. गीतसार—उपर्युक्त गीत बून्दी नरेश भावसिंह हाडा की स्वातंत्र्य-प्रियता और पराक्रम पर आधारित है। गीत में उल्लेख हुआ है कि जिस प्रकार गीत नायक के पूर्व पुरुष राव भोज, दूदा और रतनसिंह प्रतिज्ञा निभाने एवं मर्यादा पालने में दृढ़ थे उसी परम्परा का भावसिंह अनुसरण करता है। अन्य शासक भावसिंह की अधीनता में रहते हैं, पर भावसिंह किसी अन्य का अधीनत्व नहीं मानता ।

---

१. जिम—जैसे । राव भोज—राव भोज हाडा । दूदरज—राव दूदा । बळि—बलवान, पुनः । रतनेसुर—रायांराय रतनसिंह । टेक—प्रतिज्ञा । वहै—चलता है, अनुगमन करता है । तिकै—जो, वे । ताबीन—अधीनता में । किणीं—किसी की ।

२. पौढ़ा तणा—प्रौढ़ का, वीरता का । विरद—बिरुद । पोहौ—राजा, योद्धा । औढ़ा—शरण में, अधीन, विकट । गहियां—धारण किये, ग्रहण किये । बांसै—पीछे, अनुगमन करते । किम—कैसे ।

३. हालै—चले । हाडो—चहुवानों की हाडा शाखा वाला । धुर—अग्रेसरत्व, परम्परा । तज—त्याग । भावसाहि—राव भावसिंह । रिमराह—युद्ध पथ में । करी—की । तिम—त्यों ।

फाड़ै ग्रवभाड़ै फुरमाणां, ग्रौरंग री ग्रुथपै ग्रालीक ।
सोवायतां न हालै साथै, माथै ज्यां ग्रांकस मछरीक ।।४।।

१३०. गीत नाथ जी रुघावत हाडा रौ

जुटे ग्राय कुरमाण जुड़े नाथ पड़ियौ जठै,
धाय तजि वसी उर रंभ धायी।
थाळ धरि हाथि बरमाळ लीधां थकी,
ग्रछर बर नाथ सिरि चालि ग्रायी ।। १।।

---

१३०. गीतसार–कवि ने उपर्युक्त गीत में रघुनाथसिंह के पुत्र श्री नाथसिंह हाडा गैंता द्वारा कछवाहों से युद्ध कर वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है। गीत में इन्द्र की ग्रप्सरा उर्वशी ग्रौर युद्ध मृत वीरों की वराकांक्षिणी ग्रन्य ग्रप्सराग्रों द्वारा गीत नायक का वरण करने का सम्वाद ग्रंकित किया हैं।

---

४. ग्रवभाड़ै–फटकारे, डाँटे, प्रहार करे। फुरमाणां–फरमानों, शाही ग्रादेशपत्रों। ग्रौरंग री–बादशाह ग्रौरंगजेब की। उथपै–उलटे, उल्लंघन करे। ग्रालीक–ग्रमर्यादा, कुमार्ग। सोवायतां–सूवेदारों के। साथै–साथ में, ग्रधीन बन कर संग में। माथै–ऊपर, सिर पर। ग्रांकस–ग्रंकुश, भय, प्रतिबंध।

१. जुटे–भिड़े। कुरमाए–कछवाहे। जुड़े–भिड़कर। पड़ियौ–धराशायी हुग्रा। जठै–जहां। धाम–इन्द्रलोक, घर। वसीउर–उर्वशी। धायी–दौड़ी ग्राई। थाळ–थाल। लीधां थकी–लिए हुए। ग्रछर–ग्रप्सरा। बर–पति, दूलहा। चलि–प्रयाण कर।

रुघावत काजि समवाद कीधौ अछर,
अड़सि करि कह्यौ नह बात आछी ।
पी मळियौ रण मांहि पड़तां पहल,
परी हूं राखि वरमाळ पाछी ।।२।।

पहल हूं आय ऊभी रही सांपरत,
तवै मुख भूठ अह बात तूभी ।
मूठि धर हाथि तरवारि खैंची मरद,
आय तद पूठि हूं रही ऊभी ।।३।।

त्रसळ चाढे घणौ बयण कह सतोला,
होय तो मरण हूं करूं हांसै ।
वर वरे नाथ ऊभी रही उरबसी,
परी फिर गई रंभ यंद पासै ।।४।।

---

२. रूघावत–रघुनाथसिंह के पुत्र के । काजि–लिए । समबाद–विवाद । अड़सि करि–अांट कर, विरोधकर । पीव–पति । मिळियौ–मिला, प्राप्त हुआ । हूं–मै । पाछी–वापस, पीछे, अलग ।

३. आय–आकर के । ऊभी–खड़ी । सांपरत–प्रत्यक्ष । तवै–बोलती है । मूठि–तलवार का हत्था । तद–तब । पूठि–पीठ पीछे, पीठ पर ।

४. त्रसळ–भ्रकुटि, ललाट पर क्रोध में पड़ने वाली रेखाएँ । बयण–वचन । सतोला–संतुलित,वजनी । वरे–वरण करे । नाथ–गीतनायक नाथूसिंह । ऊभी–खड़ी । यंद–इन्द्र के । पासै–पास ।

सोवतौ नींद जोवौ अछर सांमठी,
जीव चिंता महीं घणौ जड़ियौ ।
हुई अेह वात सुरराज सुणतां पहल,
पलंग हूंतां अलंग जाय पड़ियौ ॥५॥

विसन पुर जाय सुरराज कूक्यौ वोहत,
छळ हुवौ अेह मौ जाग छूटी ।
मांहरी परी वर लीध यक महपती,
तांहरी करी मुरजाद टूटी ॥६॥

विसन सिव ब्रह्म मिळि न्याव कीन्हौ वदत,
जपै मुख अछर वर न्याव जाडौ ।
यंद वर हूंत रीझी नहीं उरवसी,
हरख मन कियौ वर राव हाडो ॥७॥

---

५. सोवतौ–सोये हुए को । जोवौ–देखा । अछर–अप्सरा । पलंग–ढोलिया । हूंतां– से । अलंग–दूर, अलग ।

६. सुरराज–देवराज, इन्द्र । कूक्यौ–पुकार की, शिकायत की । छळ–धोखा । जाग–जगह, स्थान । मांहरी–मेरी । परी–अप्सरा । बर लीध–वरण की गई । तांहरी–तुम्हारी । करी–स्थापित की हुई । मुरजाद–मर्यादा । टूटी–नष्ट हुई, भंग हुई ।

७. बिसन–विष्णु । मिळि–मिल कर । कीन्हौ–किया । रीझी–प्रसन्न हुई । हरख–हर्ष । बर–पति । राव हाडो–हाडा नाथूसिंह को ।

१३१. गीत महाराज भगतराम हाडा इन्द्रगढ़ रौ

लंकाळ बाळ वडाळ लोधी, ढाहणौं ढैंचाळ ।
प्रतपाळ करणौं घणां पातां, उभय पख उजवाळ ।।
बंधि-चाळ घोड़ां भड़ां बांकां, चालणौं कळिचाळ ।
भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।।
खेरणि रण खळांजी समराथ नाथ सिंघाळ ।
वाहण वीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।।
माथै मैंगळां जी लोहाळ बाळ लंकाळ ।।१।।

---

१३१. गीतसार—उपर्युक्त गीत कोटा राज्य के ठिकाने इन्द्रगढ़ के स्वामी महाराज भगतराम हाडा शाखा के चौहान क्षत्रिय पर रचित है। गीत में गीतकार ने महाराज भगतराम के युद्धों, सामन्त समाज, उद्यान-विहार तथा वदान्यता आदि का वर्णन किया है। गीतनायक की पोशाक एवं आभूषणों का भी आख्यान किया गया है।

---

१. लंकाळ—योद्धा, सिंह । वडाळ—महान्, बड़ा । ढाहणौं—पछाड़ने अथवा गिराने वाला, संहार करने वाला । ढैंचाळ—हाथी । प्रतपाळ—प्रतिपाल, पोषण । घणां—अधिक, घनें । पातां—पात्रों, कवियों, याचकों । उभय पख—माता और पिता दोनों पक्षों को । उजवाळ—उज्ज्वल करने वाला । बंधि चाळ—पंक्तिबद्ध हो कर, अंगरखे का छोर बांधकर । भड़ां—योद्धाओं । बांका—बांकुरे, विकट । कळिचाळ—बहादुर, युद्ध । भुजवळां—भुजवली, बलशाली । भाराथ—युद्ध में । पाथ—पार्थ, अर्जुन-सा । भुजाळ—बलिष्ठ भुजावाला । खेरणि—नाश करने वाला । खळां—शत्रुओं का । समराथ—समर्थ, बलवान । सिंघाळ—श्रेष्ठ, सिंह । बाहण—चलाने वाला, प्रहार देने वाला । बीज़ळां—तलवारों के । धाराळ—धारा प्रवाह, तलवार । रत—रक्त, लोहू । धकचाळ—घमासान युद्ध । माथै—मस्तकों, पर । मैंगळां—हाथियों । लोहाळ—शस्त्र-धारी । बाळ लंकाळ—सिंह शावक ।

भाराथ जेम पाराथ अणभंग नाथणौं अणनाथ ।
सिधनाथ गोरखनाथ सिरखौ हिदवा सिर हाथ ।।
वीदगां भरि बाथ बगसै सकौ धाता साथ ।
धरै पातां जेम इन्द्र घण ध्रवै कुंदण धाथ ।।
　　भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
　　खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
　　वाहण वीजळां जी धाराळ हत धकचाळ ।
　　माथै मैंगळां जी लोहाळ बाळ लंकाळ ।।२।।

गज दियण सांसण जस लियण गाडो ।
जोध अजेरां जेर कामां बांकां पांव माडो ।।
समै भारथ सेर जाभो पातां कर जाडो ।
गैंमरां खळ गैर अणी बूंदी धणी फौज लाडो ।।
　　भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
　　खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
　　वाहण वीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
　　माथै मैंगळां जी लोहाळ बाळ लंकाळ ।।३।।

---

२. भाराथ—युद्ध में । जेम—ज्यों । पाराथ—पार्थ, अर्जुन । अणभंग—वीर । नाथणौं—वश में करने वाला, नाथ डालने वाला । अणनाथ—अविजितों को । सिधनाथ—सिद्धनाथ । सिरखौ—सदृश, समान । सिर हाथ—रक्षक, रक्षा का हस्त । वीदगां—विदग्धों, पंडितों, कवियों को । भरि बाथ—अत्यधिक, बाहुओं में समा सके उतना । वगसै—वख्शता है । सकौ—वह, सब कोई । पातां—पात्रों को, याचकों को । घण—घना, अधिक । ध्रवै—बरसता है, देता है । कुंदण—कंचन, स्वर्ण । धाथ—धातु ।

३. दियण सांसण—शासनिक ग्राम देने वाला, जैसे ब्राह्मणों को दान में दी हुई भूमि 'डोली' कहलाती है वैसे ही चारणों को पुरस्कार में दी हुई भूमि 'सांसण' कहलाती है । इस पर किसी भी प्रकार का राज्य कर नहीं लगाया जाता था । जस—यश, कीर्ति । लियण—लेने । गाडो—दृढ़, कटिबद्ध । अजेरां जेर—अविजितों को विजित करने वाला । कांमां—बांका—विकट कार्यो । पांव माडो—दृढ़ पैर रोपो, अडिग चरण । भारथ—युद्ध । जाभो—दृढ़ । जाडो—गहरा, चमन, भारी । गैमरां—हाथियों । खळ—शत्रु । गैर—पछाड़ कर, संहार कर । अणी—सेना, नोक । धणी—स्वामी की । फौजलाडो—सेना का दूलहा, सेनाध्यक्ष ।

वजि हाक डाक ठणांक तवलां वियां फाटै वाक।
चढ़ि चाक घोड़ां भड़ां चौड़ै चमरवंध बंधि चाक ।।
है हाक सूरां बीर हळवळ ऊकढै अयराक ।
अैराक छाक सिरि दियण अरियां आछटण अैराक ।।
भगतेस भुजबळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
वाहण बीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळां जी लोहाळ वाळ लंकाळ ।।४।।

चासियां भड़ अनड़ बांका घड़ त्रिवघी धूमाड़ ।
खाट खढ़ झड़ करण खागां प्रसण जाड़ ऊपाड़ ।।
बाड झाड़ सीमाड़ विहंडण आखाड़ां अवनाड़ ।
हमल करि वेछाड़ हाकां किलां तोड़ण कींवाड़ ।।
भगतेस भुज बळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
वाहण बीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथं मैंगळां जी लोहाल वाळ लंकाळ ।।५।।

---

४. वजि–होकर। हाक–हल्ला। डाक–ढाक वाद्य। ठणांक–ठणण की ध्वनि। तबलां–तबल वाद्य। बियां दोनों, अन्यों के। फाटै वाक–मुख फाट जाते हैं, भय के कारण मुंह खुले के खुले रह जाते हैं। चाक–हृष्टपुष्ट, चक्र। भडां–वीरों। चमर वंध–चंमर धारी। हळवळ–हलचल, आतुरता से फिरना। ऊकढ़ै–निकले। अयराक–मदिरा, घोड़े। छाक–प्याले, मस्त। अरियां–वैरियों को। आछटण–पछाड़ने, वार करने। अैराक–घोड़े, तेज मदिरा। अनड़–दुर्ग, पहाड़। बांका–बांके, विकट। घड़–सेना त्रिवधी–तीनों विधि से।

५. खाट खड़–शस्त्रों के टकराने से उत्पन्न प्रहार ध्वनि। खागां–तलवारों से। प्रसण–वैरियों की। ऊपाड़–उखाड़। सीमाड़–सीमावर्त्ती। बिहंडण–नाश करने वाले। अवनाड़–बलवान, वीर। वेछाड़–खूंखार।

वावड़ी ठांम तळाव बागां, जुगति रसतां जोख ।
वणि केळि चंपा सरू बूंटां नवल पल्लव नोख ।।
फळ मंजर आमां डाळ फूले झलै कुंभी झाड़ि ।
दाख कुंदण वेलि दौळां, बधे चंदण बाड़ि ।।
भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खलां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
बाहण बीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळां जी लोहाळ बाळ लंकाळ ।।६।।

थटे सोवन जाय थांणां केवड़ा वणि कुंज ।
केतकी छूटै लंगस कोहरां गहकै मोरां गुंज ।।
वौंळसरी आसापलव वणियां सुरंग नारंग सोह ।
मोगरा खसबोह मांहै डंमर मधकर डोह ।।
भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
बाहण बीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळां जी लोहाळ बाळ लंकाळ ।।७।।

---

६. ठांम–स्थान । तळाव–तालाव । बागां–बगीचा, उद्यान । जुगति–युक्ति । रसतां–पथों । जोख–आनंद, खुशी । केळि–केल, केला का पेड़ । बंटां–पौधे । पल्लव–पत्ते । मंजर–मंजरि । आमां–आम्रों की । डाळ–शाखा, टहनी । दाख–द्राक्षवेल । दौळां–चारों ओर । चंदण–चन्दन की । बाड़ि–बाड़ी, उद्यानिका ।

७. थटे–समूह, शोभा, ठहरना । सोवन–सुहावने । थांणां–स्थान । लंगस–समूह । कोहरां–कोहरें, गिरि दर्रे । गहकै–कलरव करते हैं । मोरां–मयूर पक्षी । वौंळसरी–मौलश्री का पेड़ । आसापलव–आशा पाला का पेड़ । सुरंग–सुरंगे । नारंग–लाल, नारंगी का पेड़ । खसबोह–सुगंधी । डंमर–महक । मधकर–मधुकर, भ्रमर । डोह–भ्रमण, गुंजन ।

सतखणां इण्ड रतन सोभित चित्रसाळि चाव ।
ओवरी बूंटां कनक ओपम देखजै दौराव ।।
करै पड़दा जरीक अंबर बिलातणी बाखांण ।
नवखंड ढुळत चमर नांमी मौज खट रित मांण ।।
भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
वाहण बीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळां जी लोहाळ वाळ लंकाळ ।।८।।

आभूखण फबता किता वड कड़ा तुररा कीध ।
परठिजै दुग दुग स प्रौंचा सहूं गहणां सीध ।।
किलंगी जड़ाव सीस करतैं पनां जड़ित पुखराज ।
मिण माणिक हीरा लाल मझि मुकत लड़ महाराज ।।
भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी भाराथ नाथ सिंघाण ।।
वाहण वीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळां जी लोहाळ वाळ लंकाळ ।।९।।

---

८. सतखणां—सात मञ्जिलें मकान । इण्ड रतन—रत्नजटित अण्डे । चित्रसाळि—चित्रसारी । ओवरी—कोठरी । बूंटां—वेल पत्ते चित्रित । कनक—स्वर्ण । पड़दा—पर्दे । जरीक अंबर—जरी वस्त्र के । बिलातणी—विलायत में बनी हुई । ढुळत—ढुलते हैं, हिलाने का भाव । खट रित—षट्ऋतु ।

९. आभूखण—आभूषण । तुर रा—तुर्रे । परठिजै—धारण करे । दुग दुग—दुग दुगी नामक आभूषण जो हाथ की कलाई में पहिना जाता है । प्रौंचा—पहुंचा, कलाई । सहूं—समस्त । गहणां—आभूषण । जड़ाव—जटित । पनां—पन्ना । मिण माणिक—मणि माणिक्य । मुकत लड़—मुक्तालड़ी ।

सुरजन भोज रतन सिरखौ नाथ रै अहनांण ।
इन्द्रसाल गजबंध सदा इसड़ौ मेघ दइवांण ।।
धर रछक पिता छाताल छत्रधर हुआ थंभ हिंदवाण ।
भड़ अनड़ प्रतपै पाट भूरौ चमर बंध चहुवांण ।।
भगतेस भुजवळां जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
बाहूंण बीजळां जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळां जी लोहाळ वाळ लंकाळ ।।१०।।

१३२. गीत हाडां गौड़ां रौ जुद्धा रौ भेळो

आदोये खूम दिल्ली नूं आया, आडा अवरंग कवण अड़ै ।
जुध जुध भला पोंहचिया जौड़ै, जुध बूंदी अजमेरि जुड़ै ।।१।।

---

१३२. **गीतसार**—उपरांकित गीत हाडौती के कोटा राज्य के शासक महाराव मुकंदसिंह भौमसिंह और अजमेर प्रान्त के स्वामी अर्जुन एवं राजा शिवराम गौड़ के क्रमशः उज्जैन और धोलपुर में वीर गति प्राप्त करने का सूचक है। कथित युद्धों में हाडों और गौड़ों ने शाही पक्ष का समर्थन किया था। दोनों ही युद्धों में शाहजादे औरंगजेब तथा मुरादवक्स की विजय हुई थी।

---

१०. सुरजन—गीत नायक के पूर्वज राव सुर्जन। भोज—राव भोज हाडा बूंदी नरेश। रतन—राव—रतनसिंह। सिरखौ—सदृश। नाथ रै—राजकुमार गोपीनाथ के। अहनांण—शक्ल-समता वाले, आकृति वाले। इन्द्रसाल—महाराज इन्द्रशाल। गजबंध—जिस के यहां हाथी बँधे रहते हैं, बड़ा सरदार। इसड़ौ—ऐसा। दुवौ—द्वितीय। मेघ—मेघसिंह। दइवांण—दीवान, राजा; रछक—रक्षक। छाताल—छत्रशाल, छत्रसिंह। थंभ—स्तंभ, आधार स्वरूप। अनड़—स्वतंत्र, निर्बंध। प्रतपै—तपता है. राज्य करता है। पाट—सिंहासन, पट्ट। भूरौ—केशरी, वीर श्रेष्ठ।

१. आदोये—अदावत करके,दोनों ने आकर। खूम—मुसलमान बादशाह। आडा—अवरोधक, सामने। अवरंग—शाहजादा औरंगजेब के। कवण—कौन। अड़ै—बाधा उत्पन्न करे, सामने चढ़े। भला—अच्छे। पोंहचिया—पहुंचे, किए। जोड़ै—साथ में। जुड़ै—जुट कर।

ठौड़ां ठौड़ां कळह ठाकुरी, हाडां गौड़ां हेक गथो ।
अजरण मुकंद उजेणि अेकठा, सेवौ भीमो हेक सथो ।।२।।

हर गोपाल रतन हर होता, भेळपणौ निरभाय अभूत ।
हिंदवां छात बडाळा हाडा, रजवट गौड़ बडा रजपूत ।।३।।

गैपां कियौ परम दिस गैलो, निमख अनै यकळास निभाय ।
रजवट रजक जाय किम राजा, रजवट रजक राखियौ राय ।।४।।

---

२. ठौड़ां ठौड़ां–स्थान स्थान पर । कळह–युद्ध । हेक–एक । गथो–जोड़ो, युग्म । अरजण–अर्जुन गौड़ जो उज्जैन में सं० १७१५ में मारा गया था । मुकंद–कोटा नरेश मुकंदसिंह हाडा । उजेणि–उज्जैन में । अेकठा–एकत्र, शामिल । सेवौ–राजा शिवराम गौड़ बोंली का स्वामी । भीमो–राव भीमसिंह हाडा । हेक सथो–एक साथ में ।

३. हरगोपाल–राजा गोपालदास गौड़ के पौत्र अर्जुन गौड़ । रतन हर–रायांराय रतनसिंह हाडा के वंशज कोटा बूंदी के शासक । भेळपणौ–सम्मिलित । निरभाय–निर्वाहन कर । अभूत–अपूर्व, अद्‌भुत । छात–राजा । बडाळा–बड़े, महान् । रजवट–राजपूती के मार्ग पर क्षत्रियत्व ।

४. गैपा–गोपालदास की संतति वाले गौड़ों ने । गैलो–मार्ग राह । निमख–नमक । यकळास–इखलास, मित्रता । निभाय–निभाकर । रजक–रिजक, जागीर आदि आमदनी के स्त्रोत । किम–कैसे । राय–रायांराय रतनसिंह हाडा के वंशधरों ने ।

१३३. गीत राजराणा रार्यांसघ झाला सादड़ी रौ

तंडै जोगणी महेस संडै उमंडै परी वैताल,
घुमंडै प्रचंडै थंडै उडंडै घैंसाड़ ।
आडे खंडे रोप झंडे भुजाडंडे तोल आभ,
रायासिंघ गनीमां सूं मंडे चौड़ै राड़ ।।१।।

खतंगा कराड़े झाट वागै राठ रीठ खागै,
जागै पाट प्रेत काळी अनाढ़ जुआण ।
सतारा हजारां आठ लोहलाठ आयौ सजे,
रासा रा निग्न सै साठ नीमजे आराण ।।२।।

---

१३३. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत मेवाड़ के झाला क्षत्रियों के सादड़ी ठिकाने के स्वामी राज राणा रार्यसिंह द्वारा मरहठों के साथ लड़े गए युद्ध का परिचायक है। गीत में मरहठों की आठ हजार सेना को पराभूत कर विजय दुंदुभि बजवाते हुए रण क्षेत्र से लौटने का वर्णन किया है। गीतकार ने लिखा है कि शत्रुओं के मांस-मज्जा, रक्तादि से आमिषचारियों को प्रसन्न किया और वराकांक्षिणी अप्सराओं की अभिलाषा पूर्ण कर वीर रायसिंह युद्ध से लौट कर आया।

---

१. तंडै–नाचने लगी। महैस–महैश, महादेव। संडै–साथ, नंदिगण। उमंडै–उमड़कर। परी वैताल–अप्सराएँ और बावनवीर। थंडै–सेना। उडंडै–अश्व। घैंसाड़–समूह, सेना। आडे खंडे–तलवार के तिरछे प्रहार। रोप–स्थापित कर। भुजाडंडे–भुजदण्ड। तोल आभ–आसमान को तोल कर, नभमण्डल को ऊपर उठाता हुआ। मंडे–लड़ने लगा। राड़–युद्ध।

२. खतंगा–योद्धा, घायल। कराड़े झाट–भीषण प्रहार। वागे–करने लगे, लड़ने लगे। रीठ–प्रहार, युद्ध। खागै–खड्ग से। काळी–कालिका, रण देवी। अनाढ़–वीर। जुआण–युवा, जवान। सतारा–सतारा राज्य वाले, मरहठे। हजारां आठ–आठ हजार। लोह लाठ–लोह स्तंभ तुल्य। रासा–रायसिंह। निग्न–अधीन, आज्ञाकारी। सै साठ–छह हजार। नीमजे–ठानने का भाव, प्रारंभ करे। आराण–युद्ध।

श्रोण चंडी पियालां निवालां ग्रीध भखै मांस,
दूध भीनै बाला ताला मुसाला जे दीठ ।
दुझाला विलाला झाला ग्रचाळा दिखणी दळां.
रूप भालां जंगा गजां ढालां माता रीठ ।।३।।

वराळां कराळां झाळां ग्रताळां विछूटै वाण,
तई खेत्रपाळां मंडे बैताळां तमास ।
मदाळा दंताळा काळा नेजाळा सुंडाळा माथै,
वांधचाळा कीतावाळा ग्राछटे बाणास ।।४।।

सिघा नाद रोड़े धूंस घमोड़े त्रिविध सेना,
धजां गजां हिया होड़े गोड़े सूर धीर ।
सात्रवां विछोड़े कंध ग्ररोड़े दूसरौ सिंघ,
जंगी हौदां होड़े मोड़े छाकियां जंजीर ।।५।।

---

३. श्रोण–रुधिर के। पियालां–प्याले। निवालां–ग्रास। भखै–भक्षण करते हैं। दूध भीनै–दूध से भीगे, बाल्यावस्था के। ताला–सौभाग्यवाला। दुझाला–दुर्घर्षवीर। विलाला, मौजी, शौकीन, उदार। ग्रचाळा–ग्रडिग। दिखणी–दक्षिण के, मरहठे। भाळां–ललाट, बलम। माता रीठ–प्रबल युद्ध, प्रचण्ड प्रहार।

४. वराळां–लपटें। कराळां–भीषण। झाळां–ज्वलित। ग्रताळां–निर्विलम्ब, सत्वरता से। विछूटै–छूटे, चले। तई–तब वैरी। खेत्रपाळां–क्षेत्रपाल, भैरव। मंडे–करने लगे। बैताळा–वैताल। मदाळा–उन्मत। दंताळा–हाथी। काळा–श्यामल। नेजाळा–ध्वजधारी ग्रथवा निशान वाले, भालाधारी। सुंडाळा–शुण्ड वाले, हाथी। वांधचाळा–वस्त्राञ्चल पकड़ कर, पंक्ति बद्ध हो कर। कीतावाळा–कीर्तिसिंह वाले ने, राजराणा रायसिंह ने। ग्राछटे–प्रहार करे। बाणास–तलवार।

५. सिघानाद रोड़े–रणसिंगा वाद्य बजवाता हुग्रा। धूंस–धूसा वादित्र। त्रिविध सेना–गज, ग्रश्व ग्रौर पैदल सेना को। धजां–घोड़ों। गजां–हाथियों। गोड़े–लुढ़काता है। सात्रवां–शत्रुग्रों के। विछोड़े कंध–स्कंध काटता, कंधों पर से सिरों को छिन्न करता। ग्ररोड़े–जबरदस्त वीर। जंगी हौदां–युद्धार्थ निर्मित हौदे। छाकियां–मस्त, छके हुए। जंजीर–लोह शृंखला, कवच, हाथी की लोह झूलें।

प्रेत भूतां बाज डाक हाक धूतां काळ पोरां,
ताबूतां सतारे हले ग्राहूतां तमांम ।
कटारां खंजरां छुरां कैमरां दुधारां कूंता,
सूर धीरां राजपूतां घुमायौ संग्राम ।।६।।

रत्थां परी जुत्थां माळ ग्रबरी समत्थां रोळै,
लूथ वत्था हुवै ईस मत्थां सूर लैण ।
भारत्थां राखवा कत्थां पत्था जेम बाघ भूरौ,
श्री हत्थां ग्राछटे खाग दूजौ चंद्रसैण ।।७।।

गळां गीध गूद भखै उडै कै ग्रंत्राळां ग्रहै,
कराळां वराळां भाळां सेलाळां करद ।
तूटै करम्माळा प्रळै काळां ग्राग भाळां तेम,
दंताळा त्रंमाळा खावै मदाळा दुरद्द ।।८।।

---

६. बाज–ध्वनित हो। डाक–डमरू, ढाक वादित्र। हाक–हल्ला। धूतां–दुधर्षवीरों, ग्रवधूतों। ताबूतां–ताबूतों। ग्राहूतां–ग्राहुति, जलाने के लिए। कैमरां–बाणों की नोकों। दुधारां–द्विधारे, बर्छे। कूंतां–भालों। घुमायौ–किया, रचाया।

७. रत्थांपरी–ग्रप्सराएँ रथों पर। जुत्थां–यूथ, समूह। माळ–माला। ग्रबरी–ग्रविवाहित। समत्थां–समर्थतावालों, मस्तकों पर। रोळै–युद्ध। लूथ बत्थां–गुत्थमगुत्थ। ईस–महादेव। मत्थां–मस्तक। लैण–लेने के लिए। भारत्थां–युद्धों की। कत्थां–कथाएँ। पत्था–पार्थ, ग्रर्जुन। बाघ भूरौ–बब्बर, सिंह। श्री हत्थां–ग्रपने हाथों से। ग्राछटे–पछांट दे। खाग–खड्ग। दूजौ–द्वितीय।

८. गळां–मांस। गूद–मज्जा। भखै–भक्षण करते हैं। ग्रंत्राळां ग्रहै–ग्रांते पंजों में पकड़े हुए। बराळां भाळां–तोपों की भंयकर ज्वाला। सेलाळां–भाले। करद्द–तलवार। करम्माळा–तलवार। प्रळैकाळां–प्रलयकालीन। ग्राग भाळां–ग्रग्नि ज्वाला। दंताळा–दांतों वाले हाथी। त्रंमाळा–विक्षिप्त हुए चक्कर काटते हैं। मदाळा दुरद्द–उन्मत्त गजराज।

भड़क्कै दुग्रासां सेल तमासा संपेखै भाण,
अच्छरां हुलासां हास नारद्दां उमास ।
राज रौ भरोसा जिसौ जांणता गरीठ रासा,
उभै पासा वग्गां तासा तोलियौ अकास ।।९।।

ऊघड़ी जरद्दां कड़ी खड़ी चंडी खेल ईखै,
रत्थां चढी झड़ी झड़ी वरै सूरां रंभ ।
सांकड़ी वणन्ता घड़ी वांकड़ी वजावै सार,
खळां वड़ी वड़ी कीधी झाले अड़ी खंभ ।।१०।।

ताजे श्रोण झल्ले चंडी छाजे आसमान ताम,
जाभै हेत वारंगनां वरै सूरां जाम ।
ओटपां जलूस वाना गाजै रायसिंघ ऊभौ,
देखै जोम भाजै अरी अद्राजे दमाम ।।११।।

---

९. दुग्रासा–दोनों ओर से। सेल–भाले। संपेखै–देखने लगा। भाण–भानु, सूर्य। अच्छरां–अप्सराएँ। हुलासां–आनन्दातिरेक में। हास–हास्य। उमास–उत्कंठित। गरीठ–महाप्रवल। रासा–हे रायसिंह। उभै पासा–दोनों ओर से। वग्गां तासा–तासा नामक वादित्र के वजते ही।

१०. ऊघड़ी–खुली, टूट गई। जरद्दां कड़ी–कवचों की कड़ियां। ईखै–देखती है। रत्थां–विमानों पर। वरै–वरण करती है। सूरां–वीरों का। सांकड़ी–संकीर्ण, संकटकालीन। वांकड़ी–विकट। सार–तलवार। वजावै–चलाता है, वार करता है। वड़ी वड़ी–टुकड़े टुकड़े, बोटी बोटी। झाले–झालावीर रायसिंह ने। अड़ी खंभ–अडिग, जोरावर।

११. ताजे–सद्य। श्रोण–रुधिर। झल्ले–लेकर पींने लगी। छाजे–आच्छादित, शोभा पावे। ताम–तव, उस समय। जाभै–सघन। हेत–प्रेम। वारंगनां–अप्सराएँ। वरै–पति रूप में प्राप्त करने लगी। ओटपां–अद्भुत। वाना–वेशभूषा, ढंग। ऊभौ–खड़ा हुआ। भाजै–भागते हैं। अरी–वैरी। अद्राजे–पर्वत, गर्जन। दमाम–नगाड़े, दुंदुभि।

लगै लोह अंगे तूर मरैठा जमी तै लोटै,
ढळक्के करी तै रेजा लाल नेजा ढाल ।
आप पांण हींते रासौ खळां दळां धाय ऊभौ,
खत्री जुद्ध बीते आयौ अठी ते खुसाल ।।१२।।

पूर श्रोण धारां चण्डी आमखां आहार पंखां,
तई जैजैकार जंपै सादड़ी तखत्त ।
लागुवां हजारां भांज आवियौ धगारां लागौ,
वाजतां नगारां रासौ राण रै वखत्त ।।१३।।

---

१२. लगै लोह—शस्त्राघातों से घायल हुए। मरैठा—मरहठे। जमी तै लोटै—भूमि पर पड़े लुढ़कते हैं। ढळक्के—लटकते हैं, झूलते हैं। करी तै—हाथियों पर से। रेजा लाल—लाल रंग की खादी की झूलें अथवा खादी के बने लाल रंग के झंडे। नेजा—निशान। ढाल—नीचे की ओर, ढालें। पांण—बल, साहस। हींते—स्थान का नाम जहां युद्ध लड़ा गया था। घाय ऊभौ—घायल हो कर खड़ा, ध्वंस करके खड़ा रहा। खत्री—क्षत्रिय रायसिंह। बीते—समाप्त होने के बाद। अठीते—इधर से।

१३. पूर—पूर्णरूपेण तृप्त कर। आमखां—आमिषभक्षी। आहार—भोजन। पंखां—पंखधारियों। जंपै—बोलते हैं। सादड़ी—स्थान का नाम। लागुवां—वैरियों। भांज—नाश कर। धगारां लागौ—आसमान को स्पर्श करता हुआ। वाजतां—घोष करते।

१३४. गीत रावल ग्रमरसिंघ भाटी जैसलमेर रौ

जळाबौळ सुं बगतरां जोध वहता गया,
सुरां ग्रचरज थयौ नरां सुभायि ।
रवद दळ रहिच रावळ किया लाल रंग,
मही जळ मेळि महरांण मांयि ॥१॥
तरंग बगतर जरद पूर पांणि तणै,
सुर सळिता जतैं कियौ संग्राम ।
ग्रगर उलटि पालटि बरण थट उव्हैरण,
बरण बचि मांछळा गलै वरियांम ॥२॥
तगर ग्रसपति घड़ा पूर पांणी तणै,
चोगणा सार सुत दांति चाढ़ै ।
मांछळां काछिवां तणा पेटां मंहे,
कीर बगतर वरि चीर काढ़ै ॥३॥

---

१३४. गीतसार—कवि ने उपरांकित गीत में जैसलमेर के शासक रावल ग्रमरसिंह द्वारा समुद्रतट (पंजाब प्रान्त) जो युद्ध किया था, उसका वर्णन किया है। वह कहता है कि रावल ग्रमरसिंह ने शत्रुग्रों के चमकते हुए कवच जल में बहा दिए। उन्हें यों बहते देख कर देवताग्रों को भी मनुष्यों की भांति ग्राश्चर्य हुग्रा ।

---

१. जळाबौळ—चमकते हुए रंग के, जल प्लावित । बगतरां—कवचों । जोध—योद्धा । बहता गया—प्रवाह में बहकर गए। सुरां-देवताग्रों ने । थयौ-हुग्रा । नरां सुभायि—मनुष्य की भांति, मानव स्वभाव की तरह । रवद दळ—मुसलमानों की फौज । रहचि—नाश कर, संहार । लाल रंग—लोहू पूर्ण । महीं जळ—पृथ्वी पर का जल । मेळि—मिला कर । महरांण—महार्णव, महासागर । मांयि—में ।

२. जरद—कवच पीत रंग । पूर पांणी—पूर्ण जल । सुर सळिता—देवनदी, गंगा तट पर । उलटि पालटि—उलट पुलट । बरण—वर्ण । थट—समूह । उव्हैरण—उस युद्ध । वरण—जल, रंग । मांछळा—मत्स्य । गळै—निगलते हैं । वरियांम—श्रेष्ठ वीर ।

३. ग्रसपति घड़ा—शाही सेना । सार—लोहा, ग्रस्त्र शस्त्र । दांति चाढ़ै—सामने छाती भिड़ कर । काछिवां—कच्छपों के । पेटां—उदरों । कीर—मछुए, केवट । चीर—विदीर्ण कर । काढ़ै—बाहर निकालते हैं ।

कटक ऊवांणियां फाड़ि केवांणियां,
　　पांणियां बिचि बरियांम पाड़ै ।
करचां रहचक कलियांण रा बीर कर,
　　विकै वगतर सिलै कीर वाड़ै ।।४।।

१३५. गीत मूलराज सोलंखी री कटारी रौ

वौह दीह हुवा मौ लंघण बैठां, रहे पेट करि हंस रहै ।
मूळवै मौ पड़ियाळ म राखी, काढी बाहि जमडाढ़ कहै ।।१।।
तरवारि तणौ रस लेवा दे तूं, ऊपर ग्राया घणा ग्ररि ।
कमळ ढळंतां समौ कटारी, काढूं नह तौ रीस करि ।।२।।
वाहि तरवारि घणा दळ विहंड़े, घण झूझार मिळत घण घाइ ।
हाथ कटारी किया हेकठा, रुण्ड पड़ै सोलंखी राइ ।।३।।

---

१३५. **गीतसार**–उपरोक्त गीत सोलकी वीर मूलराज की कटारी प्रहार पर कथित है । गीत में मूलराज द्वारा शिरच्छेदन के पश्चात कटार से शत्रुग्रों का नाश करने हुए गज सेना तक जा पहुंचने का वर्णन किया गया है ।

---

४. कटक–सेना । ऊवांणियां–प्रहार कर, वार के लिए शस्त्र उठाए हुए, नग्न । फाड़ि–विदीर्ण कर । केवांणियां–तलवारों से । पांणिया–जलराशि । पाड़ै–गिरा दिए । करचा–किया । रहचक–विकट युद्ध । कलियांण रा–कल्याणसिंह के । सिलै–सिलह । कीर वाड़ै–मल्लाहों के मुहल्लों में ।

१. वौह दीह–वहुत दिन । लंघण बैठा–उपवास में बैठे बैठे । पेट–उदर, पेट । हंस–प्राण । मूळवै–मूलराज । पडियाळ–तलवार । म–मत । काढ़ी–निकालकर । बाही–प्रहार की । जमदाढ़–कटारी ।

२. रस लेवा दे–ग्रानन्द लेने दें । ऊपर ग्राया–हमला कर ऊपर चढ़ ग्राये । घणा ग्ररि–वहुत से वैरी । कमळ–सिर । ढळंतां–कटकर पड़ते । समौ–समय । काढूं–निकालूं । रीस–रोष, क्रोध ।

३. बाहि–चला कर, प्रहार कर । विहंडे–संहारे, मार डाले । झूझार–जूझार, सिर कटने पर युद्ध लड़ने वाला योद्धा । घाइ–घायल । हेकठा–एकत्र । रुण्ड–कटा हुग्रा मस्तक । सोलंखी राइ–सोलंकियों के राजा ग्रथवा मुखिया ।

फर फर अफर फौजां फुरळंतौ गैघड़ लग मूळराज गयौ ।
मळत खवां अरि वीछंड़तै माथै, करग कटारी मेळ कियो ।।४।।

मैगळ मिरिळपि मोताहळ, वप सांगावत दुवाड़े बाढ़ ।
मूळवै मेंहले मरस मांही रण, जाण जकौ भारवै जस राढ़ ।।५।।

परैं जमडाढ़ हजारां पूगो, देवी यम वरदान दियौ ।
सत थांरौ धनौ सोलंखी, हाथ धनौ धन तूझ हियौ ।।६।।

१३६. गीत लालसिंघ सोलंखी री वीरता रौ

अड़ियौ जाय उजैणि के सनेस करेवा कंदळ,
सूर चाळक कियौ खळक साखी ।
आप उतन चाढ़ि अळहणपुरा,
लालसिंघ बळा री लाज राखी ।।१।।

---

१३६. गीतसार—गीत रचयिता ने उपर्युक्त गीत में वीर लालसिंह सोलंखी क्षत्रिय द्वारा बादशाह की रक्षार्थ विद्रोही मुसलमानों के दमन हेतु लड़े गए युद्ध में दिखाई गई वीरता का वर्णन किया है। वह बूंदी के हाडा नरेश की ओर से उज्जयिनी के युद्ध में भी लड़ा था।

---

४. फर फर—घूम घूम कर। अफर—पीछे न मुड़ कर। फुरळंतौ—छिन्नभिन्न करता, बिखेरता हुआ। गै घड़—गज सेना। लग—तक। मळत—मिलते। खवां—स्कंध, स्कंधमूल। वीछंडतै—कट कर अलग होते। माथै—सिर। करग—हाथ। मेळ कियौ—मिलन किया।

५. मैंगळ—हाथी। मिरळपि—रोंद कर, संहार कर। मोताहळ—मुक्ताफल, मोती। वप—वपु, शरीर। सांगावत—संग्रामसिंह का पुत्र मूलराज। दुवाड़े—दिलवाकर। वाढ़—धार। जकौ—वह, जो। जस राढ़—युद्ध कीर्ति।

६. परैं—उस पार, दूर तक। जमडाढ़—कटारी। पूगी—पहुंची, मारे। थांरौ—तेरा। धनौ—धन्य है। हियौ—हृदय।

१ अड़ियौ जाय—मुकाबिले के लिए जा डटा। कंदळ—युद्ध। चाळक—चालुक्य, सोलंकी क्षत्रिय ने। खळक—संसार। साखी—साक्षी। उतन—वतन, मातृभूमि। अलहणपुरा—अलहणपुर पाटन पर चालुक्यों का शासन रहने के कारण गीतनायक के लिए कहा गया है। बळा री—आडाबळा की, बूंदी रियासत की।

चगथा चवहाणां पठाणां रीठ पड़ि,
साहि आलम थियौ सवळ सांसै ।
उरड़ियौ लाल खुरसांणियां ऊपरै,
कड़कि बीजळ पड़ी जांणि कांसै ।।२।।

बिया सादूळ सादूळ गति सांभळो,
बचायौ दिलीसुर पीर वेगां ।
रोड़तां थकां झंजेडि नाख्या मुगळ,
तखत तोड़ि नाख्यौ तिकै मारि तेगां ।।३।।

हको हको वार हरियंद रा हळाहळ,
खाग अ.................................. बार खारी ।
खाग असराळ दोऊ तखत विच खळकिया,
थाळ वागौ भलां बार थांरी ।।४।।

---

२. चगथ–चिगताई वंश के मुगलों। रीठ–घमासान युद्ध, प्रहार। थियौ–हुआ। सांसै–शंकाकुल। उरड़ियौ–बलपूर्वक आगे धंसा। लाल–लालसिंह। खुरसांणियां–खुरासान वालों पर, मुसलमानों पर। कड़कि–कड़ड़ ध्वनि कर, गर्जती हुई। बीजळ–दामिनी। कांसै–कांश्य धातु के पात्र पर, ऐसी प्रसिद्धि है कि कांश्य पात्र पर बिजली गिर जाती है, इसलिए वर्षाकाल में उसे मकान से बाहर नहीं रखते हैं।

३. विया सादूळ–द्वितीय शार्दूलसिंह। सादूळ–शार्दूल, सिंह। बेगां–वेग पदवी वाले मुसलमानों, वेग के साथ। रोड़तां थकां–कुचलते हुए, नगाड़े बजाते हुए। झंझेड़ि नाख्यां–झकझोर डाले। नाख्यौ–गिरा दिया।

४. खारी–विकट, कठोर। खाग–तलवार। असराळ–जबरदस्त, आतंक, भयंकर। खळकिया–छलके, बहना। थाळ वागौ–थाल बजा, पुत्र जन्म पर थाल बजाने का रिवाजहै। बार–समय, वेला। थांरी–तेरी, तुम्हारी।

१३७. गीत नागेटो अमरसिंघ गरड़वा रौ

धर बांवी काज पिता सुत विखधर, दळ वादी कूरम दुरति ।
आमेरां वहतां खग आखा, ताखा उडि लागा तुरति ।।१।।

क्रोधा डसण बांवियां कारण, पति जोधां आमेर पति ।
जूनां नाग तणा जोगिया कज, छौनां लागा खाग छति ।।२।।

पूंगी तूर नांदियां पारंभ, जुड़िया वादी भमंग जुवा ।
पौयण डसण लगादी पिसणां, अैम तरादो घणा मुवा ।।३।।

---

१३७. **गीतसार**–उपर्युक्त गीत में कवि ने योद्धा अमरसिंह के आमेर के कछवाहों और मारवाड़ के राठौड़ नरेशों की सम्मिलित सेना से अमरसिंह के निवास स्थान पर आक्रमण करने पर उनसे लड़ने का वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि बांवी रूपी दुर्ग पर अक्षत रूपी शस्त्रों की मार पड़ने पर विषधर रूपी अमरसिंह और उसका पुत्र दोनों तक्षक नाग की भांति उड़ उड़ कर प्रतिद्वन्द्वियों का नाश करने लगे।

---

१. धर बांवी काज–भूमि रूपी बांवी के निमित्त। विखधर–विषधर, सर्प। दळ वादी–विपक्षी सैनिक। कूरम–कछवाहे। दुरति–दुरंत, प्रचण्ड। आमेरां–कछवाहों के। वहतां खग आखा–खड्ग रूपी अक्षतों के प्रहार होते समय। ताखा–तक्षक नाग।

२. डसण–काटने के लिए, डंक लगाने हेतु। जूनां–प्राचीन, वृद्ध। छौनां–वत्स, पुत्र खाग–तलवार। छति–पृथ्वी।

३. पूंगी–पूंगी की ध्वनि पर सर्प मुग्ध हो कर झूमने लग जाता है। तूर–तूर्य बाजा। नांदियां–नाद करने वालों। पारंभ–प्रारंभ। जुड़िया–भिड़े। भमंग–सर्प। जुवा–पृथक, युवा। पोयण–सर्प (?)। पिसणां–वैरियों के। घणा–बहुत।

भैरू नवल मानसा भारथ, धूहड़ कैवर अचड़ अत धारि ।
दारण अमर तणा जतरादी, मारणहार राखिया मारि ।।४।।

आखा खागि फुणां अवझाटां, कटियां डसियां अचंभ किसौ ।
बादी नाग अमरपुर वसिया, वात जुगादी राखि वसौ ।।५।।

१३८. गीत दुरजणसाल सोडा रौ जुध रौ

बकिया पड़ै जोध खळकियां बगतर, वाढ़ बळकिया चहूंवळां ।
हुवियौ कटक अवेळो हावौ, खावौ आयौ सीस खळां ।।१।।

---

१३८. **गीतसार**–उपरांकित गीत सोढ़ा शाखा के क्षत्रिय योद्धा दुर्जनशाल की युद्ध वीरता का बोधक है। दुर्जनशाल ने सिरोही पर राठौड़ों के आक्रमण करने पर उनसे युद्ध लड़ा था। कवि कहता है कि राठौड़ों ने जब अचानक सिरोही पर धावा किया तब उस विकट समय में वीर दुर्जनशाल उनके मुकाबिले में सामने आया और शत्रुओं का संहार कर उसने अपने पुराने वैर का बदला लिया।

---

४. भैरू……मानसा–भैरोंसिंह, नवलसिंह और मानसिंह ने। भारथ–युद्ध, भारतसिंह। कैंवर–कुंवर, धनुष। अचड़–अटल, कीर्ति। अतधारि–मरने का निश्चय कर। दारण–बहादुर। अमर तणां–अमरसिंह के पुत्र। मारणहार–आक्रान्ताओं को।

५. आखा–अक्षत। फुणां–फनों। अवझाटां–प्रहारों, चोटों। डसियां–डसने का भाव, डसने पर। किसौ–कैसा। अमरपुर–स्वर्ग लोक में। जुगादी–युग युग से प्रचलित। वसौ–जीवित, वसुधा पर।

१. जोध–योद्धा। खळकियां–खड़कना, खनकते। वाढ़–तलवारों की धाराएँ, मारने काटने। बळकिया– (?)। चहुंवळां–चौतरफ। हुवियौ–लड़ा, प्रहार किया। कटक–सेना। अवेळो–असमय। खावौ–वीर। सीसखळां–शत्रुओं पर, दुर्जनों के सिर पर।

वैर बाराह कमंध धर वेधै, अरणभंग अरि कोटां ऊथाळ ।
अटकां सबळ ऊपरैं आयौ, सोहड़ां कळळत दुरजणसाल ।।२।।
हळवळ भड़ां हैमरां हूंकळ, जाभै साथे छड़ाळां भूल ।
बेहंगां ढूल पड़ै सिवबाड़ी, माधावत बैठियौ कळ मूळ ।।३।।
बोख बैंड़ांण मारकां वूपरै, खाग बजाड़ै भूप खरौ ।
बळियौ वैर सनिहा बाळै, हाक बहादर दुरंग हरौ ।।४।।

१३९. गीत सांवलदास डाबर रौ

मगां चारि फौजां लगां जंगां बीराण में,
चंगाहेली सकति त्यार चहकै ।
वगां रिणतूर सोंध लगां बाढ़िया,
महं तरां खगां खसबोह महकै ।।१।।

---

१३९. गीतसार—उपर्युक्त गीत में वीर सांवलदास डाबर द्वारा लड़े गए युद्ध का वर्णन किया गया है। गीतनायक को वड़नगर के स्वामी फतहसिंह का पुत्र बतलाया गया है। गीत में शत्रुओं द्वारा चारों ओर से जाने पर उसने शाही सेना पर आक्रमण कर यश प्राप्त किया था।

---

२. वैर वाराह—प्रतिशोध लेने वाला, वैर शोधन करने वाला। कमंध—राठौड़। वेधै—युद्ध। अणभंग—अखंड, वीर। अरि कोटां—शत्रुओं के दुर्गों को। ऊथाल—गिराने वाला, ढाहने वाला। अटकां—रोक, बाधा। सबळ—सशक्त,दृढ़। सोहड़ां—योद्धाओं। कळळत—कोलाहल होते समय।

३. हलवळ—हलचल। भडां—योद्धाओं। हैंमरा—घोड़े की। हूंकळ—हिनहिनाट, कोलाहल। जाभै—सघन, गहरे। छड़ाळां—भालों, भालेधारी योद्धा। भूल—समूह। बेहंगां—पक्षियों, विहंगों। ढूल—समूह, पंक्ति। सिवबाड़ी—सिरोही। माधावत—माधवसिंह का पुत्र। कळमूळ—युद्ध का मूल, योद्धा।

४. बैंडांण—हाथी, घोड़ा। मारकां—आक्रामक, योद्धा। वूपरै—ऊपर। खाग—खड्ग। बजाड़ै—बजाता है, चलाता है, वार करता है। खरौ—पक्का, सच्चा, निश्चयी। बळियो—लौटा, लिया, पुन। बाळै—बदला लिया। दुरंग हरौ—दुर्गादास का वंशज या पौत्र।

१. मगां—मार्गों पर। जंगां—युद्धों। चंगाहेली—यशगान की ध्वनि (?)। सकति—शक्ति, दुर्गा। चहकै—कहकहे लगाए। बगां—बजने पर। रिणतूर—रणतूर्य। तरवरां—तरुओं। महकै—फैले, सुरभित हुए।

साह री कावळी घड़ा सिरि सावळा,
झटापड़ि वावळी रोपि झंडां ।
अरगचां वौह तूटै बिनां आंवळी,
खुलै बासवळी तेण खंडां ॥२॥
अरावां मौहरि वडनगर फताउत,
पसर यिम धाय समहर पतीजा ।
मेछ भीनां अतर समर विच मूंछतां,
बगर खागां पड़ै अगर बीजा ॥३॥
धूधड़ै फतै पाई परम धारियां,
थारियां हौड किण होण थावै ।
मीरजा हवायी तरां दिवस मारिया,
अजै तरवारियां वास आवै ॥४॥

१४०. गीत सेरखांन पठान रा जुद्ध रौ

सिर भूर कियौ खागे चड़ सेरैं, सांस प्रामियौ जोह संगाथ ।
आदम गयौ धूंणतो उतबंग, हूरां गई मसळती हाथ ॥१॥

---

१४०. गीतसार–उपर्युक्त गीत शेरखाँन पठान द्वारा युद्ध भूमि में वीर गति प्राप्त करने विषयक है । कवि कहता है कि शेरखाँन ने युद्ध में अपने शीश के छोटे छोटे टुकड़े कर छितरा दिये जिससे मुण्डमाला प्रेमी शिव विना माला तथा अप्सराएँ विना वर के निराश होकर अपने लोक लौट गई ।

---

२. कावळी घड़ा–विकट सेना । सांवल–सांवळांदास । झटापड़ि–सत्वरता से । वावळी–उन्मत्त । अगरचां–अगर के । वौह–बहुत । आंवळी–सुसज्जित । बासावळी–सुगन्धि ।

३. अरावां–छोटी तोपें । वडनगर–वड़नगर स्थान का नाम । फताउत–फतहसिंह के पुत्र सांवलदास । पसर–फैल कर । समहर–युद्ध । मेछ–मुसलमान । अतर–इत्र । मूंछतां–मारते । बगर–फलांकुर (?) ।

४. धूधड़ै–निश्चित ही । हौड–स्पर्द्धा, विवाद । वास–सुगंधि ।

१. भूर कियौ–कण कण कर दिया, छोटे छोटे टुकड़े । खागै चड़–खडग धारा के सामने चढ़कर । सेरैं–गीतनायक शेरखाँन ने । प्रामियौ–प्राप्त किया, मिला । संगाथ–साथियों । आदम–शिव । धूंणतो–धुनता हुआ । उतबंग–उत्मांग, शीश । हूरा–मुसलमान अप्सराएँ । मसळती हाथ–हाथ मलती हुई, पश्चाताप करती ।

कण कण कमळ कियौ अवदळ को, पनह खुहाय थयौ हंस पिण ।
तसवी विण तिनयण गयौ तणि, वेगम रथ गौ खसम विण ।।२।।
कमळ पठाण कियौ चढ़ कुटकै, मेळी जौति रहमाण मंझार ।
गौरांवर सिणगार खपेगौ, निवर गई वर चंगी नार ।।३।।

—पदमा सांदुवण री कह्यौ

१४१. गीत भरतपुर किला पर जाटां अंग्रेजां रौ

हूंणो हूंतो सो होगयौ गल्लां सुणायां हुवै कीं हमैं,
कीधौ नींवावतां धाया रंग में कुरंग ।
जाटां नै दूर सूं गौरा दूर वीणी दै दै जोता,
दादू वाळा होता तो न तूटतौ दुरंग ।।१।।

---

१४१. गीतसार–उपरांकित गीत में भरतपुर के दुर्ग पर अंग्रेजों के आक्रमण की ओर संकेत किया गया है । उस युद्ध में भरतपुर नरेश के राजगुरु नीम्बार्क पीठ के महंत द्वारा किले के किंवाड़ खोलने तथा अंग्रेजों से मिल जाने की भर्त्सना तथा दादू पंथ वालों की स्वामि भक्ति की श्लाघा की गई है । गीत प्रसिद्ध कवि बांकीदास आशिया रचित है ।

---

२. कमळ–मस्तक । अवदल को–अवदल (अब्दुला) खांन का पुत्र शेरखाँन । थयौ–हुआ । हंस–प्राण । पिण–परन्तु (?) । तसवी–मुण्डमाला । विण–बिना । तिनयण–त्रिलोचन, महादेव । वेगम रथ–हूरों का विमान । गौ–गया । खसम–खाविन्द, पति ।

३. कमळ–सिर । पठाण–पठान ने, गीतनायक शेरखाँन ने । कुटकै–छोटे छोटे टुकड़े । मेळी–मिलाई । जौति–ज्योति । मंझार–में । गौरांवर–गौरी पति, शिव । खपेगौ–परेशान होकर निराश लौट कर गया । निवर–बिना पति प्राप्त किए । वर–वराकांक्षिणी, दुलहिन । चंगी नार–सुन्दर स्त्री, अप्सरा ।

१. हूंणो हूंतो सो हो गयो–जो होना था वह तो हो गया । गल्लां–गल्प, बातें, डींगें । सुणाया–सुनाने से । हुवै कीं हमैं–अब क्या हुवे । नींवावतां–नीम्बार्क सम्प्रदाय वाले । धाया–धनी । रंग में कुरंग–रंग में भंग, उतसव में निराशा । गौरा–अंग्रेज । दूरबीणी–दूरवीन से । जोता–देखा करते थे, निकट आने का साहस नहीं होता था । दादू वाळा–दादू पंथ वाले । होता–उनके स्थान पर होते । न तूटतौ–नही टूटता, अधिकार में नही जा पाता । दुरंग–किला ।

सोर झाळां ऊठतां बाजतां खगां भार साहे,
गाजतां घोर ज्यूं गोळा वूठता गरम ।
प्रथी सारी कहै मांय होता जो दयाल पंथी,
भरथानेर रौ नथी जावतौ भरम ।।२।।

बैरागियां सलेमाबाद रा काम कीधौ बुरौ,
घुरौ यां ऊपरां राम काळ री गुरज ।
नागा जि नराणै वाळा राखतौ वो युद्ध नैड़ा,
भरत्यांण वाळौ न गांजतो भुरज ।।३।।

दादू रा ग्रांबेर चाडवे केई वार सीस दीधा,
कूरमां री धरा रा नि········ कीधा कोट ।
गुरु व्है सुणाया नाम कंठी बंधी जाळ गळे,
फिरंगी सूं सांधी तणा नींबावतां फोट ।।४।।

—वाकीदास ग्रासिया रौ कह्यौ

---

२. सोर झाळां–बारूद की ज्वाला, तोपें । ऊठतां–उठते, प्रज्वलित होते । बाजतां–चलते । भार साहे–दायित्व सम्हाले हुए । घोर–भयानक । वूठता–बरसते । गरम–गर्म, तप्त । मांय–भीतर । भरत्थानेर–भरतपुर । नथी–नही । भरम–भ्रम, भेद, रहस्य ।

३. सलेमाबाद रा–सलेमाबाद वालों ने, नीम्बार्क पीठ वालों ने । घुरौ–घोष करो, गर्जना करो । काळ री गुरज–यमराज की गदा । नागा–दादू पंथी । नराणै वाळा–नराणा स्थान वाले, दादूजी का प्रमुख स्थान नराणे में था, जो दादू द्वारा कहलाता है । नैड़ा–निकट । भरत्यांण–भरतपुर । न गांजतो–टूटता नहीं । भुरज–किला ।

४. चाड–सहायतार्थं । कूरमां री–कछवाहों की । कंठी बंधी–कंठी बांधकर शिष्य बनाना । गळै–कण्ठो । फिरंगी–ग्रंग्रेज । सांधी–सांधा, किया, जोड़ा ।

परिशिष्ट १

ऐतिहासिक टिप्पणियां

पृ. १२ गीत ४ राजा मानसिंघ कछवाहा आमेर—कछवाहों के राज्य आमेर के शासक भगवन्तदास का उत्तराधिकारी राजा मानसिंह कछवाहा। राजा मानसिंह सन् १५६२ ई० में अपने पिता के साथ बादशाह अकबर की सेवा में पहुंचे थे। बादशाह के सन् १५७२ ई. के गुजरात के आक्रमण में मानसिंह अकबर के साथ थे और शेरखाँ फौलादी को पराजित कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। तदनन्तर वे महाराना प्रतापसिंह उदयपुर, महारावल आशकर्ण डूंगरपुर और काबुल के रूशानी जाति के लुटेरों का दमन करने पर नियुक्त हुए। सन् १५८६ ई. में राजा भगवन्तदास का लाहौर में निधन हो जाने पर मानसिंह उनके सिंहासन पर बैठे। तब इन्हें राजा की पदवी और पांच हजारी का मन्सब मिला। बादशाह ने राजा मानसिंह को बिहार में जागीर प्रदान कर वहाँ का शासक नियुक्त किया तब उन्होंने वहां के पूर्णमल कंधोरिया को परास्त कर शाही सेवक बनाया। मानसिंह ने पटना के रणपति चरवा, उड़ीसा के झपटराय, बंगाल के कतलूखाँ लोहानी, रोहितास के विद्रोह तथा हल्दीघाट के प्रसिद्ध युद्ध में विजय प्राप्त की थी। मानसिंह बादशाह अकबर के प्रमुख और प्रभावशाली सेनानायक थे। उन्होंने अकबर और जहाँगीर के शासन काल में सल्तनत के अनेक प्रान्तों का शासन सम्हाला और प्रशंसा प्राप्त की। गीत में मानसिंह द्वारा पठानों पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। मानसिंह ने सन् १५७४ ई. में बिहार में दाऊदखाँन पठान को साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने पर हाजीपुर के युद्ध में हराया था। संभवतः दाऊदखाँ को पराजित करने की प्रशंसा गीत में की गई है। वह सन् १६१४ जुलाई ६ के दिन दक्षिण प्रान्त के इलीचपुर में मृत्यु को प्राप्त हुआ। वह उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त कर सात हजारी के मन्सब तक पहुंच गया था जो उस समय में अन्य किसी हिन्दू राजा को नहीं मिला था।

मुगल दरबार भा १ पृ. २६१–३०१। अलवर व जयपुर
राज्य का इतिहास पृ. ७२,७७। राजा मानसिंह के झूलने छंद।

पृ. १३ गीत ५ मानसिंघ कछवाहा आमेर—आमेर का शासक राजा मानसिंह भगवन्तदासोत कछवाहा। गीत में मानसिंह द्वारा रोहिताश, दक्षिण प्रान्त और काबुल के विद्रोहों को शान्त करने का वर्णन किया गया है। विशेष पृ. १२ गीत ४ की टिप्पणी देखें।

पृ. १४ गीत ६ राजा माधोसिंघ कछवाहा अजबगढ़ भानगढ़—आमेर के राजा भगवन्तदास का पुत्र और राजा मानसिंह का भाई राजा माधवसिंह कछवाहा। राजा माधवसिंह मेवात (अलवर राज्यान्तर्गत) भाणगढ़ राज्य का स्वामी था। बादशाह अकबर ने जब मिर्जा इब्राहीम को दण्ड देने के लिए अहमदनगर के सरनाल स्थान पर आक्रमण किया तब राजा माधवसिंह भी बादशाह के साथ था। कश्मीर पर मिर्जा शाहरुख के नेतृत्व में प्रेषित शाही सेना में इनकी भी नियुक्ति हुई थी। इन्होंने वहां के जमींदार याकूब को परास्त करने में साहस का परिचय दिया था। तदनन्तर बादशाह अकबर के निधन पर शाहजादे सलीम को सिंहासन पर बैठाने वालों में राजा रायसल और राजा माधवसिंह प्रमुख हिन्दू राजा थे। जहाँगीर के शासन काल में तीन हजारी दो हजार सवार के मन्सब तक इनकी उन्नति हुई थी। राजा माधवसिंह के पुत्र शत्रुशाल और उग्रसेन भी शाही मन्सबदार थे। शत्रुशाल शाही विद्रोही खानजहाँ लोदी तथा जूझारसिंह बुंदेला से लड़ता हुआ अपने पुत्र भीमसिंह और आनन्दसिंह सहित रणखेत रहा था।

—जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृ. २४६। मुगल दरबार पृ. २८६–२८७। Genedogical Table of kachawahas Sheet No 3

पृ. १५ गीत ७ राजा जगन्नाथ कछवाहा—आमेर के राजा भारमल्ल का पुत्र राजा जगन्नाथ कछवाहा। राजा जगन्नाथ की जागीर में रणथंभौर का प्रान्त था। प्रारंभ में वह अजमेर के शाही प्रान्त पति मिर्जा शर्फुद्दीन हुसैन के पास राजसिंह और खंगार कछवाहा सहित बंधन स्वरूप रहा। तदनन्तर राजा भारमल्ल की प्रार्थना पर बादशाह अकबर ने इनकी बंधन मुक्ति का आदेश दिया। जब महाराना प्रतापसिंह ने शाही सेना को मेवाड़ में कई स्थानों पर हराकर शाही सैनिक चौकियों पर अधिकार कर लिया तब महाराना को दबाने के लिए राजा जगन्नाथ को भेजा गया। इसने प्रसिद्ध वीर राव जयमल के पराक्रमी पुत्र रामदास मेड़तिया को युद्ध में मारा। तदुपरान्त वह पञ्जाब, काबुल, मेवाड़ और मालवा के युद्धों में शाही सेना में रह कर लड़ता रहा। बादशाह जहाँगीर की मेवाड़ के विरुद्ध की गई चढ़ाइयों में भाग लिया। राव दलपत बीकानेर को दण्ड देने के लिए भी भेजा गया था। जहाँगीर के शासन काल में वह पांच हजारी दो हजार सवार के मन्सब को प्राप्त कर चुका था। गीत में संवत् १६४१ वि० में महाराना प्रतापसिंह को पहाड़ों की शरण लेने के लिए बाध्य करने का वर्णन है।

मुगल दरबार भाग १ पृ. १४९, १५०, १५१। मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास पृ. ८६।

पृ. १६ गीत ८ गोयंददास माधाणी कछवाहा—राजा माधवसिंह कछवाहा भानगढ़ के वंशज खींवराज कछवाहा का पुत्र गोयंददास कछवाहा। गीत में गोयंददास द्वारा दक्षिण प्रान्त के युद्ध में लड़ने का बर्णन है। किन्तु आधार स्त्रोतों से पता नहीं चलता कि वह किस के विरुद्ध किस स्थान पर लड़ा था।

पृ. १७ गीत ९ कमा माधाणी कछवाहा—राजा माधवसिंह कछवाहा के पौत्र पेमसिंह का पुत्र मोहकमसिंह कछवाहा। पेमसिंह खानजहाँ के विरुद्ध के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ था। गीत में मोहकमसिंह के शत्रु-नारियों पर व्याप्त आतंक का वर्णन है।

मुंहता नैणासी री ख्यात भाग १ पृ० २९९

पृ. १८ गीत १० अनोपसिंह कछवाहा री निन्दा रौ—संभवतया महाराजा मानसिंह के जेष्ठ राजकुमार जगतसिंह के पुत्र जूझारसिंह का पुत्र अनूपसिंह कछवाहा। वह शहजादा बुलाकी की सेवा में पूर्व में प्रदेश रहा था। फिर संवत् १७१८ के आस पास महाराजा जयसिंह प्रथम आमेर की सेवा में रहा। गीत में उसके पौत्र के वीरगति प्राप्त करने की प्रशंसा तथा उसके भाग आने की भर्त्सना की गई है।

मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १ पृ. २९८।
कछवाहों की हस्तलिखित ख्यात।

पृ, १९ गीत ११ राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर—आमेर के राजा महासिंह के पुत्र मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा। जयसिंह ने बारह वर्ष की आयु में एक हजारी पांच सौ सवार का मन्सब प्राप्त किया था। तदनुपरान्त शाहजादा पर्वेज के साथ दक्षिण में नियुक्त हुए। बादशाह शाहजहाँ के सिंहासनारूढ़ होने पर सन् १६२८ ई. में चार हजारी तीन हजार सवार के मन्सब से सम्मानित हुए। इसी वर्ष में आगरा सरकार के महाबन के विद्रोहियों को कासिमखाँ किजवांनी के साथ सजा देने पर नियुक्त हुए। बलख के हाकिम नजर मुहम्मदखाँ के विद्रोह का दमन करने के लिए महाबतखाँ खानखानाँ के साथ भेजे गए। सन् १६२९ में खानेजहाँ लोदी के विरुद्ध दक्षिण प्रदेश में अबुल हसन तुर्बती सहित भेजे गए। बादशाह शाहजहाँ के द्वारा चार हजारी चार हजार सवार का मन्सब प्राप्त कर भातरी के युद्ध, परेंदा के दुर्ग को घेर कर साहस का परिचय दिया। तदनन्तर शाहजादे शुजा के साथ दक्षिण की चढ़ाई, परेंदा दुर्ग घेरे पर तैनात हुए। तब बादशाह ने प्रसन्न होकर बालाघाट की सूबेदारी प्रदान की। तदनन्तर एक हजारी मन्सब की उन्नति कर शाहू भोंसला पर खांनदौरा के साथ भेजे गए। सन् १६३८ ई. में मिर्जा राजा की पदवी प्राप्त की। सन् १७४० ई. में मुरादबख्श के साथ काबुल प्रान्त में नियत हुए। सन् १६४१ में राजा बासू के पुत्र जगतसिंह के विरुद्ध मऊ दुर्ग पर अधिकार करने के लिए अभियान किया। इस विजय की उपलक्ष में पाँच हजारी पाँच हजार के मन्सब पर

उन्नत हुए तथा उस दुर्ग के अध्यक्ष का पद मिला। फिर शाहजादा दाराशिकोह के साथ कंधार पर नियुक्त किए गए। खाँनदोरा के निधन पर सन् १६४४ में दक्षिण के सूबेदार नियुक्त हुए। तत्पश्चात् औरंगजेब के साथ बलख की चढ़ाई पर गए। मन्सब में वृद्धि पाकर कामाँ पहाड़ी (भरतपुर) के जाटों के दमन पर गए।

शाहजहाँ की वृद्धता के कारण शाहजादों के उत्तराधिकार के विद्रोह में जयसिंह ने शाहजादा शुजा को पराजित कर भगाया और औरंगजेब के पक्ष में दाराशिकोह को पकड़ने के लिए औरंगजेब के साथ रहे।

दाराशिकोह की बन्दी अवस्था में हत्या के बाद छत्रपति शिवाजी को पराजित करने के लिए नियत हुए। शिवाजी को शाही सेवा के लिए तैयार करने पर इनको सात हजारी सात हजार सवार का मन्सब प्राप्त हुआ। इन्होंने बीजापुर के दुर्गों पर विजय प्राप्त की। सन् १६६७ (संवत् १७२३) में बुरहानपुर में इनका निधन होगया।

मिर्जा राजा जैंसिघ की दवावैत। मुगलदरबार भा. पृ. १५४-१६३

पृ. २० गीत १२ मिरजा राजा जैंसिघ—आमेर के शासक शाही मन्सवदार राजा जयसिंह कछवाहा प्रथम। सवत् १६८१ वि. में हाजीपुर के निकट टोंस नदी के तट के युद्ध में विद्रोही शाहजादे खुर्रम के पक्षधर राजा भीमसिंह सीसोदिया टोडा और शाही योद्धा राजा गजसिंह जोधपुर के मुकाबिला हुआ तब गजसिंह मिर्जा राजा जयसिंह की ओट में आने पर सुरक्षित रह पाये। उक्त युद्ध में राजा भीमसिंह, मानसिंह शक्तावत प्रभृति शाहजादे के समर्थक धराशायी हुए और गजसिंह, जयसिंह जो जहांगीर की ओर से लड़े थे ने विजय प्राप्त की। गीत में राजा जयसिंह की वीरता एवं दृढ़ता का वर्णन है।

गजगुण रूपक बंध पृ० १२३–२४२

पृ. २१ गीत १३ गीत राजा जैंसिघ कछवाहा आमेर—राजा महासिंह के पुत्र राजा जयसिंह कछवाहा आमेर प्रथम। जयसिंह बादशाह जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब के शासन काल में शाही सेवा में रह कर अनेक युद्धों में लड़ा और सात हजारी सात हजार सवार तक का मन्सब प्राप्त किया। गीत में जयसिंह का आतंक और राजनैतिक दक्षता का वर्णन है। वह सन् १६२१ से १६६७ ई. तक आमेर का शासक रहा।

राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ० ८०–८८

पृ. २२ गीत १४ महाराजा जैंसिघ कछवाहा आमेर—आमेर का महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा द्वितीय। जयसिंह राजा विशनसिंह का पुत्र था। इसका जन्म ३ सितम्बर १६८८ ई. में हुआ था और सन् १७०० ई. में आमेर का सिंहासनाधिकार प्राप्त किया। प्रारंभ में इसको १५०० जात १५०० सवार का मन्सब मिला। सिंहासनारूढ़

होने के उपरान्त वह औरंगजेब के साथ दक्षिण में गया और खेलना (विशालगढ़) के दुर्ग को हस्तगत करने में निपुणता दिखाई। फलतः इसका मन्सब दो हजारी जात दो हजार का हो गया।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद जयसिंह ने जोधपुर के राजा अजीतसिंह के सहयोग से सांभर पर आक्रमण किया और वहां के शाही अधिकारी अली अहमदखां, सैयद हुसैन खां बारहा आमेर के फौजदार और गैरतखां नारनोल के फौजदार और अहमद सैदखां मथुरा के फौजदार को ३ अक्टूबर, १७०८ को भयानक रूप से पराजित किये। इस युद्ध में उनियारा के राव संग्रामसिंह नरूका ने अत्यधिक शौर्य प्रकट किया था। गीत में कवि ने सांभर के युद्ध का वर्णन किया है। सवाई जयसिंह ने गगवाणा का युद्ध, मालवा की सुबेदारी, जयपुर नगर का निर्माण, ज्योतिष यंत्रों की स्थापना प्रभृति अनेकानेक ऐसे कार्य किए जिससे भारतीय शासकों में उसकी पांक्तेय गणना की जाती है।

सांभर का युद्ध पृ. ६, राजपूताने का इतिहास पृ. ६२

पृ. २३ गीत १५ महाराजा सवाई रामसिंह कछवाहा जयपुर—जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय के पुत्र महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय जयपुर। इन का जन्म २७ सितम्बर १८३३ को हुआ और १७ फरवरी १८३५ को दो वर्ष की बाल्य आयु में राजसिंहासन पर आसीन हुए। बाल्यवस्था के कारण राज्य के प्रधान मत्री का कार्य सामोद के रावल बैरीशालसिंह को सौंपा गया। उनकी सहायता के लिए महाराव हनुवन्तसिंह शेखावत मनोहरपुर, राव जीवनसिंह दूनी, ठाकुर नवलसिंह शिवाड़, मन्नालाल और किशनलाल को परिषद का सदस्य नियुक्त किया गया। ४ जून १८३५ ई. को जब एल्वेस, ब्लेक और कैप्टिन लडलो राजमाता चन्द्रावत जी से भेंट कर राजमहलों से बाहर निकले कि फतहसिंह ने एल्वेस पर तलवार का प्रहार किया। वह सख्त घायल होकर बच गया। लडलो भी उसके साथ बच निकला। किन्तु ब्लेक पीछे रह गया। जयपुर की अंग्रेज विरोधी प्रजा ने उस पर आक्रमण कर दिया तब वह अजमेरी द्वार के निकट के एक मंदिर में छिप गया। क्रुद्ध प्रजा ने उसे बाहर निकाल कर उसको, उसके चपरासी, छड़ीदार और महावत को मार डाला। तब अंग्रेजों ने प्रजा को उत्तेजित कर विद्रोह करवाने वाले अमरचंद और हिदायततुल्ला को मृत्यु दण्ड और झुंथाराम को कारावास की सजा दीं।

सन् १८३७ ई. में रावल बैरीशालसिंह की मृत्यु पर उसका पुत्र रावल शिवसिंह प्रधानमंत्री और ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौमू को सेनाध्यक्ष बनाया गया। किन्तु नागाओं की सेना और रामगढ़ की दो फौजों के विद्रोह करने पर अंग्रेजों की सहायता से उनको दबाया गया। इसी काल में ठाकुर मेघसिंह डिग्गी, हिंडौन की फौज का विरोध प्रकट हुआ परन्तु उन्हें भी दबा दिया गया।

सन् १८४० में कालख के अधिकार च्युत ठाकुर किशनसिंह खंगारोत ने कालख दुर्ग पर.अधिकार कर लिया। तब राजकीय तोपखाना तथा सेना को भेज कर ठाकुर किशनसिंह को आत्म समर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया।

सन् १८४३ ई. में पठान अमीरखां तथा रायचंद चोवदार के विद्रोहात्मक दंगे को शान्त किया गया और उन दोनों को फांसी का दण्ड दिया गया।

सन् १८४६ ई. में सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह के दासी पुत्रों ने राव राजा रामप्रतापसिंह सीकर के विरुद्ध बगांवत करदी। तब उन बागी लोगों की मदद पर प्रसिद्ध बारोठिया जवाहिरसिंह डूंगरसिंह शेखावत बठोठ पाटोदा तैयार हो गए और १८ जून १८४७ को नसीराबाद छावनी के अंग्रेजों के कोष पर आक्रमण कर ५२ हजार रुपये लूट ले गए। सन् ११ मई १८५७ को प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम का मेरठ में दीप जलाया गया और वह आग देश में सर्वत्र फैल गई। जयपुर नरेश रामसिंह ने भी रावल शिवसिंह के द्वारा गुप्त रूप से क्रान्तिकारियों और बादशाह बहादुरशाह से मंत्रणा कर सहयोग का आश्वासन दिया था। तब अंग्रेजों ने महाराजा को दबाने के लिए आगरा बुलवाया किन्तु उनके पास २० हजार सशस्त्र भाई–बंधुओं, नागाओं तथा शेखावाटी की सेना होने के कारण अंग्रेज अधिकारियों का महाराजा को बंदी बनाने का साहस नहीं हुआ। इस प्रकार रामसिंह के शासनकाल का प्रारंभिक समय बड़ा विद्रोहात्मक रहा। किन्तु सन् १८६२ ई. के बाद महाराजा ने अपने शासन में स्थिरता लानी आरंभ की और राज्य में चिकित्सालय, पाठशालाएँ, कालेज, शिल्पकला विद्यालय, रामनिवास बाग, रामबाग राजप्रासाद, दिवानी फौजदारी के कानून आदि बनवा कर सुव्यवस्था कायम की।

सवाई जयसिंह द्वितीय के बाद जयपुर के शासकों में रामसिंह जैसे कला प्रेमी, विधा प्रेमी, जन–प्रिय, उदार और विवेकशील शासक अन्य नहीं हुआ। इनका १८ सितम्बर १८८० ई. को देहावसान हो गया। गीत में महाराजा के सद्गुण एवं उदार हृदयता का वर्णन किया गया है।

ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ जयपुर पृ. १२५–१८४, पोलिटिकल हिस्ट्री स्टेट ऑफ जयपुर पृ. ३३–५६, राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ. १५४, ठिकाना दूदू का रिकर्डस् रायसलजससरोजह लिखित।

पृ. २४ गीत १६ महाराव नाथूसिंघ सेखावत मनोहरपुर—शेखावत कछवाहों के पट्ट ठिकाने मनोहरपुर शाहपुरा का शासक महाराव नाथूसिंह (श्रीनाथ सिंह) शेखावत। वह महाराव जसवंतसिंह का पुत्र था। गीत में नाथूसिंह के शाही मन्सबदार होने का

वर्णन हुआ है किन्तु मनोहरपुर के इतिहास की अनुपलब्धता के कारण कितना मन्सब और कब तक रहा आदि की जानकारी प्राप्य नहीं है।

पृ. २५ गीत १७ महाराव हणर्तसिंघ सेखावत मनोहरपुर—मनोहरपुर के महराव विशनसिंह का पुत्र तथा महराव नाथूसिंह का पौत्र महाराव हनुवन्तसिंह शेखावत। वह महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय जयपुर के बाल्यकाल में जयपुर राज्य का संचालन करने के लिए निर्मित्त राज्य परिषद का सदस्य रहा। हनुवन्तसिंह कुशल प्रशासक और काव्य प्रेमी शासक था। उसकी उदारता एवं विद्यानुराग से प्रभावित होकर आईदान पाल्हावत बारहठ ने छंदशास्त्र का ग्रन्थ 'हनुवन्त प्रकाश' बनाया था।

राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ. १४६, मनोहरपुर की वंशावली, वीरगीत संग्रह भाग १ भूमिका पृ. ३

पृ. २६-३० गीत १८,१९,२० महाराव हणूर्तसिंघ मनोहरपुर—मनोहरपुर का शासक महाराव हनुवन्तसिंह शेखावत कछवाहा। मनोहरपुर जयपुर राज्य का प्रथम श्रेणी का सम्मान प्राप्त प्रमुख ठिकाना था।

विशेष गीत १७ की टिप्पणी देखें।

पृ. ३१ गीत २१ राजा दुवारकादास सेखावत खण्डेला—शेखावाटी के खण्डेला राज्य का शासक राजा द्वारकादास शेखावत कछवाहा। वह बादशाह अकबर के दरबारी मंत्री रायसल शेखावत का पौत्र और राजा गिरधरदास का पुत्र था। राजा गिरधरदास के सं. १६८० वि. में बरहानपुर में सैयद कबीर के द्वारा २६ आदमियों सहित मारे जाने पर राजा द्वारकादास खण्डेला की गद्दी पर बैठा। बादशाह शाहजहाँ ने द्वारकदास को सं. १६८५ वि. में एक हजार जात ८०० सवार का मन्सब प्रदान किया था। सं. १६८७ में द्वारकादास ने दक्षिण में निजामुल्मुल्क पर चढ़ाई की और उल्लेखनीय वीरता प्रकट की, जिससे प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने १५०० जात एक हजार के मन्सब पर प्रतिष्ठित किया। वह खाँनजहाँ लोदी के अनन्य मित्रों में था। खाँनजहाँ के विद्रोह में वह शाही पक्ष में रहा और सं. १६८७ वि. में खाँनजहाँ से लड़ता हुआ उसको मार कर स्वयं भी मारा गया। गीत राजा द्वारकादास के हाथ से खाँनजहाँ के मारे जाने का वर्णन है, जो महत्वपूर्ण हैं।

मुगल दरबार भाग १ पृ. ३५३ की पाद टिप्पणी, शाहजहाँ नामा, मुंशी, भाग, १ पृ. ८, ओझा-निबंध संग्रह भाग ३-४ पृ. ६३

पृ. ३२ गीत २२ उमेदसिंघ सेखावत सूजावास—शेखावाटी के दांतारामगढ़ परगने के सूजावास का ठाकुर उम्मेदसिंह शेखावत। वह गजसिंह का पुत्र और राजा धीरसिंह खण्डेला छोटा पाना के शासक का पौत्र था। गीत में उम्मेदसिंह की उदारता की सराहना की गई है।

पृ. ३३ गीत २३ ठाकुर दलपतसिंघ सेखावत—शेखावतों की उग्रसेनोत शाखा के ठाकुर जोधसिंह का पुत्र तथा हठीसिंह का पौत्र ठाकुर दलपतसिंह। वह रींगस के निकटस्थ महरौली ग्राम का ठाकुर था। जयपुर राज्य द्वारा मनोहरपुर पर आक्रमण करने पर दलपतसिंह ने मानपुर के किले की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की थी। उसका भाई जोगीदास भी उसी सेना से शाहपुरा के किले में लड़ता हुआ मारा गया था।

पृ. ३५-३६ गीत २४-२५ ठाकुरजोगीदास सेखावत महरौली-महरौली का ठाकुर जोगीदास शेखावत। वह जोधसिंह का पुत्र था। जोगीदास ने मनोहरपुर राज्य पर जयपुर का आक्रमण होने पर शाहपुरा दुर्ग की रक्षा करते हुए प्राण त्याग किया था। इससे पूर्व मानपुर के युद्ध में जोगीदास का भाई दलपतसिंह जयपुर के विरुद्ध लड़कर मारा गया था। वह युद्ध संभवत् महाराव नाथूलिंह मनोहरपुर के समय लड़ा गया था।

पृ. ३७ गीत २६ राव जगतसिंघ सेखावत कासली—शेखावटी के सीकर राज्य वालों का पूर्वज राव जगतसिंह शेखावत कासली का शासक। वह राजा रायसल दरबारी के लघु पुत्र राव त्रिमल्ल के पौत्र तथा राव श्यामराम का पुत्र था। राव जगतसिंह शेखावत के शासन से पूर्व ही श्यामराम के दासी पुत्र पूर्णमल खत्री ने बादशाह जहाँगीर को प्रसन्न कर कासली राज्य पर अधिकार जमा लिया था। किन्तु राव जगतसिंह ने पूर्णमल के पुत्र बलिराम पर आक्रमण कर कासली पर कब्जा कर अपना राज्य स्थापित किया।

सीकर का इतिहास पृ. ३५ पाद टिप्पणी. रायसल
जससरोज चतुर्थ कलिका पृ. ९३।

पृ. ३८ गीत २७ राव सिवसिंघ सेखावत सीकर—शेखावटी के सीकर राज्य का राव शिवसिंह शेखावत। वह राव दौलतसिंह कासली का पुत्र और उत्तराधिकारी था। अपने पिता के निधनोपरान्त वि. सं. १७७८ में सीकर की गद्दी पर बैठा। राव शिवसिंह ने संवत् १७८१ वि. में सीकर नगर का निर्माण करवा कर अपनी नवीन राजधानी स्थापित कीं। उसने अपने सगोत्रीय शेखावत वीर ठाकुर शार्दूलसिं झुंझुनूं, ठाकुर गुमानीसिंह लाडखानोत रामगढ़, ठाकुर रूपसिंह गिरधरदासोत, खूड़, ठाकुर सल्हदीसिंह खीरोड़ प्रभृति के सैनिक सहयोग से फतहपुर के कायमखांनी राज्य पर आक्रमण कर सं. १७८८ वि. में उस पर अधिकार कर लिया। वहां का नवाब सरदारखाँ घायल होकर पकड़ा गया। तदनन्तर शिवसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के साथ नागौर के राव बख्तसिंह राठौड़ के विरुद्ध के संवत् १७७९ के गगवाना के युद्ध में भाग लिया और मालवा प्रान्त में जयसिंह की सूबेदारी होने पर वहां रहा। सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के सहयोगी रूप में राजमहल के युद्ध, बूंदी के युद्ध एवं बगरू महलां के

युद्ध में लड़ते रहा। वगरू क्षेत्र के युद्ध में शिवसिंह ने महाराजा ईश्वरीसिंह के पक्ष में मल्हार राव होल्कर इन्दौर वालों के पूर्वजों से लड़ते हुए घायल होकर संवत् १८०५ वि. में वीरगत्ति प्राप्त कीं

—सीकर का इतिहास पृ. ५६-७७, रायसल जससरोज,
शिखर वंसोत्पत्ति पृ. ।

पृ. ४०-४१ गीत २८, २९ राव सिर्वसिंघ सेखावत सीकर—शेखावाटी के सीकर राज्य का संस्थापक राव शिवसिंह शेखावत। शिवसिंह प्रसिद्ध राजा रायसल दरबारी के लघुपुत्र राव त्रिमल्ल के वंशधर दौलतसिंह का पुत्र था। वह बड़ा उदार, दूरदृष्टि एवं काव्यप्रेमी वीर शासक था। उसकी प्रशंसा में रचित अनेक गीत, दोहे, और कवित्तों के अतिरिक्त गुण ग्रंथ नामक एक ग्रंथ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के संग्रह में उपलब्ध है।

—विशेष देखें गीत २७ पृ. ३८ की टिप्पणी।

पृ. ४२ गीत ३० राव सम्रर्थसिंच सेखावत सीकर—सीकर के राव शिवसिंह का जेष्ठ पुत्र राव समर्थसिंह। वह अपने पिता की मृत्यु के बाद संवत् १८०५ में सीकर की गद्दी पर बैठा। महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह ने उसके अनुज चांदसिंह को जयपुर में शिवसिंह का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। किन्तु दोनों भाइयों के आपस में बड़ा स्नेह था, इसलिए उक्त व्यवस्था से उनके मन में कोई भेद नहीं उत्पन्न हुआ। किन्तु चांदसिंह से भिन्न दो अन्य भाइयों कीर्तिसिंह मेदसिंह के और इनके आपस में नहीं बनती थी। अतः फतहपुर में समर्थसिंह ने उन दोनों को मार डाला। महाराजा रामसिंह जोधपुर और राजाधिराज बख्तसिंह के मध्य लड़े गए मेड़ता के युद्ध में राव समर्थसिंह ने भी महाराजा ईश्वरीसिंह की ओर से रामसिंह के पक्ष में भाग लिया था। सं. १८११ वि. में समर्थसिंह का देहान्त होगया। उनके निधन पर राव चांदसिंह सीकर के अधिपति बने और राव समर्थसिंह के पुत्र नाहरसिंह वो श्यामगढ़ का ठिकाना दिया गया।

—सीकर का इतिहास पृ. ७८, ८०, ८१—८४।

पृ. ४५ गीत ३१ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—सीकर के राव चांदसिंह का पुत्र राव देवीसिंह शेखावत। वह अपने पिता के निधन के बाद संवत् १८२० वि. में १० वर्ष की आयु में सीकर का शासक बना। संवत् १८३१ वि. में रेवाड़ी के मित्रसेन अहीर ने शेखावाटी पर आक्रमण किया तब देवीसिंह ने शेखावत शक्ति को संगठित कर उसको युद्ध में पराजित किया। देवीसिंह ने संवत् १८३२ वि. में शेखावतों की परसरामोत शाखा के ठिकाने बाय के ठाकुर जोधसिंह पर आक्रमण कर बाय को जीत लिया। किन्तु जयपुर राज्य के प्रतिरोध करने पर बाय पुनः ठाकुर जोधसिंह के पक्ष में छोड़नी पड़ी। संवत्

१८३६ श्रावण पूर्णिमा के दिन शाही फौजदार मुरतजाखांन भड़ेच ने खाटू स्थान पर आ कर डेरा किया। राव देवीसिंह ने खूड़, दांता और खाचरियावास के स्वामियों की सहशक्ति एवं जयपुर की सेना के सहयोग से उस पर आक्रमण किया, जिसमें जयपुर के सेनापति चूहड़सिंह नाथावत डूगरी, महन्त मंगलदास दादू पंथी दूदू, दलेलसिंह खंगारोत सेवा तथा ठाकुर भक्तसिंह खूड़, हनुवन्तसिंह बलारां, सल्हदीसिंह दूजोद आदि अनेक वीर मारे गए। किन्तु विजय शेखावतों की हुई। तदनन्तर राव प्रतापसिंह अलवर पर महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर की चढ़ाई में राव देवीसिंह ने जयपुर की सेना के सम्मिलित रह कर राजगढ़ के युद्ध में वीरता प्रकट की। देवीसिंह ने ८४ गांवों सहित कासली पर अधिकार कर अपने राज्य में मिलाया। अन्त में संवत् १८५२ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को सीकर में उसका देहान्त होगया।

—सीकर का इतिहास पृ. ८८–९९, माधववंश प्रकाश, महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर की अलवर पर चढ़ाई की निशानी।

पृ. ४७-५४ गीत ३२, ३३, ३४, ३५, ३६ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—सीकर का शासक राव देवीसिंह चांदसिंहोत शेखावत। वह वीर योद्धा, स्थापत्य कला प्रेमी और विद्वान् शासक था। 'राजिया के सोरठे' का लेखक कृपाराम खिड़िया इसका आश्रित कवि था। देवीसिंह स्वयं भी अच्छा कवि था। गीत कवियों की प्रशंसा में रचित उसका निम्न गीत प्रसिद्ध है—

सुपदहा राव राण अवर जग सारैं, कूरम देवी वात कहे।
प्रथमी नाम सुजस मोटा पण, रूपग–जोड़ां हूंत रहे॥

—विशेष–देखें गीत ३१ की टिप्पणी।

पृ. ५५-५७ गीत ३७, ३८, ३९ रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर—सीकर का शासक राव राजा लक्ष्मणसिह शेखावत। वह राव देवीसिह का पुत्र था। वह संवत् १८५२ में सीकर का अधिपति बना। उसके पिता के विरोधियों ने लक्ष्मणसिह को शाहपुरा के मोहबतसिह का पुत्र घोषित कर जयपुर राज्य के सामने आपत्ति प्रस्तुत की। जयपुर के प्रधान मंत्री दौलतराम हल्दिया के अनुज नंदराम ने सीकर पर सैनिक अभियान किया। दोनों ओर से युद्ध की भयानक स्थिति बन जाने पर कृपाराम खिड़िया ने नन्दराम को राव देवीसिह की जयपुर के लिए की गई पुरानी सेवाओं का स्मरण दिलवाकर दोनों ओर से समझौता पर तैयार किया और तब कहीं सीकर से वह युद्ध टला। संवत् १८५७ वि. में राव लक्ष्मणसिह ने शाहपुरा पर आक्रमण कर वहां के ठाकुर मोहबतसिह को अपदस्थ कर मारवाड़ की ओर भगा दिया। तदनन्तर परस्पर समझौता हो जाने पर मोहबतसिह को शाहपुरा की रक्षा का दायित्व सौंपा गया। सं. १८६० वि. में महाराजा मानसिह जोधपुर ने शाहपुरा पर आक्रमण किया तब उस आक्रमण में मोहबतसिह मारा गया

किन्तु जोधपुर का शाहपुरा पर अधिकार नहीं होने दिया। लक्ष्मणसिंह ने १८६६ वि. में खण्डेला को छीनने के लिए वहां के दुर्ग कोट पर हमला किया जहाँ हनुमन्तसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ और खण्डेला पर उसका अधिकार हो गया। उसने खीरोड़ के गढ़ को भी संवत् १८६६ में ध्वंस किया।

लक्ष्मणसिह ने भी अपने पिता की भाँति लक्ष्मणगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया। वह संवत् १८६० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

—माधव वंश प्रकाश, सीकर का इतिहास पृ. १०३–११८।

पृ. ५८–६२ गीत ४०, ४१, ४२, ४३ कंवर करणसिंघ सेखावत डूर्गारयास—शेखावतों की परशुरामोत शाखा का कुंवर कर्णसिंह। वह ठाकुर उम्मेदसिंह का पुत्र था। कर्णसिंह ने संवत् १८७७ वि. में लक्ष्मणगढ़ पर जवाहिरसिंह और विजयसिंह के आक्रमण करने पर दुर्ग की रक्षा करते हुए प्राण त्याग किया और वैरियों का किला पर अधिकार नहीं होने दिया। उक्त युद्ध में कर्णसिंह के साथ सालिमसिंह और खंगारसिंह गौड़ योद्धा जालू ग्राम निवासी भी अपने साथियों सहित मारे गए थे। करणसिंह डूंगरियास का कुंवर था।

—रायसल जससरोज कलिका पन्द्रहवीं।

पृ. ६४ गीत ४४ ठाकर मोहवतसिंघ सेखावत दूजोद—ठाकुर भवानीसिंह का पुत्र ठाकुर मोहब्बतसिंह शेखावत। मोहब्बतसिंह सीकर राज्य की ओर से शाहपुरा का दुर्गपाल था। शाहपुरा पर जोधपुर के महाराजा मानसिंह की सेना ने सं. १८६२ में आक्रमण किया। दोनों ओर से एक मास तक तोपों का युद्ध होता रहा। जब दोनों ही पक्ष डटें रहे तब मोहब्बतसिंह ने दुर्ग से बाहर निकल कर जोधपुर की सेना पर आक्रमण किया और रण क्षेत्र में जूझते हुए वीरगति प्राप्त की। मोहब्बतसिंह के अन्य भाइयों ने भी समर भूमि में प्राणोत्सर्ग किया। सल्हदीसिंह ने खाटू युद्ध में और डूंगरसिंह खंगारसिंह ने जयपुर द्वारा खण्डेला पर अधिकार करने के युद्ध में प्राण त्याग किया था।

—रायसल जससरोज ग्यारहवीं कलिका।

पृ. ६६ गीत ४५ राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी—राजा रायसल दरबारी के लघुपुत्र भोजराज के वंशज प्रतापी ठाकुर शार्दूलसिंह का पौत्र भोपालसिंह शेखावत। वह राजा किशनसिंह का पुत्र था। भोपालसिंह का जन्म संवत् १७९२ वि. में हुआ था। वह संवत् १८०२ वि. में खेतड़ी की गद्दी पर बैठा था। भोपालसिंह ने जोधपुर के महाराजा

विजयसिंह की मरहठों के मारवाड़ पर आक्रमण करने पर सहायता की थी। तदनन्तर उसने सं. १८२८ वि. में लुहारू के शासक कीर्तिसिंह पर हमला किया। कीर्तिसिह शेखावतों की मैंरूदासोत शाखा का था वह लुहारू की रक्षा करते हुए धराशायी हुआ। जब राजा भोपालसिंह गढ़ में प्रवेश करने लगा तब कीर्त्तिसिंह के एक सैनिक ने उसके हाथी के होदे पर गोली का प्रहार किया जिससे भोपालसिंह मारा गया। वह साहित्य मर्मी और उदार शासक था। दिल्ली दरबार से उसे १२५० सवारों का मन्सब प्राप्त था।

—खेतड़ी का इतिहास पृ. ४३–४७।

पृ. ६८–७० गीत ४६, ४७ राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी—शेखावतों के खेतड़ी राज्य का स्वामी राजा भोपालसिंह शेखावत। वह शेखावतों की भोजराजोत शाखा के किशनसिंह का पुत्र था। उसने संवत् १८२४ वि. के मावंडा के युद्ध में जयपुर के पक्ष में युद्ध किया था।

पृ. ७१ गीत ४८ राजा बाघसिंघ सेखावत खेतड़ी—शेखावाटी के खेतड़ी राज्य का राजा बाघसिंह शेखावत। वह राजा किशनसिंह का पुत्र और राजा भोपालसिंह का अनुज था और भोपालसिंह के निसन्तान' मारे जाने पर संवत् १८२८ वि. में खेतड़ी का शासक बना। बाघसिंह ने मांडण स्थान के युद्ध में अपने सरक्तीय वीर नवलसिंह नवलगढ़, हनुवन्तसिंह डूंडलोद प्रभृति वीरों की शक्ति से शाहीं सेना नायक पीरूखां बलोची और राव मित्रसेन अहीर रेवाड़ी को पराजित किया। पीरूखां मारा गया और शाही सेना पराजित हुई। ठाकुर नवलसिंह का पुत्र लालसिंह भी उसी युद्ध में काम आया। जयपुर द्वारा शेखावाटी पर आक्रमण करने पर बाघसिंह ने सजातीय शेखावत बंधुओं की सेना एकत्रित कर जयपुर की सेना को हराया। जयपुर की सेना का नेता ठाकुर रणजीतसिंह नाथावत चौमू का ठाकुर था। शेखावतों की फौज का संचालन जार्ज टामस ने किया था। रणजीतसिंह घायल होकर जीवित बच रहा था। इस युद्ध में राजा किशनसिंह का द्वितीय पुत्र पहाड़सिंह मारा गया था। संवत् १८४२ वि. में बाघसिंह ने बबाई पर अधिकार कर शाही स्वीकृति की सनद प्राप्त की।

बाघसिंह ने सं. १८४३ वि. में नबाब नजबकुलीखां जो शाही फौजदार था से तंवरावाटी के सिरोही स्थान पर युद्ध किया। अंत में नजबकुली को हार कर शेखावतों से समझौता करना पड़ा। संवत् १८५७ वि. में बाघसिंह को 'राजाय राजगान उम्दाराजा हाय हिन्दुस्तान' की पदवी प्राप्त हुई थी।

—खेतड़ी का इतिहास पृ. ४७–५२।

पृ. ७३ गीत ४९ राजा अभैंसिंघ सेखावत खेतड़ी—शेखावतों के खेतड़ी राज्य के शासक राजा अभयसिंह शेखावत। वह राजा बाघसिंह का पुत्र था। वह संवत् १८५७ वि. में अपने पिता का शासनाधिकारी बना। राजा अभयसिंह जोधपुर के स्वर्गीय महाराजा भीमसिंह के पुत्र धौंकलसिंह के पक्ष का समर्थक किया था। इससे उनके और महाराजा मानसिंह जोधपुर के भयंकर शत्रुता हो गई थी। अभयसिंह ने नवलगढ़, सीकर व स्वयं की सेना भेज कर डीडवाना पर धौंकलसिंह के सहायक छत्रसिंह भाटी का कब्जा करवा दिया था। यह वि. सं. १८६१ की घटना है। इसी वर्ष राजा अभयसिंह ने जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह के आमंत्रण पर जोधपुर के महाराजा मानसिंह के विरुद्ध सैनिक अभियान में भाग लिया। वह युद्ध महाराना भीमसिंह की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह के प्रश्न को लेकर छिड़ा था। मारवाड़ के पर्वतसर प्रान्त के गींगोली स्थान के युद्ध में मानसिंह को पराजित किया। उक्त युद्ध में खेतड़ी नरेश के अतिरिक्त सीकर नरेश लक्ष्मणसिंह, ठाकुर नवलसिंह दाँता, खण्डेला का राजा, राव राजा भीमसिंह नरुका उनियारा, राव चाँदसिंह गोगावत दूणी तथा बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने भी जयपुर के पक्ष में युद्ध में भाग लिया था। अन्ततः महाराजा मानसिंह को रणत्याग कर जोधपुर दुर्ग की शरण लेनी पड़ी।

राजा अभयसिंह दूरन्देशी शासक था। उसका पंजाब केशरी, महाराजा रणजीतसिंह, महाराजा वख्तावरसिंह अलवर, महाराजा सूरतसिंह बीकानेर प्रभृति नरेशों से मित्रता का घनिष्ट सम्वन्ध था। वह संवत् १८८३ वि० में दिवंगत हुआ।

खेतड़ी का इतिहास पृ. ५३–५६, मारवाड़ का इतिहास द्वि. भा. पृ. ४०५
कूर्मवंश यशप्रकाश पृ. ३–४।

पृ. ७४ गीत ५० सुजाणसिंघ सेखावत राजसिंघ राठौड़—शेखावटी के छापोली ग्राम का ठाकुर सुजानसिंह भोजराजोत शेखावत। वह ठाकुर श्यामसिंह का पुत्र था। शेखावतों की रायसलोत शाखा के प्रधान राज्य खण्डेला के शासक राजा बहादुरसिंह पर बादशाह औरंगजेब ने संवत् १७३६ वि० में दाराबखाँ और बहरेमदखाँ के नायकत्व में शाही सेना भेजी। राजा बहादुरसिंह ने शाही सेना से लड़ने का साहस नहीं किया। वह सेना बहादुरसिंह को दण्ड देने तथा वहाँ के प्रसिद्ध मोहनदेवजी के मंदिर को ध्वस्त करने के लिए भेजी गई थी। सुजानसिंह ने उक्त सेना से संवत १७३६ चैत्र सुदि ६ के दिन विकट युद्ध की वीर गति प्राप्त कीं। उसके साथ ६० सहयोगी भी रणखेत रहे थे।

राजसिंह मेड़तिया शाखा का राठौड़ सातलवास का ठाकुर था। वह प्रतापसिंह का पुत्र था। महाराजा जसंवतसिंह के निधन पर बादशाह औरंगजेब ने मारवाड़ राज्य को जब्त कर शाही थानें स्थापित कर दिए थे। और उनके पुत्र बालक महाराजा अजितसिंह को

पकड़ कर मुसलमान बनाने की कुमंत्रणा में लगा हुआ था उस समय औरंगजेब ने प्रसिद्ध तीर्थराजपुष्कर के मंदिरों को भूमिस्यात् करने के लिए अपने सेनानायक तहव्वरखाँ को आदेश दिया। तहव्वरखाँ तब अजमेर का फौजदार था। राजसिंह ने अपनी राठौड़ सेना एकत्रित कर तहव्वरखाँ का सामना किया। उक्त युद्ध में राजसिंह अपने भाई गोकुलसिंह, रूपसिंह हिम्मतसिंह तथा जगतसिंह उदावत प्रभृति अनेक योद्धाओं सहित मारा गया। वह युद्ध वि. सं. १७३६ में लड़ा गया था।

संघ शक्ति मासिक जयपुर वर्ष ३, अंक १ जनवरी १९६२, पृ. ३६, मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृ. २६०, मारवाड़ इतिहास द्वि. भा. पृ. ६६७।

पृ. ७५ गीत ५१ ठाकर नवलसिंघ सेखावत नवलगढ़—सेखावटी के नवलगढ़ संस्थान का ठाकुर नवलसिंह शेखावत। वह झुंझूनूं के स्वामी शार्दूलसिंह का चतुर्थ पुत्र था। नवलसिंह ने सन् १७३७ ई. में अपने नाम पर नवलगढ़ कस्बा आबाद कर अपने ठिकाने का मुख्यावास बनाया। नवलसिंह ने संवत् १८२४ वि. में भरतपुर के राजा जवाहरमल्ल जाट के विरुद्ध जयपुर नरेश माधवसिंह प्रथम द्वारा लड़ गए तंवरावाटी के मावंडा मण्डोली के युद्ध में भाग लिया था। उस युद्ध में जवाहरमल्ल की करारी हार हुई थी। नवलसिंह ने सन् १७७५ ई. में शेखावाटी पर पीरूखाँ बलोची और रिवाड़ी के राव मित्रसेन के आक्रमण करने पर मांडण स्थान के युद्ध में शाही सेना को पराजित किया था। पीरूखाँ उसमें मारा गया और मित्रसेन रणस्थल त्याग कर भाग गया था। नवलसिंह का पुत्र लालसिंह मांडण के युद्ध में मारा गया था। गीत में अप्रत्यक्ष रूप से मांडण युद्ध में मुसलमानों का नवलसिंह के आतंक से भयभीत होने का वर्णन किया है। वह फरवरी १७८० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

शेखावतों की वंशावली पृ० १२, राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ १९१।

पृ. ७७ गीत ५२ ठाकर नरसिंघदास सेखावत मंडावा—नवलगढ़ के ठाकुर नवलसिंह का जेष्ठ पुत्र नृसिंहदास शेखावत। नृसिंहदास शेखावत ने मंडावा में अपनी राजधानी स्थापित की तदनन्तर मंडावा पर अपने पुत्र पदमसिंह तथा ज्ञानसिंह को तथा नवलगढ़ पर उदयसिंह मोहब्बतसिंह को नियत किया। नृसिंहदास ने २८ जुलाई १७८७ के तुंगा के युद्ध में महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर की सेना के सम्मिलित रह कर महादाजी पटेल से युद्ध लड़ा। इस युद्ध में मरहठों ने तोपों के ५ सेर से १४ सेर तक के वजनी गोले राजपूत योद्धाओं पर बरसाए थे। किन्तु राजपूतों ने बिना प्राणों की पर्वाह किए घमासान

युद्ध लड़ा और मरहठों को उल्लेखनीय पराजय का मुंह देखना पड़ा। नृसिंहदास ने इस युद्ध में पराक्रम प्रदर्शित कर वीरगति प्राप्त की।

संघ शक्ति वर्ष २ अंक १२ पृ. २९–३३ सन् १९६१, राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ. १२१, १२२ शेखावतों की वशावली, रायसल जससरोज

पृ. ७८-८२ गीत ५३, ५४, ५५ **ठाकर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी**—शेखावाटी के चौकड़ी ठिकाने का स्वामी ठाकुर अर्जुनसिंह शेखावत। वह ठाकुर वख्तसिंह का जेष्ठ पुत्र था। चौकड़ी ठिकाना झुंझुनूं के शासक शार्दूलसिंह शेखावत के जेष्ठ पुत्र जोरावरसिंह की संतति परम्परा में था। गीत नायक अर्जुनसिंह जोरावरसिंह का पौत्र और शार्दूलसिंह का प्रपौत्र था। गीतों में अर्जुनसिंह के दान और पराक्रम का वर्णन किया गया है।

शेखावतों की वंशावली पृ. १२, १३, रायसल जससरोज।

पृ. ८३ गीत ५६ **ठाकर स्यामसिंघ सेखावत बिसाऊ**—शेखावाटी के विसाऊ संस्थान का स्वामी ठाकुर श्यामसिंह शेखावत विसाऊ। विसाऊ झुंझुनूं के शासक शार्दूलसिंह के पुत्र केशरीसिंह के द्वितीय पुत्र सूरजमल्ल का प्रमुख ठिकाना था। सूरजमल्ल सन् १८८७ ई. के तुंगा के युद्ध में महादाजी पटेल से लड़ता हुआ मारा गया था। तुंगा के युद्ध में महाराजा प्रतापसिंह जयपुर की विजय हुई थी। श्यामसिंह ठाकुर सूरजमल्ल का पुत्र था। श्यामसिंह और जयपुर नरेश के मध्य सन् १८०३ से १८०६ ई. तक विरोध बना रहा है। जयपुर नरेश ने श्यामसिंह पर सैनिक आक्रमण भी किया किन्तु उसे दवा न सका। अंत में समझौता हो गया। श्यामसिंह ने सवाई जयसिंह तृतीय के बाल्यकाल में जयपुर राज्य की अच्छी सेवा की थी। श्यामसिंह के पास यूरोपियन पद्धति से शिक्षित अश्व सेना तथा तोपखाना भी था। वह अपने समय का प्रभावशाली शासक था। गीत में अंग्रेजों के विरुद्ध जयपुर राज्य का पक्ष सवल बनाये रखने के लिए श्यामसिंह की प्रशंसा की गई है।

राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ. १९६
शेखावत की वंशावली।

पृ. ८४ गीत ५७ **ठाकर दूलहसिंघ सेखावत खाचरियावास**–शेखावाटी के दांतारामगढ़ परगने के खाचरियावास ठिकाने का ठाकुर दूलहसिंह शेखावत। दूलहसिंह ठाकुर गुमानसिंह का पुत्र था। गुमानसिंह ने रामगढ़ में दुर्ग निर्माण कर अपने ठिकाने का मुख्यावास बनाया था। वह अपनी जन्म तिथि के उत्सव पर बारूद में आग लग जाने के कारण मारा

गया था फिर रामगढ़ पर जयपुर राज्य ने अधिकार कर लिया था। दूलहसिंह ने वयस्क होने पर जोधपुर और जयपुर राज्यों की मरहठों के विरुद्ध सेवाएँ की तब उसे जयपुर से खाचरियावास और जोधपुर से ललासारी की जागीरें एवं ताजिमों का सम्मान प्राप्त हुआ। ठाकुर दूलहसिंह ने खाटू (श्यामजी की) के युद्ध में भी भाग लिया था। वह युद्ध संवत् १८३६ विक्रमी में शाही सेना नायक मुर्तजाअली भड़च से लड़ा गया था। युद्ध में शाही सेना पराजित हुई थी।

सिखर वंशोत्पत्ति, रायसल जससरोज।

पृ. ८६ गीत ५८ ठाकर सिवदानसिंघ सेखावत खाचरियावास—दांतारामगढ़ तहसील के खाचरियावास ठिकाने का ठाकुर शिवदानसिंह शेखावत। वह राजा रायसल दरबारी के जेष्ठ पुत्र लाडखाँन शेखावत के ८वें वंशधर ठाकुर दूलहसिंह का पुत्र था। शिवदानसिंह ने सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह से समझौता कर आपस के विरोध को मिटाया और सौहार्द स्थापित किया। गीत में उसको गोत्र रक्षक कह कर सराहा गया है। वह लाडखाँनोतों का मुखिया सरदार था।

माधव वंश प्रकास

पृ. ८७-८९ गीत ५९, ६० ठाकर खंगारसिंघ सेखावत खोरा—दांतारामगढ़ परगने के खोरा ग्राम का ठाकुर खंगारसिंह लाडखाँनोत प्रशाखा का शेखावत था। वह मारवाड़ के कणवाई ठिकाने के ठाकुर रतनसिंह का पुत्र था। रतनसिंह ने टोंक रियासत के प्रसिद्ध नवाव अमीरखाँ पिण्डारी से कणवाई में युद्ध लड़ा था। अमीरखाँ को असफल होकर रणभूमि से हटना पड़ा था। खंगारसिंह वीर प्रकृति का दानी पुरुष था। उसने अनेक चारणों को ऊँट-घोड़े दान किए थे। वह ठाकुर फतहसिंह का पौत्र था। गीत में चारण कवि के चाबुकों की मार सहन कर यश प्राप्त करने का वर्णन है।

पृ. ९० गीत ६१ भोजराज खंगारोत नराणा—जयपुर राज्य के नरायना ठिकाने का स्वामी भोजराज खँगारोत कछवाहा। वह आमेर के राजा पृथ्वीराज के छोटे पुत्र जगमाल के द्वितीय पौत्र मनोहरदास का छोटा पुत्र था। जगमाल के जेष्ठ पुत्र नारायणदास ने नरायणा कस्बा अपने नाम पर बसाया था। नारायणदास ने भोजराज को दस्तक लिया था। भोजराज ने बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के शासनकाल में मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा के साथ रह कर कतिपय लड़ाइयाँ लड़ी। बादशाह शाहजहाँ के शहजादे शुजा के विद्रोह करने पर संवत् १७१५ वि. में उसे रोकने के लिए भेजी गई सेना में वह शाहजादे सुलेमानशिकोह तथा राजा जयसिंह कछवाहा के साथ भेजा गया था। बनारस के पास के युद्ध में वह घायल होकर बच गया था। भोजराज संवत् १६८६

वि. में खाँनजहाँ का दमन करने लिए भेजी गई सेना में नियत हुआ । उक्त युद्ध में वह छत्रसिंह कछवाहा के साथ लड़ता हुआ मारा गया । राजा द्वारिकादास खण्डेला का स्वामी भी उसी युद्ध में मारा गया था ।

—विन्हैरासो पृ. १६०, भोजराज खंगारोत री निसाणी,
मुंहता नैंसाणी री ख्यात भाग १ पृ. ३०५.

पृ ६१ गीत ६२ कुसलसिंघ नाथावत चौमू—जयपुर राज्य के चौमू ठिकाने का ठाकुर कुशलसिंह नाथावत कछवाहा । वह ठाकुर मोहनसिंह का पुत्र था । किन्तु गीत्त में रामसिंह का पुत्र लिखा है । वह मोहनसिंह के मरने पर सन् १७४३ ई. में चौमू का अधिकारी हुआ । उसके वंशज जोधसिंह ने महाराजासवाई ईश्वरीसिंह की ओर से मरहठों के विरुद्ध लड़े गए युद्धों में भाग लिया था । राजमहल के युद्ध में वीरता दिखाई थी । वह सन् १७५८ ई. में प्रसिद्ध दुर्ग णथंभौर का किलादार नियुक्त किया था । जब महाराजा माधवसिंह कछवाहा से रणथंभौर छीनने के लिए मल्हारराव होल्कर ने अपने सेना नायक गंगाधर तांत्या को भेजा तब जयपुर की ओर से ठाकुर जोधसिंह उनका पुत्र रावल रामसिंह सामोद, ठाकुर गुलाबसिंह बगरू, ठाकुर अचलसिंह हाथोद, मसूदा के श्यामसिंह, सवाईसिंह हस्तेड़ा का पुत्र सालिमसिंह, ठाकुर जालिमसिंह टोरड़ी आदि प्रमुख योद्धाओं ने कक्कोड़ स्थान पर मरहठों का सामना किया और उल्लिखित सरदार जूझते हुए धराशायी हुए । वह युद्ध संवत् १८१६ वि. में लड़ा गया था ।

—संघशक्ति वर्ष २ अंक ६ संवत् २०१८ वि. पृ. १६–१७;
राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ. २०४, २०५ ।

पृ. ६२ गीत ६३ ठाकुर रणजीतसिंघ—वह जयपुर राज्य के चौमू ठिकाने का ठाकुर था । रणजीतसिंह ठाकुर रतनसिंह के निस्संतान मरने पर सामोद से गोद आकर बैठा था । इसने महराजा जयपुर की ओर से संवत् १८४४ में महादाजी पटेल की सेना से लड़े गए तुंगा के युद्ध में भाग लिया था । इस युद्ध में जयपुर के पक्ष के ठाकुर सूरजमल्ल बिसाऊ, ठाकुर नृसिंहदास नवलगढ़, ठाकुर पहाड़सिंह खंगारोत दूदू, ठाकुर जवानसिंह रियां, जीवणसिंह मारोठ, मोहबतसिंह मेड़तिया आदि मारे गए थे । विजय जयपुर पक्ष की हुई थी । रणजीतसिंह ने संवत् १८५६ वि. में जब राव समर्थसिंह के पुत्र श्यामसिंह ने फतहपुर पर फ्रांसिसी जार्ज के नेतृत्व में आक्रमण किया तब सीकर की सहायता की थी । इस लड़ाई में रणजीतसिंह, ठाकुरअभयसिंह ईसरदा उम्मेदसिंह पालड़ी जालिमसिंह और सूरजमल्ल चाँदावत ने वीरतापूर्वक युद्ध लड़ा और शत्रु को हराकर यश प्राप्त किया था । उम्मेदसिंह मारा गया था और ठाकुर रणजीतसिंह घायल होकर जीवित बच रहा । तदनन्तर कालख पर

खंगारोत वैरीसालोतों ने ठाकुर मेघसिह डिग्गी तथा सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह की मदद से अधिकार कर लिया तब सं. १७९३ ई. में रणजीतसिह ने कालख पर आक्रमण कर विजय प्राप्त कीं। गीत में रणजीतसिह द्वारा फतहपुर में जार्ज से लड़ने का वर्णन है। वह सं. १७९८ ई. में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

—राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ. २०३-२०४, रायसल जससरोज द्वादस कलिका, संघशक्ति वर्ष २ अंक ११ नवम्बर १९७१ पृ. ३१—३३

पृ. ९६ गीत ६४ चांदसिंघ बालापौता कछवाहा—चांदसिह बालापोता कछवाहा। आमेर के राजा उदयकर्ण के पुत्र राव बाला वरवाड़ा के स्वामी के तृतीय नुत्र खीवकरण की संतान बालापोता कछवाहा कहलाती है। चांदसिंह विहारीदास का पौत्र था। चांदसिह ने मेवाड़ राज्य के चीरवा घाट स्थान पर वीरगति पाई थी। वह किस के विरुद्ध लड़ा कोई संकेत उपलब्ध नहीं हुआ।

पृ. ९७,९८ गीत ६५, ६६ राव करमसी जोधावत राठोड़—जोधपुर नरेश राव जोधा का पुत्र कर्मसिह राठौड़। राव कर्मसिह राठौड़ों से राठौड़ों की कर्मसोत शाखा का प्रचलन हुआ कर्मसिह ने जोधपुर और बीकानेर नरेशों को सहयोग कर नारनोल पर युद्ध लड़ा और अपने विरोधी पठानों को मार कर खेत रहा।

—राठौड़ों की ख्यात (डा. कल्याणसिह शेखावत संग्रह)

पृ. १०० गीत ६७ ठाकर उदैसिंघ करमसोत खींवसर—राठौड़ों की कर्मसोत शाखा के खींवसर ठिकाने का ठाकुर उदयसिंह। वह हरनाथसिंह का पुत्र था। उदयसिह ने महाराजा अजितसिंह जोधपुर की सेवा स्वीकार महाराजा के द्वारा लड़े गये युद्धों में भाग लिया था। वह अ ने समसामयिक सरदारों में वड़ा प्रतिष्ठित सरदार था।

—कर्मसिहोतों का काव्य संग्रह।

पृ. १०१ गीत ६८ प्रथीराज जैतावत—जोधपुर के राव रिड़मल के पुत्र अखैराज का चतुर्थ वंशधर पृथ्वीराज जैतावत। वह मारवाड़ के बगड़ी ठिकाने वालों का पूर्वज था। पृथ्वीराज के पिता जैता ने राव मालदेव के पक्ष में गिररी समेल के युद्ध में बादशाह शेरशाह से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की थी। पृथ्वीराज ने भी अपने पिता राव जैता का अनुसरण करते हुए जोधपुर के राव मालदेव की सहायता की थी। वि. संवत् १६१० में राव मालदेव ने मेड़ता के राव वीरमदेव के पुत्र राव जयमल मेड़तिया पर चढ़ाई की तब राव पृथ्वीराज ने जयमल की सेना से युद्ध किया और जूझते हुए रण

खेत रहा। गीत में पृथ्वीराज की युद्ध मृत्यु पर कवि ने गीतनायक को पर कुल परम्परा का स्मरण करवा कर उसके परिवार वालों को सान्त्वना दी है। और युद्ध में प्राप्त मृत्यु के गौरव की सराहना की है।

—मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृ. १३४–१३५।

पृ. १०२ गीत ६९ नारायण धनराजोत राठौड़—धनराज का पुत्र नारायणदास राठौड़। नारायणदास सिवाणा स्थान पर मुगल सेना से लड़ कर मारा गया था। संभवतः राजा चन्द्रसेन जोधपुर के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना से वह लड़ता हुआ मारा गया था। वि. सं. १६३० में बादशाह अकबर ने सिवाना पर बीकानेर के राव रायसिंह, केशवदास मेड़तिया (सवलपुर–कंवलाद वालों का पूर्वज) और शाहकुलीखाँ को भेजा था। संभवतः नारायणदास कथित युद्ध में ही मारा गया था।

—मारवाड़ का इतिहास प्र. भा. पृ. १५२–१५३

पृ. १०३ गी ७० फहीम राड़दड़े रौ धणी—मारवाड़ के राड़दड़े संस्थान का शासक फहीम राठौड़। वह मंडौर के राव रिड़मल के वंशज पुञ्जराज का पुत्र था। गीतनायक का अन्य वृत्तान्त अप्राप्य है। किन्तु गीत लेखिका पदमा सांदुवण के समय के आधार पर युद्ध काल वि. सं. १६३४ के आसपास ठहरता है।

पृ. १०५ गीत ७१ गोकलदास मानावत राठौड़—मानसिंह राठौड़ का पुत्र गोकुलदास राठौड़। नागौर के राव अमरसिंह के बक्षी सलावतखां को कटार से मार कर मारे जाने पर मानसिंह ने अपने अन्य तेरह साथियों सहित शाही गुर्जबरधारों तथा सेवकों पर हमला किया और मलूकचंद आदि को मार कर वह भी अपने साथियों सहित मारा गया था।

पृ. १०६ गीत ७२ साहबसिंघ राठौड़—गोपालदास के वंशज साहबसिंह राठौड़। गीत-नायक का अन्य परिचय प्राप्य नहीं है।

पृ. १०७-१०८ गीत ७३, ७४ महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़—मारवाड़ राज्य के राजा गजसिंह के द्वितीय पुत्र तथा नागौर के राव अमरसिंह के बड़े भाई महाराजा जसवंतसिंह राठौड़। महाराजा जसवंतसिंह का माघ कृष्णा ४ संवत् १६८३ वि. में दक्षिण प्रान्त के बुरहानपुर में जन्म हुआ और राजा गजसिंह के निधनोपरान्त सं. १६९५ जेठ सुदी ३ को मारवाड़ का स्वामित्व प्राप्त हुआ। महाराजा जसवंतसिंह को बादशाह शाहजहाँ ने पाँच हजार जात पाँच हजार सवारों का मन्सब प्रदान किया था। वह शाही सेना में रहकर युद्ध अभियानों में भाग लेता रहा। संवत १७१५ वि. में शाहजादे मुराद और औरंगजेब के विद्रोह करने पर उन्हें दबाने के लिए इनके प्रधान सेना नायकत्व में शाही सेना भेजी गई थी। उस समय उनके साथ कोटा का हाडा

नरेश मुकुन्दसिंह, रतलाम का राजा रतनसिंह, शाहपुरा का राजा सुजानसिंह सिसोदिया, खेलू मालू दक्षिणी, देवीसिंह बुन्देला प्रभृति अनेक हिन्दू मन्सबदार भेजे गए थे। उक्त युद्ध में शाही सेना पराजित हुई थी और शाहजादे द्वय की विजय हुई थी। शाहजादे औरंगजेब ने जब मुराद और दाराशिकोह को मरवा तथा शाहजहाँ को वन्दी वनाकर सल्तनत पर अधिकार किया तब फिर उसने शाहजादा शुजा का दमन करना तय किया और मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा आमेर के द्वारा महाराजा जसवंतसिंह को अपने पक्ष में किया। औरंगजेब ने भी जसवंतसिंह को मन्सब प्रदान कर सम्मानित किया। किन्तु, बादशाह और जसवंतसिंह के आन्तरिक विरोध वना रहा। अन्त में महाराजा का वि. सं. १७३५ में जमरूद स्थान पर देहावसान हो जाने पर औरंगजेब ने मारवाड़ राज्य को जब्त कर महाराजा के नवजात पुत्र अजितसिंह को समाप्त कर उनके परिवार से बदला लेना चाहा। किन्तु स्वामी भक्त राठौड़ दुर्गादास और उनके सहयोगियों के कारण औरंगजेब अपना दुषित इरादा पूर्ण नहीं कर सका। जसवंतसिंह जैसा वीर और निर्भीक था उसी के अनुरूप स्वयं साहित्य, इतिहास एवं दर्शन का भी मर्मी विद्वान् था। गीतों में जसवंतसिंह द्वारा छत्रपति शिवा सीसोदिया का दमन करने तथा उनकी मृत्यु पर धर्म की हानि होने आदि का वर्णन है।

—मारवाड़ का इतिहस रेऊ भा. १ पृ. २१९–२४३।

पृ. १०९-१११ गीत ७५-७६ महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ जोधपुर–जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा अजितसिंह राठौड़। महाराजा जसवंतसिंह की जमरूद में मृत्यु होने पर संवत् १७३५ चैत्र कृष्णा ४ को महारानी जादमन की कुक्षि से अजितसिंह का जन्म हुआ। बादशाह औरंगजेब ने अजितसिंह और इनके अनुज दलथंभन को वंदी बनाना चाहा, किन्तु दुर्गादास राठौड़, भारमल उदावत डेह, रघुनाथसिंह भाटी लवेरा, उदयभान भाटी खेजड़ला आदि तीन सौ स्वामिभक्त सरदारों ने दिल्ली में शाही सेना का मुकाबिला किया और अजितसिंह व दलथंभन को मोहकमसिंह चाँदावत बलूंदा की ठकुरानी के साथ गुप्त रूप से दिल्ली से मारवाड़ के लिए निकाल दिया। इनकी सुरक्षा के लिए मुकुददास खीची आदि सरदार भी दिल्ली से साथ हो गए। तब फिर अजितसिंह को कुछदिनों तक तो बलूंदा में रक्खा गया और फिर सिरोही के समीपस्थ सिवाना के छप्पन के पहाड़ों में महाराजा अजितसिंह का पालन-पोषण किया गया। दुर्गादाश ने महाराना राजसिंह उदयपुर का सहयोग प्राप्त किया और बादशाह औरंगजेब के शाहजादे अकबर को विद्रोह बना कर अपने पक्षमें बना लिया। तदन्तर औरंगजेब का बालक महाराजा अजितसिंह तथा मारवाड़ की ओर से ध्यान हटाने के लिए अकबर को दक्षिण में मरहठों के पास ले गया। पीछे मारवाड़ में मोहकमसिंह मेड़तिया तोसीना, सोनग चांपावत, अजबसिंह चांपावत, राजसिंह मेड़तिया आलनियावास आदि राठौड़ वीरों ने जोधपुर,

पुष्कर, देसूरी, डीगराना, महेवा, सोजत आदि स्थानों के युद्धों में अपने प्राणों की बलि देकर मारवाड़ में शाही सैनिकों को मारते रहे। औरंगजेब के निधनोपरान्त महाराजा अजितसिंह ने मेवाड़ के महाराना और आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह की सहायता से मारवाड़ पर अधिकार स्थापित किया। तदनन्तर अजितसिंह ने सैयद भाइयों से साँठ–गाँठ कर बादशाह फर्रुखशियर को मरवा कर प्रतिशोध लिया। ये एक ओर जहाँ विद्वान्, वीर, हिन्दू धर्म में दृढ़ आस्था रखने वाले धार्मिक राजा थे वहाँ दूसरी ओर कृतघ्न और क्रूर भी कम नहीं थे। वयस्क होने पर इन्होंने दुर्गादास जैसे अपने उद्धारक को निर्वासित किया। अपने भाई दलथंमन को दक्षिण में छल से मरवाया। राव अमरसिंह के वंशज और अपने निकटस्थ सगोत्रीय मोहकमसिंह को दिल्ली में और मोहनसिंह को कासली (शेखावाटी) में विश्वासघात कर मरवाया। अन्त में संवत् १७८१ वि. में जेष्ठ राजकुमार अभयसिंह के संकेत से जोधपुर के किले में इनके द्वितीय पुत्र वख्तसिंह ने इन्हें रात्रि में निद्रावस्था में मार डाला।

—मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृ. २४८. अजितविलास,
मारवाड़ का इतिहास द्वितीय भाग पृ. ६६६–६६९।

पृ. ११२ गीत ७७ महाराजा अभैसिंघ राठौड़ जोधपुर—जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का जेष्ठ पुत्र और शासनाधिकारी महाराजा अभयसिंह जोधपुर। वह महाराजा अजितसिंह के निधन के पश्चात् सं. १७८१ श्रावण शुक्ला ८ को राजगद्दी का अधिकारी बना। फिर नवाव सर बुलंदखाँ के साथ हामिदखाँ और अन्य विद्रोही दक्षिणियों का दमन करने पर नियत हुआ। फिर उसने अपने अनुज रायसिंह एवं आनन्दसिंह को मारवाड़ से निकाला और राव इन्द्रसिंह से नागौर छीन कर अपने भाई वख्तसिंह को राजाधिराज की उपाधि सहित प्रदान की। जब वि. सं. १७८७ में दक्षिण में गुजरात के राज्यपाल सर बुलंदखाँ ने विद्रोह कर अपने को स्वतंत्र शासक घोषित किया तब उसको दण्डित कर अधिकार च्युत करने के लिए महाराजा अभयसिंह को नियत किया गया। अभयसिंह ने अपने भाई राजाधिराज वख्तसिंह, ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया रियां, ठाकुर जालिमसिंह मेड़तिया कुचामन और ठाकुर कुशलसिंह चाँपावत आउवा प्रभृति मारवाड़ के योद्धाओं सहित अहमदाबाद पर आक्रमण किया और नवाब सर बिलंदखाँ को समझौतो कर गुजरात से चले जाने के लिए वाधित कर दिया। अन्त में सर बिलंदखाँ ने नींबाज ठाकुर अमरसिंह उदावत की मध्मस्थता से अहमदाबाद त्याग कर प्रतापगढ़ में कुछ समय तक शरण ली। अभयसिंह ने अहमदाबाद पर अधिकार कर वहाँ भंडारी रत्नसिंह को अपना नायब नियुक्त कर वहाँ की व्यवस्था की। अभयसिंह ने बाजीराव पेशवा से मिलकर बड़ौदा पर अधिकार करना चाहा किन्तु परिस्थिति वश वह इसमें सफल न हो सका। सं. १७९९ वि. में अभयसिंह ने बीकानेर पर घेरा डाल कर बीकानेर को

हड़पना चाहा। बीकानेर महाराजा जोरावरसिंह ने जयपुर के कछवाहे महाराजा सवाई जयसिंह से सहायता की प्रार्थना की। सवाई जयसिंह ने अभयसिंह के विरुद्ध जोधपुर पर चढ़ाई करदी तब वह बीकानेर से भाग कर जोधपुर लौटा और जयपुर महाराजा से समझौता किया। संवत् १८०६ आषाढ़ शुक्ला १५ को महाराजा अभयसिंह का देहान्त हो गया। वह उदार, प्रजा पालक और विद्वान शासक था। इसके समय में डिंगल भाषा के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना हुई।

—मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृ. ३३१, ३३२, ३३३,
३५१, ३५७, राजरूपक ३६३।

पृ. ११४ गीत ७८ महाराजा बख्तसिंघ राठौड़ जोधपुर—महाराजा अजितसिंह के द्वितीय पुत्र और महाराजा अभयसिंह जोधपुर के लघु भ्राता बख्तसिंह। बख्तसिंह ने अपने पिता की महाराजा अभयसिंह के कहने पर हत्या की जिसके पुरस्कार में अभयसिंह ने उसको नागौर का राज्य और राजाधिराज की पदवी दी। उसने अहमदाबाद और बीकानेर के युद्धों में अपने भाई महाराजा अभयसिंह की सहायता की। तदनन्तर सं. १७९८ वि. में अजमेर के पास गगवाना स्थान पर महाराजा सवाई जयसिंह की विशाल सेना से लड़ा। उस सेना में जयपुर नरेश के अतिरिक्त बूंदी, शाहपुरा, किशनगढ़, भरतपुर, करौली, रामपुरा, शिवपुर बड़ौदा, सीकर और झुंझुनूं आदि २२ राजा राव जयपुर की सेना में थे। बख्तसिंह बड़ी वीरता से लड़ा किन्तु अन्त में पराजित हुआ। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद बख्तसिंह ने उसके पुत्र और अपने भतीजे महाराजा रामसिंह से जोधपुर छीन लिया। वह सं. १८०८ में जोधपुर की गद्दी पर बैठा और सं. १८०९ वि॰ में मर गया। बख्तसिंह दुधर्षवीर, विकट साहसी, निपुण न्यायी और स्वयं विद्वान् तथा विद्याप्रेमी शासक था।

—मारवाड़ का इतिहास प्र. भा. पृ. ३६७, ३६९ मारवाड़ रा
उमरावाँ रीं वात, उम्मेदसिंह सीसोदिया रा गीत पृ. ८३-८४
एनाल्स एण्ड ऐंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान भा. २ पृ. १८६७

पृ. ११६ गीत ७९ महाराजा राजसिंघ राठौड़ किसनगढ़—किशनगढ़ राज्य का शासक महाराजा राजसिंह राठौड़। वह महाराजा मानसिंह का पुत्र और रूपसिंह का पौत्र था। इसका जन्म सं. १७३१ में हुआ था। दिल्ली के सिंहासन के लिए मुअज्जम के निधन के बाद जब उसके शाहजादों में युद्ध हुआ तब राजसिंह ने अजीमुशान का पक्ष लिया। किन्तु अजीमुशान रावी नदी में डूब गया तब राजसिंह भी घर लौट गया। वह वीर और विद्यानुरागी शासक था। प्रसिद्ध कवि वृन्द उसका आश्रित और दरबारी

कवि था। राजसिंह स्वयं उत्तम कवि था। उसने 'बाहुविलास' और 'रसपाय' नामक दो काव्य ग्रंथों का ब्रजभाषा में प्रणयन किया था। बाहुविलास में श्रीकृष्ण रुक्मणी विवाह का वीररसपूर्ण वर्णन है। वह सं. १८०५ वि. में स्वर्गवासी हुआ।

—राजस्थान का पिंगल साहित्य पृ. १२७–१२९, बांकीदास री ख्यात पृ. ८३।

पृ. ११८ गीत ८० किसनगढ़ रा किला री द्रढ़ता—किशनगढ़ नगर में महाराजा राजसिंह राठौड़ के छोटे पुत्र महाराजा बहादुरसिंह ने अराई और किशनगढ़ के किलों का निर्माण किया था। वह प्रसिद्ध भक्त महाराजा सांवतसिंह का छोटा भाई था। महाराजा सवाई माधवसिंह जयपुर, महाराना अरिसिंह उदयपुर, महाराजा विजयसिंह जोधपुर एवं माधवराव सिंधिया से बहादुरसिंह की अच्छी मित्रता थी। वह जैसा वीर था उसी के अनुरूप दानी, विद्वान और संगीत का मर्मी शासक था। 'प्रतापसिंघ मोहकमसिंह हरिसिंघोत री वात' और राग रागिनियों के पद संग्रह के रूप में इनकी कृतियाँ उपलब्ध है। सं. १८३८ वि, में महाराजा बहादुरसिंह का परलोकवास हुआ।

—बांकीदास री ख्यात पृ. ८२।

पृ. १२० गीत ८१ राजा पदमसिंघ राठौड़ रतलाम—मालवा में राठौड़ों के राज्य रतलाम का शासक राजा पदमसिंह राठौड़। यह राज्य जोधपुर के राजा उदयसिंह के पौत्र राजा रत्नसिंह ने स्थापित किया था। पदमसिंह राजा पृथ्वीसिंह का पुत्र था। वह वि. सं. १८०० से १८३० तक रतलाम का शासक रहा। पदमसिंह तत्कालीन नरेशों में अपनी वदान्यता के लिए प्रसिद्ध था।

—मारवाड़ का इतिहास भां. २ पृ. ६८७।

पृ. १२२ गीत ८२ ठाकर जोरावरसिंघ राठौड़ गोठियाणा—किशनगढ़ के गोठियाने ठिकाने का स्वामी जोरावरसिंह राठौड़। जोरावरसिंह ने किशनगढ़ राज्य की ज्यातियों के विरुद्ध युद्ध लड़कर वीरगति प्राप्त की थी। राजस्थानी काव्य में जोरावरसिंह की वीरता से सम्बंधित दोहे, कवित्त और गीत मिलते हैं।

पृ. १२५ गीत ८३ प्रतापसिंघ राठौड़............—महाराजा तख्तसिंह के छोटे पुत्र और महाराजा जसवंतसिंह के लघु भ्राता महाराजा प्रतापसिंह राठौड़। प्रतापसिंह यद्यपि जोधपुर महाराजा के भ्राता थे किन्तु अपनी बुद्धि कौशल और कार्य दक्षता से गुजरात का ईडर राज्य प्राप्त कर वि. सं. १९५८ में वहां के महाराजा हो गए। अंग्रेजों के परम मित्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य और जोधपुर राज्य के अभिभावक के रूप में इन्होंने दीर्घकाल तक मारवाड़ का शासन सम्हाले रक्खा। महाराजा के अभिभावक के रूप में मारवाड़ में सेना व पुलिस का गठन किया तथा शिक्षा के क्षेत्र में महान् सेवाएँ कीं। महाराजा प्रतापसिंह बड़े निर्भीक योद्धा और आखेट प्रिय व्यक्ति थे। शूकर और सिंह की शिकारों का उन्हें बड़ा शौक था। सं. १९७८ में वे मृत्यु लोक गए।

—मारवाड़ का इतिहास भा. २ पृ. ४६८–४६९।

पृ. १२८ गीत ८४ ठाकर दुरगादास आसकरणोत राठौड़—आशकर्ण का पुत्र दुर्गादास राठौड़। वि. स. १६९५ द्वितीय श्रावण सुदि १४ को उसका जन्म हुआ था। दुर्गादास की माता के साथ आशकर्ण का प्रेम न्यून होने की वजह से उसका बाल्यकाल अपनी माता के संरक्षण में लूणवे ग्राम में वीता था। किन्तु दुर्गादास का भाग्योदय राज्यकीय टोले के रक्षक राईके को मारने पर हुआ। राईके को मारने के अपराध में वह महाराजा जसवंतसिंह के दरबार में बुलाया गया। जसवंतसिंह के पूछने पर उसने राईका द्वारा उनके प्रति कटु-वचन कहने के अपराध में उसे मारना सिद्ध हुआ। महाराजा जसवंतसिंह दुर्गादास की निर्भीक प्रकृति और साहसिकता पर बड़े प्रसन्न हुए। फिर तो जसवंतसिंह ने उसे अपनी सेवा में रक्ख लिया। दुर्गादास ने महाराज की सेवा में रहकर २० वर्ष की वय में वि. सं. १७१५ में उज्जैन में उत्तराधिकार के मुराद औरंगजेब के युद्ध में शाही पक्ष में रह कर उनके विरुद्ध भाग लिया। महाराजा जसवंतसिंह के सं. १७३५ वि. में जमरूद में मृत्यु हो जाने के वाद मारवाड़ की रक्षा का भार ग्रहण किया और शिशु महाराजा अजितसिंह की जीवन रक्षा कीं। वह अनवरत ४० वर्ष तक कभी जोधपुर, कभी मेवाड़ और कभी दक्षिण में औरंगजेब के विरुद्ध योजना बद्ध ढंग से लड़ता रहा। अन्त में औरंगजेब ने उसकी वीरता से परास्त होकर उसको पाटन (गुजरात) की फौजदारी और उच्चमन्सब व प्रदान किया। वि. सं. १७६३ में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् राठौड़ों ने मारवाड़ से शाही थानों को वलात् हटा दिए शाही सैनिकों को स्थान स्थान पर मार कर मारवाड़ पर अधिकार स्थापित किया। और महाराजा अजितसिंह को जोधपुर के राजसिंहासन पर अभिषिक्त किया था। इस दीर्घकालीन संघर्ष में दुर्गादास का प्रमुख हाथ रहा। वादशाह शाह आलम बहादुरशाह द्वारा मारवाड़ जप्त करने पर सांभर स्थान के युद्ध में उसने अजितसिंह की मदद की और पुनः मारवाड़ पर राठौड़ों का अधिकार स्थापित किया।

तदनन्तर जोधपुर के स्वार्थी सरदारों और राज्य कर्मचारियों के वहकाने पर अजित-सिंह और दुर्गादास के आपस में बनी नहीं। तब उसे मारवाड़ का परित्याग कर मेवाड़ में महाराना संग्रामसिंह द्वितीय के पास जाना पड़ा। महाराना सग्रामसिह और महाराना अमरसिह दूसरे ने उसे ससम्मान मेवाड़ में आश्रय दिया और उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप वदनौर आदि की जागीर दी। उस अवधि में वह रामपुरा का प्रशासक भी रहा। वहीं वि. सं. १७७५ मार्गशीर्ष सुदि ११ को उसका अस्सी वर्ष, तीन माह और अठ्ठाईस दिन की आयु में देहावसान हुआ। मालवा में क्षिप्रा के तट पर उसका अन्तिम संस्कार हुआ वहाँ उसकी स्वामिभक्ति, वीरता और परम साहसिकता की स्मृति का प्रतीक स्मारक बना हुआ है।

—अजित विलास, बांकीदास री ख्यात पृ. ५५–५६

Rathod Durgadas by Row.

पृ. १२६ गीत ८५ हाथीसिंघ चंपावत..................—राठौड़ों की चाँपावत खाँप के ठाकुर गोपालदास का पाँचवां पुत्र हाथीसिह चाँपावत। वह बीकानेर के महाराजा दलपतसिह को बादशाह जहाँगीर द्वारा अजमेर में बन्दी बनाए जाने मर दलपतसिह को मुक्त करवाने के लिए अपने तीन सौ साथियों सहित सं. १६७० वि. फाल्गुन वदि ११ को दलपतसिह सहित लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था। 'दासपाँ के इतिहास' में हाथीसिह की जन्म तिथि आसोज कृष्णा ११ सं. १६५१ वि० अंकित की हुई है जो गलत है।

—दलपत विलास भूमिका पृ. ११ दांसपा का इतिहास पृ. ३८.

पृ. १३१ गीत ८६ ठाकर सवाईसिंघ चांपावत पोहकरण—मारवाड़ के पोकरण ठिकाने का स्वामी ठाकुर सवाईसिह चाँपावत। वह ठाकुर सवलसिंह का पुत्र और देवीसिंह का पौत्र था। जोधपुर महाराजा भीमसिंह के निधन पर उनका उत्तराधिकार महाराजा मानसिंह ने ग्रहण किया। किन्तु भीमसिह की गर्भवती महारानी के उनकी मृत्यु के बाद उत्पन्न पुत्र धौंकलसिह को जोधपुर का वास्तविक दावेदार होने के कारण ठाकुर सवाईसिह ने महाराजा मानसिह के विरुद्ध धौंकलसिह का पक्ष लिया और मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह सम्बन्ध के मतभेद से रुष्ट महाराजा जगतसिह कछवाहा तथा टोंक के नबाब अमीरखाँ पिण्डारियों के मुखिया को अपने पक्ष में कर मानसिह पर आक्रमण कर दिया। परवतसर के निकटस्थ गींगोली स्थान पर जब दोनों पक्षों की सेना में मुकाबिला हुआ तब मारवाड़ के अधिकांश सरदार मानसिह के विरुद्ध जयपुर की सेना में जा मिले। महाराजा मानसिंह को विवश होकर रणभूमि से भाग कर जोधपुर के

किले का आश्रय पकड़ना पड़ा। अन्त में मानसिंह ने अमीरखाँ को लालच देकर गुप्त रूप से अपने पक्ष में बना लिया। और संवत् १८८५ चैत्र सुदि २ के दिन नागौर के मूंडवा ग्राम में शिविर में बारूद बिछवा कर छलाघात से अमीरखाँ ने सवाईसिंह और उसके साथी ठाकुर बख्शीराम चंडावल, ठाकुर ज्ञानसिंह पाली और ठाकुर केशरीसिंह बगड़ी को उनके एक हजार सैनिकों सहित मार डाला। सवाईसिंह अपने युग का प्रबल योद्धा, विदग्ध राजनीतिज्ञ और जबर्दस्त संगठनकर्त्ता था। उसके निधन से महाराजा मानसिंह और धौंकलसिंह का विरोध समाप्त हो गया।

—मारवाड़ का इतिहास द्वि. भा. पृ. ४१२-४१३, संघशक्ति मासिक वर्ष ३ अंक १२ पृ. १५–१६ दिसम्बर १९६२।

पृ. १३३ गीत ८७ ठाकर सरदारसिंच रतनसिंघोत—ठाकुर रतनसिंह का पुत्र ठाकुर सरदारसिंह राठौड़। सरदारसिंह ने संवत् १७९८ में महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर और राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के बीच लड़े गए युद्ध में राजाधिराज बख्तसिंह के पक्ष में भाग लिया था। उल्लिखित युद्ध में बख्तसिंह के पांच हजार सैनिकों में से केवल ६० वीर घायल होकर जीवित बचें थे। सरदारसिंह भी घायल होकर जीवित बच रहा था।

पृ. १३५ गीत ८८ ठाकर कलियाणदास जैमलोत राठौड़ बोरूंदा—ठाकुर कल्याणदास मेड़तिया राठौड़। वह मेड़ता के राव जयमल का सातवाँ पुत्र था। कल्याणदास ने शाही सेना के किसी बड़े अधिकारी को युद्ध में कटारी से मारा था। कल्याणदास पींसागन के स्वामी अक्षयराज पंवार के साथ हुए युद्ध में मारा गया था। उसका बदला लेने के लिए रतनसिंह राठौड़ ने अक्षयराज पर सेना सजा कर आक्रमण किया और रण स्थल में अक्षयराज को मार कर पींसागन पर अधिकार कर लिया था। कल्याणदासोत मेड़तियों के मारवाड़ में बोरूंदा, खोड़, फालणा और बरकाण आदि ठिकाने थे।

—रतनसिंघ दूदावत रा कवित्त, मारवाड़ रा जागीरदारां री वंशावली।

पृ. १३६ गीत ८९ कलियाणदास मेड़तिया— जगन्नाथ का वंशज कल्याणदास मेड़तिया राठौड़। कल्याणदास के ठिकाने तथा अन्य ऐतिहासिक परिचय प्राप्त नहीं है। संभवतः वह मेड़तिया गोयंददासोतों में किसी ठिकाने का ठाकुर था।

पृ. १३७ गीत ९० गिरधरदास केसोदासोत मेड़तिया बोरावड़—मारवाड़ के परवतसर प्रान्त के बोरावड़ ठिकाने वालों का पूर्वज गिरधरदास मेड़तिया। वह बादशाह

अकबर के मन्सबदार केशवदास का उत्तराधिकारी था। गिरधरदास ने युद्ध में शत्रुओं का संहार कर यश प्राप्त किया था। बादशाह ने उसे पहले पदमावती और फिर परबतसर पट्टे में दिया था। वह शाहजहाँ बादशाह के समय में संवत् १६८६ में खाँनजहाँ के विरुद्ध के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। गिरधरदास की संतति वालों के अधिकार में मारवाड़ के परवतसर परगने के बोरावड़, सबलपुर, बडू आदि ठिकाने थे।

—राठौड़ां री वंसावली, वांकीदास री ख्यात पृ. ६२।

पृ. १३६ गीत ६१ गदाधरदास गिरधरदासोत मेड़तिया सबलपुर—मारवाड़ में परवतसर परगने के मेड़तियों के सबलपुर ठिकाने वालों का पूर्वज गदाधरदास मेड़तिया। वह अकबर बादशाह के मन्सबदार केशवदास मेड़तिया का पौत्र और गिरधरदास का पुत्र था। गिरधरदास के साथ उसने किस युद्ध में वीरता दिखाई थी कोई अन्य आधार स्रोत नहीं मिला। वह युद्ध में घायल होकर जीवित रह गया था।

पृ १४१ गीत ६२ रघुनाथसिंघ मेड़तिया मारोठ—मारवाड़ के मारोठ भूभाग का अधिपति रघुनाथसिंह मेड़तिया राठौड़। वह श्यामलदास मेड़तिया का द्वितीय पुत्र था। रघुनाथसिंह शाहजादे औरंगजेब की सेना में शाही मन्सबदार था। उसने सं. १७१५ वि. में उज्जैन के युद्ध में औरंगजेब का साथ दिया था। औरंगजेब ने बादशाह बनने पर उसे ११२ ग्रामों से मारोठ का राज्य प्रदान कर सम्मानित किया। वह सर्व प्रथम वि. सं. १६८६ में शाही दरबार में गया था। मारोठ पर उसका संवत् १७१७ वि. में अधिकार हुआ। शाही सेवामें रहकर उसने आसाम, दक्षिण के युद्ध और शाहजादे शुजा के विरुद्ध के युद्धों में वीरता दिखाई थी। संवत् १७४० वि. में उसका मारोठ में निधन हुआ।

–ठिकाना कुचामन की ख्यात, रघुनाथसिंह मेड़तिया की झमाल,
राजस्थान पुरालेखा विभाग, बीकानेर का रेकार्ड्स्।

पृ. १४३ गीत ६३ सेरसिंघ कुसलसिंघ राठौड़—मारवाड़ के रियां ठिकाने का ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया और आऊवा ठिकाने का ठाकुर कुशलसिंह चांपावत राठौड़। शेरसिंह सरदारसिंह का और कुशलसिंह हरनाथसिंह का पुत्र था। इन दोनों वीरों ने महाराजा अभयसिंह की सेना में रह कर गुजरात के विद्रोही शाही राज्यपाल सर बुलंदखाँ हुए अहमदाबाद के सं. १७८७ के युद्ध में वीरत्व दिखाया था। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र महाराजा रामसिंह और अभयसिंह के अनुज

राजाधिराज वख्तसिंह के मध्य के आपसी युद्धों में शेरसिंह ने रामसिंह का तथा कुशलसिंह ने वख्तसिंह का साथ दिया था। अन्त में सं. १८०७ में दोनों ही वीरों ने अपार शौर्य का प्रदर्शन कर रण भूमि में एक दूसरे के शस्त्रों की मार से परम गति प्राप्त की थी। वह युद्ध मेड़ता के रणस्थल में लड़ा गया था।

—मारवाड़ रा उमरावां री वारता, ठिकाना कुचामन की ख्यात।

पृ. १४५ गीत ६४ ठाकुर सिवनाथसिंघ कुचामन—मारवाड़ के मारोठ परगने के कुचामन ठिकाने का ठाकुर शिवनाथसिंह मेड़तिया। वह ठाकुर सूरजमल्ल का पुत्र था। कुचामन ठिकाना रघुनाथसिंहोत मेड़तियों की जालमसिंहोत प्रशाखा का मुख्य ठिकाना था। कुचामन के सरदार सदैव जोधपुर के स्वामि भक्त सरदार रहे हैं।

—ठिकाना कुचामन की ख्यात, वांकीदास री ख्यात पृ. ६६।

पृ. १४६ गीत ६५ राव बाघसिंघ मेड़तिया मसूदा—अजमेर मेरवाड़ा के मसूदा संस्थान का स्वामी राव बाघसिंह मेड़तिया राठौड़। वह मेड़ता के राव वीरमदे दूदावत के नवें पुत्र जगमाल का पुत्र था। जगमाल से मेड़तियों की जगमालोत शाखा का प्रचलन हुआ।

—वांकीदास री ख्यात पृ. ६०।

पृ. १४८, १४९ गीत ६६, ६७ पहाड़सिंघ महेचा जसोल—मारवाड़ के मालानी परगने के महेचा राठोड़ों के जसोल संस्थान का स्वामी पहाड़सिंह। वह जसवंतसिंह का पौत्र तथा वैरीशाल का पुत्र था।

पृ. १५१ गीत ६८ चतरसिंघ बाला मोकलसर—मारवाड़ के जालौर भूभाग के मोकलसर का स्वामी चतुरसिंह बाला राठौड़। यह शाखा रिड़मल के पौत्र बालोजी से बाला (बालावत) कहलाई।

—वांकीदास री ख्यात पृ. ५७

पृ. १५२ गीत ६९ अमरसिंघ उदावत नींबाज—राठौड़ों की उदावत खाँप का अमरसिंह। वह ठाकुर कुशलसिंह का पुत्र था। संवत् १७७९ में महाराजा अजितसिंह ने अजमेर पर आक्रमण कर वहाँ के दीवान नाहरखाँ और उसके भाई रुहेलाखाँ को मार कर अमरसिंह को अजमेर का प्रबंधक नियुक्त किया था। अमरसिंह ने अजमेर के गढ़ बींटली को सुसज्जित का अजमेर पर महाराजा का अधिकार स्थापित किया। बादशाह

ने पुनः अजमेर को प्राप्त करने के लिए संवत् १७८० वि. में शरफुद्दौला इरादतमंदखाँ को ५०००० हजार सेना देकर विदा किया। उसके साथ आमेर नरेश सवाई जयसिंह को भी भेजा। ठाकुर अमरसिंह ने शाही सेना का बड़ी वीरता से मुकाबिला किया। कुछ दिनों तक युद्ध होते रहने के बाद महाराजा जयसिंह कछवाहा ने महाराजा अजितसिंह को समझा कर अजमेर का अधिकार त्यागने के लिए राजी कर लिया। और बादशाह से संधि करवादी। गीत में अमरसिंह के साहस और वीरता का वर्णन है।

—वांकीदास री ख्यात पृ. ६८, मारवाड़ का इतिहास प्र. भा. ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, अजितविलास.

पृ. १५३,१५५ गीत १००, १०१ ठाकर सुरताणसिंघ उदावत नींबाज—उदावत राठौड़ों के नींवाज ठिकाने का ठाकुर सुरतानसिंह। वह महाराजा मानसिंह जोधपुर का समकालीन सरदार था। महाराजा मानसिंह ने अपने कुटिलमति परामर्शकों के बहकाने पर सं. १८७७ द्वितीय जेष्ठ सुदि १३ को सुरतानसिंह की जोधपुर स्थित नींवाज की हवेली पर आक्रमण किया। सुरतानसिंह ने अपने भाई शूरसिंह सहित जोधपुर की सेना का वीरता पूर्वक सामना किया और हवेली से वाहर निकल कर अपने कतिपय वीरों सहित जूझता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। वह स्वामिभक्त सरदार था।

—मारवाड़ का इतिहास प्र. भा. पृ. ४२३।

पृ. १५६ गीत १०२ ठाकुर सुरतानसिंघ उदावत री ठकुराणी—नींवाज के ठाकुर सुरतानसिंह उदावत की ठकुरानी। ठाकुर सुरतानसिंह पर सं. १८७७ वि. में फौजराज के नायकत्व पर भेजी गई जोधपुर की सेना से लड़कर मारे जाने पर उनकी धर्मपत्नि चहुवानजी ने सती धर्म का पालन कर देह त्याग किया था। वह ठाकुर दुर्जनसिंह चहुवान की पुत्री थी।

पृ. १६१ गीत १०३ ठाकर रूपसिंघ उदावत रायपुर—उदावतों के रायपुर ठिकाने का ठाकुर रूपसिंह उदावत। जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह के संकेत पर टोंक वालों के पूर्वज नवाब अमीरखाँ ने रायपुर पर घेरा डाला। ठाकुर रूपसिंह ने वीरता पूर्वक शत्रु का सामना करते हुए रायपुर की रक्षा की। नवाब अमीरखाँ रायपुर को विजय नहीं कर सका और हताश होकर घेरा उठा कर चला गया।

—वांकीदास आशिया कृत ठाकर रूपसिंघ री झमाल।

पृ. १६२ गीत १०४ राउत भीमा रताउत सेतरावा—मारवाड़ के शेरगढ़ परगने के सेत्रावा ठिकाने का अधिपति रतनसिंह का पुत्र भीमसिंह। रावत भीमसिंह ने मोकल और अचलदास को युद्ध में मार कर सेत्रावा पर विजय प्राप्त की थी। ख्यातों में इसका कोई वृत्तान्त प्राप्त नहीं है।

पृ. १६३ गीत १०५ कचरा राठौड़—कचरा (कल्याणदास) राठौड़। गीतनायक ठाकुर जसवंतसिंह का पुत्र और कर्णसिंह का पौत्र था। उसने दिल्ली में शाही सेना से लड़ कर वीरगति प्राप्त की थी। किन्तु वह किस के विरुद्ध कब और क्यों लड़ा कोई व्यौरा प्राप्त नहीं होता। संभवतः कल्याणदास दुर्गादास के सहयोगियों में था और महाराजा अजितसिंह के बाल्यकाल के युद्धों में लड़ा होगा।

पृ. १६४ गीत १०६ सुन्दरदास गोगोद राठौड़ तेना—मारवाड़ के शेरगढ़ भूभाग के तेना ठिकाने का स्वामी सुन्दरदास गोगादे राठौड़। वह राव वीरमदेव सलखावत के पुत्र गोगादेव राठौड़ की संतति परम्परा में हुआ है। सुन्दरदास के पिता का नाम ठाकुर रामसिंह और पितामह का खेता अथवा क्षेत्र सिंह था। विशेष विवरण अनुपलब्ध है।

पृ. १६५ गीत १०७ रावल पूंजा गहलोत डूंगरपुर—राजस्थान के डूंगरपुर राज्य का शासक महारावल पुञ्जराज गहलोत। वह महारावल कर्मसिंह का उत्तराधिकारी था। पुञ्जराज सं. १५६६ में गद्दीनशीन हुआ और सं. १७१३ तक ४५ वर्ष शासन करता रहा। शाहजादा खुर्रम के साथ उसकी घनिष्ठ मित्रता थी। खुर्रम जब शाहजहाँ के नाम से बादशाह बना तब पुंजराज ने शाही मन्सब प्राप्त कर और भी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

—राजपूताने का इतिहास पहला भा. पृ. ४११–४१२

पृ. १०८ गीत १०८ आना गहलौत—आनन्दसिंह अथवा अनोपसिंह गहलोत। गीत नायक का अन्य परिचय उपलब्ध नहीं हुआ।

पृ. १६८ गीत १०९ बिहारीदास गहलोत—बिहारीदास गहलोत। वह प्रतापसिंह का पुत्र और रावत कुशलसिंह का सेनानायक था। कुशलसिंह के राज्य पर शत्रुओं के आक्रमण करने पर उसने दुर्ग के बाहर निकल कर लड़ाई की और शत्रुओं का संहार कर वीरगति प्राप्त की। विशेष विवरण प्राप्त नहीं हुआ।

पृ. १६९ गीत ११० अचलसिंघ राणावत—सीशोदियों की राणावत शाखा का अचलसिंह। वह अजबसिंह राणावत का पुत्र अथवा वंशधर था।

पृ. १७० गीत १११ सूरतसिंघ सगतावत–रावत विक्रमसिंह का तृतीय भाई सूरतसिंह। सूरतसिंह ने अपने भ्राता रावत विक्रमसिंह और रावत महासिंह सहित शाही सेना नायक रणबाजखां मेवाती की सेना पर आक्रमण किया था। रणबाजखाँ और उसका भाई नाहरखाँ खारी के किनारे के उक्त युद्ध में काम आए। रावत महासिंह और दौलतसिंह भी रणखेत रहे। राठौड़ जयसिंह बदनौर, सामंतसिंह चूंडावत, महासिंह का पुत्र नाहर-सिंह और सूरतसिंह घायल हुए। महाराना संग्रामसिंह द्वितीय ने महासिंह की सेवाओं से प्रसन्न होकर उसके पुत्र को कानौड़ और सूरतसिंह को रावत की पदवी और बाठरड़ा का ठिकाना तथा चूंडावत सामंतसिंह को बम्बोरा की जागीर प्रदान की।

—मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पुरोहित पृ. १३०–१३१

पृ. १७२ गीत ११२ राजा भारतसिंघ सीसोदिया साहपुरा—शाहपुरा राज्य के राजा भारतसिंह सीशोदिया। भारतसिंह ने शाहपुरा को गद्दी प्राप्त कर दक्षिण में बादशाह औरंगजेब के पास अपनी उपस्थिति दर्ज की। और फिर दक्षिण के युद्धों में शाही सेवा में रह कर बराबर भाग लेता रहा। वसंतगढ़ विजय पर बादशाह ने भारतसिंह को राजा की उपाधि से सम्मानित किया। रणबाजखाँ मेवाती की मेवाड़ की चढ़ाई के समय भारतसिंह ने मेवाड़ का पक्ष लेकर महाराना संग्रामसिंह द्वितीय की सहायता की। इस सहायता के उपलक्ष्य में महाराना ने मेवाड़ का काछोला प्रान्त प्रदान किया। उसी अवसर पर महाराना ने कंवला, गीरोट, और बदनौर इलाका भी दिया था। तदुपरान्त संवत् १७८६ वि.में उक्त महाराना ने पुनः ८६ हजार वार्षिक आय का जहाजपुर का परगना भी बख्शा। वृद्धावस्था में जेष्ठ राजकुमार उम्मेदसिंह ने भारतसिंह को नजर बंद कर राज्याधिकार छीन लिया था। संवत् १७८६ में इनका शाहपुरा में देहावसान हो गया।

—शाहपुरा राज्य की ख्यात हस्तलिखित भा. १

पृ. १७४ गीत ११३ राजा उम्मेदसिंघ सीसोदिया साहपुरा—राजा भारतसिंह का पुत्र राजा उम्मेदसिंह सीशोदिया शाहपुरा। उम्मेदसिंह का जन्म सोमवार कार्तिक सुदि ७ संवत् १७५५ वि. में हुआ था। और सन् १७२७ ई. में उसने अपने पिता को अधि-कार च्युत कर शाहपुरा का शासन अपने हाथ में लिया था। किन्तु ३१ दिसम्बर १७२६ ई. में भारतसिंह की मृत्यु के उपरान्त ही वह शाहपुरा की गद्दी पर बैठा था। वह कौमार्य काल से ही युद्ध में भाग लेता रहा था। सन् १७२३ ई. में जोधपुर के महाराजा अजितसिंह के विरुद्ध जब शाही सेना अजमेर पर भेजी गई तब उम्मेदसिंह ने शाहपुरा की सेना का नेतृत्व किया था। संवत् १७९८ वि. के महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर और राजाधिराज बख्तसिंह के मध्यम हुए गगवाना के युद्ध में उम्मेदसिंह ने जयपुर के पक्ष में युद्ध में भाग

लिया था। सन् १७४४ ई. में रावराजा बुद्धसिंह हाडा बूंदी के पुत्र उम्मेदसिंह का बूंदी पर अधिकार करवाने के युद्ध में वह उम्मेदसिंह की ओर से लड़ा था। मार्च १–२ सन् १७४७ ई. के राजमहल तथा अगस्त १–६ सन् १७४८ के बगरू के युद्ध में जो कि महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह को पदच्युत कर महाराना जगतसिंह के भानजे महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथम को जयपुर की गद्दी दिलवाने के लिए किए गए युद्ध में वह महाराना की सेना में रह कर माधवसिंह के पक्ष में लड़ा था। तदनन्तर वह मरहठों के मेवाड़ पर किए गए आक्रमणों में मेवाड़ का सशक्त पक्षधर बना रहा और महाराना अरिसिंह द्वितीय की ओर से १६ जनवरी १७६६ ई. में उज्जैन में ग्वालियर वालों के पूर्वज महादाजी सिंधिया की पैंतीस हजार प्रबल सेना को एक बार पराजित करने के बाद जयपुर की पन्द्रह हजार नागा (योद्धा साधुओं) की सेना से लड़ कर वीरगति को प्राप्त हुआ।

राजा उम्मेदसिंह कालीन राजस्थान और उसकी ऐतिहासिक
आधार सामग्री लेख परम्परा भाग २३ पृ. ६४ से ११६.

पृ. १७६ गीत ११४ रावत मोहकमसिंघ देवलिया—देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत प्रतापसिंह का अनुज और महारावत हरिसिंह का द्वितीय पुत्र रावत मोहकमसिंह। रावत मोहकमसिंह ने प्रतापगढ़ के राज्य में दस्यु कर्मी भीलों का दमन किया और बादशाह के विद्रोही तथा पदच्युत राज्यपाल सर बुलंदखाँ गुजरात को अपनी शरण में रक्खा था।

—रावत मोहकमसिंघ हरीसिंघोत री वारता

पृ. १७६, १८२ गीत ११५, ११६ महाराणा भीमसिंघ—महाराना भीमसिंह सीशोदिया उदयपुर। वह महाराना अरिसिंह तृतीय के द्वितीय पुत्र थे। वह अपने बड़े भाई महाराना हम्मीरसिंह दूसरे के निधन के बाद १८३४ पौष सुदि ८ को उदयपुर की गद्दी पर बैठा था। उसके शासन काल में मरहठों तथा चूंडावतों शक्तावतों के आपसी वैमनस्य के कारण विग्रह एवं अशान्ति रही। इसके समय में राजकुमारी कृष्णाकुमारी वाग्दान के प्रश्न को लेकर जयपुर व जोधपुर के राजाओं में लड़ाइयाँ होती रही और आपसी विरोध के कारण मरहठों और अमीरखाँ पिण्डारी के अत्याचारों का शिकार मेवाड़ को भी होना पड़ा। अन्त में अंग्रेज कम्पनी शासन से समझौता होने पर कहीं जाकर राजस्थान में शान्ति हुई। सं. १८८५ चैत्र सुदि १४ को इनका देहांत हो गया। भीमसिंह उदार और विद्याप्रेमी शासक था।

—मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास पृ. १५१–१६६ भीमप्रकास हस्तलिखित।

पृ. १८६ गीत ११७ महाराणा संभुसिंघ—महाराना शंभुसिंह उदयपुर। महाराना स्वरूपसिंह के नि:संतान स्वर्गवासी होने पर वह वागोर ठिकाने से गोद आकर सं. १९१८ वि. में उदयपुर की गद्दी नशीन हुआ और सं. १९३१ वि. में मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

—मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास पृ. १७८–१८२

पृ. १८९ गीत ११८ महाराणा स्वरूपसिंघ—महाराना स्वरूपसिंह उदयपुर। स्वरूपसिंह महाराना सरदारसिंह का छोटा भाई था। सरदारसिंह के नाऔलाद देहावसान हो जाने पर वह वि. सं. १८९९ वि. में गद्दी बैठा था। स्वरूपसिंह के गद्दी पर बैठने पर मेवाड़ के जागीरदारों के सेवा नियम तथा अधिकार आदि की व्यवस्था की और राज्य संचालन व्यवस्था में सुधार किया। वह सं. १९१८ में मर गया।

—मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास पृ.१७३–१७८

पृ. १९१ गीत ११९ रावत पहाड़सिंघ चूंडावत सलूम्बर—मेवाड़ के सलूम्बर ठिकाने का स्वामी रावत पहाड़सिंह चूंडावत। वह महाराना अरिसिंह तृतीय के पक्ष में सं. १८२५ वि. में उज्जैन में महादाजी सिंधिया की सेना से वीरता पूर्वक लड़ता हुआ मारा गया था। वह रावत जोधसिह का पुत्र था। और संवत् १८२१ में सलूम्बर की गद्दी पर बैठा था।

—शाहपुरा राज्य की ख्यात.

पृ. १९९ गीत १२० रावत हमीरसिंघ भदेसर—मेवाड़ के भदेसर ठिकाने का रावत हम्मीरसिंह चूंडावत। वह रावत भैरोंसिंह का पुत्र था। महाराना भीमसिंह समय में अमीरखाँ पठान ने भदेसर छीन कर निम्बाहेड़ा में मिला लिया तब हमीरसिंह ने आक्रमण कर भदेसर से मुसलमानों को निकाल कर अपना अधिकार स्थापित किया। हम्मीरसिंह ने मरहठों के विरुद्ध के युद्धों में भी भाग लिया था।

पृ. २०० गीत १२१ रावत प्रतापसिंघ चूंडावत आमेट—मेवाड़ के आमेट ठिकाने का स्वामी रावत प्रतापसिंह चूंडावत। वह रावत फतहसिंह का उत्तराधिकारी था। महाराना अरिसिंह और फितूरी नाम से प्रसिद्ध महाराना रतनसिंह के समर्थक नागाओं के युद्ध में प्रतापसिंह ने महाराना का पक्ष लिया था। गणेशपंत के साथ की लकवा की लड़ाइयों में वह लकवा का पक्षधर होकर लड़ा था।

—राजपूताने का इतिहास ओझा जिल्द दूसरी पृ १२०९–१२११

पृ. २०५ गीत १२२ महाराज सगतसिंघ सगतावत सांवर—अजमेर मेरवाड़ा के सांवर संस्थान का स्वामी महाराज शक्तिसिंह शक्तावन। वह महाराना प्रतापसिंह के अनुज महाराज. शक्तिसिंह के वंशधर गोकुलदास भाणावत की संतति परम्परा में था।

शक्तिसिंह ने मल्हारराव होल्कर की सेना से लड़ाई लड़ी थी। और होल्कर की सेना को परास्त कर कीर्ति अर्जित की।

पृ. २०६ गीत १२३ ठाकर राजसिंघ संखवास—जोधपुर की नागौर पट्टी के संखवास ठिकाने का ठाकुर राजसिंह चौहान। वह ठाकुर अजबसिंह का जेष्ठ पुत्र और महाराजा विजयसिंह जोधपुर का विश्वस्त सामन्त था। राजसिंह ने जयअप्पा सिंधिया द्वारा संवत् १८११ वि. में महाराजा रामसिंह (पदच्युत) के पक्ष में महाराजा विजयसिंह पर आक्रमण करने पर मेड़ता के युद्ध में भाग लिया था। मेड़ता के युद्ध में विजयसिंह के पराजित होकर नागौर में शरण लेने पर जयअप्पा और रामसिंह की सेना ने नागौर को जा घेरा और नागौर दुर्ग पर अधिकार कर लिया। तब उदयपुर महाराना राजसिंह द्वितीय ने विजयसिंह और जयअप्पा के मध्य समझौता करवाने के लिए रावत जैतसिंह सलूम्बर को भेजा था। किन्तु विजयसिंह ने केशरीसिंह खोखर और उसके एक साथी द्वारा जयअप्पा को छल से नागोर में मरवा डाला। इस घटना से उत्तेजित होकर जयअप्पा के भाई दत्ताजी ने समझौते के लिए वहाँ ठहरे हुए रावत जैतसिह, विजय भारती और जोधपुर के सांमतों पर आक्रमण किया। विजयसिंह के पक्ष के दो हजार सैनिक वहाँ उपस्थित थे। उसी युद्ध में रावत जैत्रसिह, विजयभारती और ठाकुर राजसिंह जूझते हुए मारे गए ये। तदनन्तर विजयसिंह को दत्ता मरहठा को क्षति स्वरूप ५० लाख नकद रुपये तथा अजमेर व जालोर का प्रान्त देना पड़ा।

—मुगलकालीन भारत पृ. १६५–१६६, विजयविलास हस्तलिखित छंद ४३२, कीरत प्रकास हस्तलिखित।

पृ. २१०, २१२ गीत १२४–१२५ कंवर सेरसिंघ चुवांण संखवास—मारवाड़ के नागोर पट्टी के चौहानों के ठिकाने संखवास का स्वामी कुंवर शेरसिह चौहान। वह ठाकुर शंभुदानसिह का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। शेरसिह ने महाराजा भीमसिंह की ओर से वि. सं. १८५० में झांवर स्थान के युद्ध में भाग लिया था और महाराजा विजयसिंह की सेना से लड़ाई की थी। वह युद्ध शेख पठान के विपक्षी नेतृत्व में लड़ा गया था। सूरजमल्ल मेड़तिया कुचामन, हरिसिंह कूंपावत चण्डावल आदि महाराजा भीमसिह के पक्ष के अनेक सरदार काम आए थे। शेरसिह और उसका अनुज धीरसिह घायल होकर बच रहे थे।

—मारवाड़ का इतिहास प्र. भा. पृ. ३६१–३६२, कीरत प्रकास।

पृ. २१३ गीत १२६ रावत जोधसिंघ चौहाण कोठारिया—रावत मोहकमसिंह का पुत्र रावत जोधसिंह चौहान कोठारिया। रावत जोधसिंह ने सं. १८५७ के प्रथम भारतीय

स्वातंत्र्य संग्राम में विद्रोहियों का साथ दिया था। मारवाड़ के आउवा ठिकाने के ठाकुर कुशालसिंह को अपने वहाँ ठहराने तथा सहायता करने में उसने अंग्रेजों का तनिक भी भय नहीं माना।

—राजपूताने का इतिहास दूसरी जिल्द ओझा पृ. ११८६,
मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास पृ. १७५।

पृ. २१५ गीत १२७ **सूरजमल चौहाण मुडैटी**—गुजरात के ईडर राज्य के मुडैटी ठिकाने का ठाकुर सूरजमल्ल चौहान। वह ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र था। सूरजमल्ल ने ईडर के महाराजा केशरीसिंह के निधन पर अंग्रेजों के सती प्रथा कानून का उल्लंघन करते हुए महाराजा की महारानियों को सती करवा कर उनकी इच्छा पूर्ण की थी। उक्त लड़ाई में उसके कतिपय सैनिक मारे गए थे।

—वीर चरित्र माला पृ. १४०–१४१।

पृ. २१८ गीत १२८ **राव भोज हाडा बूंदी**—राजस्थान के बूंदी राज्य का शासक राव भोज हाडा। वह राव सुर्जन हाडा का जेष्ठ पुत्र था। भोज संवत् १६४२ वि. में बूंदी की गद्दी पर बैठा था। बादशाह अकबर की गुजरात की चढ़ाई के समय वह अपने भाई दुर्जनशाल सहित साथ था। भोज ने शत्रु सेनापति को द्वन्द्व युद्ध में मारा था। अहमदनगर के घेरे में भी उसने वीरता दिखाई थी। तदनन्तर उड़ीसा के युद्ध में भी शाही सेना के साथ रह कर लड़ाई की थी। वह सं. १६६४ वि. में बूंदी के राजमहल से गिर कर मर गया।

—मआसिरुल् उमरा पृ. २७३–२७४।

पृ. २१६ गीत १२६ **महाराव राजा भावसिंघ हाडा बूंदी**—बूंदी का शासक महाराव राज। भावसिंह हाडा। वह महाराव राजा शत्रुशाल का जेष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी था। भावसिंह अपने पिता महाराव शत्रुशाल के सं. १७१५ वि. के शामूगढ़ के युद्ध में मारे जाने पर बूंदी की गद्दी पर बैठा था। तदनन्तर वह बादशाह औरगजेब द्वारा तीन हजारी दो हजार सवारों का मन्सब पाकर सम्मानित हुआ। भावसिंह ने शाही सेवा में रह कर शाहजादा शुजा तथा छत्रपति शिवाजी मरहठा का दमन करने के लिए भेजे गए महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ तथा महाराजा मिर्जा राजा जयसिंह के साथ नियुक्त होकर दक्षिण की लड़ाइयों में लड़ा था। वह चांदा के राजा के विरुद्ध भी लड़ा था। अन्त में सं १७३४ वि. में औरंगाबाद में उसका देहान्त हो गया।

—मआसिरुल् उमरा पृ. २५७–२५६, टाड राजस्थान,
भाग २ पृ. १३४२।

पृ. २२० गीत १३० नाथजी रघावत हाडा—रघुनाथसिंह का पुत्र अथवा वंशधर नाथसिंह। नाथसिंह ने कछवाहों के साथ युद्ध लड़ कर वीरगति प्राप्त की थी। वह युद्ध कब कहाँ लड़ा गया था कोई वृत्तान्त नही मिला। संभवतः महाराव राजा बुद्धसिह के पक्ष में वह पांचोलास के युद्ध में लड़ कर मारा गया होगा।

पृ. २२३ गीत १३१ महाराज भगतराम हाडा इन्द्रगढ़—कोटड़ियाद (हाडौती) क्षेत्र में इन्द्रगढ़ संस्थान का स्वामी महाराज भक्तराम हाडा। वह महाराज छत्रसिंह का पुत्र था। महाराव राजा उम्मेदसिंह ने इन्द्रगढ़ के महाराज देवसिंह को मार कर भगतराम को सं. १८१३ में इन्द्रगढ़ प्रदान किया था।

पृ. २२८ गीत १३२ हाडां गौडां रौ जुद्ध—हाडों और गौड़ों का युद्ध। बादशाह शाहजहाँ के अन्तिम दिनों में लड़े गए शाहजादों के उत्तराधिकार के उज्जैन और धौलपुर के युद्धों में उज्जैन में हाडा राव मुकुन्दसिंह कोटा तथा गौड अर्जुन और धौलपुर में महाराव राजा शत्रुशाल और गौड़ राजा शिवराम व भीमसिंह गौड़ एक पक्ष में रह कर लड़ते हुए धराशायी हुए थे।

—विन्हैरासो परिशिष्ट पृ. २२३, २२४, २२७, २३८।

पृ. २३० गीत १३३ राजराणा रायसिंघ झाला सादड़ी—मेवाड़ के सादड़ी ठिकाने का स्वामी राजराणा रायसिंह झाला द्वितीय। वह राजराणा कीर्तिसिंह प्रथम का पुत्र था। रायसिंह ने मेवाड़ की सेना का नेतृत्व करते हुए हींता स्थान में मैदान के हट्ट मरहठा की ८ हजार सेना से युद्ध लड़ा था। वह उस युद्ध में घायल होकर जीवित रहा और उसका लघु भ्राता नाथसिंह मारा गया था।

—श्री झाला भूषण मार्त्तण्ड पृ. ६८—७२, राजपूताने का इतिहास
जिल्द २ चतुर्थ खण्ड पृ. ११८३।

पृ. २३५ गीत १३४ रावल अमरसिंघ भाटी जैसलमेर—जैसलमेर के रावल मालदेव का उत्तराधिकारी रावल अमरसिंह भाटी। उसने पंजाब में मुसलमानों के साथ के युद्ध में शौर्य प्रदर्शन कर यश प्राप्त किया था। सं. १६७० वि. में उसका देहान्त हुआ था।

—नैणासी भा. २ पृ. ६८

पृ. २३६ गीत १३५ मूलराज सौलंखी—मूलराज सौलंखी। मूलराज ने कटार युद्ध लड़कर वीरगति प्राप्त की थी। विशेष विवरण प्राप्त नहीं है।

पृ. २३७ गीत १३६ लालसिंघ सौलंखी—हरिसिंह का पुत्र लालसिंह सौलंखी। लालसिंह ने बादशाह की ओर से उज्जैन में युद्ध लड़ा और अपना जीवन न्यौछावर कर बादशाह के प्राणों की रक्षा की।

पृ. २३९ गीत १३७ अमरसिंघ गरड़वा–अमरसिंह गरड़वा का निवास स्थान, युद्ध स्थान तथा समय और युद्ध विवरण प्राप्त नहीं है।

पृ. २४० गीत १३८ दुरजणसाल सोडा—दुर्जनशाल सोढ़ा। दुर्जनशाल ने सिरोही पर राठौड़ों के आक्रमण करने पर वीरता दिखाई थी। संभवतः वह महाराजा मानसिंह राठौड़ की सेना के सिरोही पर हमला करने पर लड़ा हो। ख्यातों में कोई उल्लेख नहीं मिला।

पृ. २४१ गीत १३९ सांवलदास डावर—मालवा में वडनगर का शासक श्यामलदास डावर। वह फतहसिंह का पुत्र था। उसने वडनगर पर आक्रमण करने पर किस मिर्जा पदधारी शाही सेनानायक से युद्ध किया कोई वृत्त नहीं मिला।

पृ. २४२ गीत १४० सेरखाँन पठान—अवदलखाँन का पुत्र शेरखाँन पठान। शेरखाँन का वंश परिचय नहीं मिला। संभवतः वह जालोर के बिहारी पठानों में से था और महाराजा शूरसिंह जोधपुर का समवर्त्ती था।

पृ. २४३ गीत १४१ गीत भरतपुर किला पर जाट अंग्रेजां रौ–राजस्थान के जाट राज्य के भरतपुर दुर्ग पर अंग्रेजो से लड़े गए युद्ध का गीत। जसवंतराव होल्कर ने अंग्रेजों के विरुद्ध अपना राज्य त्यागकर राजस्थान के भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह की शरण लेकर डीग के किले को आश्रयस्थल बनाया था। डीग के पास अंग्रेजों से जबर्दस्त युद्ध हुआ। जिसमें अंग्रेजों के ६४३ योद्धा मारे गए थे, जिनमें २२ उच्च सैनिक अधिकारी थे। होल्कर की सारी सेना काम आयी थी। तब फिर भरतपुर के किले में जाकर डटे थे। वहाँ भी लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने पीछा किया और कई दिनों तक अनवरत युद्ध होता रहा। किन्तु अंग्रेज सफल नहीं हुए। यशवंतराव का सहायक अमीरखां पठान अंग्रेजों से मिलकर तटस्थ हो गया; ऐसी परिस्थिति में रणजीतसिंह को अंग्रेजों से संधि करने के लिए बाध्य होना पड़ा। किन्तु भरतपुर नरेश ने यशवंतराव को अंग्रेजों को नहीं सौंपा। वह युद्ध १८०४, २३ दिसम्बर से अप्रैल १८०५ तक चलता रहा।

परिशिष्ट २.

गीत छंदानुक्रमणिका

सहायक ग्रंथ-सूची

अजितविलास— सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी स. सं. सौभाग्यसिंह शेखावत राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी
अलवर व जयपुर राज्य का इतिहास—श्री जगदीशसिंह गहलोत
उम्मेदसिंह सीसोदिया रा गीत—डॉ. नारायणसिंह भाटी स. सौभाग्यसिंह शेखावत
एनाल्स एण्ड ऐंटिक्वीटीज ऑफ राजस्थान—कर्नल जेम्स टॉड
ओझानिबंध-संग्रह भा. ३–४—सं. नाथूलाल भागीरथ व्यास, साहित्य संस्थान, उदयपुर
कछवाहों की ख्यात—राजस्थानी शोध संस्थान संग्रहालय, चौपासनी
कूर्मवंशप्रकाश—सं. महताबचंद्र खारेड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
खेतड़ी का इतिहास—पं० झाबरमल्ल शर्मा जसरापुर, खेतड़ी
गजगुणरूपकबध—सं. सीताराम लाळस, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
दलपतविलास—सं. रावत सारस्वत, शार्दूल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर
बांकीदास री ख्यात—सं. नरोत्तमदास स्वामी रा. प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
बिन्है रासो—सं. सौभाग्यसिंह शेखावत, रा. प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
भीमप्रकास, महादान मेहडू रचित—सौभाग्यसिंह शेखावत का संग्रह
माधववंश. प्रकाश—बक्सी झूंथालाल ठाकुर लूणसिंह भोपालसिंह डूजोद का संग्रह
मारवाड़ का इतिहास, भा. १ व २—पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ, जोधपुर
मारवाड़ रा उमरावां री बात—कुं. देवीसिंह शेखावत मंडावा का संग्रह
मारवाड़ रा जागीरदारां री वंशावली—मुंशी देवीप्रसाद
मुंहता नेणसी री ख्यात—सं. बदरीप्रसाद साकरिया, रा. प्रा. प्रतिष्ठान, जोधपुर
मुगलदरबार—अनु. ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास—देवनाथ पुरोहित, उदयपुर
राजपूताने का इतिहास भा. तृतीय—डा. गौ. ही. ओझा, अजमेर
राजरूपक—सं. पं. रामकर्ण आसोपा, ना० प्रचारिणी सभा, काशी
राजस्थान का पिंगल-साहित्य—डा. मोतीलाल मेनारिया, उदयपुर
राजस्थान पुरालेख विभाग, बीकानेर का रेकार्ड
राठौडों की ख्यात—डा. कल्याणसिंह शेखावत का संग्रह
रायसलजस सरोज, रामदयाल कविया रचित—सौभाग्यसिंह शेखावत का संग्रह
वीरगीत संग्रह, भा. १—सं. सौभाग्यसिंह शेखावत, रा. प्रा. प्रतिष्ठान, जोधपुर
शाहजहाँनामा—अनु० मुंशी देवीप्रसाद
शाहपुरा राज्य की ख्यात—राजाधिराज सुदर्शनदेवसिंह, शाहपुरा
शिखर-वंशोत्पत्ति—सं. पं. हरिनारायण पुरोहित, जयपुर
शेखावतों की वंशावली—रावल हरनाथसिंह शेखावत, डूंडलोद
सांभर का युद्ध—सं. डॉ. रघुबीरसिंह, सीतामऊ राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ
सीकर का इतिहास—पं. झाबरमल्ल शर्मा, जसरापुर
Generogical Table of Kachawahas—Rawal Harnath Singh Dundlod
Rathod Durgadas—Vishvashwarnath Reu.

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला

नवीन–प्रकाशन

क्रमांक	ग्रन्थ–नाम	सम्पादक	मूल्य
११५	सिंहसिद्धान्तसिन्धुः, (गोस्वामी शिवानन्द भट्ट कृत) प्रथमखण्ड	डॉ. फतहसिंह एवं श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	११-५०
११६	राजस्थानी-वीर-गीत-संग्रह, भाग ३	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	९-२५
११७	बालतन्त्रम् (कल्याण पण्डित कृत)	कविराज श्री विष्णुदत्त पुरोहित	३-५०
११८	नरसीजी रो माहेरो (मीरांकृत)	श्री जेठालाल नारायण त्रिवेदी	७-२५

मुद्रणाधीन–प्रकाशन

१.	मीरां बृहत्पदावली, भाग २	डॉ० कल्याणसिंह शेखावत
२.	मारवाड़ रा परगनांरी विगत, भाग ३	डॉ० नारायणसिंह भाटी
३.	सिंहसिद्धान्तसिन्धुः, द्वितीय खण्ड	श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी
४.	संगीतरघुनन्दनम्	डॉ० दशरथ शर्मा
५.	राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३	श्री ओंकारलाल मेनारिया
६.	रतन रासो	डॉ. रघुवीरसिंह एवं श्री काशीराम शर्मा
७.	खण्डप्रशस्तिः टीकाद्वययुक्तम्	डॉ. फतहसिंह एवं श्री म० विनयसागर
८.	नन्दिसूत्रम्-प्रभाव्याख्यायुक्तम्	डॉ० फतहसिंह एवं श्री म० विनयसागर